CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री स्कन्द महापुराणान्तर्गत हिमाद्रिखण्डस्य
पूर्वभागात् प्रस्तुतम्

2.5
302

...ाक्षारण्य माहात्म्यम्

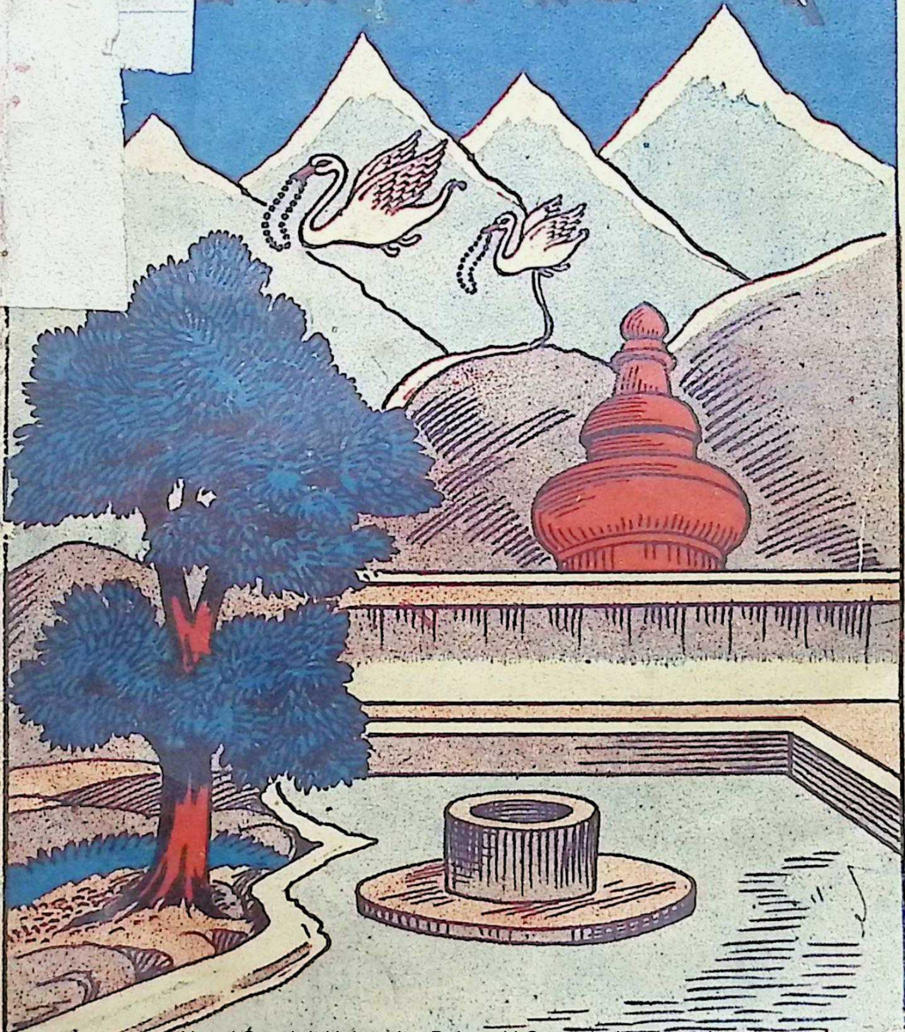

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
इ.प्र. ३०९
वाल्मीकि विद्यापीठ-पुस्तकालय
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६.पु-३०९

ॐ नमो भगवते गोरक्षनाथाय

श्री. गोरखनाथ मन्दिर

(गोरक्षपीठ)

महन्त अवेद्यनाथ
भूतपूर्व सदस्य
विधान सभा एवं लोक सभा

फोन : ६०३१
गोरखपुर-२७३००१

दिनांक २८-६-८४ ई०

सम्मति

नेपाल के पथिक कवि श्री लक्ष्मी आचार्य ने दुर्लभ स्कन्दपुराणान्तर्गत रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की प्राचीन पाण्डुलिपि प्रति प्राप्त कर परिश्रम से राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवाद करके शोधकार्य के साथ प्रकाशित किया है। उनका यह प्रयास स्तुत्य है।

मैं आशा करता हूँ कि यह ग्रन्थ न केवल हिन्दू-समाज ही को अपितु विवेकशील किसी भी विश्व मानव के लिए सर्वानिष्ट-विनाशक रुद्राक्ष के महत्व को समझने में अवश्य सहायक होगा।

महन्त अवेद्यनाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१४२७०

अथ

श्रीस्कन्द-महा-पुराण-हिमाद्रि-खण्डस्य पूर्वभागात् प्रस्तुतम्,
लक्ष्मीललित-हिन्दी-भाषा टीका-सहितम् ।

रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यम्

विंशत्यध्यायात्मकम्, आयुर्वैदिक-रुद्राक्ष तथा पथ-प्रदर्शक लेख-सहितम्

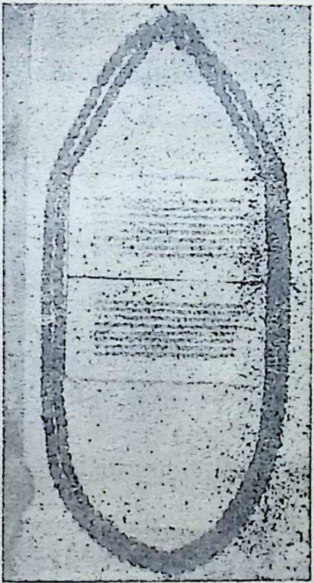

प्रदर्शित यह पाण्डुलिपि (फोटो) जो आजतक अनुपलब्ध
अंश था उसी का है। उसे प्राप्त कर उसी के आधार में
खोज-शोध के पश्चात् प्रस्तुत पुस्तिका छपी है।
टीका लेखक एवं प्रकाशक, पथिक कवि—लक्ष्मी आचार्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यम् (विंशत्यध्यायात्मकम्) लक्ष्मी ललित-हिन्दी टीका-सहितम् ।

टीका लेखक एवं प्रकाशक—

पथिक कवि—लक्ष्मी आचार्य (लक्ष्मी साहित्य प्रकाशन)

सर्वाधिकारी—टीका लेखक तथा प्रकाशक—

प्रथम प्रकाशन १२०० प्रति मात्र ।

प्राप्ति-स्थान—गोरखनाथ मन्दिर, (गोरक्ष पीठ) का पुस्तकालय,
बिक्री विभाग, गोरखपुर । (उ० प्र० भारत)

लेखक से सम्पर्क—गुरु गोरखनाथ सं० वि० गोरख टिला, मैदागिन,
वाराणसी ।

गौरीशङ्कर प्रेस, मध्यमेश्वर, वाराणसी ।

नेपाल में लेखक से सम्पर्क के लिए प्र० पुजारी द्वारा—वराहक्षेत्र धाम ।

प्र० पुजारी द्वारा—रुद्राक्षारण्य 'पिण्डेश्वर मन्दिर' विजयपुर, धरान, सुनसरी, कोशी अञ्चल, नेपाल ।

द्वारा—रमेश नेपाली—अम्बिका सापकोटा, पुरानू बजार, धरान नं० १, सुनसरी, कोशी अञ्चल, नेपाल ।

मूल्य—भारतीय रु० २५।०० विदेश में भाडा व्यय-सहित मूल्य जोडा जायगा ।

प्रकाशन मिति वि० सं० २०४१ विजया दशमी ।

मुद्रक—गौरीशङ्कर प्रेस, मध्यमेश्वर, वाराणसी ।

१८२९०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ नमो भगवते गोरक्षनाथाय

श्री गोरखनाथ मन्दिर

(गोरक्षपीठ)

महन्त अवेद्यनाथ
भूतपूर्व सदस्य
विधान सभा एवं लोक सभा

फोन : ६०३१
गोरखपुर-२७३००१

दिनांक २८-६-८४ ई०

सम्मति

नेपाल के पथिक कवि श्री लक्ष्मी आचार्य ने दुर्लभ स्कन्दपुराणान्तर्गत रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की प्राचीन पाण्डुलिपि प्रति प्राप्त कर परिश्रम से राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवाद करके शोधकार्य के साथ प्रकाशित किया है। उनका यह प्रयास स्तुत्य है।

मैं आशा करता हूँ कि यह ग्रन्थ न केवल हिन्दू-समाज ही को अपितु विवेकशील किसी भी विश्व मानव के लिए सर्वानिष्ट-विनाशक रुद्राक्ष के महत्व को समझने में अवश्य सहायक होगा।

महन्त अवेद्यनाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्य-अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर मन्दिर

प्रधान देवता [पिण्डेश्वर शिव बाबा] धाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्मति

स्कन्दपुराणान्तर्गत हिमवत् खण्डस्य तदन्तर्गत रुद्राक्षारण्यस्य च रुद्राक्षमाहात्म्येन सह प्रकाशनेन शिवभक्तिसंवर्धने महदुपकृतमिति सधन्यवादं प्रस्तौमि।

तत्रापि आध्यात्मिकाधिदैविकदृष्ट्यैव आधिभौतिकदृष्ट्यापि आयुर्वेदपुरस्कारेण प्रदर्शनं शिवभक्तिसंवर्धनेन सदुपयोगायैवेति मे विश्वासः। नैव तु आसुरभावदुरुपयोगायेति

तस्मात् सदुपयोगेन शिवभक्तिरेव वर्धनीयेति प्रकाशकतात्पर्यं मन्ये स्वागतार्हमिति।

श्रीकृष्णाश्रम स्वामी
(श्री गणपति हेक्वार शास्त्री)
भाद्रपद—वि-सं-२०४१, पूर्णिमा
साङ्गवेद विद्यालय रामघाट, वाराणसी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्य-माहात्म्य, लक्ष्मी-ललिता, हिन्दी टीका:
लेखक, एवं प्रकाशकः

लक्ष्मी आचार्य

रुद्राक्षारण्य तथा वराहक्षेत्र के ऐतिहासिक स्थानों का अनुसन्धाता तथा विशेषतः राष्ट्रीयता, धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, प्रकृति (बाह्य) दर्शन आदि साहित्य विषय में आलोचना, समालोचना के साथ यथार्थ चित्रणकर्ता, गद्य, पद्य, गीति लेखक पथिक कवि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आचार्य पूर्णचन्द्र उपाध्याय

व्याख्यान वाचस्पति, नव्यन्याय, नव्यव्याकरण, वेदान्त, सांख्ययोग, पुराणेतिहास, ज्योतिष, साहित्य आचार्य ।

प्रधानाचार्य—

गोरखनाथ संस्कृत विद्यापीठ (स्नातकोत्तर महाविद्यालय), गोरखपुर—उ० प्र० भारत

भूमिका

(रुद्राक्षारण्य की प्राप्ति तथा प्रकाशन विषय में ।)

नीलकण्ठं नमामि

प्राचीनतम आर्यों के इतिहास को देखने से ज्ञात होता है कि विश्व में मानवों की सृष्टि सर्वप्रथम पर्वतराज हिमालय की उपत्यका तथा अधित्यकाओं से प्रवाहित ब्रह्मपुत्र, कौशिकी, नारायणी, सरयू, गंगा, यमुना, वितस्ता, सिन्धु, नद नदियों के पवित्रतम जल से प्रक्षालित उत्कृष्टतम भूभाग में ही हुई है और भगवान् मनु द्वारा सृष्ट समस्त मानव समाज भी परा-पूर्वकाल से आर्य ही कहलाया है ।

निरन्तर गतिशील पर्याप्त भ्रमण करने वाला एवं सज्जन तथा दूसरों का कार्य सिद्ध करने वाला परोपकारी होने से ही 'अर्तुं योग्यः आर्यः' इस विग्रह के अनुसार मानवीय समस्त गुण-सम्पन्न मनुष्य आर्य नाम से विश्व में विख्यात है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आर्य लोग भ्रमणशील होने के नाते से ही ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्रों में पारंगत थे। अतः समस्त आर्य जगत् में सृष्टिकाल से ही आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नतियाँ समानरूप से होती रही हैं।

भौतिक यान्त्रिक उन्नति के अगणित यान उपयानरूपी साधनों के ही माध्यम से प्राचीन आर्यलोग हिमालय से सुदूर स्थित द्वीप द्वीपान्तरों में गए हैं, और उन द्वीपों की रमणीयता एवं उर्वरत्व की महिमा से स्थायीरूप से वहीं रहने भी लगे थे, अन्त में वे वहीं के स्थायी निवासी वने, निरन्तर वहीं रहने के कारण पैतृक अपनी मूल भूमि भारत से उनका सम्पर्क टूट गया, जिससे हम सब उन्हें अनार्य कहने लगे, किन्तु वे सब आर्य हैं। आर्यों के सन्तान होते हुए भी अर्योचित आचरण और सदाचार की विपरीत प्रक्रिया एवं भिन्न प्रक्रिया से वे अनार्य हो गए। यह एक सत्य वस्तु-स्थिति है, प्राचीन काल में अर्येतर अनार्य कोई भी जाति नहीं थी। आर्योचित कर्मों के न करने से ही मानव अनार्य एवं राक्षस तथा दानव भी हो जाता है।

प्राचीन आर्य जगत् में भी ज्ञान और विज्ञान की उन्नतियों में जब तक पूर्ण समन्वय होता रहा तब तक मानव समाज इसी भूलोक में स्वर्गीय सुख का आनन्द लेता रहा है। जिस दिन से दोनों में समन्वय की स्थिति कमजोर हुई और विज्ञान से प्राप्त होने-वाले उपकरणों को ही प्राप्त करने के लिए मानवीय अमूल्य शक्ति का प्रयोग होने लगा, उसी दिन से आर्यों के स्वर्णिम इतिहास में दुर्दिन के मेघ मड़राने लगे। फलस्वरूप इसी पवित्र आर्यों की भूमि में छोटी-छोटी घटनाओं को लेकर महाभारत जैसे प्राचीनतम विद्या-बुद्धि-वैभव के विनाशक अनेक युद्ध तथा महायुद्ध बराबर हुए। जिन से सम्पूर्ण आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई, यह ध्रुव सत्य है।

प्राचीन आर्यों के ज्ञान-विज्ञान के निधि वेद, उपवेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक, गृह्य-सूत्र, वेदाङ्ग, दर्शन, धर्मशास्त्र, पुराण, उपपुराण, इतिहास, तन्त्रविद्या, आगम, स्थापत्यकला, वास्तुकला, कृषि, पशुपाल्य, वाणिज्य, हस्त्यश्व-विज्ञान, कुटीरोद्योग, विविध यन्त्रनिर्माण, शिल्पादि अनेक जीवनोपयोगी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कला कौशल ही आधुनिकतम विज्ञान के मूल स्रोत हैं। आधुनिक समस्त विश्व मानव की अमूल्य थाती भी हैं।

आर्यों के उपर्युक्त ज्ञान-विज्ञान के अक्षय्य भण्डारों में पुराण तथा उपपुराणों ने मानव जगत् के आध्यात्मिक तथा भौतिक अनेक रहस्यों का उद्‌घाटन किया है। ज्ञान विज्ञान के वेदादि सागर से एक मात्र पुराण साहित्य निकाल दें तो समस्त सनातन आर्य हिन्दू जगत् पङ्गु हो जायगा, इसमें कोई भी सन्देह नहीं।

अमूल्य पुराण साहित्य में भी अपनी अनेक विशेषताओं के साथ विशाल आकार (एकासी हजार,८१०००) श्लोकों से युक्त महापुराण होने के कारण से भी स्कन्द पुराण अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। व्रतकथा और तीर्थों का माहात्म्य तो अधिकांश स्कन्द महापुराण से ही प्रचलित हैं।

स्कन्द महापुराण में माहेश्वर १, वैष्णव २, ब्राह्म ३, काशी ४, आवन्त्य ५, नागर ६, प्रभास ७, नामक सात खण्डों के उपखण्ड रेवा १, केदार २, नीलाद्रि ३, जालन्धर ४, मानस ५, सह्याद्रि ६, विन्ध्याद्रि ७, हिमाद्रि ८ खण्ड, इत्यादि आठ उपखण्डों का नाम सुना जाता है। इन खण्डों के विशाल एक एक प्रकरण ज्ञान के साक्षात् प्रकाश सूर्य हैं।

इस महापुराण के आद्योपान्त अवलोकन से लगता है इस के अनेक प्रकरण उच्छिन्न हुए हैं, तृतीय ब्राह्मखण्ड के धर्मारण्य प्रकरण के पश्चात् ब्रह्मोत्तर खण्ड के बीसवें अध्याय में काश्मीर के राजपुत्र मन्त्रिपुत्रों के वर्णन प्रसंग में साक्षात् महारुद्र स्वरूप रुद्राक्षों का विस्तृत वर्णन आया है, जैसे—

भक्त्या संपूजितो नित्यं रुद्राक्षः शंकरात्मकः।
दरिद्रं वाऽपि कुरुते राजराजश्रियान्वितम्॥

भक्तिपूर्वक रुद्राक्ष को पूजन करने वाला व्यक्ति यदि दरिद्र हो तो भी राजाओं के राजा अर्थात् महाराजाओं की सी वैभवशालिनी सम्पत्तियों का उपभोग करता है। इत्यादि पद्य रुद्राक्षों की अगणित विशेषताओं का वर्णन करते हैं। माहेश्वर खण्ड में भी रुद्राक्षों का वर्णन है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन प्रकरणों को अवलोकन करने से स्पष्ट प्रतिभाषित होता है कि इस महापुराण से रुद्राक्षारण्य नामक महान् प्रकरण भ्रष्ट हुआ है। जिसका उल्लेख भारत के सुविख्यात पण्डितराज राजेश्वर शास्त्री द्राविड महोदय ने तथा नेपाल-भारत के लब्धख्याति इतिहास एवं पुरातत्त्व वेत्ता योगिराज नरहरि नाथ महोदय ने किया है। इसी पुस्तक में पृ० सं० २२९ से २३२ तक पाठक वर्ग देखें।

योगिराज जी ने हिमाद्रि खण्ड की प्राचीन पाण्डुलिपि प्रति को अपने ऐतिहासिक भ्रमण में प्राप्त कर आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व संक्षिप्त नेपाली टीका के साथ अध्याय १८९ श्लोक १२५१२ तक प्रकाशित किया था। पुनः नेपाल पूर्वाञ्चल के ऐतिहासिक भ्रमण में दीमक से कटी फटी प्राचीन पाण्डुलिपि प्रति रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की आप (योगिराज) को मिली और आज से लगभग २५ वर्ष पूर्व ही यह प्रति भी संक्षिप्त नेपाली टीका में अनेक ऐतिहासिक विषय मिश्रण के साथ छपी।

स्थानीय पंडित पुरोहितों को यह प्रतिभाषित नहीं हुआ कि सनातन आर्य हिन्दू इतिहास से भ्रष्ट उच्छिन्न रुद्राक्षारण्य पुनः प्राप्त हो गया है, हिन्दू जगत् की यह उपलब्धि है, इत्यादि। न किसी ने कथा बांचा, न तो कहीं किसी ने रुद्राक्षारण्य के विषय को लेकर कोई पुस्तक ही लिखा। स्थानीय पञ्चपञ्चायत और बुद्धिजीवियों को भी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि की महत्ता भावित नहीं हुई, लेखक ने नगर पञ्चायत को दान में पुस्तक दे दिया था, इस दान का उपभोग उचित तरीके से नहीं हुआ, फलतः रुद्राक्षारण्य का प्रचार-प्रसार कुछ नहीं हो पाया।

नेपाली, हिन्दी, संस्कृत के मार्मिक विद्वान् एवं पुरातत्त्व संस्कृति, धर्म; दर्शन, देशदर्शन तथा इतिहास के लेखक एवं पर्यटनशील असंग्रही पथिक कवि लक्ष्मी आचार्य (साहित्य, सांख्य दर्शन के आचार्य; काव्य, पुराणतीर्थ; विद्या भास्कर) जी ने अपना बुद्ध चरित महाकाव्य में (योगिराज वाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रति छप कर प्राप्त होते ही लगभग २५ वर्ष पूर्व ही) तीन चार सर्गों में रुद्राक्षारण्य को स्थान दिया था।

इसके बाद वि० सं० २०३०।०३१ में 'देश को माटो देशका ढुंगा (२) भाग' में भी संपूर्ण रुद्राक्षारण्य को व्यक्त किया जो लगभग २०० । ऐतिहासिक चित्र के साथ छपी प्रकाशक धरान नगर पञ्चायत ही था, किन्तु पुस्तक बाजार में सुलभ नहीं हो पायी, देखने में भी कम नजर आयी।

इसके बाद हिन्दी भाषा-भाषी पड़ोसी मित्रों के लिए—'रुद्राक्षारण्य' नाम से एक पुस्तिका कवि जी ने छपवाई थी, रविवार २१ अप्रैल १९७४ का साप्ताहिक अंक 'आज' में भी कवि जी का रुद्राक्षारण्य के विषय में एक लेख पढ़ने मिला। पुनः आप के ही लेख नेपाली पत्र पत्रिका, पोस्टर, पम्पलेट में देखे गए, रुद्राक्षारण्य के स्थान स्थान पर (चौराहे आदि में) मन्दिरों में भी इस भूमिका लेखक ने आपके द्वारा अंकित करके रखे गये बोर्डों को पढ़ा है।

पुनः प्रस्तुत रुद्राक्षारण्य माहात्म्य से दो अध्याय (नेपाली टीका) रुद्राक्षारण्य माहात्म्य, वराहक्षेत्र माहात्म्य, नन्दाको आह्वान, नेपाली पुस्तिकाओं में भी रुद्राक्षारण्य की ख्याति थी।

आज से चार वर्ष पूर्व आपको भी रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की पूरी पाण्डुलिपि प्रति मिली। सनातन हिन्दू जगत् के लिए हिन्दी टीका ही उपयुक्त होगी, इत्यादि विचार कर प्रस्तुत पाण्डुलिपि प्रति प्रकाशन में आई है। नेपाली टीका प्रकाशन होने वाली है। रुद्राक्षारण्य का परिचय अंग्रेजी में भी आपने अनुवाद करवाया है। जो अप्रकाशित है।

इस तरह से रुद्राक्षारण्य के लिए आज तक आपने १४ वर्ष का समय तपस्या में लगा दिया है। योगिराज जी ने आपको (लक्ष्मी आचार्य को) अपनी 'उच्छिन्न प्रति सुधार कर छापी गई' पुस्तिका देते हुए कहा था रुद्राक्षारण्य को आप जन-समक्ष प्रस्तुत करें। और पण्डितराज राजेश्वर शास्त्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६—भगवान् शंकर द्वारा भगवती पार्वती के प्रश्नों का उत्तर प्रारम्भ, रुद्राक्षोत्पत्ति, रुद्राक्षारण्य की सीमा परिधि, नैमिषारण्य, वाराणसी आदि तीर्थों में रहकर देह त्याग करने पर ही मुक्ति होती है किन्तु रुद्राक्षारण्य को दर्शन करके जहाँ भी देहत्याग करे उसकी मुक्ति निश्चित है, इसीलिए नैमिषारण्य आदि तीर्थों से रुद्राक्षारण्य विशिष्ट है, रुद्राक्षारण्य में उत्पन्न रुद्राक्ष को धारण करने वाले पशु पक्षियों को भी मुक्ति मिल जाती है, केरल देशीय देवदत्त (पतित) ब्राह्मण को जमीन के अन्दर दबा हुआ रुद्राक्ष के स्पर्श से भी मुक्ति मिली, इत्यादि वर्णन।

७—रुद्राक्षोत्पत्ति कारण बताने के उपक्रम में संक्षिप्त रूप से सृष्टि वर्णन, जीवात्माओं का अधिकार दानवों के लिए पाताल का अधिकार, मय दानव द्वारा संरक्षित दानवों का पाताल से बाहर आना और त्रिपुरका निर्माण करना तथा देवता सहित सभी जीवात्मा को दुःख देना, स्वर्ग को भी जीत लेना, इत्यादि देवताओं का ब्रह्माजी से प्रार्थना करने के लिए ब्रह्मलोक पहुचना, ब्रह्मलोक का वर्णन इत्यादि।

८—ब्रह्मा जी द्वारा देवताओं को सान्त्वना, त्रिपुरासुर को जीतने में ब्रह्माजी द्वारा असमर्थता प्रकट करना और ब्रह्माजी सहित देवताओं का भगवान् विष्णु से भेट करने के लिए वैकुण्ठ लोक पहुँचना तथा वैकुण्ठ की शोभा वैभव आदि का वर्णन, इत्यादि।

९—ब्रह्माजी सहित देवताओं का वैकुण्ठ पहुँचना, वैकुण्ठ वर्णन, भगवान् विष्णु से त्रिपुरासुर का अत्याचार निवेदन, भगवान् विष्णु द्वारा त्रिपुरासुर वध में असमर्थता प्रकट करते हुए त्रिपुरासुर वध के लिए उपाय बतलाना, भगवान् विष्णु एवं ब्रह्माजी सहित भगवान् शंकर के कैलाश धाम के लिए प्रस्थान करना, इत्यादि।

१०—देवताओं के द्वारा भगवान् शिव का दर्शन, भगवान् शिव को त्रिपुरासुरों का अत्याचार निवेदन, भगवान् शिव के द्वारा देवताओं को सान्त्वना, त्रिपुरासुर को मारने के लिए युद्ध के उपकरणों को एकत्रित करने के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए भगवान् शिव द्वारा देवताओं को आदेश, युद्ध के उपकरणों को जुटाकर भगवान् शिव से देवताओं का निवेदन, भगवान् शिव द्वारा त्रिपुरासुर वध, त्रिपुरदाह, देवताओं के द्वारा भगवान् शिव की स्तुति, त्रिपुरदाह के बाद आराम के लिए हिमालय पर्वत भाग शीतशैल विजयपुर में देवता सहित भगवान् शिव का आगमन, त्रिपुरासुर विजय के हर्ष में भगवान् शिव का हँसना, हर्षाश्रुओं के चार बूँद टपकने से चार जाति के रुद्राक्ष उत्पन्न होना, इत्यादि।

११—भगवती पार्वती के पूर्व प्रश्नों को अनुसरण करते हुए भगवान् शङ्कर द्वारा रुद्राक्ष के वीज के बारे में उत्तर, हिमालय पर्वतराज शीतशैल में मात्र रुद्राक्ष ऊगते हैं, वहीं से लेकर रुद्राक्ष के वीजों को रोपा जाय तो तराई भाग में और हिमालय पर्वत की मिट्टी से मिलती-जुलती मिट्टी वाले अन्य भूमि व पर्वतीय भूमि में भी रुद्राक्ष के पौधे जीते हैं इत्यादि कथन के बाद देवता सहित रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र विजयपुर में भगवान् शिव का आराम करना, विजयपुर वर्णन, विजयपुर में ही रहने की भगवान् शिव की इच्छा, देवता सहित भगवान् शिव का रुद्राक्षारण्य (विजयपुर) में आवास करना, देवता सहित भगवान् ब्रह्मा और विष्णु को अपने-अपने धाम (स्थान) में जाने के लिए बिदाई, अदृश्य रूप में विजयपुर स्थित रुद्राक्ष के वृक्षों में अन्तर्लीन हो कर भगवान् शिव का रहना, इत्यादि।

१२—त्रिपुरासुर विजय के बाद भी अन्यान्य असुरों से पीडित देवताओं को अजर-अमर बनने की इच्छा, उपाय के खोज में भगवान् विष्णु के पास देवताओं का जाना, अपनी इच्छा प्रकट करना, भगवान् विष्णु के बताए हुए आचरणों में रहकर देवताओं के द्वारा समुद्र मंथन में तैयारी, समुद्र मंथन, रत्नों की उत्पत्ति, भगवान् शिव द्वारा हलाहल विष पान, मोहिनी अवतार, कूर्मावतार, देवता और दानवों का युद्ध (देवासुर संग्राम) देवताओं के द्वारा अमृतपान करने से आगे अमृत को छानना,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमृत के सार का शिवलिङ्ग निर्माण करके रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र विजयपुर (पूर्वीय नेपाल), कौशिकी अञ्चल, सुनसरी (सुरसरित्) (जिला, धरान नगर पञ्चायत अन्तर्गत विजयपुर) में अमृतपिण्ड की स्थापना, अमृतपिण्ड होने से ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक में उस लिङ्ग का नाम पिण्डेश्वर रखना, आवरण देवताओं की स्थापना, रुद्राक्ष वृक्षों में अन्तर्लीन भगवान् शिव का तब से अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिवलिङ्ग में प्रकट एवं स्थायी रूप से रहना इत्यादि ।

१३—भगवती पार्वती के द्वारा रुद्राक्षारण्य के प्रमुख देवता भगवान् शिव (रुद्र) अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर का प्रभाव पूछने पर द्रविड़ देशीय देवदत्त ब्राह्मण (जिसका नाम विष्णुमित्र था) का तीर्थयात्रा वर्णन (जिस वर्णन में दक्षिण भारत, पूर्वीय भारत तथा उत्तर भारत एवं नेपाल के सभी तीर्थों का वर्णन है) रुद्राक्षारण्य शीतशैल विजयपुर में आगमन, इत्यादि ।

१४—भगवान् पिण्डेश्वर शिव का दर्शन करने के बाद विष्णुमित्र ब्राह्मण की तपस्या, विष्णुमित्र कृत पिण्डेश्वर शिव की स्तुति, साक्षात्कार (दर्शन) के बाद विष्णुमित्र कृत दूसरी स्तुति, विष्णुमित्र को पिण्डेश्वर शिव द्वारा वरदान, पुनः तीर्थों में भ्रमण करते हुए चिदम्बर तीर्थ में पहुँच कर भगवान् पिण्डेश्वर की भक्ति करते हुए आयु निःशेष होने पर विष्णुमित्र की शिव सायुज्य प्राप्ति, इत्यादि ।

१५—सृष्टि करने में असमर्थ ब्रह्मा जी द्वारा भगवान् पिण्डेश्वर की तपस्या, ब्रह्मा जी द्वारा शिव-स्तुति, सृष्टि-समर्थ होने का वरदान प्राप्त होने पर पुनः शिवस्तुति, इत्यादि ।

१६—ब्रह्मा जी की सृष्टि की रक्षा हेतु नियोजित भगवान् विष्णु असमर्थ होने पर भगवान् पिण्डेश्वर शिव की तपस्या करके वरदान प्राप्त कर सृष्टि संरक्षण में समर्थ होना, भगवान् विष्णुकृत दो शिव-स्तुति, विष्णु द्वारा चैत्रशुक्ल प्रतिप्रदा से पूर्णिमा तक पिण्डेश्वर का रथोत्सव, पूजा आदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना, ब्रह्मा द्वारा कार्तिक महीने में अन्नकूट पूजा आराधना करना, मकर संक्रान्ति से कुम्भ संक्रान्ति तक देवताओं के द्वारा भगवान् पिण्डेश्वर की पूजा आराधना, पौषी पूर्णिमा के दिन शिवगङ्गा तीर्थ स्नान करके पिण्डेश्वर को स्नान करा कर देवताओं को स्वर्ग के लिए प्रस्थान करना, उन तीनों उत्सवों को प्रति वर्ष यथावत् मानव द्वारा पालन करना इत्यादि ।

१७—रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र के आस-पास के तीर्थों का वर्णन, सरस्वती सरोवर की महत्ता, मातृतीर्थ आदि का वर्णन, कौशिकी का वर्णन, वराह क्षेत्र वर्णन, रुद्रवारि, भद्रवारि, तमोरि, भद्राक्षारण्य, कदम्बारण्य, कैलाशनाथ (कदमहामठ में) रणकाली (रङ्गेली में) शिवगङ्गा आदिका पर्णन ।

१८—एक मुख से लेकर १४ मुख तक एवं १४ मुख से ३२ मुख तक के तथा गौरीशङ्कर गोमुख आदि रुद्राक्ष महिमा इत्यादि ।

१९—रुद्राक्षों को कैसे किस विधि से किन अङ्गों में कितने धारण करना चाहिए, रुद्राक्ष के स्वरूप, कैसे भक्तों को रुद्राक्ष देना, भक्तों का पहचान, अयोग्य ढोंगी भक्तों को रुद्राक्ष देना महापाप, रुद्राक्ष, शालिग्राम, नर्मदा के लिङ्गों को बेचने वालों को नर्क की प्राप्ति, रुद्राक्ष धारण करने का पुण्य, रुद्राक्षारण्य में आवास का नियम, एकवार रुद्राक्षारण्य के दर्शन से कहीं भी मृत्यु को प्राप्त हो जाने पर भी मुक्ति प्राप्त करना, रुद्राक्षारण्य मध्यस्थ अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर के मन्दिर में भजन कीर्तन करने का नियम, नैमिषारण्य के अठासी हजार शौनकादि ऋषियों को रुद्राक्षारण्य का दर्शन किये विना आप लोगों को शान्ति नहीं मिलेगी इत्यादि सूत जी के कहने पर शौनकादि ऋषियों का सम्पूर्ण भारत वर्ष के तीर्थों का भ्रमण करते हुए रुद्राक्षारण्य में पहुँचना, नेपाल स्थित अनेक तीर्थ भ्रमण के बाद नैमिषारण्य में पहुंच कर मुक्ति में अधिकार प्राप्त कर भजन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करते हुए योगक्षेम जीवन बिताने लगे, इत्यादि वर्णन के साथ रुद्राक्ष महिमा एवं सूत जी की बिदाई।

२०—रुद्राक्षारण्य माहात्म्य संक्षिप्त कथा-सार और रुद्राक्ष-महिमा इत्यादि।

॥ समाप्तम् ॥

पृष्ठ २२९ से २३२ तक

पण्डितराज (भारत) श्री राजेश्वर शास्त्री द्रविड़ जी द्वारा पूर्व प्रकाशित रुद्राक्षारण्य (हिन्दी परिचयात्मक प्रति) पड़ोसी मित्रों के लिए; प्राप्त सम्मति और उक्त पुस्तिका की भूमिका।

पृष्ठ २३३ से २३७ तक

महौषधि रुद्राक्ष (आयुर्वेदिक रुद्राक्ष)।

पृष्ठ २३८ से २४९ तक

जो आह से भरी कहानी है, रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की पाण्डुलिपि प्रति प्राप्त करने के बाद तत् तत् स्थानों का निरीक्षण-अनुसन्धान-प्रचार-प्रसार सहयोग असहयोग आदि की संक्षिप्त चर्चा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आरति

रुद्राक्षारण्य प्रमुख देवता अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव की स्थानीय आरति नेपाली राष्ट्र भाषा में होती है ।

ॐ जय रुद्राक्षारण्य निवासी !
आगम निगम प्रकाशी !
जय शिव शंकर विजयपुरेश्वर !
आदिदेव गुणराशी !! पुनः पुनः !!

ब्रह्म विकासी भाषा-भाषी !
भाषित त्रिभुवन शासी !
दीन दुःखीका एक तिमी छौ !
रक्षक कहर निवासी !!

शिर शिवगङ्गा चन्द्र सुहाशी !
नीलकण्ठ अविनाशी !
पिई हलाहल सृष्टि बचायौ !
ब्रह्मा-ब्रह्म विभाषी !!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संपति सुख का दाता प्रभु हौ !
विद्या धन जन राशि !
पाप हरी कृत-कर्महरूका !
धाम देउ, अविनाशी !!

●

जय कैलासी ! मानस-वासी !
मानव-मन्दिर-भाषी !
अमृत-सार हे शंकर ! देउ !
अमृत-तत्त्व विकासी !!

●

आरति गर्छौं सब नर नारी !
प्रभुका प्रेम-पुजारी !
नित्य निरञ्जन शुद्ध सनातन !
पिण्डेश्वर ! अविनाशी !!

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ

श्रीगणेशाय नमः

श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे

रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यम्

तत्रादौ नैमिषारण्ये सहस्रवार्षिक्यं सत्रं समारभताम् समेषां शौनकादि-ऋषीणां मध्ये, नैमिषारण्यात् रुद्राक्षारण्यं गुणाधिक्यमिति, कथाप्रस्तावनायां मङ्गलपूर्वकं-ऋषिरुवाच, इति सन्दर्भः।

श्री माता गौरी सहित गणेश जी को नमस्कार है।

मङ्गल हो, स्कन्द पुराण हिमाद्रि खण्ड के भी पूर्व भाग में से रुद्राक्षारण्य माहात्म्य है

उसके कथा प्रसङ्ग में प्रस्तुत है कि नैमिषारण्य में एक हजार वरष तक चलने वाला यज्ञ को आरम्भ करने के लिए एकत्रित शौनकादि ऋषियों को कहने के लिए कि नैमिषारण्य से रुद्राक्षारण्य के गुणों में अधिकता (विशेषता) है, इत्यादि इसी प्रसङ्ग में मङ्गलाचरण करके वक्ता ऋषि जी कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टीकाकारः

ॐ कारमूलं हृदि भूर्भुवः स्व-
र्निधाय यत्तत् सवितुर्वरेण्यम् ।
लिखामि लक्ष्मीललितां कथा-सुधां
देवस्य भर्गो हि ददातु नोदनाम् ॥

भूर्भुवः स्वः तीनों लोक को सृष्टि करने वाले ॐ कार (आदिनाद) मूल (संसार सृष्टि का मूल कारण स्वरूप) सविता (उत्पादयिता) वरेण्य (पूजा आराधना योग्य) ईश्वर जो तत् शब्द वाच्य हैं, उन्हें हृदय में निश्चल भाव से रखकर, अमृत कथा से सम्बन्धित रुद्राक्षारण्य माहात्म्यमय कथामृत स्वरूप लक्ष्मी ललिता टीका मैं लिखता हूँ। वे तत् शब्द वाच्य सविता देव (ईश्वर) का भर्ग (तेज-शक्ति) उत्साह मुझे प्रदान करते रहें, जिससे प्रेरणा मिलती रहे।

हिमालयं नमस्कृत्य आदिदेवं महेश्वरम् ।
नमः शिवाय इत्युक्त्वा मुच्यते सर्वपातकात् ॥

आदिदेव महेश्वर शिव को नमस्कार कर देवतात्मा हिमालय पर्वतराज को नमस्कार करके 'ॐ नमः शिवाय' इस पञ्चाक्षर मन्त्र को उच्चारण करने वाले सभी नर नारी सम्पूर्ण पातकों से मुक्त हो जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ प्रथमोऽध्याय

यत्कारुण्य -कटाक्षाग्र–वीक्षा–दीक्षा–प्रभावतः ।
शिवोऽहमस्मि चिद्रूपस्तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥

मैं अपने उन गुरु को नमस्कार करता हूँ, जिनकी करुणामय दृष्टि के अग्रभाग के किरण मुझमें पड़ते ही मेरे लिए शिक्षा के बाद प्राप्त होने वाली दीक्षा के समान सिद्ध हुए, उन्हीं गुरु की करुणामय दृष्टि की प्रभाव से आज मैं शिव हूँ, सत्य हूँ, चित् हूँ, आनन्द स्वरूप हूँ ।

चिन्तामणिमिवाश्रान्तं चिन्तितार्थ-प्रदायकम् ।
दत्तावलम्बनं स्वान्ते चिन्तयेऽहं निरन्तरम् ॥२॥

जिस तरह चिन्तामणि चिन्तित वस्तु को तत्काल प्रदान करता है और वह निरन्तर प्रदान करते रहने से भी नहीं थकता है, उसी तरह मेरे हृदय को निरन्तर अवलम्वन स्वरूप शक्ति प्रदान करने वाले वे परब्रह्म परमात्मा को मैं स्मरण करता हूँ ।

चतुर्मुख–मुखाम्भोज–राजहंसीं चिदात्मिकाम् ।
वन्दे वाणीं वराभीति-वीणा-पुस्तक-धारिणीम् ॥३॥

जो चतुर्मुख ब्रह्मा के मुखकमलों में विहार करती हैं, चेतन ज्ञान स्वरूपिणी हैं, वरदमुद्रा में विराजित हैं, अभय प्रदान करती हैं, वीणा और पुस्तक जिनके हाथों में हैं, ऐसी देवी सरस्वती को मैं वन्दना पूर्वक नमस्कार करता हूँ ।

नमः शिवाय शान्ताय नादबिन्दु-कलात्मने ।
सहस्रार–सरोजान्तर्वासिने संविदात्मने ॥४॥

योगशास्त्र प्रसिद्ध नाद बिन्दु रूप सहस्र दल कमल के मध्य विराजमान, अतः नाद बिन्दु कला के आत्मा स्वरूप, (आत्मज्ञान से सम्बन्धित दार्शनिक ज्ञानमय) शान्ति और कल्याण के प्रतीक, मंगलमय भगवान् शिव को मैं नमस्कार करता हूँ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अष्टादश-पुराणानां कर्तारं करुणानिधिम् ।
वेदव्यासं नमस्येऽहं प्रसीदतु स मे प्रभुः ॥५॥

अठारह पुराणों के कर्ता, करुणा के सागर वे मेरे प्रभु कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास जी मुझसे सदा प्रसन्न रहें ।

नत्वा श्रीपरमात्मानं शुद्ध-संवित्स्वरूपिणम् ।
रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यं वक्ष्ये पिण्डेश्वरस्य च ॥६॥

शुद्ध चैतन्य स्वरूप एवं श्री आदि ऐश्वर्य सम्पन्न परमात्मा को नमस्कार करके रुद्राक्षारण्य माहात्म्य और भगवान् पिण्डेश्वर का माहात्म्य को श्रोताओं के लिए मैं सुनाता हूँ ।

अब नैमिषारण्य माहात्म्य वर्णन आरम्भ किया जाता है ।

अस्ति पुण्यं महाक्षेत्रं सर्व क्षेत्रोत्तमोत्तमम् ।
यस्य दर्शनमात्रेण सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ ७ ॥

संपूर्ण उत्तम क्षेत्रों में उत्तम, पवित्र महाक्षेत्र, नैमिषारण्य क्षेत्र है, जिसका दर्शन मात्र करने से संपूर्ण पाप नाश होते हैं ।

विन्ध्याद्रेरुत्तरे तीरे हिमाद्रेर्दक्षिणे तथा ।
आर्यावर्ताह्वये देशे सर्वाभद्र-विदारणे ॥ ८ ॥
ब्रह्मावर्त्तात्पूर्वभागे दशयोजन-दूरतः ।
भागीरथ्युत्तरे तीरे तावद्योजन-दूरतः ॥ ९ ॥
वर्त्तते तन्महाक्षेत्रं नैमिषारण्य-संज्ञकम् ।
न तस्य सदृशं क्वापि क्षेत्रमस्ति महीतले ॥१०॥

विन्ध्याचल से उत्तर, हिमालय के दक्षिण, ब्रह्मावर्त देश से दश योजन की दूरी पर भागीरथी से भी उत्तर दश योजन की दूरी में, संपूर्ण पापों को नष्ट करने में समर्थ आर्यावर्त देश में नैमिषारण्य क्षेत्र है ।

तस्य क्षेत्रस्य माहात्म्यं वर्णितुं केन शक्यते ।
तथापि तस्य माहात्म्यं दिङ्मात्रेण प्रदर्श्यते ॥११॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्र सर्वाणि तीर्थानि क्षेत्राणि विविधानि च।
महापुण्यानि सततं निवसन्ति निरन्तरम् ।।१२।।

नैमिषारण्य क्षेत्र का माहात्म्य वर्णन कोई नहीं कर सकता है। तथापि दिक्-दर्शन के रूप में मैं वर्णन करता हूँ। महापुण्यदायक तीर्थ और सभी क्षेत्र नैमिषारण्य क्षेत्र में सर्वदा विद्यमान रहते हैं। हे ऋषीश्वरों ! वहाँ कैसे क्षेत्रों और तीर्थों का आवास है ? आप सब सुनें, मैं नाम सुनाता हूँ।

काशी गया प्रयागश्च गङ्गा गोदावरी तथा।
रामेश्वरं महाक्षेत्रं पुष्करं पुष्करोज्ज्वलम् ।।१३।।
अन्यानि चैव तीर्थानि तस्मिन् क्षेत्रे वसन्ति हि।
यत्र नित्यं प्रवहती गोमती नाम निम्नगा ।।१४।।

काशी, गया, प्रयाग, गङ्गा, गोदावरी, महातीर्थ रामेश्वर, पुष्पित कमलों से सुशोभित पुष्कर तीर्थ आदि सभी तीर्थ नैमिषारण्य क्षेत्र में सर्वदा विद्यमान रहते हैं। हे ऋषीश्वरों ! नैमिषारण्य क्षेत्र में गोमती नदी बहती है, उस क्षेत्र को वह कभी नहीं छोड़ती है।

सर्वपाप-क्षयकरी सर्व-श्रेयो विधायिनी।
सर्वाभीष्ट-प्रदात्री च सर्व-सिन्धूत्तमोत्तमा ।।१५।।
देव-दानव-गन्धर्वैः स्नानार्थं समुपागतैः।
देवीभिरप्सरोभिश्च सेव्यमाना समन्ततः ।।१६।।
हंस-कारण्डवाकीर्णा जलकुक्कुट-शोभिता।
यस्यां स्नात्वा नरः सद्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१७।।

हे ऋषीश्वरों ! संपूर्ण नदियों में उत्तम गोमती नदी संपूर्ण पापों को नष्ट करने में समर्थ हैं, संपूर्ण ऐश्वर्य बढाती हैं, मनोकामनायें पूर्ण करती हैं। अतएव स्नान के लिए आये हुए देवी देवता दानव गन्धर्व अप्सरा आदि की विशेष भीड़ रहती है। हंस कारण्डव जल-कुक्कुट आदि पक्षियों से सुशोभित गोमती नदी में स्नान कर के मानवगण संपूर्ण पापों से मुक्त हो जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्र दिव्यं महापुण्यं चक्रतीर्थमनुत्तमम् ।
यस्य दर्शनमात्रेण सर्वपापक्षयो भवेत् ।।१८।।
तत्र स्नानादिकं कृत्वा सन्तर्प्य पितृदेवताः ।
भोजयित्वा द्विजान् मर्त्यो भुक्तिं मुक्तिञ्च विन्दति ।।१९।।

हे ऋषीश्वरों ! गोमती के तटवर्ती नैमिषारण्य क्षेत्र में अति पवित्र, अति पुण्यदायक, अति उत्तम, दिव्य-चक्रतीर्थ है, जिसके दर्शन मात्र से भी संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं । जो मनुष्य चक्रतीर्थ में स्नान करके तर्पण पिण्ड पूजा पाठ आदि से पितृ और देवताओं को सन्तुष्ट कर द्विजों को भोजनादि से तृप्त करवा है, वह मनुष्य भुक्ति और मुक्ति प्राप्त करता है ।

अन्यश्च तस्य माहात्म्यमद्भुतं परिदृश्यते ।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि तीर्थानि नैमिषे ।।२०।।
नैमिषे यानि तीर्थानि तान्येव धरणीतले ।
तस्मात् सर्वोत्तमं क्षेत्रं सर्व-तीर्थ-समन्वितम् ।।२१।।

नैमिषारण्य के अनेक आश्चर्य जनक माहात्म्य हैं । पृथिवी में जितने तीर्थ और क्षेत्र हैं, वे सब नैमिषारण्य में हैं । नैमिषारण्य में जितने तीर्थ और क्षेत्र हैं, संपूर्ण पृथिवी में उतने ही तीर्थ और क्षेत्र हैं । अतः सभी तीर्थों और क्षेत्रों से युक्त नैमिषारण्य क्षेत्र पुण्य क्षेत्रों में सर्वोत्तम क्षेत्र है ।

अथान्यत्तस्य माहात्म्यं प्रवक्षाम्युत्तमोत्तमम् ।
सद्वितीयानि सर्वाणि क्षेत्राणि धरणी-तले ।।२२।
अद्वितीयमिदं त्वेकं नैमिषारण्य-संज्ञकम् ।
सर्वाणि चैव तीर्थानि सद्वितीयानि सर्वतः ।।२३।।

हे ऋषीश्वरों ! और भी अति उत्तम नैमिषारण्य का माहात्म्य है, मैं सुनाता हूँ, आप सब सुनें ! पृथ्वी तल में जितने क्षेत्र हैं, वे सब सद्वितीय हैं । नैमिषारण्य ही एक ऐसा क्षेत्र है, जो अद्वितीय है । अर्थात् वे जोड़ का है । और पृथिवी तल में जितने तीर्थ हैं, वे सब सद्वितीय हैं । चक्रतीर्थ ही एक ऐसा है जो अद्वितीय है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथान्यत्तस्य माहात्म्यं ब्रह्मणा कथितं पुरा ।
पुरा स्वयंभूर्भगवान् पद्मयोनि पितामहः ॥२४॥
सृष्ट्वा मनोमयं चक्रमिदं प्रोवाच धर्मवित् ।
एतन्मनोमयं चक्रमथेदानीं विसृज्यते ॥२५॥

हे ऋषीश्वरों ! उस क्षेत्र का और एक आश्चर्य जनक माहात्म्य है । उस क्षेत्र का नैमिषारण्य नाम पड़ने का कारण सुनें ! इस उपाख्यान को सब से पहले ब्रह्मा जी ने ही सुनाया था । हे ऋषीश्वरों ! पहले किसी समय ब्रह्म-लोक में जा कर ऋषियों ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना करते हुए कहा कि हे पिता-मह ! हे कमलासन ! हे स्वयंभू ! पृथिवीतल में तपस्या करने के लिए योग्य भूमि कहाँ है ? इस प्रकार प्रश्न करने पर धर्म को जानने वाले ब्रह्मा जी ने एक मनोमय चक्र को सृष्टि कर के कहा, हे ऋषियों ! अब यह चक्र छोड़ा जा रहा है ।

यत्रास्य शीर्यते नेमिः स देशस्तपसः शुभः ।
इत्युक्त्वा तु महातेजाश्चक्रं तञ्च मनोमयम् ॥२६॥
विससर्ज स देवेशः पृथिव्यां चतुराननः ।
ततस्तन्मानसं चक्रं परिबभ्राम भूतले ॥२७॥
न कुत्राप्यस्य चक्रस्य तदा नेमिर्व्यशीर्य्यत ।
एवं परिभ्रमच्चक्रमार्य्याऽऽवर्तमुपागतम् ॥२८॥

इस चक्र का नेमि (वेग) जहाँ रुक जायगा, वही देश तपस्या करने के लिए हर तरह से शुभ है । इतना कह कर महातेजस्वी उस चक्र को देवताओं के ईश्वर चतुर्मुख ब्रह्मा जी ने पृथिवी तल में छोड़ दिया । इस तरह से छोड़ा गया वह चक्र पृथिवी तल में घूमता हुआ दौड़ने लगा । अनेक स्थानों में भ्रमण करने पर भी उस चक्र का वेग कहीं नहीं रुका । घूमते-घूमते आर्यावर्त देश में आ पहुँचा ।

आर्यावर्ते महापुण्ये हिमाचल-समीपतः ।
गङ्गाया उत्तरे तीरे ब्रह्मावर्तस्य पूर्वतः ॥२९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चत्वारिंशत्क्रोश-दूरे तस्य नेमिर्व्यशीर्यत ।
ततस्तत्रापतच्चक्रं मानसं ब्रह्म-निर्मितम् ।।३०।।

महा पवित्र पुण्य दायक आर्यावर्त देश में आ पहुँचने पर, हिमालय पर्वत-र ज के समीप, गङ्गा नदी के उत्तर तीर में, ब्रह्मावर्त देश से पूरव की ओर चालीस कोश की दूरी पर वेग समाप्त हो जाने से ब्रह्मा जी द्वारा विसर्जित वह मनोमय चक्र रुक गया ।

ततः प्रभृति तत् क्षेत्रं विख्यातं नैमिषं त्विति ।
ततस्तन्नैमिषं क्षेत्रं क्षेत्राणामुत्तमोत्तमम ।।३१।।
यस्मिन् स्थानेऽपतत् चक्रं तच्च तीर्थमभून्महत् ।
चक्रतीर्थमिति ख्यातं त्रैलोक्येनापि पूजितम् ।।३२।।

उसी दिन से उस क्षेत्र का नाम नैमिपारण्य पड़ गया । नेमि कहते हैं चक्र के धार (वेग) को, और अरण्य कहते हैं वन को, उस स्थान पर पहले वन था, चक्र का वेग वहीं रुका, अतः नैमिषारण्य नाम पड़ा । ब्रह्मा जी द्वारा विसर्जित वह मनोमय चक्र वहाँ रुक जाने से वह क्षेत्र भी संपूर्ण पवित्र पुण्य क्षेत्रों में सर्वोत्तम हो गया । जिस स्थान पर वह चक्र रुका, वह स्थान भी तीनों लोक द्वारा पूज्य, चक्रतीर्थ नाम से पृथ्वी तल में विख्यात हो गया ।

तस्मिंस्तीर्थे नरः स्नात्वा चक्रपाणि-समो भवेत् ।
पितॄन्सन्तर्प्य विधिवद् विष्णुलोकं पितॄन्नयेत् ।।३३।।

उस तीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य चक्रपाणि विष्णु तुल्य हो जाता है । विधि पूर्वक स्नान आदि कर के पितृयों को तर्पण-पिण्ड-दान आदि दे कर मनुष्य गण अपने-अपने पितृयों को विष्णुलोक पहुँचाते हैं ।

तत्-पश्चिमे महापुण्या नदी गोदावरी स्थिता ।
तस्यां स्नात्वा नरः सद्यो गोहत्याया विमुच्यते ।।३४।।

उस चक्रतीर्थ से पश्चिम गोदावरी नाम की पुण्य नदी बहती है । उस नदी में स्नान कर के मनुष्य गण गोहत्या से तत्काल छूट जाते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एवं भूतं महाक्षेत्रं नैमिषारण्यमुत्तमम् ।
तद् ब्रह्मभवनं प्रख्यं ब्रह्मर्षिगण-संकुलम् ॥३५॥
राजर्षिभिश्च बहुभिः समन्तात् परिसेवितम् ।
अन्यैश्चैव महाभागैस्तापसैरुपशोभितम् ॥३६॥

हे ऋषीश्वरों ! उक्त प्रकार का नैमिषारण्य क्षेत्र अति उत्तम है । जिस नैमिषारण्य क्षेत्र में आज हम सब एकत्रित हो कर कथा वार्ता प्रवचन कर रहे हैं, वह नैमिषारण्य क्षेत्र सविख्यात ब्रह्मभवन (ब्रह्म-लोक) ही है । तब भी था अब भी है, तपस्या में संलग्न ब्रह्मर्षि राजर्षि आदियों से क्षेत्र भरा हुआ है । इस क्षेत्र में और भी अनेक प्रकार के तपस्वी आवास करते हैं, उनके नामों को आप सब सुनें, मैं सुनाता हूँ ।

जलेशयैर्महाभागैस्तथा स्थण्डिल-शायिभिः ।
अब्भक्षैर्वायुभक्षैश्च शीर्णपर्णाशनैस्तथा ॥३७॥
वैखानसैर्बालखिल्यैस्तथा चौदुम्बरैः परैः ।
मरीचिपैः फेनपैश्च तथैवाभ्रावकाशिभिः ॥३८॥
निराहारैश्च मुनिभिः कर्षयद्भिर्निजं वपुः ।
त्रिरात्रान्त-कृताहारैः पञ्चरात्रान्तराशिभिः ॥३९॥
सप्तरात्राऽकृताऽऽहारैर्दश-रात्रान्तराशिभिः ।
कृच्छ्र-चान्द्रायण-परैस्तथा सान्तपनादिभिः ॥४०॥
एवं - विधैर्महाभागैस्तापसैरुपशोभितम् ।
स्वात्मानुसन्धान-परैर्ब्रह्मिष्ठैश्च निसेवितम् ॥४१॥

महा भाग्य-शाली उन तपस्वियों में से कोई पानी में मैं सो कर तप करते थे, तो कोई पृथिवी में सो कर । कोई पानी मात्र पी कर तप करते थे, तो कोई हवा मात्र पी कर, कोई सूख कर गिरे हुए पत्तों को ही खा कर तप करते थे । कोई वैखानस वृत्ति में थे, तो कोई बालखिल्य वृत्ति के थे । कोई औदुम्बर वृत्ति के थे । कोई सूर्य के किरणों को पी कर तप करते थे, तो कोई पानी का फेन मात्र पी कर तप करते थे । कोई वर्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के जलबिन्दुओं को पी कर ही तप करते थे। अनेक तपस्वी गण अपने शरीर को सुखा कर विना खाए पीए ही तपस्या में लगे हुए थे। उनमें से कोई तीन दिन में एक दिन थोड़ा सा खाकर तप करते थे, तो कोई पाँच दिन में एक दिन थोड़ा सा खा कर। कोई सात रात के बाद एक बार थोड़ा सा खा कर तप करते थे, तो कोई दश रात के बाद एक बार थोड़ा-सा खा कर तपस्या में संलग्न थे। कोई पूर्णिमा के दिन चन्द्र दर्शन कर के थोड़ा-सा एक बार खा कर कृच्छ्र चान्द्रायण व्रत करते थे, तो कोई सान्तपन व्रत करते थे। इस तरह से आत्मा और परमात्मा के अनुसन्धान में लगे हुए ब्रह्मर्षि, राजर्षि, तपस्वियों से भरा हुआ नैमिषारण्य क्षेत्र है।

अष्टाङ्ग-योग-निरतैः प्राणायाम-परायणैः।
प्रत्याहार-परैरन्यैर्धारणा-ध्यान-तत्परैः ॥४२॥

तथा समाधिनिष्ठैश्च योगीन्द्रैरुपशोभितम्।
एवं भूतं महाक्षेत्रं कैलासमिव निर्मितम् ॥४३॥

हे ऋषीश्वरों! आत्मा और परमात्मा के अनुसन्धान में लगे हुए वे तपस्वी यतिगण में से कोई अष्टाङ्ग योग द्वारा आत्मा और परमात्मा का अनुशीलन करते थे, तो कोई प्राणयाम द्वारा करते थे। कोई प्रत्याहार द्वारा अनुशीलन करते थे, तो कोई ध्यान से। कोई धारणा से आत्मा और परमात्मा को खोजते थे, तो कोई समाधि द्वारा ही अनुशीलन करते थे। इस तरह से वह नैमिषारण्य क्षेत्र, योगेश्वरों के भी ईश्वर भगवान् शिव का भवन कैलाश तुल्य है।

यत्र साक्षात् भगवता श्रीरामेण महात्मना।
अयोध्यायाः समागत्य काञ्चन्या सीतया सह ॥४४॥
महर्षिभिर्वशिष्ठाद्यैर्भ्रातृभिर्लक्ष्मणादिभिः।
समेतेन महापुण्यं वाजिमेध-शतं कृतम् ॥४५॥

हे ऋषीश्वरों! उसी नैमिषारय क्षेत्र में साक्षात् भगवान् रामचन्द्र ने अयोध्या से स्वयं आकर सुवर्णनिर्मित सीता की प्रतिमा को सहधर्मिणी बना-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर, वशिष्ठ आदि महर्षियों तथा भाई भरत, लक्ष्मण, शत्रुघन आदि से युक्त हो कर, महापुण्यदायक अश्वमेध यज्ञ को एक सौ बार संपन्न किया।

यत्र रामायणं काव्यं कृतं वाल्मीकिना महत्।
गीतं कुशलवाभ्यां हि राघवस्योपशृण्वतः ॥४६॥

नैमिषारण्य क्षेत्र में ही ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण महाकाव्य को, ब्रह्मचारी बालक कुश और लव ने, ऋषि मुनि देव देवगण के सामने, भगवान् रामचन्द्र को संगीत बद्ध सस्वर से सुनाया था।

नैतादृशं महाक्षेत्रं क्वचिदस्ति धरातले।
तीर्थयात्रां विचिन्वद्भिर्मनुजैः शुद्धिकामिभिः ॥४७॥
दर्शनीयं महाक्षेत्रं सर्वकल्मषभञ्जनम्।
न यावन्नैमिषं दृष्टं शुद्धिस्तावत् कुतो नृणाम् ॥४८॥

इस तरह का पवित्र क्षेत्र पृथिवीतल में नैमिषारण्य क्षेत्र मात्र है। अतः हे ऋषीश्वरों! तीर्थ यात्रा से अपनी शुद्धि चाहने वाले मनुष्यों को नैमिषारण्य क्षेत्र का दर्शन करना अनिवार्य है। संपूर्ण पापों को विनाश करने में समर्थ नैमिषारण्य क्षेत्र को यदि तीर्थयात्री दर्शन नहीं करता है, तो समझें कि उसने किसी भी तीर्थ का दर्शन ही नहीं किया। इसीलिए शुद्धि चाहने वालों को नैमिषारण्य क्षेत्र का दर्शन करना अनिवार्य है। जब तक नैमिषारण्य क्षेत्र का दर्शन नहीं करता है तब तक वह शुद्ध भी नहीं होता है।

तस्मादवश्यं मनुजैः सेवनीयं विचक्षणैः।
अर्थदं धर्मदं नृणां कामदं मोक्षदं तथा ॥४९॥

नैमिषारण्य-गमनं विना पुण्यैर्न लभ्यते।
अनेकजन्म-सुकृतैः सुकृतैर्लभ्यते नरैः ॥५०॥

अतः बुद्धिमान् मनुष्यों को धर्म अर्थ काम मोक्ष स्वरूप चतुर्वग फल देने वाला नैमिषारण्य क्षेत्र का अवश्य दर्शन करना चाहिए। जन्मान्तर के पुण्यों के पुण्य से मात्र नैमिषारण्य क्षेत्र का दर्शन हो पाता है। विना पुण्य नैमिषारण्य क्षेत्र का दर्शन दुर्लभ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यथा समुद्रः सर्वेषां तीर्थानामाकरो महान् ।
तथा तन्नैमिषारण्यं सर्वतीर्थास्पदं विदुः ॥५१॥

जैसे संपूर्ण नदियों का तीर्थ स्वरूप भण्डार समुद्र है, वैसे ही संपूर्ण तीर्थों का आधार नैमिषारण्य क्षेत्र है, ऐसा समझना चाहिए ।

गण्यन्ते पांशवो भूमौ गण्यन्ते दिवि तारकाः ।
नैमिषारण्य-माहात्म्यं शेषेणापि न गण्यते ॥५२॥

पृथिवी के धूलिकण गिने जा सकते हैं, और आकाश के तारे भी गिने जा सकते हैं, किन्तु नैमिषारण्य क्षेत्र का माहात्म्य को शेष नाग जी भी नहीं गिन पाते हैं ।

सेवनीयं सेवनीयं सेवनीयं बुधैः सदा ।
सेवया नैमिषस्यास्य सर्व-तीर्थ-फलं भवेत् ॥५३॥

अतः सज्जन बुद्धिमान् मनुष्यों के द्वारा तीनों काल तीनों समय नैमिषारण्य क्षेत्र का दर्शन दान स्नान आदि से सेवा करना अति उत्तम है । एकमात्र नैमिषारण्य-तीर्थ कर लेने से सभी तीर्थों का फल मिल जाता है ।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यें
लक्ष्मीललितटीकायां नैमिषारण्यमाहात्म्य-कथनं नाम
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

तस्मिन् पुण्ये महाक्षेत्रे नैमिषे निमिषाश्रये ।
महर्षयः शौनकाद्या न्यवसन्नूर्ध्वरेतसः ॥१॥

हे ऋषीश्वरों ! नेमि गिरने से निमिष द्वारा आश्रित पवित्र पुण्यदायक उस नैमिषारण्य महा क्षेत्र में नैष्ठिक रूप से ब्रह्मचर्य को पालन करने वाले अठासी हजार शौनकादि महर्षि गण निवास करते थे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेद-वेदाङ्ग-तत्त्वज्ञा वेदान्तार्थ-विशारदाः ।
योगशास्त्रेषु निपुणाः साङ्ख्यशास्त्र-विशारदाः ॥२॥
कर्मकाण्डेषु निपुणास्तदनुष्ठान-तत्पराः ।
मन्त्रशास्त्र-रहस्यज्ञाः सर्व-तन्त्रेषु कोविदाः ॥३॥
शैवागमाचार-विदः शास्त्रागम-विशारदाः ।
वैष्णवागम-तत्त्वज्ञा गाणपत्यादि कोविदाः ॥४॥
शाम्भवाग्रेसराः सर्वे शाम्भवाचार-तत्पराः ।
कुलाचार-विदः सर्वे समयाचार-वेदिनः ॥५॥
इहामुत्रार्थ-भोगेषु विरक्ता विगतैषणाः ।
ईश्वरार्पण-बुध्या च कर्म कुर्वन्ति केवलम् ॥६॥

हे ऋषीश्वरों ! नैमिषारण्य निवासी अठासी हजार शौनकादि ऋषियों में कैसे कैसे कर्मिष्ठ, विद्वान् तथा तपस्वी थे ? संक्षेप में मैं सुनाता हूँ, सुनिए।

कतिपय तपस्वी वेद-वेदाङ्गों के तत्त्वज्ञाता थे, तो कतिपय वेदान्त शास्त्रों के अर्थ ज्ञान में महा विद्वान् थे। कोई योगशास्त्र में निपुण थे, तो कोई सांख्य शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् थे। कोई कर्मकाण्ड विधान में पारङ्गत थे, तो कोई कर्म करने में निपुण थे। कोई मन्त्रशास्त्रों के रहस्यों को जानने वाले थे, तो कोई संपूर्ण तन्त्रशास्त्रों के विद्वान् थे। कतिपय शैव आगम शास्त्रों के रहस्यों को जानने वाले थे, तो कतिपय वैष्णव आगम शास्त्र के महा विद्वान् थे। शिव मार्ग के आचरणों में सब के सब तत्पर थे। हे ऋषीश्वरों ! ये ऋषि विद्वान् मात्र न हो कर कर्मठ विद्वानों में से थे। सामाजिक व्यवहारों में भी दक्ष थे। कुलाचारों को वे जानते थे, और पालन भी करते थे। समयोचित आचार विचार व्यवहार आदि में वे सब निपुण थे। वे महात्मा इस जन्म और पुनर्जन्म में भी फलों की आशाओं को छोड़ कर सभी कर्म करते थे। सब के सब विरक्त थे। किसी भी वस्तुओं में आसक्त नहीं होते थे। ईश्वर को अर्पण करके "ईश्वरार्पणमस्तु" कह कर सब काम करते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वात्मध्यान-पराः सर्वे जीवन्मुक्ता जितेन्द्रियाः ।
स्वात्मानन्दमृताम्भोधि-लहरी-शिशिरान्तराः ॥७॥
शङ्काकलङ्क-रहिता मल-त्रय-विवर्जिताः ।
पाशाऽष्टक-विनिर्मुक्ता पाखण्ड-मत-खण्डिनः ॥८॥
वर्णाश्रमाचाररताः श्रौत-स्मार्त-क्रिया-पराः ।
सर्व-शास्त्रार्थतत्त्वज्ञाः सदाचार-परायणाः ॥९॥
इतिहास-पुराणानामभिज्ञः सारवेदिनः ।
प्रसन्न-वदनाम्भोजाः सदा मुदित-मानसाः ॥१०॥
शिवध्यानपराः सर्वे शिवभक्ति-परायणाः ।
शिवपूजासु निरतास्त्रिकालं नियतेन्द्रियाः ॥११॥
शिवभक्तेष्वतिप्रीताः शिवनाम-परायणाः ।
शिवाद्यवनि-पर्यन्त-जगत्स्थवर-जङ्गमम् ॥११॥
शिवात्मकं तपः स्वान्ते ध्यायन्तः शान्तसंशयाः ।
शरीर-यात्रा-मात्रार्था दृष्टादृष्टार्थ-सञ्चये ॥१३॥
सर्वज्ञाः सर्व-वेत्तारः सर्वत्राकुण्ठ-मेधसः ।
तेषामविदितं किञ्चिन्नास्ति लोकत्रये क्वचित् ॥१४॥

हे ऋषीश्वरों ! नैमिषारण्य निवासी शौनकादि ऋषि के सभी ऋषि आत्मचिन्तन, मनन, ध्यान आदि में लगे हुए थे । जीवन-मुक्ति अवस्था को प्राप्त हो चुके थे । सभी जितेन्द्रिय थे । सभी आत्मचिन्तन में लगे हुए थे, और उस चिन्तन के सहारे अमृतमय आनन्द लहरी की तरङ्गों का अनुभव किया करते थे । अतएव मन वचन कर्म से भी (मल-त्रय) रहित निष्पाप थे । आठ प्रकार के पाश—काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य लज्जा घृणा से शून्य थे । सामाजिक-नैतिकता-विरोधी पाखण्ड मतों को खण्डन करने में सभी समर्थ थे । वर्णाश्रम धर्म के आचार मर्यादा आदि पालन करने में सभी संलग्न थे । श्रौत तथा स्मार्त विधानों के कर्मकाण्ड क्रियाओं में सभी तत्पर थे । संपूर्ण शास्त्रों के अर्थ जानने वाले, सदाचार को पालन करने वाले वे सभी ऋषि इतिहास और पुराणों के ज्ञाता थे । शास्त्रों का मथन करके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्त्व वस्तु को प्रचार प्रसार करने में सभी समर्थ थे। सदा प्रसन्न रहते थे, अतएव उनकी मुखकान्ति विकसित कमल की सी थी। जितेन्द्रिय वे ऋषि तीनों समय भक्ति पूर्वक भगवान् शंकर की आराधना, पूजा पाठ जप तप कीर्तन ध्यान चिन्तन मनन श्रवण आदि किया करते थे। शिव भक्तों को देखकर प्रसन्न होते थे। शिव नाम जपते थे। मूल-शिवतत्व से पृथिवी स्थित स्थावर जङ्गम जगत् सभी को शिव स्वरूप ही देखने वाले वे ऋषि, संशय रहित शान्त हो कर तपस्या में संलग्न थे। शरीर यात्रा के लिए मात्र धन वस्त्र आदिका सञ्चय करते थे। इस तरह से शरीर को बचा कर अदृष्ट पुण्य साधन में लगे हुए वे ऋषि, सब के सब सर्वज्ञ थे, सब जानते थे। किसी भी विषय में किसी भी समय पर उन की बुद्धि कुण्ठित नहीं होती थी। उन ऋषियों से छिपी हुई वस्तु कहीं कुछ भी नहीं है।

हुताग्नि-हेति-सदृशाश्चण्डरुक् - चण्डतेजसः।
बहिरन्तर्गतं ध्वान्तं हरन्तः स्वेन तेजसा ॥१५॥
निरामया निरातङ्का निष्कलंका निराश्रयाः।
निरावरण-विज्ञाना नित्यमुक्ता निराकुलाः ॥१६॥
नियताहारनिरताः प्रतिग्रह-विवर्जिताः।
यथालब्धेन सन्तुष्टा हर्षामर्ष-विवर्जिताः ॥१७॥
ब्रह्मोपमा महात्मानो भृग्वङ्गिरस-वंशजाः।
अथर्वण-रहस्यज्ञास्तत्प्रयोग-विशारदाः ॥१८॥
एवं भूता महात्मानो मुनयः शौनकादयः।
सहस्र-वार्षिकं सत्रमारभन्त धृतव्रताः ॥१९॥

हे ऋषीश्वरों ! वे ऋषिगण ऐसे तेजस्वी थे कि मानों हवन की गई अग्नि-ज्वालायें हों। जलती हुई अग्निशिखा के समान आकृति एवं प्रभाव संपन्न होने से भीतरी और बाहरी अन्धकार को अपने-अपने तेज से ही हटाते थे। निरोगी थे। आतङ्क रहित थे। कलङ्क लाञ्छना आदि पाप रहित थे। कहीं कुटी आदि आश्रम बनाकर नहीं बैठते थे। विज्ञान के विषय को रुकावट रहित स्पष्ट रूप से जानते थे। उन्हें नित्यमुक्ति प्राप्त हो चुकी थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हार्दिक आकुलता, व्याकुलता आदि से रहित थे। नियत आहार करते थे। प्रतिग्रह स्वरूप किसीका दान नहीं लेते थे। जो कुछ मिला, जैसा मिला उसी में सन्तुष्ट रहते थे। हर्ष और ईर्ष्यारूप जलन रहित थे। ब्रह्मोपमेय वे महात्मा भृगु अङ्गिरस आदि ऋषियों के पवित्र वंश में उत्पन्न हुए थे। अथर्व वेद का रहस्य को जान कर उनके प्रयोगों में विशेषज्ञ थे। ऐसे वे शौनकादि अठासी हजार महात्मा ऋषि मुनि उस नैमिषारण्य क्षेत्र में एकत्रित होकर एक हजार वर्ष तक चलने वाला यज्ञ को आरम्भ करने के लिए व्यस्तता वरत रहे थे।

तस्मिन् सत्रे महात्मानः प्रातः-सवन-पूर्वकम्।
कर्म कुर्वन्ति विधिवद्यथाशास्त्रं विचक्षणाः ॥२०॥

हे ऋषीश्वरों! वह यज्ञ कुछ दिन पूर्व आरम्भ हो चुका था। अतएव प्रतिदिन सबेरे का नित्यकृत्य के वाद कर्म करने में दक्ष वे ऋषिगण, शास्त्रों द्वारा निर्देशित विधि पूर्वक नाना याज्ञिक कर्म किया करते थे। उनमें से एक विद्वान् ऋषि कथा-प्रवचन स्वरूप यज्ञ को भी प्रारम्भ किया करते थे।

ते कदाचिन्महात्मानः प्रातर्हुत-हुताशनाः।
उपविष्टाः कथाश्चक्रुरितिहास-पुराणजाः ॥२१॥
महाभागेषु तेष्वेकं कुर्वाणेषु कथाः शुभाः।
यदृच्छयाऽऽगतस्तत्र सूतः पौराणिकोत्तमः ॥२२॥

अतएव हे ऋषीश्वरों वे महात्मा सभी दिन प्रातःकालीन नित्यकृत्य कर्म के वाद, हवन आदि समाप्त करके सभी एकत्रित हो, बैठ कर आनन्द पूर्वक इतिहास और पुराण आदि के शिक्षा-प्रद मनोरम कथाओं को सुना करते थे। एक दिन ठीक कथा के समय में अपनी इच्छा से ही भ्रमण करते हुए कहीं से उक्त नैमिषारण्य क्षेत्र में कृष्णद्वैपायन व्यासजी के शिष्य, सभी पौराणिकों में श्रेष्ठ श्री सूत जी भी उस यज्ञ में पधारे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अष्टादश-पुराणानामभिज्ञः सर्वशास्त्र-वित् ।
व्यासशिष्यो महाप्राज्ञः सर्वपौराणिकोत्तमः ।।२३।।
तमागतं समालोक्य सर्वे ते मुनिपुङ्गवाः ।
प्रहर्षमुदितात्मानः पूजयामासुरादरात् ।।२४।।

सूत जी कृष्ण द्वैपायन व्यास जी के शिष्य थे, अतएव अठारों पुराण के ज्ञाता थे, संपूर्ण पौराणिकों में श्रेष्ठ थे, संपूर्ण शास्त्रों को जानते थे, ऐसे महा बुद्धिमान् उन सूतजी को आते हुए देखकर वे सभी शौनकादि ऋषि गण के ऋषि, अति हर्षित होकर उनका आदर सत्कार पूजा के लिए व्यस्त हो गए ।

पूजयित्वा यथान्याय्यमर्घ्यपाद्यासनादिभिः ।
प्रशशंसुः प्रसन्नाभिर्वाग्भिः प्रीतिपुरःसरम् ।।२५।।

पाद प्रक्षालन, शीतल सुगन्धि पेय जल का प्रदान, मुख हाथ धोने का जल, बैठने के लिए आसन आदि प्रदान करते हुए यथायोग्य सूत जी की पूजा सत्कार कर लेने के बाद, प्रेम पूर्वक प्रसन्न वाणी से, कुशल मंगल के प्रश्नों के साथ शौनकादि ऋषियों ने सूत जी की प्रशंसा की ।

ततः समुपविष्टं तमासने तापसोचिते ।
पप्रच्छुर्मुदितात्मानः सूतं सर्वार्थपारगम् ।।२६।।

सर्वार्थविद् सर्ववेत्ता सर्वज्ञ महाविद्वान् वे सूतजी भी तपस्वी जनों के लिए उचित आसन पर विराजमान हो जाने के बाद, नैमिषारण्य निवासी सहस्र वार्षिक यज्ञ में दीक्षित शौनकादि ऋषियों ने अत्यन्त हर्षित होकर उन से विनय पूर्वक प्रश्न किया ।

मुनय ऊचुः

सूत ! सूत! महाभाग ! सर्वपौराणिकोत्तम ! ।
व्यासशिष्य ! महाभाग ! सर्वशास्त्रविशरद ! ।।२७।।
त्वया खलु पुराणानि सेतिहासानि सर्वशः ।
अधीतानि महाभाग ! वेदव्यासान्महात्मनः ।।२८।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आख्यातानि च सर्वाणि मुनीनामग्रतोऽसकृत् ।
अस्माभिरपि ते वक्त्राद्वारं वारं श्रुतानि च ॥२९॥

मुनि गण कहते हैं—

महा भाग्यशाली हे सूत ! हे सर्व पौराणिकोत्तम ! हे सर्वशास्त्र विशारद ! महाभाग श्रीकृष्ण द्वैपायन वेदव्यास जी के शिष्य ! हे सूत जी !

आपने कृष्ण द्वैपायन व्यास जी के मुखारविन्द से संपूर्ण पुराण और इतिहासों का समग्र अध्ययन किया है, अध्ययन के बाद मनन भी किया है। इस बात को हम सब जानते हैं, क्योंकि आपने अनेक वार मुनियों के समक्ष पुराण-इतिहास आदि का प्रवचन किया है। हम लोगों ने भी आपके मुखारविन्द से अनेक प्रवचन सुने हैं।

क्षेत्राणि चैव तीर्थानि यानि सन्ति महीतले ।
श्रुतानि तानि सर्वाणि तव वक्त्रान् महामते ! ॥३०॥
सर्वेषामपि तीर्थानां क्षेत्राणाञ्च विशेषतः ।
माहात्म्यं तत्फलञ्चापि त्वत्त एव श्रुतं पुरा ॥३१॥

हे महामति सूत जी ! पृथिवीतल में जितने भी पुण्यदायक पवित्र तीर्थस्थान एवं क्षेत्र हैं, उन सब के माहात्म्य और माहात्म्यजन्य फलों को आपके ही मुखारविन्द से हम लोगों ने पहले ही सुन लिया है।

रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यं तद्दर्शनफलं तथा ।
भवता नैव कथितं नास्माभिरपि तच्छ्रुतम् ॥३२॥
भवता विस्मृतं किं तज्ज्ञात्वा वा समुपेक्षितम् ।
अस्माकमपि वा श्रोतुं योग्यता नास्ति किं वद ? ॥३३॥

किन्तु, हे सूत जी ! आपने रुद्राक्षारण्य माहात्म्य और उसके दर्शन से प्राप्तव्य फलों को नहीं सुनाया। अतएव हम सब उसे नहीं सुन पाये हैं। आपका न सुनाने में कारण, या तो उस विषय को आप एकदम भूल गए" अथवा जानकर ही आपने उपेक्षा कर दी, अथवा हम लोगों में उसे सुनने की योग्यता ही नहीं है ? आप क्यों रुद्राक्षारण्य को भूल गए, कारण बताइए ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किमर्थं भवता नोक्तं तत्र कारणमुच्यताम् ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामो रुद्राक्षारण्य-संश्रयम् ॥३४॥
माहात्म्यं तत्फलं चापि तन्नस्त्वं वक्तुमर्हसि ।
रहस्यमपि भक्तेषु महान्तः कथयन्ति हि ॥३५॥

हे सूत जी ! रुद्राक्षारण्य माहात्म्य हम लोगों को न सुनाने में आप का क्या कारण है, बताइए ? इस समय हम सब रुद्राक्षारण्य माहात्म्य विषयक चर्चा श्रवण करना चाहते हैं। रुद्राक्षारण्य माहात्म्य श्रवण-जन्य फल एवं रुद्राक्ष-महिमा, रुद्राक्षारण्य के दर्शनीय स्थल सहित, हम लोगों के अनुरोध में रुद्राक्षरण्य माहात्म्य सुनाना आप को योग्य है। यदि रुद्राक्षारण्य माहात्म्य अत्यन्त गोपनीय है, तो भी अपने भक्तों के अनुरोध में महात्मा सज्जन गोप्यतर वस्तुओं को भी सुनाते ही हैं।

इति पृष्टस्तदा सूतः शौनकादिभिरादरात् ।
किञ्चित् प्रहस्य सानन्दं प्रत्युवाच महामुनिः ॥३६॥

इस तरह शौनकादि ऋषियों के द्वारा पूछे गए वे महामुनि सूत जी भी आनन्दपूर्वक कुछ हँसकर प्रत्युत्तर (प्रश्नों का उत्तर) देने लगे।

सूत उवाच—

साधु पृष्टं महाभाग ! भवद्भिः सारवेदिभिः ।
रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥३७॥

सूत जी कहते हैं,—

सार रहित इस असार संसार में सार वस्तु क्या है, उसको पहचानने वाले हे महा भाग्यशाली ऋषीश्वरों ! आप लोगों ने अच्छे प्रश्न के उपक्रम से पूछा है। वास्तविक कहा जाय तो आप लोगों ने जो रुद्राक्षारण्य के विषय में पूछा है, वह तीनों लोक के लिए दुर्लभ है।

रहस्यमिति नोक्तं मे भवतामग्रतः पुरा ।
भवद्भिश्चापि न पृष्टं तस्मात्तन्नोदितं मया ॥३८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ऋषीश्वरों ! रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की चर्चा रहस्य की बात थी। इसीलिए मैंने आप लोगों को कहीं नहीं सुनाया। उक्त विषय में आप लोगों ने भी नहीं पूछा। अतएव रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को मैंने नहीं सुनाया। न सुनाने में कारण यही है।

नापृष्टं किञ्चन ब्रूयादिति लोकेषु विश्रुतम्।
इदानीं यदहं पृष्टो भवद्भिर्भक्तिभावतः ॥३९॥
तदिदानीमहं वक्ष्ये भवतां श्रोतुमिच्छताम्।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं गोप्याद् गोप्यतरं महत् ॥४०॥

हे ऋषीश्वरों ! विना पूछे नहीं बोलना इत्यादि कहावत इस संसार में विशेष प्रचलित है। इस समय रुद्राक्षारण्य के विषय में आप लोगों ने पूछा है। अतः रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को मैं सुनाता हूँ। किन्तु रुद्राक्षारण्य माहात्म्य गोपनीय वस्तुओं में भी अत्यन्त गोप्यतर वस्तु है, इस बात को आप सब समझ लें।

एवमेव पुरा प्रश्नः पार्वत्या शङ्करं प्रति।
कृतो लोकहितार्थाय[1] भवद्भिस्तु यथा कृतः ॥४१॥

प्राचीन समय में भगवान् शंकर को भगवती पार्वती ने संसार के हित के लिए इसी प्रकार से यही प्रश्न किया था। ठीक उसी प्रकार से संसार के हित के लिए आप लोगों ने मुझसे प्रश्न किया।

तदहं वः प्रवक्षामि देवी-प्रश्नानुसारतः।
सावधानेन मनसा श्रुणुध्वं मुनि-पुङ्गवाः ! ॥४२॥

---

१. 'लोकहितार्थाय' भगवती पार्वती का भगवान् शंकर प्रति लोकहित के लिए प्रश्न था। सत्य है--महौषधि रुद्राक्ष का गुण जानकर मानव यदि रुद्राक्ष को प्रयोग में ला सके तो, अवश्य लोकहित होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ऋषीश्वरों ! भगवान् शंकर प्रति भगवती पार्वती ने जो रुद्राक्षारण्य विषय का प्रश्न किया उसी प्रकार के प्रश्नोत्तरों के क्रम से मैं आप सब को सुनाता हूँ, सावधान होकर शान्ति के साथ आप सब सुनें ।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्यमाहात्म्ये
लक्ष्मी-ललितटीकायां सूत-शौनकसमागमो नाम
द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

सूत उवाच—

कैलास-शिखरे रम्ये योजनायुतमुच्छ्रिते ।
तावद्योजन-विस्तीर्णे चतुरस्रोपशोभिते ॥१॥

रुद्राक्षारण्य-माहात्म्य सुनाने के उपक्रम में, 'भगवान् शिव का आवास (धाम) कैलाश हिमालय है, कैलाश धाम में रत्न सिंहासन में विराजमान भगवान् शिव को भगवती देवी पार्वती ने प्रश्न किया इत्यादि कथा सन्दर्भ है ।

सूत जी कहते हैं—

हे ऋषीवश्रों ! कैलाश भवन के रत्न सिंहासन में भगवान् शिव विराजमान थे । आदि युगकी यह पुरानी कथा है । हिमालय शिखर शिव-भवन कैलाश अतिरमणीय था । उस समय वह कैलाश दश हजार योजन की ऊचाई और उतनी ही चौड़ाई एवं चारों कोंण सम होने से अत्यन्त शोभित मनोरम स्थल था ।

राका-शशाङ्क-कोटिश्री-गर्व-निर्वापण-प्रदे ।
मन्थाद्रि-क्षुब्ध-दुग्धाब्धि-डिण्डीरप्रतिमद्युतौ ॥२॥
शारदाम्बुद-सन्दोहस्यद-दायिनि विस्तृते ।
कुन्द-मन्दार-कर्पूर-घनसार-निभ-त्विषि ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तार-हार-सुधा-सार-पाटीर-दर-तेजसि ।
स्वर्धेनु-स्वर्धुनीपूर-शारदा-पारदामले ॥४॥
नीहार-शैल-शिखरे शरत्काश-प्रसूनभे ।
शुद्ध-स्फटिक-शैलेन्द्र-सुरेन्द्र-गज-भास्वरे ॥५॥
धरा-धर-महाभोगी-भोग-रोचिस्सरोचिषि ।
स्वभासा-भासिताशेष-वियदन्त-दिगन्तरे ॥६॥

करोड़ों चन्द्र की चाँदनी की शीतल आलोक से सम्पन्न शोभा को भी लज्जित करने वाली शोभा से सम्पन्न भगवान् शिव का आवास मन्दिर (शिव-भवन) वह कैलाश, समुद्र मन्थन करते समय मन्थन दण्ड के रूप में स्थित मन्दराचल द्वारा मथित होकर उत्थित, क्षीर समुद्र का फेन सा सुशोभित हो रहा था। शरद्कालीन मेघों से बरषते हुए, जलधारा के समान जलप्रपात, धारा, नदी आदियों की सरस शोभा से युक्त वह कैलाश शिखर, कुन्द, पुष्प, कपूर (घनसार) आदि मानों चारों तरफ बिखरे हों, ऐसी सफेद् कान्ति युक्त शोभा से सम्पन्न था। उस कैलाश की छवि उत्तम शंख की सी, मोती की माला की सी, अमृत की सार की सी, चमकदार सफेदियों में से थी। उस कैलाश की पवित्रता और स्वच्छता, कामधेनु की दूध की धाराओं से निर्मित स्वर्गङ्गाके प्रवाह की सी थी। वह हिमालय शिखर कैलाश, शरद-काल में पुष्पित काशपुष्प जैसा दृष्टिगोचर होता था। शुद्ध स्फटिक मणि से निर्मित देवराज इन्द्र का ऐरावत हाथी जैसा वह कैलाश सुशोभित हो रहा था। पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग के शरीर का सा सफेद कान्ति से वह कैलाश जगमगा रहा था। अतएव सत्त्वगुणमय श्वेतिमा सम्पन्न वह कैलाश, अपनी शान्तिमय शीतल सफेद कन्ति से दिशाओं के अन्तरालों को और ऊपर आकाश को भी भावित कर रहा था।

देव-दानव-गन्धर्व-विद्याधर-महोरगैः ।
क्रीडद्भिरप्सरोभिश्च समन्तादुपशोभिते ॥७॥
किन्नरैः किम्पूरुषैश्च गायद्भिः सेविते सदा ।
देवसङ्घैश्च बहुभिः सर्वतः समलङ्कृते ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ऋषीश्वरों ! उक्त प्रकार से वर्णित कैलाश की श्वेतिमा को सुनकर वह कैलाश निर्जन मात्र हिम का पहाड़ है, ऐसा न समझें । कैलाश में देवता थे, दावन थे, गन्धर्व थे, विद्याधर थे, उत्तम नागकुल में उत्पन्न नाग थे। पर्यटन हेतु, क्रीड़ा, मनोरञ्जन, दर्शन के लिए आयी हुई अप्सराओं से भी कैलाश में खचाखच भीड़ थी। विचित्र आकृति के मानव किन्नर किंपूरुष जाति के लोगों का नाँच-गान से कैलाश गूंजता रहता है। देवताओं के सन्तानों से (देवसंघों से) कैलाश अलङ्कृत है ।

मन्दारैः पारिजातैश्च चम्पकाशोकपाटलैः ।
पिचुमन्दैः कोविदारैर्नाग-पुन्नाग-केतकैः ॥९॥
रक्ताशोकैश्च जम्बूभिर्मुचुलिन्दार्जुनासनैः ।
द्राक्षेक्षु-रम्भा-जम्बीरैराम्रैराम्रातकैरपि ॥१०॥
विल्वैश्च सहकारैश्च बकुलैरर्जुनार्जुनैः ।
खर्जुरैर्वीजपूरैश्च चन्दनैः स्यन्दनैरपि ॥११॥
अरिष्ठोदुम्बरप्लक्षैर्वटैः किंशुक-केशरैः ।
रुद्राक्ष-वृक्षैर्बहुभिर्भद्राक्षोद्दालकादिभिः ॥१२॥
सालैस्तमालैस्तालैश्च पनसैः फलसंयुतैः ।
अश्वत्थैश्च महारापैर्नीपैः कुरवकैरपि ॥१३॥
मल्लिकाभिर्माधवीभिर्वासन्तीभिश्च जातिभिः ।
कुटजैः कुन्दगुल्मैश्च करवीरैः सदाडिमैः ॥१४॥
सन्तानैः कल्पवृक्षैश्च सर्वकाम-फलप्रदैः ।
नित्यपुष्पैर्नित्यफलैः सर्वर्तु-गुणसंयुतैः ॥१५॥
मधूकैर्मधुपूरैश्च मातुलुङ्गैश्च चम्पकैः ।
क्रमुकैर्नारिकेलैश्च राजवृक्षैश्च गुग्गुलैः ॥१६॥
भल्लातकैर्दधिफलैस्त्वक्सारैः खदिरैरपि ।
कीचकैर्वेत्रसंघातैः भूर्जपत्रैः सतिन्दुकैः ॥१७॥
अन्यैश्च विविधैर्वृक्षैः पुष्पोपग-फलोपगैः ।
महाशाखैर्महास्कन्धैः सर्वतः समलंकृते ॥१८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ऋषीश्वरों ! हिमालय पर्वत की परिकर भूमि सहित कैलाश को कैलाश वर्णन ने लक्ष्य किया है, इत्यादि बातें आप सब को विशेष ज्ञान होना आवश्यक है। शिव-निवास कैलाश औषधि जड़ी, बूटी, फल, फूल, लता, वृक्ष आदि से अलंकृत था। मन्दार, चाँप, पारिजात, अशोक, पाटल, नीम, कोविदार, नाग, पुन्नाग (केशर), केतकी, उत्तम जात के अशोक, रक्ताशोक, जामुन, मुचुलिन्द, अर्जुन, उत्तम जात के अर्जुन, सतीसाल, दाख, आम, उत्तम जात के आम, बेल, बकुल, खजूर, वीजपूरक, श्रीखण्ड चन्दन, चू रहे चन्दनों के वृक्ष, एवं रीठा, गूलर, प्लक्ष, वट, किंशुक, केशर, उद्दालक, रुद्राक्ष वृक्ष, भद्राक्ष वृक्ष आदि अनेक प्रकार के वृक्षों से शिव-भूमि कैलाश हिमाद्रिखण्ड सुशोभित था। साल, ताल, तमाल, फल देने वाले कटहर, अश्वत्थ (वट पीपल शमी), महाराप, कदम, कुरवक आदि बड़े-बड़े वृक्षों से हिमाञ्चल भूमि कैलाश शीतल छाया सम्पन्न सुशोभित था। कीटाणु नाशक सुगन्धी फूलों के सुगन्ध से कैलाश महक रहा था। मल्लिका, माधवी, वासन्ती, जाति, कुटज, कुन्द, गुल्म, करवीर, दाडिम आदि अनेक पुष्प खिले हुए थे। कैलाश में कल्पवृक्ष भी थे। वे कल्पवृक्ष मनोकामनाओं को पूर्ण करते थे। उन वृक्षों की जाति-परम्परा में अनेक प्रकार के वृक्ष थे, जो हर समय हर ऋतुओं में फल फूल देते थे, स्वाद और गुण धर्मों में कभी फरक नहीं पड़ता था। मधुपूर्ण महुवा, मातुलुङ्ग, चम्पक, सुपाड़ी, नारियल, राजवृक्ष, गोकुल धूप, भल्लातक, कैंथ, वाँस, खयर, बजने वाले बाँस, वेत की झाड़ी, भोजपत्र, तींदू आदि सर्वऋतु फलद और मोटे-मोटे जड़-मध्य भाग तथा स्कन्ध वाले, बड़े-बड़े शाखाओं से संपन्न होकर कैलाश की शोभा बढ़ाते थे।

पुष्पभारावनम्राग्रैः फलभार-नतैस्तथा ।
परस्परं तत्र वृक्षैः सङ्घातादिव पुष्पितैः ।।१९।।
आह्वयद्भिरिवान्योन्यं मत्त-भ्रमर-निःस्वनैः ।
पक्षि-सङ्घ-समाकीर्ण-देवदारुवनावृते ।।२०।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे फूल और फलों के भारों से अवनत वृक्ष, मानों परस्पर में स्पर्धा करके अपनी-अपनी फल-फूलों की समृद्धि प्रदर्शित कर रहे हों जैसा लगता था। पुष्प-रस पान करने से मदोन्मत्त भ्रमर-भ्रमरियों का गुञ्जन, मानों आपस में बिछुड़े हुए अपने-अपने प्रियों को बुला रहे हों, ऐसा लगता था। अनेक जाति के अनेक पक्षी वहाँ थे। देवदारु जाति के वृक्षों का वन चारों तरफ सुहावना लग रहा था।

वापी-कूप-तडागैश्च मणि-सोपान-मण्डितैः।
महन्मनःस्वच्छ-जलैः सरोभिः सारसान्वितैः ॥२१॥
फुल्ल-कह्लार-सौरभ्य-निर्भरीकृत-दिङ्मुखैः।
हंस-कारण्डवाकीर्णैः दात्यूह-कुल-नादितैः ॥२२॥
शीतलामल-पानीयैः सुधा-माधुर्य-सोदरैः।
जलाशयैरगाधैश्च समन्तादुपशोभिते ॥२३॥

वहाँ अनेक जलाशय भी थे, वापी, कूप, तालाब, सरोवर आदि सभी में मणियों के द्वारा निर्मित सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, जिस से वे जलाशय अति शोभायमान थे। वे जलाशय महान् पुरुषों के स्वच्छ मन जैसे लगते थे, मानस-सरोवर भी था, जिससे वहाँ की भूमि ही सरस थी। सारस पक्षि-गणों से वे जलाशय अति रमणीय लगते थे। उन जलाशयों में पुष्पित कमलों की सुगन्धी दसों दिशाओं को सुवासित कर रही थी। राजहंस, हंस, कारण्डव, दात्यूह आदि जलीय पक्षियों की क्रीड़ा से वे जलाशय गुलजार थे। अमृत तुल्य शीतल, सुगन्धी, स्वादु, स्वच्छ, अगाध जलराशि से परिपूर्ण उन जलाशयों से शिव-भवन कैलाश भरपूर शोभा-सम्पन्न था।

तस्मिन् कैलास-शिखरे विश्वकर्म-विनिर्मिते।
नानारत्न-समाकीर्णं चिन्तामणिमयं महत् ॥२४॥
सप्त-प्राकार-संयुक्तं सप्त-कक्षा-समन्वितम्।
सप्तावरण-संयुक्तं सप्तद्वारोपशोभितम् ॥२५॥
देदीप्यमानं तेजोभिः कोटि-सूर्य-सम-प्रभम्।
तथैव ब्रह्मसदनं यथा विष्णोश्च मन्दिरम् ॥२६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततोऽप्यधिक-सौरभ्य-संयुक्तं श्रीमदुत्तमम् ।
महादेवस्य सदनं महावैभव-शोभितम् ॥२७॥
तस्मिन् गृहोत्तमे रम्ये रत्नसिंहासने शुभे ।
सुखासीनं महादेवं, देवी पप्रच्छ पर्वती ॥२८॥

उक्त प्रकार से शोभा सम्पन्न हिमालय पर्वत का कैलाश शिखर पर भगवान शिव का आवास-भवन, कैलाश भवन था। उस भवन को स्वयं विश्वकर्मा ने परिश्रभ के साथ निर्माण किया था। उस भवन के शृङ्गार में अनेकानेक रत्न सजाये गए थे। अतएव वह भवन चिन्तामणि के समान था, जो मन चाहे रत्नों का माँगते ही प्रदान करता है सात परकोटों से युक्त, सात कक्षों में विभाजित, सात आवरणों से ढका हुआ वह शिव-भवन सात द्वारों से शोभित था। वह शिव-भवन अपनी कान्ति से दर्शकों के नेत्रों को चकाचौंध कर देता था। करोड़ों सूर्य के समान तेजस्वी वह शिव-भवन जैसा ब्रह्मसदन है, जैसा विष्णु मन्दिर है, उनसे भी अधिक शौभाग्यशाली शोभा से संयुक्त था।

इस प्रकार का कैलाश हिमालय पर मणिमय उत्तम भवन के रत्न सिंहासन में सुखपूर्वक विराजमान भगवान् शंकर को भगवती देवी पार्वती ने विनय पूर्वक प्रश्न किया।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां कैलासवर्णनं
नाम तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

सूत उवाच—

तस्मिन् कैलास-शिखरे चिन्तामणि-गृहान्तरे ।
रत्नसिंहासने दिव्ये सुखासीनं महेश्वरम् ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूत जी कहते हैं—

हे ऋषीश्वरों ! उक्त प्रकार से शोभा संपन्न रमणीय हिमाचल का कैलाश पर्वत शिखर पर विश्वकर्मा द्वारा बनाया गया, चिन्तामणियों से सुसज्जित; उस शिवभवन के भीतर रत्ननिर्मित सिंहासन पर भगवान् महेश्वर (शिव) विराजमान थे। भगवान् शिव का आध्यात्मिक एवं दैविक तथा भौतिक स्वरूप कैसा है ? उक्त वर्णन मैं संक्षेप में सुनाता हूँ, सावधान होकर आप सब सुनें।

शुद्ध-स्फटिक-संकाशं कर्पूर-सदृश-प्रभम्।
कुन्द-मन्दार-पाटीर-घनसार-सम-त्विषम् ॥२॥

शरन्निस्तन्द्र-निष्पङ्क-सुधाकर-कर–प्रभम्।
स्वर्धेनु-स्वर्धुनी-पूर-नीहारासार-भास्वरम् ॥३॥

दुग्धाब्धि-तुङ्ग-भङ्ग-श्रीगर्व-चर्वण-तेजसम्।
शारदाभ्र-सम-प्रख्यं पारदामल-विग्रहम् ॥४॥

वलक्ष-पक्ष-श्रीवृन्द-कन्द-सुन्दर-विग्रहम्।
तार-हारामृताम्भोधि-लहरी-गौर-रोचिषम् ॥५॥

रत्नमम सिंहासन में विराजमान भगवान् शिव की कान्ति शुद्ध स्फटिक मणि की सी सफेद वर्ण की थी, जो कपूर की कान्ति को स्मृति दिलाती थी। उस कान्ति में मानों कुन्द मन्दार जैसे सफेद फूलों में स्वच्छ जलपूर्ण सरोवर के जलतरंगें दौड़ रहे हों, ऐसी चमक भरी हुई थी। शरद् ऋतु में स्वच्छ पूर्णिमा की रात्रि हो, और पूर्णचन्द्र में कतई काला धब्बा भी न हो, वैसी चाँदनी-सी शीतल और शुक्लवर्ण की भगवान् शंकर की शिवकान्ति थी। कामधेनु की दुग्धधारा से प्रवाहित स्वर्गंगा की उर्मियों से निर्मित हिमसार (बरफ) के समान शीतल सफेद एवं पवित्र शिवकान्ति थी। तरंगित होकर क्षीर समुद्र से उठे हुए ऊर्मियों के शिखर के दृश्यों की शोभा को भी लज्जित करने वाली दृश्यमान तैजस शिवकान्ति थी। शरद्कालीन मेघमाला के समान उज्ज्वल, पारे के समान स्वच्छ दृश्यमान शिवकान्ति थी। सफेद वलक्ष (बगुला) के पंख के समान, अर्जुन वृक्ष की टहनियों के समान सुन्दर, पूर्णचन्द्र की चाँदनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के समान शीतल एवं सुन्दर, कन्द के समान शीतल, सफेद, सुन्दर सुगन्धिपूर्ण मीठी, भगवान् शिव-विग्रह की कान्ति थी।

सन्ध्याराग-सराग-श्रीजटाभार-विराजितम्।
कोटीर-कोटि-घटित-सुधाकर-किशोरकम् ॥६॥
बालचन्द्र-निभाकार-ललाटानल-लोचनम्।
त्रिलोचनं नीलकण्ठं सोम-सूर्याग्नि-लोचनम् ॥७॥
पञ्चवक्त्रं दशभुजं व्याघ्रचर्मोत्तरीयकम्।
गज-चर्माम्बर-धरं गजासुर-निषूदनम् ॥८॥
नागेन्द्र-हार-केयूरं नागेन्द्र-कृत-कङ्कणम्।
नागेन्द्र-कुण्डल-धरं नाग-यज्ञोपवीतिनम् ॥९॥
नागेन्द्र-पाद-कटकं नागेन्द्र-कटि-सूत्रकम्।
अक्षमाला-धरं देवं गङ्गाचन्द्र - विभूषितम् ॥१०॥
रुद्राक्षमालाभरणं भस्मरागाऽनुलेपनम्।
व्योमकेशं व्योमगङ्गा-विराजित-जटाधरम् ॥११॥

जटा मुकुट पर तिर्छे विराजमान बालचन्द्र से भगवान् शिव की जटा, ऐसी शोभा से संपन्न थी की मानों सन्ध्याकालीन सूर्य के किरणों से रञ्जित हों। हर-मुकुट में विराजमान बालचन्द्र की सी आकृति का ललाटस्थित अग्निस्वरूप नेत्र से भगवान् शंकर त्रिलोचन थे। चन्द्र सूर्य अग्नि स्वरूप नेत्र धारण करनेवाले शिव ने समुद्र मन्थन से उत्पन्न हलाहल विषपान किया था, उस विष ने उनका कण्ठ जलाकर काला कर दिया था, अतएव उन्हें नीलकण्ठ नाम से भक्तजन पुकारा करते हैं, भगवान् शिव का इस तरह से अलौकिक रूप था। भगवान् शिव के पाँच मुख थे और दस हाथ थे, वाघ के खाल को उन्होंने ओढ़ा था, हाथी का रूप धारण करनेवाले गजासुर राक्षस को मार कर उसकी खाल की कच्छा पहिन लिये थे। बड़े-बड़े प्रभावशाली नागों की माला, कण्ठी, बाजुबन्द, कुण्डल, जनेऊ, कर्धनी, कड़ा आदि भगवान् शिव के आभूषण थे। अक्षमाला और गंगा एवं चन्द्र उनके गहने थे। रुद्राक्ष की माला से विभूषित थे। भस्म राग से चर्चित थे। ऊपर आकाश पर्यन्त फैले हुए केश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थे। आकाश-गंगा से सुशोभित भगवान् शिव ने जटा-मुकुट को धारण कर रखा था।

वेद-वेदाङ्ग-वेदान्ताद्यर्थसार-स्वरूपिणम् ।
वेदान्तविद्भिर्विद्वद्भिर्वन्दितांघ्रि-सरोरुहम् ॥१२॥
सच्चिदानन्द-सन्दोहं शुद्ध-संवित्स्वरूपिणम् ।
निष्कलं निर्मलं नित्यं निर्द्वन्द्वं द्वन्द्ववर्जितम् ॥१३॥
निरामयं निराकारं निर्विकारं निरञ्जनम् ।
अखण्डमद्वयं शान्तं शुद्ध-बुद्ध-स्वरूपिणम् ॥१४॥
परात्परतरं देवं परमात्म-स्वरूपिणम् ।
निरावरण-विज्ञान-सौध-शृङ्ग-विहारिणम् ॥१५॥
विश्वाधिकं विश्वमयं विश्वोत्तीर्णं चिदात्मकम् ।
विश्व-हृत्पद्म-निलयं विश्वत्राण-परायणम् ॥१६॥
विश्वोत्पत्त्यन्त-कर्तारं विश्वेशं विश्व-वन्दितम् ।
विश्वास-निर्णिताशेष-निगमागम-सञ्चयम् ॥१७॥

हे ऋषीश्वरों ! भगवान् शिव, वेद, वेदांग, सांख्य वेदान्त आदि दर्शन शास्त्रों के साक्षात् अर्थस्वरूप से विराजमान थे। वेदान्तशास्त्रों के अर्थज्ञान में निपुण महाविद्वान् वर्ग भगवान् शिव के चरण कमलों की वन्दना कर रहे थे। सत्य एवं चेतन आनन्द धाराओं की सृष्टि करने वाले, शुद्ध चित् साक्षी ज्ञान स्वरूप, कला काष्ठा आदि समय वन्धन से परे, पापादि विकार रहित निर्मल, सृष्टि स्थिति प्रलय अवस्था में भी नित्य साक्षीरूप एवं द्वैत भेद रहित केवल अद्वैत स्वरूप ऐसे परब्रह्म परमात्मा भगवान् शिव का आध्यात्मिक रूप था। निरोग, निर्विकार तथा निराकार होने से दोष रहित एवं अखण्ड तथा अद्वैत, शान्त, बुद्ध, शुद्ध स्वरूप भगवान् शिव के आध्यात्मिक रूप को विद्वान् ज्ञानी जन उपासना कर रहे थे। आवरण रहित विज्ञानभवन के ऊपरी कक्ष में विराजमान भगवान् शिव परात्-परतर परमात्मा थे। भगवान् शंकर संपूर्ण विश्व से भी अधिक थे और विश्वमय भी थे। भगवान् शिव विश्वजयी थे। चेतन ज्ञानमय आत्मा स्वरूप थे। संसार के हृदयकमल में विराजित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् शिव की, विश्वरक्षा करने के कामों में व्यस्तता देखी जाती थी। सृष्टि स्थिति प्रलय सहित विश्व के मालिक भगवान् शिव विश्व से पूजित वन्दित थे। विश्वास पूर्वक निर्णित निगम और आगम शास्त्र भगवान् शिर की वन्दना कर रहे थे।

निजानन्द-सुधाम्भोधि-लहरी-शिशिरान्तरम्।
जितेन्द्रियैर्जिताहारैर्मुनिभिर्भावितं हृदि ॥१८॥

हे ऋषीश्वरों ! जितेन्द्रिय होकर आहार को भी जीतनेवाले मुनियों के द्वारा अपनी ही आत्मा के भीतर अमृत लहरी से शीतल अन्तरालों में ध्यान किये जानेवाले भगवान् शंकर परात्पर गूढ़ स्वरूप थे।

दुष्टानां भ्रष्टशीलानां कष्टदं शिष्ट-सेवितम्।
उपसकानां कार्यार्थमुररीकृत-विग्रहम् ॥१९॥
नितान्त-करुणाशान्तं शान्तामय-निसेवितम्।
अष्ट-मूर्ति-धरं देवं सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॥२०॥
सर्वगन्धं सर्वरसं सर्वगन्ध-विवर्जितम्।
अपाणिपादं जवनमचक्षुः श्रोत्रमव्ययम् ॥२१॥
भक्तप्रियं भक्तगम्यं भक्तहृत्पद्म-मन्दिरम्।
श्रद्धा-भक्ति-ध्यान-योगैर्वेद्यं वेदान्त-वेदिभिः ॥२२॥
चिन्तामणिं चिन्तयतां कामिनां कल्प-शाखिनम्।
मुक्तिप्रदं विरक्तानां रक्तानां रागवर्धनम् ॥२३॥

शील गुण नैतिकता आदि सत् कर्मों से भ्रष्ट दुष्ट व्यक्तियों को कष्ट देने वाले एवं शिष्ट विद्वान् जनों से सेवित, भगवान् शिव ने उपासकों की कार्य-सिद्धि के लिए ही विग्रह (साकार) रूप धारण किया था। भवरोग रहित शान्त जनों से सेवित भगवान् शिव की छवि, भक्तों के प्रति अत्यन्त करुणा होने से ही शान्तमूर्ति थी। भगवान् शिव अष्टमूर्ति हैं, भगवान् शिव के आठ प्रकार के रूप हैं—मूलप्रकृति, आकाश, पृथ्वी, पानी, वायु, अग्नि, सूर्य, चन्द्र आदि। इन रूपों में दर्शनीय भगवान् शिव, सत् कर्म स्वरूप 'सुगन्धी' सत्कर्मों का फल 'पुष्टि' की वृद्धि करते हैं। भगवान् शिव संपूर्ण विषयवासनाओं में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहते हुए भी, सभी रसों में रहते हुए भी, उन सब से परे थे। हाथ पाँव आदि न होते हुए भी वेगवान् थे, आँख न होते हुए भी देखते थे, कान न होते हुए भी सुनते थे। भक्तों के प्रिय थे, उन्हें भक्तजन ही पहचानते थे, भक्तों के हृदयमन्दिर में ही वे विराजते थे। श्रद्धा भक्ति ध्यान योग आदि के द्वारा भी वेदान्त के विद्वान् ही उन्हें अनुसन्धान से जान पाते हैं। भगवान् शिव चिन्तन परायण भक्तों के प्रति चिन्तामणि थे, सकाम भक्तों के लिए भी सभी कामनाओं को पूर्ति करनेवाले कल्पवृक्ष थे। विरक्तों को मुक्ति प्रदान करने वाले थे, वासनाओं में अनुरक्त व्यक्तियों को प्रशस्त 'भरपूर' तृप्ति हेतु विषय-वासना ही बढ़ा देते थे।

शान्तानां शान्तिदातारं भ्रान्तानां भ्रान्तिदायकम्।
विश्वव्यापिनमीशानं विश्वनाथं जगद्गुरुम् ॥२४॥
महादेवं महात्मानं महावैभव-दायिनम्।
ब्रह्मोपेन्द्र-मेहेन्द्रादि-त्रिदशैरभिवन्दितम् ॥२५॥

शान्तिपूर्वक जो आराधना करता है, उसे शान्ति ही प्रदान करनेवाले, और जो भ्रान्त होकर उपासना करता है, उसे भ्रान्ति ही प्रदान करनेवाले, ऐसे भगवान् शिव विश्व में व्यापी थे, विश्व को ही पालन करने वाले थे, विश्व के ही मालिक थे, विश्व के नाथ थे, जगत् के गुरु थे, महान् आत्मतत्त्व थे। उसासकों को अतुल वैभव प्रदान करने वाले, देवताओं के भी देवता महादेव थे। ऐसे भगवान् शंकर की उपसासना में ब्रह्मा विष्णु सहित इन्द्रादि तैंतीस करोड़ देवी देवता व्यस्त थे।

योग-कक्षा-समारूढं नासाग्र-न्यस्त-लोचनम्।
स्वभासा-भासिताशेष-विष्टपं कष्ट-हारिणम् ॥२६॥
धामत्रयगतं देवं धामत्रय-विचक्षणम्।
जाग्रदादि-विनिर्मुक्तं जाग्रदाद्रिषु सन्ततम् ॥२७॥
तुर्यरूपं चिदात्मानं तुर्यातीत-स्वरूपिणम्।
कालकालं महाकालं कालातीतं कलात्मकम् ॥२८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ऋषीश्वरों ! उस समय भगवान् शंकर योगकक्ष में विराजमान थे, अर्थात् योगमुद्रा में विराजित थे। नाक के अग्रभाग को अधखुले नयन से निहार रहे थे, अपने तेज से विश्व में व्यापक रूप से भासित थे, विश्व के कष्टों को (विश्व-संकट को) दुराय देते थे। भगवान् शंकर चन्द्र सूर्य अग्नि स्वरूप नेत्रों को धारण करने वाले होने से तीनों प्रकार के तेज से युक्त थे। और उक्त तीनों प्रकार के तेजों में विचक्षण (विशेषता युक्त) भी थे। भगवान् शंकर 'जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति अवस्था से मुक्त भी थे, और उक्त उन अवस्थाओं में व्यापक रूप से संशक्त भी थे। साक्षात् योग के अन्तिम अवस्था (तुर्य अवस्था) स्वरूप थे, और उस अवस्था से भी परे थे, मुक्त थे। भगवान् शंकर काल के भी काल महाकाल थे, और स्वयं काल से भी परे थे। ऐसे भगवान् शंकर योग के कला स्वरूप (योग-कलात्मक रूप) में विराजमान थे।

ललाट-नयन-ज्वाला-तृणीकृत-मनोभवम् ।
नीललोहितमीशानं लीलादग्ध-पुरत्रयम् ॥२९॥
हलाहल-गराहारं वेलातीत-घृणाकरम् ।
गजानन-षडास्याभ्यां पार्श्वयोरुपशोभितम् ॥३०॥

हे ऋषीश्वरों ! देव दानव आदि से असंभव महान् तीन कामों को भगवान् शंकर ने किये हैं। ललाट की नयन-ज्वाला से कामदेव को तृण के समान जलाया है, एक ही वाण से खेल-खेल में त्रिपुरासुर (आक्रान्ता दानव) के तीनों शहर को जला दिया है, समुद्र मन्थन से प्रकट हलाहल नाम के महाविष को पान किया है। भगवान् शिव को नीललोहित कह कर भक्त जन पुकारते हैं। भगवान् शिव की पूजा ईशान दिशा में होती है, अतः ईशान भी भगवान् शिव का नाम है, चराचर जगत् के मालिक होने से भी ईशान नाम से पुकारे जाते हैं। भगवान् शंकर समय बेला क्षण घड़ी घण्टा से मुक्त थे, बिना उनके वे चलते भी नहीं हैं। अपने भक्तों के प्रति भगवान् शंकर अति दयालु (क्षिप्रःकारुणिक) शीघ्र करुणा करने वाले थे। गजानन गणेश और षडानन कार्तिकेय नाम के भगवान् शिव के पुत्र द्वय भगवान् के पास में ही बैठे थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पार्षद-प्रवरैः स्वीयैर्नन्दि-भृङ्गि-रिटादिभिः ।
समन्तात्सेवितं नित्य स्तूयमानं महर्षिभिः ।।३१।।
सनकाद्यैश्च योगीन्द्रैर्नारदाद्यैः सुर्रिषिभिः ।
उपास्यमानमन्यैश्च तापसैर्ब्रह्म-वादिभिः ।।३२।।
समाध्युपरतं शान्तं प्रसन्नवदनाम्बुजम् ।
भक्त-प्रसादाभिमुखं घृणारुण-विलोचनम् ।।३३।।

ध्यान पूर्वक सावधान होकर भगवान शिव को शिवपार्षद् गण नन्दि भृङ्गि-रिटि टहलवानी कर रहे थे, महर्षि गण स्तुति आदि से वन्दना कर रहे थे। सनक-सनन्दन-सनत्-सनत्कुमार आदि ऋषि एवं देवर्षि नारद तथा बड़े-बड़े योगीन्द्र और अनेक ब्रह्मवादी तपस्वियों के द्वारा भगवान् शंकर उपासना किये जा रहे थे, पूजित हो रहे थे। उस समय भगवान् शंकर समाधि से विरत हो चुके थे। उस समय भगवान् शंकर का मुखकमल अति प्रसन्न था। अति शान्त स्वभाव में भगवान् शिव थे। भक्तों के तरफ अति प्रसन्नता से प्रस्फुटित दृष्टि दे रहे थे। भक्तों के प्रति दया और ममता से भरी आत्मा होने से भगवान् शंकर की आँखें सरस और लालिमा से सम्पन्न दीख रहे थे।

प्रणम्य शिरसा देवं शङ्करं लोक-शङ्करम् ।
बद्धाञ्जलिपुटा भूत्वा हर्ष-गद्गदया गिरा ।।३४।।
पुलकाञ्चित-गात्रश्रीः प्रेम-प्रसर-संप्लुता ।
विनयावनता भूत्वा पप्रच्छ प्राणवल्लभम् ।।३५।।

हे ऋषीश्वरों ! उक्त प्रकार की शिव-भवन की स्थिति में मौका देख कर, संपूर्ण लोक के उपकारी अपने पति देवता भगवान् शंकर के चरण कमलों में भगवती देवी पार्वती ने नमस्कार किया। अतः भगवान् शंकर प्रति के प्रेम से उस समय (चरणों को स्पर्श कर के नमस्कार करते समय) भगवती पार्वती का अङ्ग प्रत्यंग पुलकित हो उठा। प्रेम के कारण भगवती पार्वती नम्र हो गई थीं। हर्ष से गद्गद वाणी होकर भगवती पार्वती ने अपने पति देवता भगवान् शंकर को विनम्रता पूर्वक प्रश्न किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या देवी जगतां माता जगदुत्पत्ति-कारिणी ।
वेदान्तविद्भिर्या नित्यं चित्कलेति प्रकीर्तिता ॥३६॥
योगीन्द्रैश्च महाभागैः परं ज्योतिःस्वरूपिणी ।
सांख्यैर्या गीयते नित्यं प्रकृतिस्त्रिगुणात्मिका ॥३७॥
कर्मठैः कर्मरूपेति स्तूयते या द्विजोत्तमैः ।
तान्त्रिकैर्या महादेवी पराशक्तिरिति स्मृता ॥३८॥
नानामतानुसारेण नानारूपा च या स्तुता ।
अनेक-कोटि ब्रह्माण्ड-जननी चित्स्वरूपिणी ॥३९॥
एकानेक-स्वरूपा च भेदाभेद-विवर्जिता ।
पशु पाशक-निर्हन्त्री मूल-त्रय-विमोचिनी ॥४०॥
दुष्टानां दुर्लभा या वै शिष्टानां सुलभा च या ।
सर्व-दुःख-प्रशमनी भव-बन्ध-विदारिणी ॥४१॥
एवं रूपा महादेवी, शिव-वामाङ्क-संस्थिता ।
पप्रच्छ, स्वीयकान्तं सा लोकानां हितकाम्यया ॥४२॥

हे ऋषीश्वरों ! जिन देवी को जगतमाता कहा जाता है । यह संसार शक्ति से ही उत्पन्न हुआ है, अतः शक्ति के उपासक शक्ति की अधिष्ठात्री माता पार्वती हैं, कहते हुए उपासना करते हैं । वेदान्तशास्त्रों के विद्वान् माता पार्वती को चित् कला (चेतन कला) स्वरूपिणी के नाम से परिचय देते हैं । योगशास्त्रों के विद्वान् महाभाग्यशाली योगीन्द्र वृन्द, पर से भी पर (परात्पर) ज्योतिस्त्ररूपिणी कह कर माता पार्वती का ही परिचय प्रस्तुत करते हैं । सांख्यशास्त्र के प्रवर्तक कपिल आदि महर्षिगण, त्रिगुणात्मिका (सत्त्व रज तम) मूल प्रकृति के नाम से माता पार्वती को ही नित्य पुकारते हैं । कार्य में कर्मठ श्रमिक कर्मकाण्डी वर्ग (द्विजोत्तम आदि) माता पार्वती को ही 'कर्मरूपा' नाम से स्तुति करते हैं । तन्त्रशास्त्रों में पारंगत महातान्त्रिक लोग जिन देवी माता पार्वती को संपूर्ण शक्ति की जननी, शक्तिस्वरूपा, शक्ति की अधिष्ठात्री, पराशक्ति के नाम से स्मरण करते हैं । माता पार्वती ही, अनेक कोटि ब्रह्माण्ड की जननी, चित् शक्ति (चेतन शक्ति) स्वरू-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिणी हैं, कह कर नाना मत मतान्तरों ने गुण गाया है। जो एकरूपा हैं, और अनेकरूपा भी हैं। एक रूप में भेद नहीं है, अनेक रूप में भेद है, तथापि एक ही मूल शक्ति के भेद होने से अनेक रूप में भी एकता, एक रूपता है, अतः भेद शून्य है। पशु (जीवात्मा) पाश (जन्म मरण सांसारिक विषय-वासना) बन्धन को मुक्ति प्रदान कर के तोड़ देने वाली, एवं दैहिक दैविक भौतिक दुःखों से मुक्ति देने वाली माता पार्वती ही हैं। माता पार्वती, दुष्टों के लिए दुर्लभा, और शिष्टों के लिए सुलभा हैं। संपूर्ण दुःखों को नष्ट कर के सांसारिक बन्धनों को भी माता पार्वती ही तोड़ देती हैं। ऐसी वे महादेवी भगवती पार्वती, भगवान् शिव के वामाङ्क में विराजमान थीं। ऐसी महादेवी भगवती पार्वती ने, लोक, दुनियाँ (संसार) की हित (कल्याण) की बातें शोच कर, अपने पति देवता भगवान् शंकर को अति नम्र होकर प्रश्न किया (प्रश्न-पूछा)।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्यमाहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायाम् शंकरं प्रति पार्वतीप्रश्नो नाम चतुर्थोध्यायः ॥४॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

पार्वत्युवाच

देवदेव ! महादेव ! महात्रिपुरसुन्दर ! ।
महाकामकलारूप ! महादेवेन्द्रसेवित ! ॥१॥
परमेश्वर ! देवेश ! पञ्चकृत्य-परायण ! ।
जाग्रदादि-दशाहीन ! जाग्रदादिषु संतत ! ॥२॥
यः सर्वात्मा सर्व-विद्यो यस्य ज्ञानमयं तपः ।
अप्राणोह्यमनाः शुभ्र इत्यादि श्रुतिभिः स्तुतः ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ऋषीश्वरों ! हाथ जोड़ कर अत्यन्त नम्र भाषा में अपने पतिदेवता भगवान् शंकर के वैभव के गुणगान करती हुई माता पार्वती भगवान् शंकर से कहती हैं ।

पार्वती कहती हैं—

हे देवदेव ! हे महादेव ! हे त्रिपुर-सुन्दर ! (स्वर्ग मर्त्य पाताल के पुरसुन्दरों में भी सुन्दर) हे महाकाम-कला-स्वरूप ! (महत्तत्त्वादि कर्म कला-संसारोत्पादक अहंकार) हे महादेवेन्द्र सेवित ! हे परमेश्वर ! हे देवेश ! पाञ्चभौतिक कार्य परायण ! हे पञ्च संस्कार कर्म परायण ! (उत्क्षेपणा-प्रक्षेपणाकुञ्चन-प्रसारणागमनानि पञ्चकर्माणि) उक्त पाँच प्रकार के कर्म करने वाले हे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति आदि दशा से परे रहने वाले और उन दशाओं में संतत (निरन्तर) रहने वाले ! आप सर्वात्मा हैं, सर्वविद् हैं, सर्वज्ञ हैं, आप की तपस्या ही ज्ञान है। आप अप्राण हैं, अमन हैं। शुभ्र हैं इत्यादि आप के प्रभावों को मैंने श्रुतियों से सुना है ।

वेदान्तवेद्य! वेदात्मन् ! वेदसंस्तुत-वैभव ! ।
साक्षिस्वरूप ! सर्वेषां सर्वसाक्ष-विचक्षण ! ॥४॥
सर्वेन्द्रिय-गुणाभास ! सर्वेन्द्रिय-विवर्जित ! ।
मातृ-मान-प्रमेयादि-जगत्त्रय-विलक्षण ! ॥५॥
निर्विकार ! निराकार ! नित्य ! शुद्ध ! निरञ्जन ! ।
निरामय ! निरातङ्क ! निरवद्य ! निरत्यय ! ॥६॥
निजानुभूतिरसिक ! निजानन्दामृताप्लुत ! ।
पञ्चकोशान्तरालस्थ ! पञ्चकोशोपरिस्थित ॥७॥
पाशाष्टक-विनिर्मुक्त ! पशु-पाश-विमोचन ! ।
आणवादि-मलोपेत ! मलत्रय-विशोषण ! ॥८॥
पञ्चाक्षरान्तरालस्थ ! पञ्चाशद्-वर्ण-विग्रह !
भव-दावानल-ज्वाला-निर्वापण-सुधाम्बुद ! ॥९॥
एकान्त-भक्ति-सुलभ ! भक्ताभीष्ट-प्रदायक ! ।
स्वाभाविक-घृणा-सिन्धो ! दीनबन्धो ! जगत्-प्रभो ॥१०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे वेदात्मन् ! देवता ! आप के वैभवों को वेदों ने गाया है; वेदान्त द्वारा ही आप पहचाने जाते हैं, आप सर्वसाक्षी हैं, और उन साक्षियों में भी अति-चतुर एवं विलक्षण साक्षी हैं। संपूर्ण इन्द्रियों के गुण-धर्मों से युक्त होते हुए भी इन्द्रिय रहित भी अगोचर हैं। आपके गुण और कर्मों का कोई नाप तौल नहीं है, जिसकी परिधि हीं पता नहीं है। इसी से आप तीनों लोक से न्यारे हैं। आप निर्विकार हैं, निराकार हैं, निरञ्जन हैं, नित्य हैं, शुद्ध हैं, निरामय हैं, निरातङ्क हैं, निर्दोष हैं, अनन्त हैं। अपनी आत्मा की अनुभूति में आनन्दित रहते हैं, आत्मानन्द अनुभूति स्वरूप अमृत में आप स्नान करते हैं। आप पञ्चकोश (आनन्दमयकोश-विज्ञानमयकोश-प्राणमयकोश-मनोमय-कोश-अन्नमयकोश) के अन्तरालों में रहते हैं, और इन कोशों से परे भी हैं। आप आठ प्रकारों के वन्धनों (लज्जा घृणा काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य स्वरूप) से मुक्त हैं। पशुस्वरूप जीवात्मा को सांसारिक विषय वासना स्वरूप पाश से आप ही मुक्त करवाते हैं। आप रेणु अणु परमाणु आदि के मल से मुक्त हैं और कायिक वाचिक मानसिक मल स्वरूप पापों को शोषण कर देते हैं। आप पञ्चाक्षर (नमः शिवाय) के अन्तरालों में रहते हैं। आप पचास वर्णों (ॐ श्री अ आ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः एवं क से लेकर ज्ञ तक के व्यञ्जन वर्णों) का शरीर धारण करते हैं। आप संसाररूपी वनाग्नि की ज्वालाओं को बुझाने में अमृत स्वरूप मेघ हैं, सांसारिक विषय वासना मिटा देते हैं। एकान्तिक भक्ति से मात्र आप सुलभ हैं। हे स्वाभाविक करुणासिन्धो ! हे दीन दुःखियों के वन्धो। हे जगद्गुरो ! हे प्रभो ! आप ही भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण करने में समर्थ हैं।

त्वमेव सर्वं जानासि न त्वां जानाति कश्चन।
त्वत्प्रसादेन जानन्ति किञ्चित्त्वां पद्मजादयः ॥११॥
अतस्त्वमेव सर्वज्ञस्त्वत्तो नान्योऽस्ति सर्ववित्।
त्वमेव सर्वशास्त्राणां वक्ता नाऽन्यः कदाचन ॥१२॥

हे देवताग्रज ! हे महादेव ! आप सबको जानते हैं, सब कुछ जानते हैं, किन्तु आपको कोई नहीं जानता है, न पहचानता है। आप के ही प्रसाद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से, आप की कृपा से ब्रह्मा विष्णु और इन्द्रादि देवता आपको कुछ मात्र अनुमान करते हैं। अतः हे भगवान् ! आप ही सर्वज्ञ हैं। आपको छोड़ कर और कोई भी व्यक्ति सर्वज्ञ नहीं है। संपूर्ण शास्त्रों के कुशल वक्ता आप को छोड़ कर और अन्य कोई नहीं है, जो मैं प्रश्न कर रही हूँ, उनके उत्तर दे सकें।

इतिहास-पुराणानि श्रुतानि त्वन्मुखान्मया।
तन्त्राणि च चतुष्षष्ठिस्त्वत्त एव श्रुतानि ते ।।१३।।
अष्टाविंशतिसंख्याका आगमाश्च श्रुता मया।
अन्यानि चैवं शास्त्राणि बहुशः संश्रुतानि च ।।१४।।
तीर्थानि क्षेत्र-मुख्यानि तेषां माहात्म्यमेव च।
तद्दर्शनफलं चापि श्रुतं निरवशेषतः ।।१५।।

हे शंकर ! हे शिव ! आपके ही मुखारविन्द से पुराण इतिहास आदि सब मैं सुन चुकी हूँ। हे भगवान् ! आपके ही मुखारविन्द से चौसठ प्रकारों के तन्त्रशास्त्रों को मैंने सुन लिया है। हे महादेव ! आपके ही मुखारविन्द से अठारह प्रकार के आगमशास्त्रों को भी यथार्थ मैं कर चुकी हूँ। वेद स्वरूप आप से ही समय-समय में मैंने विभिन्न वेदाङ्गादि वेदार्थ शास्त्रों को सुन रखा है। हे महेश्वर ! महा तीर्थों का, तीर्थों का, नदियों का, सरोवरों का, कुण्डों का एवं क्षेत्रों का, महाक्षेत्रों का माहात्म्य सहित उनके दर्शन से प्राप्तव्य फलों को भी आप के ही मुखारविन्द से मैं सुन चुकी हूँ।

रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यं न श्रुतं हि मया प्रभो !।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि रुद्राक्षारण्य-वैभवम् ।।१६।।

किन्तु, हे नाथ ! हे महादेव ! आज तक मैं रुदाक्षारण्य-माहात्म्य नहीं सुन पाई, अतः हे भगवन् इस समय मैं आप से रुद्राक्षारण्य माहात्म्य का और रुद्राक्षारण्य का तथा रुद्राक्षों का वैभव वृत्तान्त सुनना चाहती हूँ, कृपा करके आप मुझे सुनायें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कथं तेषां समुत्पत्ती रुद्राक्षाणां महीरुहाम् ।
केन वा कुत आनीता रुद्राक्षा क्षोणिजा भुवि ॥१७॥
कस्मिन् देशे स्थितास्ते च केन वा रोपिता प्रभो ! ।
किं स्वर्गलोकादानीताः किं वा पाताललोकतः ॥१८॥
किं वा पितामहावासात् किं वा वैकुण्ठ-लोकतः ।
कैलासात् किं समानीताः किमुत्पन्नाः स्वयं क्षितौ ॥१९॥

हे प्राणेश्वर ! हे शिव ! रुद्राक्ष वृक्षों की उत्पत्ति कैसे हुई ? पृथिवी में उत्पन्न होने वाले रुद्राक्षों के वीजों को किसने कहाँ से पृथवी में लाया ? लाकर उसने उन वीजों को किस देश में कहाँ बोया ? क्या वे बीज स्वर्गलोक से लाए हैं ? अथवा पाताल लोक से मँगाए गए हैं ? वा ब्रह्मलोक से लाए गए हैं ? या वैकुण्ठ लोक से लाए गए हैं ? कि वा शिवलोक कैलाश से लाए गए हैं ? या स्वयं उर्वरा ऊर्वी में जैसे अन्य वृक्ष-लता औषधि आदि पैदा होते हैं, उसी तरह रुद्राक्षवृक्ष भी पैदा हुए हैं ? हे प्रभो ! रुद्राक्षों के विषय में मेरी कौतूहल पूर्ण प्रश्नों के उत्तर सुनने की अभिलाषा है, उसे पूर्ण कर दें ।

कथं तेषां स्वरूपं च किंप्रकाराश्च ते द्रुमाः ।
कस्मिन् काले च ते वृक्षाः फलन्ति च फलात्फलम् ॥२०॥
फलानि कीदृक् रूपाणि किंप्रमाणानि च प्रभो ! ।
सरन्ध्राणि किमेतानि रन्ध्रहीनानि वा स्वयम् ॥२१॥
कति वक्त्राणि देवेश ! रुद्राक्षाणि भवन्ति वै ।
किं वा फलं भवेत्तेषां रुद्राक्षाणां च धारणे ॥२२॥
केषु स्थानेषु धार्याणि कति संख्यानि वा प्रभो ! ।
वर्णाश्रमाचारयुतैः कैर्वा धार्याणि मानवैः ॥२३॥

हे विभो ! रुद्राक्ष वृक्ष कैसे होते हैं ? उनके स्वरूप कैसे-कैसे होते हैं ? उनकी जाति प्रकार कितने होते हैं ? किस ऋतु में रुद्राक्ष वृक्षों में पूर्ण फल लगते हैं ? उन रुद्राक्ष-वृक्षों के फल किस रूप के होते हैं ? कितने बड़े होते हैं ? उन फलों में छिद्र होते हैं, तो वे क्षिद्र (माला गूँथने के लिए कुद्रती बने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुए छेद) कैसे बनते हैं ? कोई उनमें छेद कर देता है, वा स्वयं होते हैं ? संभवत: छिद्र रहित ही होते हों ? रुद्राक्ष के दानों में कितने मुख (चीरे) होते हैं ? कितने मुख तक के होते हैं ? रुद्राक्षों की माला व दाना आदि धारण करने से क्या फल प्राप्ति होती है ? किन-किन अङ्गों में कितने मुख के कितने रुद्राक्षों को धारण करना चाहिए ? हे प्रभो ! वर्णाश्रम 'सनातन' आचार (धर्म) से युक्त कैसे मानवों को रुद्राक्ष धारण करना योग्य है ? हे देवेश ! उक्त मेरे प्रश्नों का यथार्थ उत्तर प्रदान करें।

कस्मिन् देशे स्थितं क्षेत्रं रुद्राक्षारण्यमुत्तमम्।
किं प्रमाणं च तत्क्षेत्रं तद्दर्शन-फलं च किम् ॥२४॥
तत्रैव वसतां पुंसां तनु-त्यागश्च कुर्वताम्।
किं वा कैवल्यपदवी यतो नावर्तते पुनः ॥२५॥
अधिष्ठाता च कस्तस्य क्षेत्रस्य परमेश्वर !।
को वा तत्र स्थितो देवः पूजनीयो नरैर्भुवि ॥२६॥
किन्नाम क्षेत्रपालश्च तस्य क्षेत्रस्य शंकर !।
तीर्थश्च तत्र किं देव ! तत्र स्नानफलं च किम् ॥२७॥

हे देव ! किस देश में स्थित रुद्राक्षारण्य क्षेत्र उत्तम होता है ? उस क्षेत्र का प्रमाण क्षेत्रफल कितना है ? कहाँ से कहाँ तक रुद्राक्षारण्य की सीमा है ? रुद्राक्षारण्य का दर्शन करने से क्या फल प्राप्ति होती है ? रुद्राक्षारण्य में वास करते हुए जो मनुष्य शरीर त्याग कर देते हैं, उन्हें जिस प्रकार की मुक्ति (कैवल्य पदवी) प्राप्ति होती है ? जो फिर लौट कर इस पृथ्वी में जन्म ग्रहण नहीं करता है। हे प्रभो ! हे परमेश्वर ! उस क्षेत्र का अधिष्ठाता कौन है ? उस क्षेत्र में कौन से देव हैं, जो इस पृथिवी के मानव उन्हें पूजा करते हैं ? हे भगवन् ! उस क्षेत्र के क्षेत्रपाल कौन देवता हैं ? और वहाँ के तीर्थ कैसे-कैसे हैं ? उन तीर्थों में स्नान करने से क्या फल-प्राप्ति होती है ?

एतत् सर्वं समाख्याहि यद्यहं ते प्रिया प्रभो !।
त्वदन्यस्य गतिर्नास्ति वक्तुमेतन् महेश्वर ! ॥२८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृपां कुरु महादेव ! श्रोतुकामाऽस्मि सादरम् ।
इत्युक्त्वा पार्वती देवी श्रवणाय व्यवस्थिता ॥२६॥

हे प्रभो ! हे महेश्वर ! यदि मैं आपकी प्रिया हूँ तो मेरे प्रति प्यार से आप मुझे रुद्राक्ष के विषय के मेरे प्रश्नों का यथार्थ उत्तर प्रदान करें। आप को छोड़ कर इन प्रश्नों का उत्तर और अन्यत्र से प्राप्त नहीं हो सकता है, रुद्राक्ष के विषय में पूर्ण ज्ञान औरों को नहीं है। हे महादेव ! कृपा कीजिए, मैं आदर पूर्वक सुनने की इच्छा करती हूँ।

हे ऋषीश्वरों ! इतना कह कर के भगवती पार्वती देवी रुद्राक्षारण्य की चर्चा सुनने के लिए व्यवस्थित हो गईं।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां शंकरं प्रति
पार्वतीप्रश्नो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

सूत उवाच

इति पृष्टो महादेवः पार्वत्या प्रियया प्रभुः ।
प्रशस्य तां महादेवीं प्रवक्तुमुपचक्रमे ॥१॥

सूत जी कहते हैं--

हे ऋषीस्वरों ! इस प्रकार से अपनी प्राणप्रिया अर्धाङ्गिनी देवी पार्वती के द्वारा पूछे गए भगवान् शंकर ने भी, भगवती पार्वती की लोकोपकारी बुद्धि को विचार कर, उनके प्रश्नों को, और उनकी प्रशंसा करते हुए, रुद्राक्षारण्य क्षेत्र विषय के प्रश्नों का उत्तर देना प्रारम्भ कर दिए।

महादेव उवाच

न केनापि पुरा पृष्टं रुद्राक्षारण्य-वैभवम् ।
मयापि यस्य कस्यापि पुरा नोक्तं वरानने ! ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साधु पृष्टं त्वया देवि ! लोकानां हितकाम्यया ।
भवत्यापि न पृष्टं हि कदापि परमेश्वरि ! ॥३॥
इदानीं पृच्छसे भक्त्या रुद्राक्ष-क्षेत्रमुत्तमम् ।
तदहं ते प्रवक्ष्यामि तव स्नेहान् महेश्वरि ! ॥४॥

भगवान् महादेव जी कहते हैं--

हे देवी ! रुद्राक्षारण्य के विषय में आज तक हमें किसी ने नहीं पूछा । विना पूछे नहीं बोलना चाहिए, इस नीति से मैंने भी किसी से नहीं कहा । हे सुन्दरी ! आज तुमने बहुत ही अच्छी बातों को पूछ कर स्मरण कराया है । हे देवी ! आज ही तुमने सर्वोत्तम क्षेत्र रुद्राक्षारण्य के विषय में बातें की हैं । इस से आगे तुमने भी तो कभी नहीं पूछा । पूछती तो मैं पहले ही तुम्हें सुना देता । जो हो, संसार (विश्व) के कल्याण हेतु से तुमने जो प्रश्न पूछे हैं, उनसे और तुमसे मैं सन्तुष्ट हूँ । हे महेश्वरी ! तुम्हारी माया में मैं बधा हुआ हूँ । तुम्हारे स्नेह से ही मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देता हूँ, सुनो !

रुद्रस्याक्ष्णः समुत्पन्नं रुद्राक्षमिति कीर्त्यते ।
तन्नाम्ना प्रथितं तस्मात् रुद्राक्षारण्यमद्रिजे ! ॥५॥

हे अद्रिजे ! हे गिरिजे ! हे पार्वती ! रुद्र के आँख से उत्पन्न हुए हैं अतः रुद्राक्ष नाम से ही संसार जिन्हें पहचानता है, रुद्राक्षवृक्ष समूह को रुद्राक्षारण्य कहते हैं ।

कौशिक्याः पूर्वतो देवि ! दशयोजनमायतम् ।
जलेश्वरालयात् तद्वत् दशयोजन-विस्तृतम् ॥६॥
रुद्राक्षारण्यमाख्यातं परितो दशयोजनम् ।
रुद्राक्षारण्यसंज्ञं तत् क्षेत्रं सर्वोत्तमोत्तमम् ॥७॥

हे देवी ! रुद्राक्षारण्य नाम से प्रसिद्ध, पवित्र उस क्षेत्र की सीमा,-कौशिकी (सप्त कौशिकी गङ्गा) से पूर्व दश योजन (८० माइल) और जलेश्वर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(जनकपुर जलेश्वर) से दश योजन (८० माइल) उत्तर दक्षिण है[1]। इस तरह से, जलेश्वर से उत्तर ४० माइल एवं दक्षिण ४० माइल तथा जलेश्वर से कौशिकी तक और कौशिकी से ८० माइल पूर्व तक रुद्राक्षारण्य की सीमा है। रुद्राक्षारण्य नाम से प्रसिद्ध यह क्षेत्र सर्वोत्तम सभी क्षेत्रों में भी उत्तम है।

यथा हि नैमिषारण्यं सर्वक्षेत्रोत्तमोत्तमम्।
तद्वदेव हि रुद्राक्षाऽरण्यं सर्वोत्तमं प्रिये! ॥८॥

हे प्यारी! पार्वती! संपूर्ण पवित्र तीर्थक्षेत्रों में नैमिषारण्य क्षेत्र उत्तम माना जात है, तत् तुल्य रुद्राक्षारण्य क्षेत्र भी सभी पवित्र तीर्थक्षेत्रों में उत्तम माना जाता है।

क्षेत्राणि यानि देवेशि! तीर्थानि च महीतले।
सद्वितीयानि सर्वाणि प्रोक्तानि गिरिनन्दिनि! ॥९॥
अद्वितीयमिदं लोके क्षेत्रद्वयमितीरितम्।
नैमिषारण्यमीशानि! रुद्राक्षारण्यमेव च ॥१०॥

हे देवेश्वरी! ईशानी! इस पृथिवी तल में जितने भी पवित्र तीर्थ क्षेत्र आदि हैं, वे सब सद्वितीय हैं, अर्थात् उनके बराबरी का कोई दूसरा क्षेत्र अवश्य है। हे गिरिनन्दिनी! पर्वतराजपुत्री! पार्वती! इस पृथिवीतल में केवल दो ही क्षेत्र अद्वितीय हैं, अर्थात् जिनके बराबरी का अन्य क्षेत्र नहीं है। वे अद्वितीय क्षेत्र दो हैं--नैमिषारण्य और रुद्राक्षारण्य।

तत्रापि नैमिषारण्यात् रुद्राक्षारण्यमुत्तमम्।
नैमिषे वसतां पुंसां देहत्यागं च कुर्वताम् ॥११॥

---

१. जयनगर से आगे जनकपुर धाम है, जहाँ राम-जानकी का प्रसिद्ध मन्दिर है, जनकपुर धाम से आगे जलेश्वर है, जहाँ जलेश्वर महादेव का विख्यात मन्दिर है। जयनगर जनकपुर रेल गाड़ी भी चलती है। रुद्राक्षारण्य की पश्चिम सीमा जलेश्वर को मानकर जलेश्वर से उत्तर ४० माइल और दक्षिण ४० माइल तथा कौशिकी तक और कौशिकी से ४० माइल पूरब, मेची से भी आगे तिष्टा नदी अथवा जलढाका नदी भूटान तक रुद्राक्षारण्य की चौखट सीमा परिधि है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुक्तिः स्यात् परमेशानि ! नान्यथा प्राणवल्लभे ! ।
न तथा देव-देवेशि रुद्राक्षारण्यमिष्यते ॥१२॥
यदृच्छया सकृद् दृष्ट्वा रुद्राक्षारण्यमुत्तमम् ।
यत्र कुत्र मृतो वापि रुद्रलोकं लभेन्नरः ॥१३॥

हे परमेश्वरी ! हे देवेश्वरी ! नैमिषारण्य और रुद्राक्षारण्य में भी, रुद्राक्षारण्य क्षेत्र उत्तम है । रुद्राक्षारण्य में अधिक विशेषता है । नैमिषारण्य में आजीवन वास करके अन्त्य में जो व्यक्ति वहीं शरीर छोड़ देता है, उसे ही मुक्ति मिलती है । किन्तु रुद्राक्षरण्य में तो अपनी स्वेच्छा से डोलता हुआ पहुँच कर, वहाँ से कहीं जाकर किसी भी स्थान में शरीर छोड़ देता है, वह व्यक्ति भी शिव सायुज्य स्वरूप मुक्ति (निर्वाण) प्राप्त करता है, लयलीन हो जाता है । उसे रुद्रलोक की प्राप्ति हो जाती है । अतः हे प्राण-प्रिये ! पार्वती ! रुद्राक्षारण्य, 'दर्शनात् मुक्ति फलद' है, दर्शन से ही मुक्ति मिल जाती है । मैं जो कह रहा हूँ वह सब तुम सत्य समझ लो, शिव वाक्य असत्य नहीं होता है ।

पञ्चक्रोशश्च तन्मध्ये क्षेत्रं सर्वोत्तमोत्तमम् ।
हिमाद्रेर्दक्षिणे पादे तत् क्षेत्रं स्थितमीश्वरि ! ॥१४॥
योजनाभ्यन्तरे तत्र कोलरूपी जनार्दनः ।
कौशिक्या दक्षिणे तीरे वर्तते रमया सह ॥१५॥

हे ईश्वरी ! इस प्रकार से सीमा बद्ध रुद्राक्षारण्य क्षेत्र में भी पञ्चक्रोशी क्षेत्र, अर्थात् रुद्राक्षारण्य का मूल स्थान (पाँच कोश परिधि का) शीत शैल (विजयपुर पर्वत खण्ड) सर्वोत्तम है । हे देवी ! रुद्राक्षारण्य का मूल स्थान पञ्चक्रोशी क्षेत्र शीत शैल विजयपुर पर्वत खण्ड, हिमालय पर्वत से दक्षिण में है । और उस पञ्चक्रोशी क्षेत्र शीत-शैल, विजयपुर से एक ही योजन में (८ माइल की दूरी पर) कौशिकी के दक्षिण तट पर वराह रूप[1] भगवान् विष्णु (जनार्दन) रमा (लक्ष्मी) के साथ विराजमान हैं ।

---

१. बिहार प्रान्त, पूर्णिया जिला, जोगबनी से नेपाल, कोशी अञ्चल, मोरङ, जिला, विराट नगर से धरान पहुँचने पर थोड़ी-सी ऊचाई में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दर्शनात् मुक्ति-फलदं रुद्राक्षारण्यमेव हि।
अथाऽन्यत्कथयिष्यामि माहात्म्यं तस्य सुन्दरि ! ॥१६॥

हे सुन्दरी ! वराह क्षेत्र पर कौशिकी और कोका संगम में स्नान करके भगवान् वराह का दर्शन यदि मनुष्य करता है तो उसे मुक्ति स्वरूप फल मिल जाता है। वराह क्षेत्र भी रुद्राक्षारण्य-अन्तर्गत ही है। वराह पुराण और अन्य पुराणों ने भी वराह क्षेत्र को गतार्थ कर दिया है, स्मृति और परिचय के लिए मैंने वराह क्षेत्र की चर्चा की है। तो हे देवी ! तुम्हें और भी मैं रुद्राक्षारण्य का माहात्म्य सुना रहा हूँ, सावधान होकर तुम सुनो।

यत्रोत्पन्नं हि रुद्राक्षं यत्र कुत्रापि संस्थितैः।
देशान्तर-गतैर्वापि द्वीपान्तर-गतैरपि ॥१७॥
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वापि वैश्यैः शूद्रैरथापि वा।
नीचैर्वा पतितैर्वापि पाखण्डैर्वा वरानने ! ॥१८॥
महापातकयुक्तैर्वा युक्तैर्वाप्युपपातकैः।
स्त्रीभिर्वा पुरुषैर्वापि षण्डैर्वाथ वरानने ! ॥१९॥
तीर्यग्योनि-गतैर्वापि श्व-शूकर-खरादिभिः।
मार्जारैः कुक्कुटैर्वापि वानरैर्वापि सुन्दरि ! ॥२०॥
धृतं चेद्यदि रुद्राक्षमेकं सूक्ष्मं बृहच्च वा।
रुद्रभावं प्रयान्त्येवं सर्वे ते नात्र संशयः ॥२१॥

हे सुन्दरी ! हे पार्वती ! रुद्राक्षारण्य क्षेत्र में उत्पन्न रुद्राक्ष को यदि कोई देश विदेश द्वीप द्वीपान्तर तक किसी तरह से पहुँचाता है, और उन दूर-दूर तक पहुँचे हुए रुद्राक्षों में से एक दाना, अथवा अधिक दानें, अथवा पूरी माला को, कोई व्यक्ति धारण करता है तो भी वह व्यक्ति मुक्ति प्राप्त कर लेता है, हे देवी ! चाहे उन दानों को पक्षी ही उड़ा कर ले गये हों। हे महेश्वरी !

शीत-शैल विजयपुर पर्वत पर रुद्राक्षारण्य के प्रमुख देवता पिण्डेश्वर महादेव हैं, यही रुद्राक्षारण्य का पञ्चक्रोशी क्षेत्र है। यहाँ से सीधे नापा जाय तो ठीक ८ माइल की दूरी पर प्रसिद्ध वराह क्षेत्र है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्ष दानों को धारण करने वाले, चाहे ब्राह्मण हों, चाहे क्षत्रिय हों, चाहे वैश्य हों, अथवा शूद्र हों, अन्त्यज हों, नीच हों, नीच से भी नीच हों, पातकी हों, महापातकी हों, उपपातकी हों, चाहे स्त्री हों, चाहे पुरुष हों, चाहे नपुंसक हों, चाहे पशु हों, चाहे पक्षी हों, पशुओं में नीच पशु, शूकर, कुकुर, गदहा, बिल्ली, बाँदर एवं मुर्गा-मुर्गी आदि भी रुद्रभाव को प्राप्त करते हैं, शिवसायुज्य स्वरूप मुक्ति प्राप्त करते हैं। हे देवी ! इस तथ्य में कोई संशय नहीं है।

रुद्राक्षि-संभवत्वेन साक्षाद् रुद्रात्मकं प्रिये ! ।
नाम्ना रुद्राक्षमित्येव प्रथितं धरणी-तले ॥२२॥
रुद्राक्षं धार्यते येन रुद्रस्तेन धृतः स्वयम् ।
तस्मादवश्यं मनुजैर्धार्यं रुद्राक्षमद्रिजे ! ॥२३॥
रुद्राक्षं न धृतं येन चतुष्पद-समो हि सः ।
निरर्थकं भवेज्जन्म विना रुद्राक्षधारणात् ॥२४॥

हे प्रिये ! भगवान् रुद्र (शिव) के आँख से उत्पन्न हुए हैं, अतः उन्हें रुद्राक्ष कहा जाता है, रुद्राक्ष, रुद्राक्ष नाम से ही संसार में प्रसिद्ध हैं, भगवान् शिव के आँख से उत्पन्न हुए हैं, अतएव रुद्राक्ष साक्षात् शिव रूप के प्रतीक हैं, अर्थात् शिव स्वरूप हैं। हे पर्वतराजपुत्री ! पार्वती ! जिसने रुद्राक्ष धारण किया, मानों उसने साक्षात् रुद्र (शिव) को ही धारण कर लिया अतः मनुष्य मात्र को रुद्राक्ष धारण करना आवश्यक है। जिस मनुष्य ने रुद्राक्ष धारण नहीं[1] किया है वह मनुष्य होते हुए भी चतुष्पद तुल्य है। रुक्षाद्र धारण किये बिना मनुष्य जन्म ही निरर्थक है।

---

१. मानव मात्र को आरोग्य प्रदान करने के लिये इतनी कड़वी उक्ति हैं। रुद्राक्ष महौषधि है, रक्तचाप, हृदयरोग, दमा, बाथ आदि असाध्य रोगों में माला मात्र धारण करने से भी रोगी को आराम मिलता है। रुद्राक्षारण्य हिन्दी प्रति एवं अंग्रेजी प्रति अवश्य पढ़ें। लेखक का अनुसंधान एवं रुद्राक्ष का इतिवृत्त तथा रुद्राक्षारण्य का पथ प्रदर्शक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्र ते कथयिष्येऽहमितिहासं पुरातनम्।
रुद्राक्षस्य हि माहात्म्यं ह्यद्भुतं विस्मयप्रदम् ॥२५॥

हे पार्वती ! मैं तुम्हें प्राचीन समय का इतिहास सुनाता हूँ, रुद्राक्ष का माहात्म्य स्वरूप इतिवृत्त अति अद्भुत है और आश्चर्यजनक है।

पुराऽभूद् ब्राह्मणः कश्चित् केरलेषु द्विजोत्तमः।
देवदत्त इति ख्यातः सर्व-शास्त्र-विशारदः ॥२६॥
वेद-वेदान्त-तत्त्वज्ञो धर्मशास्त्रेषु कोविदः।
सर्वज्ञः सर्ववेत्ता च श्रौतस्मार्त्तादिकर्मकृत् ॥२७॥

हे देवी ! पहले किसी समय केरल देश में उत्तम ब्राह्मण कुल में सभी शास्त्रों को जानने वाले विद्वान् देवदत्त नाम से विख्यात एक ब्राह्मण थे। वे ब्राह्मण वेद वेदाङ्गों के तत्त्वों में पारंगत थे, धर्मशास्त्रों के मह विद्वान् थे, सर्वज्ञ थे, सर्ववेत्ता थे, और श्रौत विधान के कर्मकाण्डों में तथा स्मार्त विधान के कर्मकाण्डों में लगे रहते थे।

केनापि विधियोगेन विपरीताऽभवन्मतिः।
ततः पापसमाचारः समभूत्स द्विजाधमः ॥२८॥

हे गौरी ! उन देवदत्त नाम के ब्राह्मण की मति (बुद्धि) किसी दैवयोग से कुसंगति के द्वारा विपरीत (उलटी) हो गई और वह ब्राह्मण पापयुक्त कर्मों को करने लगा, और उन पाप कर्मों को करने से ही वह द्विजाधम (नीच ब्राह्मण) कहलाने लगा।

परदार-रतो नित्यं परद्रव्यापहारकः।
द्यूते चौर्ये च निरतो वेश्यासंगम-लम्पटः ॥२९॥
मद्यपान-रतो नित्यं मांसभक्षण-लालसः।
श्रौतस्मार्तादि-रहितः पतिताऽग्रेसरः खलः ॥३०॥
धूर्तैः परिवृतः पापः पापिष्ठैः पापबुद्धिभिः।
पापमेवाचरन्नित्यं चिरकालमवर्तत ॥३१॥

हे गौरी ! ब्राह्मण अधम होता है, तो इन कर्मों को करने वाला ही होता है, जो कि देवदत्त ने किए हैं। देवदत्त दूसरों को लूटने लगा, परस्त्रियों में लम्पट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहने लगा, जुआ खेलने लगा, चोरी करना शुरू कर दिया, वेश्याओं के साथ रहना प्रारम्भ कर दिया, शराब पीना प्रारम्भ कर दिया, मांस भक्षण में स्वाद लेने लगा और वह देवदत्त श्रौतस्मार्तादि कर्मों से रहित होकर पतितों का नायक, पतितों का मुखिया बना। वह खल पढपशु, देवदत्त पाप बुद्धिवाले धूर्त पापिष्ठों के साथ पाप कर्म करते हुए, ग्रामवासियों को सताते हुए भी अनेक दिन तक उसी ग्राम में रहा।

ततः पाप-समाचारं ब्राह्मणा ग्राम-वासिनः।
ग्रामात् निष्कासयामासुर्मिलित्वा सर्व एव ते ॥३२॥
ग्रामात् निष्कासितस्तस्माद् ग्रामान्तरमुपागतः।
तत्रापि पूर्ववन्मूढः पापमेव करोत्यलम् ॥३३॥
तत्रत्यैश्च द्विजैः सर्वैः स्वग्रामात् स बहिष्कृतः।
कुत्राप्यलब्धवासः सन् काननं प्रत्यपद्यत ॥३४॥

वहाँ रहते हुए, उसने उस ग्रामवासियों को खूब सताया। एक दिन सभी ग्रामवासियों ने और ब्राह्मण वर्ग ने मिलकर सलाह की कि इसे गाँव से क्यों न निकाल दिया जाय। फलतः देवदत्त को मारपीट कर बेइज्जत के साथ गाँव से निकाल दिया गया। उस गाँव से भगाया गया देवदत्त दूसरे गाँव में गया। वहाँ भी उसने पहले के तरह ही अत्याचार मचाना शुरू कर दिया। उस गाँव से भी वैसे ही निकाला गया। अब उस पतित ब्राह्मण देवदत्त को किसी भी गाँव में शरण नहीं मिला तो, जंगल में जाकर रहने लगा।

तत्राप्यरण्ये पापात्मा मृगान् पक्षिगणानपि।
निहत्य बहुशो नित्यमग्नौ निष्टप्य दुष्टधीः ॥३५॥
मांसैरेव कृताहारः किञ्चित् कालमवर्तत।
तस्यैवं वर्तमानस्य पापिष्ठस्य दुरात्मनः ॥३६॥
दुराचारस्य दुष्टस्य मृत्युकाल उपस्थितः।
तस्मिन् निर्मनुजेऽरण्ये निर्जले मरुमण्डले ॥३७॥

उस वन (जंगल) में भी वह पापी अनावश्यक मृग आदि पशुओं को और पक्षियों को मारा करता था। और कुछ आग में भूनकर खा जाता था, शेष मांस सड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाता था। फलतः कुछ दिन बाद उसे उस जंगल से दूसरे जंगल में, दूसरे से तीसरे जंगल में, इस तरह वह देवदत्त इस वन से उस वन में जाकर गुजारा करने लगा। जिस जंगल में जाता था, वहाँ के सारे पशु पक्षियों को समाप्त कर देता था। इस जंगल से उस जंगल में इसी तरह डोलते-डोलते, उस पापिष्ठ, दुरात्मा, दुराचार परायण, दुष्ट देवदत्त का मृत्यु समय भी उपस्थित हुआ। देवदत्त एक किसी निर्जन, निर्जल, मरुभूमि के वन में पहुँचा था कि वह किसी स्थान में गिर गया और वहीं मर गया।

पपात मृत्युमापन्नः कस्मिश्चिद् भूतले ततः।
ततस्तं मृत्युमापन्नं नेतुं वैवस्वताज्ञया ॥३८॥
यमदूताः समायातास्तं देशं घोररूपिणः।
बध्वा पाशैर्गले दूता व्यचकर्षन्त भीषणाः ॥३९॥
वैवस्वत-पुरं नेतुं गृहित्वा तं तु ते गताः।
स यत्र पतितः पापो भूतले मृत्युमागतः ॥४०॥

मृत्यु मूर्छा से पीड़ित, मृत्यु को प्राप्त उस देवदत्त को यमपुर में लाने की यमराज की आज्ञा को पाकर यमराज के भयानक आकृति के डरावने चेहरे के दूत सब आ पहुँचे। वे दूत पाश से देवदत्त को गले में बाँधकर खींचते हुए, यमपुर के तरफ चल दिये। हे पार्वती! किन्तु देवदत्त जिस भूमि पर गिर के मर गया था उस भूमि के भीतर एक रुद्राक्ष का दाना अनेक दिन से दबा हुआ था।

तत्रान्तर्भुवि रुद्राक्षं चिरकालेन संस्थितम्।
तेन पुण्य-प्रभावेण शिवदूताः शिवाज्ञया ॥४१॥
मध्येमार्गं विलोक्याऽथ नीयमानं ततो द्विजम्।
यमदूतैर्घोररूपैस्ताड्यमानं कशादिभिः ॥४२॥
विलोक्य शिवदूतास्ते जित्वा तान् यमकिङ्करान्।
मोचयित्वा गले बद्धं ताडितं तैर्भयातुरम् ॥४३॥
दिव्यं रूपधरं कृत्वा दिव्याम्बर-विभूषणम्।
विमान-वरमारोप्य शिवदूतास्ततो द्विजम् ॥४४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कैलासं शङ्करावासमनयन् शिवसन्निधिम्।
एवं प्रभावं रुद्राक्षं साक्षात् रुद्रस्वरूपकम् ॥४५॥

नीचे रुद्राक्ष का दाना दबा हुआ था, उसी भूमि के ऊपर देवदत्त मृत्यु को प्राप्त हुआ। अतः रुदाक्ष स्पर्श करने के पुण्य प्रभाव से देवदत्त को शिवलोक (रुद्रलोक) कैलाश में शंकर जी के समक्ष उपस्थित करने की आज्ञा शिवदूतों को शंकर से मिली। कैलाश से शिवदूत चल दिये, तो रास्ते में यमराज के दूतों द्वारा गले में पाश से बाँधकर घसीटते और कोड़ों से पीटते हुए उस देवदत्त को यमपुर के तरफ ले जाते हुए, शिवदूतों ने देखा। यमदूतों और शिवदूतों में वाद-विवाद हुई। यमदूतों से देवदत्त को छुड़ाने के लिये शिवदूतों को लड़ना भी पड़ा। यमदूतों के द्वारा गले में पाश से बाँध कर पीटा गया एवं घसीटा गया। भयभीत उस देवदत्त को छुड़ा कर, गले से पाश को खोलकर, द्विव्यरूप-धारी बनाकर, दिव्य वस्त्र और गहना पहिनाकर, द्विव्य विमान में वैठा कर शंकर जी का आवास भूमि शिवलोक कैलाश के तरफ शिवदूत उसे लेके चले गये और उसको वहाँ पहुचने पर शिवसान्निध्य प्राप्त हुआ। हे देवी! इस तरह के प्रभावशाली, साक्षात् शिव स्वरूप रुद्राक्ष होते हैं।

रुद्राक्षस्य प्रभावं तु विना को वेत्ति शङ्करम्।
यत्रैतादृक् प्रभावाणि रुद्राक्षाणि भवन्त्युमे! ॥४६॥
ततः पुण्यतमं क्षेत्रं कुतोऽस्ति धरणीतले?।
यथैव सर्वतीर्थानि नैमिषे सन्ति पार्वति ॥४७॥
तथैव सर्वतीर्थानि रुद्राक्षेषु वसन्ति हि।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन रुद्राक्षारण्य-सेवनात् ॥४८॥
सर्वतीर्थ-स्नानफलं लभते नात्र संशयः।
न रुद्राक्षसमं तीर्थं विद्यते धरणीतले ॥४९॥

हे देवी! रुद्राक्ष के प्रभावों को हमें छोड़कर और कोई नहीं जानता है। हे भगवती! इस तरह के प्रभाव शाली रुद्राक्ष जहाँ पैदा होते हैं, और फल देते हैं, तो, हे उमा! तुम्हीं वताओ रुद्राक्षारण्य से भी अधिक पुण्यफल देनेवाला तीर्थ क्षेत्र इस पृथ्वी में अन्यत्र और कहीं हो सकता है क्या?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे पार्वती ! जिस तरह नैमिषारण्य में सभी तीर्थ उपस्थित रहते हैं, उसी तरह केवल रुद्राक्ष के दाने में ही सभी तीर्थ और पुण्य क्षेत्र विद्यमान रहते हैं तो रुद्राक्षारण्य का प्रभाव, महत्ता और शक्ति क्या कितनी है, तुम अपने से ही अमुमान कर लो ।

इन्हीं कारणों से भरपूर उपाय करके परिश्रम के साथ जूझकर के भी रुद्राक्षारण्य का दर्शन और रुद्राक्षारण्य के तीर्थों में स्नान करना चाहिये । रुद्राक्षारण्य की सेवा (दर्शन, स्नान, दान, कीर्तन, जप, पूजा, पाठ, निर्माण, वृक्षारोपण, रुद्राक्ष सेचन आदि से) करने से संपूर्ण तीर्थों की सेवा से प्राप्त होने वाले फल प्राप्त हो जाते हैं । संपूर्ण तीर्थों में स्नान करने का फल मिल जाता है । इस तथ्य में कोही किसी तरह का संशय, शंका नहीं है । हे देवी ! मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, इस पृथ्वीतल में रुद्राक्ष के समान प्रभावशाली कोई तीर्थ नहीं है ।

इति ते सारमाख्यातं रुद्राक्षारण्य-वैभवम् ।
रुद्राक्षस्य च माहात्म्यं यत् किञ्चित् कथितं मया ॥५०॥
विस्तरेण प्रवक्तुं हि को वा जानाति शांकरि ! ।
गण्यन्ते पांशवो भूमेर्गण्यन्ते दिवि तारकाः ॥५१॥
रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यं शेषेणाऽपि न गण्यते ।
इति सर्वं समाख्यातं तव स्नेहान्मयाऽद्रिजे ! ॥५२॥

हे महेश्वरी ! यहाँ तक इस तरह से मैंने तुम्हें रुद्राक्षारण्य (शिववन) का माहात्म्य को संक्षेप में वैभवस्वरूप सार मात्र वताया, तो समझो कि मैंने भी यत्किञ्चित् (थोड़ासा) वताया । हे शांकरी ! रुद्राक्ष के माहात्म्य को (रुद्राक्षारण्य के माहात्म्य को) विस्तार पूर्वक कोई नहीं जानता है, और बता भी नहीं पाता है । हे पार्वती ! यदि पृथ्वी के धूलिकणों को गिना जाय तो गिन्ती में आ जायेंगे । आकाश के तारे गिने जा सकते हैं । किन्तु रुद्राक्षारण्य के माहात्म्य को तो शेषनागजी अपने सहस्र जिह्वा से भी नहीं गिन पाते हैं । अत: रुद्राक्ष के द्वारा जितने को शिव प्राप्ति हुई और जितने को होगी, संपूर्ण वह रुद्राक्षारण्य का ही माहात्म्य है । हे पर्वतराजपुत्री ! पार्वती ! इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तरह संपूर्ण रूप में रुद्राक्षारण्य का माहात्म्य मैंने तुम्हारे स्नेह में वशीभूत हो कर तुम्हें बताया।

गोपनीयं प्रयत्नेन किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ? !
इत्युक्त्वा पार्वतीं देवीं महेशो विरराम ह ॥५३॥

हे पार्वती ! इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को प्रयत्न पूर्वक तुम रक्षा करना (गोपनीयं = गुपु-रक्षणे) गोप्य रखना। और क्या तुम सुनना चाहती हो ? अथवा विशेष रुद्राक्षारण्य माहात्म्य का विस्तार सुनना चाहती हो, तो भी आज्ञा करो देवी !

हे ऋषीश्वरों ! माता पार्वती (भगवती देवी) को इस तरह से इतना कहकर भगवान् शङ्कर चुप हो गये (भगवान् शंकर ने प्रवचन से विराम लिया)।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनं
नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

पार्वत्युवाच

देव-देव ! महादेव ! सच्चिदानन्दनिर्भर ! ।
दुष्ट-दानव-दर्पघ्न ! शिष्टानामिष्ट-दायक ! ॥१॥
रुद्राक्षारण्य-माहात्म्यं मया त्वत्तः श्रुतं प्रभो ! ।
तत् - दर्शन-फलं चापि श्रुतं सर्वमशेषतः ॥२॥
रुद्राक्षाणां च माहात्म्यं तेषां यत् धारणे फलम् ।
तत् सर्वं त्वन्मुखात् ज्ञातं मयि प्रीत्या त्वयोदितम् ॥३॥

हे ऋषीश्वरों ! भगवती पार्वती ने भगवान् शंकर से साररूप रुद्राक्षारण्य माहात्म्य सुन लिया। विस्तार पूर्वक सुनने की इच्छा हो तो, कहो, मैं सुनाता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हूँ, भगवान् शंकर ने पार्वती से कहा भी था, अतः माता पार्वती भगवान् शंकर को विस्तार पूर्वक रुद्राक्षारण्य के विषय में प्रवचन करने के लिये उपक्रम प्रस्तुत कर रही हैं।

महादेवी पार्वती जी कहती हैं—

हे देवदेव ! हे महादेव ! हे सत्-चित्-आनन्द में मग्न, सच्चिदानन्द ! दुष्ट दानवों के घमण्डों को नाश करने वाले देव ! हे शिष्ट व्यक्तियों को इष्ट वस्तु प्रदान करने वाले शंकर ! हे प्रभो ! संक्षिप्त साररूप मात्र रुद्राक्षारण्य माहात्म्य और रुद्राक्षारण्य के दर्शन से प्राप्तव्य फलों को आपसे मैं सब श्रवण कर चुकी। रुद्राक्षों का माहात्म्य और रुद्राक्षों को धारण करने से जो फल प्राप्त होते हैं, वे भी सुन चुकी। मेरे प्रेम के वशीभूत होकर आपने ही मुझे सुनाया।

रुद्रस्याक्ष्णः समुत्पन्नं रुद्राक्षमिति केवलम्।
सामान्यतस्तदुत्पत्तिस्त्वया पूर्वमुदीरिता ॥४॥
विस्तरेण तदुत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम्।
त्वमेव वेत्सि रुद्राक्ष-संभवं परमेश्वर ! ॥५॥

हे परमेश्वर ! भगवान रुद्र के नेत्रों से उत्पन्न होने से जिनका नाम रुद्राक्ष है, कह कर सामान्यतः रुद्राक्षोत्पत्ति कारण को आपने बताया। अब इस समय मैं आप से विस्तार पूर्वक रुद्राक्ष उत्पत्ति के कारणों को श्रवण करना चाहती हूँ। हे परमेश्वर ! रुद्राक्षोत्पत्ति कारण स्वरूप रुद्र आप स्वयं हैं, तो आपको छोड़ कर और कौन व्यक्ति रुद्राक्ष के विषय में पूर्ण ज्ञाता हो सकता है ?

किं वृक्षरूपं प्राणेश ! रुद्रस्याक्ष्णः समुद्गतम् ?।
किं वीजरोपणोत्पन्नमथवा फलरूपतः ? ॥६॥
कस्मिन् काले समुत्पन्नं रुद्राक्षं रुद्रनेत्रतः ?।
केन वा कारणेनाऽत्र रुद्रस्याक्ष्णो विनिर्गतम् ? ॥७॥
तत् सर्वं च महेशान ! विस्तरेण वदस्व मे।
नाऽज्ञातं भवता किञ्चित् त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥८॥

हे प्राणेश्वर ! तो क्या, रुद्र के (आपके) आखों से बड़े-बड़े वृक्षरूप रुद्राक्ष के पेड़ निकल पड़े ? अथवा आपने बीज बोया ? अथवा आपके आँख से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्ष फल के दाने उत्पन्न हुये ? किस समय में, किस घटना में, किस कारण से रुद्राक्ष रुद्रनेत्र से उत्पन्न हुए ? हे महेश्वर ! उक्त सभी प्रश्नों का समुचित सत्य उक्ति के साथ उत्तर दीजिए। आप से छिपा हुआ ज्ञान विज्ञान तीनों लोक में कुछ भी नहीं है।

सूत उवाच

इति पृष्टस्तथा देवः पार्वत्या स्वीयकान्तया।
प्रतिवक्तुं समारेभे प्रहर्षेण प्रसन्नधीः ॥९॥

सूत जी कहते हैं—

हे ऋषीश्वरों ! अपनी प्रियतमा भगवती देवी पार्वती के द्वारा इस तरह से पूछे गये, भगवान् शिव ने, लोक हित में आधारित पार्वती के प्रश्नों को समझ कर अत्यन्त हर्ष से प्रसन्न चित्त हो उत्तर देना प्रारम्भ कर दिये।

शिव उवाच

साधु पृष्टं त्वया देवि ! रुद्राक्षोत्पत्ति-कारणम्।
न केनाऽपि पुरा पृष्टं न मया च समीरितम् ॥१०॥

ईश्वर (भगवान् शिव) कहते हैं,—

हे ईश्वरी ! हे देवी ! तुम्हारे प्रश्न अति उत्तम हैं। भले ही तुमने पूछा। रुद्राक्ष के उत्पत्ति विषय में कारणों को आज तक हम से किसी ने नहीं पूछा, बिना पूछे मैंने भी किसी को नहीं बताया, सस्ता ज्ञान अपमान होता है, तो जानती हो। रुद्राक्ष के विषय में तुमने ही सर्वप्रथम हमसे प्रश्न किया है। जब तुमने प्रश्न किया है, तो मैं अब उत्तर देता हूँ।

इदानीं ते प्रवक्ष्यामि रुद्राक्षोत्पत्तिकारणम्।
सावधानेन मनसा शृणुष्वावहिता सति ! ॥११॥

हे सती ! हे देवी ! रुद्राक्षोत्पत्ति कारणों को अव मैं तुम्हें विस्तार पूर्वक सुनाता हूँ, दत्तचित्त से सावधान होकर तुम सुनो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरा स्वयम्भूर्भगवान् सृष्टिकालेह्य ुपस्थिते ।
ससर्ज सकलान् लोकान् तपसा स चराचरान् ॥१२॥
देव-दानव-गन्धर्वान् सिद्ध-विद्याधरोरगान् ।
यक्ष-रक्षः - पिशाचादीन् भूत-प्रेतगणानपि ॥१३॥
सकिन्नरान् किंपुरुषान् मानवाँञ्च सहस्रशः ।
गजाश्व-महिषान् सिंहान् सरित्-सागर-पर्वतान् ॥१४॥
चतुर्विधं भूतजातमण्डजादि-विभेदतः ।
नक्षत्र-ग्रहताराश्च सूर्य्याचन्द्रमसौ तथा ॥१५॥
सृष्ट्वा सर्वाणि भूतानि सर्वलोक-पितामहः ।
तेषां स्थानानि वृत्तिञ्च कल्पयामास पद्मभूः ॥१६॥

हे देवी ! संसार की आदि अवस्था में, चराचर चतुर्विध भूत प्राणियों के सहित विश्व का सृष्टि समय उपस्थित होने पर, भगवान् ब्रह्माकी अपनी ही तपस्या की शक्ति से, आज की यह दुनिया सृष्टि हुई। भगवान् ब्रह्मा ने ही चतुर्विध जीवात्मा सहित लोकालोक की सृष्टि की है, सम्पूर्ण सृष्टि ब्रह्मा की है; सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी हैं। देवता, दानव, गन्धर्व, सिद्ध, विद्याधर, उरग (सर्प, नाग) यक्ष, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, किंनर, किंपूरुष, मानव, हाथी, घोड़ा भैंस, सिंह, नदी, सागर, पर्वत आदि सृष्टि करते समय चार भाग में विभक्त करके ब्रह्मा जी ने सृष्टि की स्वेदज, अण्डज, उद्भिज, जरायुज की सृष्टि से संसार परिपूर्ण है। स्थावर और जङ्गम सृष्टि के भेद से दो प्रकार की सृष्टि में चार प्रकार के जीवात्मा हैं। ग्रह, नक्षत्र, तारा, सूर्य, चन्द्र आदि सहित चतुर्विध प्राणियों को सृष्टि कर के संपूर्ण लोक के पितामह कमलयोनि ब्रह्मा जी ने उनकी जीविका के लिए भूमि और काम अधिकार आदि को भी यथायोग्य बाँट दिया।

अधिकाराँश्च सर्वेषां यथायोग्यमकल्पयत् ।
इन्द्रादीनां तदा ब्रह्मा दिक्पालत्वमखण्डितम् ॥१७॥
भूतप्रेतपिशाचानामन्तरिक्षे कृता स्थितिः ।
गजोष्ट्र-महिषादीनां भूमावेव कृता स्थितिः ॥१८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पातालादिषु लोकेषु स्थापयामास दानवान् ।
मानवानां ददौ स्थानं भगवान् वसुधातले ॥१९॥

हे देवी ! उनके लिये यथायोग्य अधिकारों को ब्रह्मा जी ने इस तरह प्रदान किया,—अखण्डित रूप में दसों दिशाओं का अधिकार इन्द्रादि देवताओं को मिला । भूत प्रेत पिशाच आदि को अन्तरिक्ष का अधिकार मिला । हाथी, ऊँट, भैंस आदि पशुओं को पृथ्वी ही मिली । मानवों को भी पृथ्वीतल ही मिली । पाताल आदि लोकों का अधिकार दानवों को मिला ।

स्वाधिकारान् प्रकुर्वन्तः पितामहमते रताः ।
बलिं तस्मै दिशन्तश्च यथाकालं यथाविधि ॥२०॥
एवमेव महाकालो व्यतीतो युगलक्षकः ।
ततस्ते देवगन्धर्वा दानवा मानवास्तथा ॥२१॥
स्वेषु स्थानेषु सततं वर्तमाना यथासुखम् ।
एवं स्थितेषु सर्वेषु स्वे स्वे स्थाने यथासुखम् ॥२२॥

हे देवी ! इस तरह से चतुर्विध जीवात्माओं का प्रजापति ब्रह्मा जी ने सृष्टि करके स्थापित किया । और उन प्रजाओं का भी, अपने अपने जगह में रहते हुए तथा अपने-अपने काम और अधिकार को पालन करते हुये, समय-समय में पितामह ब्रह्मा जी की आराधना, पूजा, उपहार आदि से सेवा करते हुए आनन्दपूर्वक से एक लाख युगों का समय बीत गया, सब सन्तुष्ट ही थे । अपने अपने जगह पर सब आनन्दित सुखी थे । किन्तु इसी बीच पाताल लोकवासी दानवों में एकछत्र आधिपत्य प्राप्त करने का, दूसरों का अधिकार छीनने का, हर तरह से दूसरों को सताने का, पाप स्वरूप लोभ पैदा हो गया ।

कदाचित् दानवाः शूराः पातालाद् वहिरागताः ।
मयेन दानवेन्द्रेण पालिता बलगर्विताः ॥२३॥
हिमवत् शैलश्रृङ्गेषु पुरत्रयमकल्पयन् ।
ततः पुरत्रयं दिव्यं त्रिदशैरतिदुर्गमम् ॥२४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आश्रित्य त्रिदशान् सर्वान् दानवाः समपीडयन् ।
तेषां स्थानानि चाहृत्य च्यावयित्वाऽधिकारतः ॥२५॥
यथासुखं वर्तमानास्तेषां स्थानेषु दानवाः ।
निर्जित्य त्रिदशान् सर्वान् सगन्धर्वान् समानुषान् ॥२६॥

इस तरह से पाताल वासियों में पाप स्वरूप लोभ से सत्ता की भूख जग जाने से, वे पातालवासी, मय नाम के दानवेन्द्र से रक्षित, शूर वीर दानवगण, पाताल से बाहर निकल कर आक्रमण करने लगे । अपने बल में घमण्ड करनेवाले उन दानवों ने हिमालय पर्वत के शृङ्गों पर तीन पुर (शहर) बनवा लिये । वे तीन शहर एक-एक धातुओं से निर्मित थे । एक सोने का पुर था, एक चाँदी का था, एक लोहे का था । वे पुर देवताओं के द्वारा अभेद्य थे । अति दृढ़ता के साथ बनवाये गये थे, सुन्दरता में भी दिव्य थे । ऐसे अभेद्य पुरो में रहकर त्रिपुरापुरों ने देवताओं को अति कष्ट दिया, खूब सताया । देवताओं के स्थानों को जीत लिया, उनके अधिकारो से वे वंचित कर दिये गये और उन्हीं के स्थानो में (उनको घर से निकाल कर उनके ही घरों में) दानवगण रहने लगे । त्रिपुरासुर ने गन्धर्व और मानवों को भी जीत लिया था ।

त्रिलोकान् बुभुजुः सर्वे पुरत्रय-कृतालयाः ।
तैर्दानवैर्महावीर्यैः पुरत्रय-निवासिभिः ॥२७॥
च्यावितास्च निजस्थानात् स्वाधिकाराश्च तेऽमराः ।
भयभार-समाक्रान्ता दुःखशोक-प्रपीडिताः ॥२८॥
कुत्राप्यलब्ध्वा त्रातारं दीना हीन-मनोरथाः ।
परस्परं वियुक्ताश्च देव-गन्धर्व-मानवाः ॥२९॥
कलत्र-पुत्र-मित्रादीन् सन्त्यज्य भय-मोहिताः ।
विद्रुताः सर्वतो दिक्षु सर्वे प्राण-परीप्सवः ॥३०॥

वैसे अभेद्य त्रिपुर में रहकर त्रिपुरासुरों ने तीनों लोक को जीत लिया, और एकछत्र भोग करने लगे । महा पराक्रमी त्रिपुरासुरों के द्वारा देश, खेत, घर, अधिकार, जान, माल सब छीने गये देवगण भय के भार से अति ही दब गये, दुःख शोक में पड़ गये । उन देवताओं को त्रिपुरासुरों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भय से किसी ने भी शरण नहीं दिया। देवताओं के मनोरथ सब दीन हीन हो गये। पत्नी पुत्र मित्र वन्धु बान्धव आदि से सब परस्पर में वियुक्त हो गये। देवता मानव और गन्धर्वों की दुर्दशा हुई। देवता मानव और गन्धवों ने प्राण बचाने के लिये अपने-अपने स्थानों को छोड़छाड़ के भागकर दिशा विदिशा में जाकर छिप के रहना पड़ा।

केचित् सुमेरु-श्रृङ्गेषु केचिन्मन्दरकन्दरे।
केचित्कैलासश्रृङ्गेषु केचिद्विन्ध्याद्रिसानुषु ॥३१॥
रूपान्तरं समासाद्य केचित् भूमौ व्यवस्थिताः।
काङ्क्षमाणाः स्वकं स्थानं निन्युः कालं यथा तथा ॥३२॥

कितनों ने सुमेरु पर्वत के निर्जन गर्तों में छिप कर जान बचायी, कितनों ने मन्दराचल के चट्टानों के नीचे छिपकर जान बचायी, किसी ने कैलाश के गुफाओं का शरण लिया, कितने विन्ध्याचल के दूनों में चले गये। कितनों ने भेष बदलकर पृथिवी में ही रहना स्वीकार किया। अपने छीने गये अधिकारों को (स्थान, देश, मालों को, पुनः प्राप्ति की चिन्ता में चेष्टा करते हुये किसी तरह से उनका समय बीता।

ध्यायन्तः परमेशानं शङ्करं लोक-शंकरम् ।;
"ततः कदाचित् ते सर्वे समेत्य त्रिदशोत्तमाः ॥३३॥

हे ऋषीश्वरों! चिन्ता, भय और कष्टों से दुःखी वे देवगण अपनी-अपनी वेदना से आराम पाने के लिए भगवान् शंकर (शं=कल्याणं करोति इति शंकरः) की आराधना को किया करते थे। कहते थे, हे शंकर! तुम तीनों लोक का कल्याण करते हो, इसीलिये तुम्हारा नाम शंकर है, जरा हमारी दशा को तो देखो, हम तुम्हारे पक्ष के हैं।

हे पार्वती! किसी समय संपूर्ण देवगण एकत्रित होकर गुप्त मन्त्रणा करने लगे।

मन्त्रयित्वा यथाबुद्धि कृत्वा निश्चयमात्मनि।"
वसन्तं मेरुशिखरे सर्वलोकोपरिस्थिते ॥३४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुद्धिपूर्वक मन्त्रणा करके, शपथ ग्रहण के साथ आत्मनिर्णय करके, सब देवगणों ने संपूर्ण लोकों से ऊपर मेरु शिखर स्थित ब्रह्मलोक पर ब्रह्मा जी के शरण में जाने का निश्चय कर लिया, और चल भी दिए।

नानारत्न-समाकीर्णे भासमाने स्वतेजसा।"
"ब्रह्मर्षिभिर्ब्रह्मविद्भिस्तापसैर्विजितेन्द्रियैः ॥३५॥
योगीन्द्रैश्च यताहारैः सेव्यमाने समन्ततः।"
तस्मिंस्तु ब्रह्मसदने क्षुत्पिपासा-विवर्जिते ॥३६॥
आधिव्याधि-विनिर्मुक्ते दुःख-शोक-बहिष्कृते।
वसन्ति यत्र ब्रह्मिष्ठाः शान्ताः दान्ताः सदाऽमलाः ॥३७॥

संपूर्ण लोकों के ऊपर मेरु शिखर स्थित वह ब्रह्मभवन नाना। रत्नों से सजाया गया था, और अपने ही तेज से भाषित हो रहा था, ऐसे ब्रह्मभवन के लिए देवताओं ने प्रस्थान किया। उस ब्रह्मभवन के सेवक, नियत आहार करने वाले योगीन्द्र, ब्रह्मविद् ब्रह्मर्षि, जितेन्द्रिय तपस्वी गण थे। उस ब्रह्म-भवन में भूख और प्यास नहीं लगते थे। दुःख, शोक, आधि, व्याधियों का प्रवेश ब्रह्मलोक पर नहीं है। उस ब्रह्मलोक में शान्त दान्त अमल पवित्र ब्रह्मनिष्ठ जन निवास करते हैं।

दत्ताभयाश्च सर्वत्र सर्वभूतदया-पराः।
कामक्रोध-विनिर्मुक्ता दम्भाऽहङ्कार-वर्जिताः ॥३८॥
मद-मात्सर्य-रहिताः विषयेषु गतस्पृहाः।
परापवाद-रहिताः स्वात्माहं-भाव-भाविताः ॥३९॥
मलत्रय-विनिर्मुक्ताः पाशाष्टक-विवर्जिताः।
मातृ-मान-प्रमेयादि दृश्यं यद् भुवनत्रयम् ॥४०॥
चित्स्वरूपं भावयन्तः स्वात्मक्रीडा-परायणाः।
अवस्था-त्रय-निर्मुक्तास्तुर्याऽवस्थामुपाश्रिताः ॥४१॥
स्वात्मानन्द-सुधाम्भोधि-सरिद्दूरीकृतामयाः।
देहत्रय-विनिर्मुक्ताः सच्चिदानन्द-विग्रहाः ॥४२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राक्कर्म-फलभोगार्थमूरीकृत-कलेवराः ।
स्वात्मारामाः स्वात्मरताः स्वात्मध्यानपरायणाः ॥४३॥
महात्मानो महाभागास्तस्मि लोके वसन्ति हि ।"
"यत्र मूर्तिधरा सर्वे वेदाः साङ्गाः समन्त्रकाः ॥४४॥

हे देवी ! ब्रह्मलोक के निवासियों की प्रवृत्ति सबको अभय प्रदान करने की होती है । संपूर्ण भूतप्राणियों में ब्रह्मलोक के निवासी दया करते थे । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, दम्भ, अहंकार उनमें कतई नहीं थे । विषय-वासनाओं के तरफ उनकी प्रवृति नहीं थी । दूसरों के अपवाद निन्दादि से परे थे । स्वात्मा में ही परमात्मा की भावना किया करते थे । अर्थात् 'अहं ब्रह्मास्मि' को प्रत्यक्ष कर चुके थे । तीन प्रकार के मल स्वरूप—कायिक, वाचिक, मानसिक विकारों से मुक्त थे । आठ प्रकार के शरीर के बन्धन स्वरूप— लज्जा, घृणा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य से मुक्त थे । और जो यह विश्व है, जो नापा जा सकता है, अनुमानादि प्रमाणों से जो प्रमाणित हो जाता है, जो दृश्य है, एवं जो तीनों भुवन है, इनके संपूर्ण वस्तुओं को ब्रह्मलोक के निवासी चित्-स्वरूप (ब्रह्मचैतन्य स्वरूप) देखते थे, तथा समझते थे । वे महात्मा गण आत्माराम थे, अपने ही आत्मा में परमात्मा के अनुसन्धान में मस्त रहते थे । तीन प्रकार के अवस्था—जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति से परे होकर चौथी अवस्था समाधि में रमण करते थे । आत्मानन्द स्वरूप अमृत सरिता में स्नान कर के सांसारिक व्याधियों से मुक्त थे । तीन प्रकार के शरीर—अन्नमय, प्राणमय, मनोमय शरीर से मुक्त होकर आनन्दमय शरीर को धारण करते थे । सच्चिदानन्द स्वरूप शरीरधारी थे । पूर्व जन्म के फलरूप कर्मों को भोग करने के लिए मात्र कलेवर धारण किए थे । आत्मा में रमण करते थे । आत्मा में ही रत थे । अपने आत्मा को अपने में ही चिन्तन करते थे, स्वात्मध्यान परायण थे । इस तरह के महाभागवान् महात्मा गण उस ब्रह्मलोक में रहते थे । उस ब्रह्मलोक में वेदाङ्गों के सहित साक्षात् मूर्ति चारों वेद, मन्त्रों के साथ थे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुःषष्टिकलाश्चैव सर्वे चाप्यागमास्तथा ।
इतिहास-पुराणानि काव्यानि विविधानि च ॥४५॥
कणादाद्यानि शास्त्राणि धर्मशास्त्राणि चैव हि ।
गायत्री चैव सावित्री तथा चैव सरस्वती ॥४६॥
ॐकारश्च वषट्कारः स्वाहाकारः स्वधा तथा ।
गङ्गाद्याः सरितः सर्वास्तीर्थानि विविधानि च ॥४७॥
सागराः पर्वताश्चैव क्षेत्राणि विविधानि च ।
दिव्यदेहधराः सर्वे दिव्याम्बर-विभूषणाः ॥४८॥
दिव्यस्रगनुलेपाश्च ब्रह्माणं पर्यूपासते ।"
"न तं कृतघ्ना पश्यन्ति न शठा न खलास्तथा ॥४९॥

दिव्यदेह धारी चौसठ कला थे, दिव्य देहधारी सभी आगमशास्त्र थे, इतिहास थे, पुराण थे, काव्य थे, कणाद गौतमादि से परिचित से परिचित प्रमाण शास्त्र थे, सभी धर्मशास्त्र थे। दिव्य देहधारी साक्षात् गायत्री, सावित्री, सरस्वती, स्वाहा, स्वधा, वषट्कार आदि थे। ॐकार भी दिव्य देहधारी था। गङ्गादि नदी, संपूर्ण तीर्थक्षेत्र, सागर आदि, पर्वतादि सभी दिव्य देहधारी, दिव्य आभूषण से आभूषित दिव्य वस्त्रधारी दिव्य गन्धादि मालाओं से अनुलेपित, सुशोभित थे। और वे सब भगवान् ब्रह्माजी की उपासना कर रहे थे। भगवान् ब्रह्मा जी को कृतघ्न जन, शठ व्यक्ति, खल-मानव नहीं देख पाते हैं। न तो वे ब्रह्मलोक ही पहुँच पाते हैं।

भूतद्रोह-करा ये च प्राणिहिंसा-कराश्च ये ।
पापाचार-परा ये च पापकर्म-परायणाः ॥५०॥
न द्रष्टुं ब्रह्मलोकं तं शक्नुवन्ति नराधमाः ।
तस्मिन् लोके स्थितं नित्यं ब्रह्माणं चतुराननम् ॥५१॥

पञ्चभूत प्राणियों से द्रोह करने वाले, प्राणियों की हिंसा करने वाले, पाप आचरण करने वाले, पाप कर्मों में परायण, नराधम उस ब्रह्मलोक को प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ऋषीश्वरों ! हे पार्वती ! इस तरह के ब्रह्मलोक में स्थित नित्य (अविनाशी) विग्रह धारी चतुर्मुख ब्रह्माजी को देख कर पीड़ित देवदलों ने नमस्कार किया। उस समय ब्रह्मलोक निवासी ब्रह्मर्षि देवर्षि और देवता तथा महात्मा सब भगवान् ब्रह्माजी की आराधना कर रहे थे।

अक्षमाला-वराभीति-सुधाकुम्भादि - शोभितैः।
वसुसंख्यैर्भुजैर्युक्तं तप्त-स्वर्ण-समप्रभम् ॥५२॥
किरीट-हार-केयूर-कटकाद्यैरलङ्कृतम् ।
दिव्याम्बरधरं देवं दिव्य–गन्धानुलेपनम् ॥५३॥
रत्नसिंहासने दिव्ये पारमेष्ठ्य-पदे स्थितम् ।
सुरर्षिभिर्नारदाद्यैर्योगीन्द्रैः सनकादिभिः ॥५४॥
अन्यैश्च बहुभिः सिद्धैः सेव्यमानं समन्ततः ।
स्रष्टारं सर्वलोकानां सर्वलोक–पितामहः ॥५५॥

हे ऋषीश्वरों ! उस समय ब्रह्माजी का दर्शन इस प्रकार का था,––भगवान् ब्रह्मा के चार मुख थे। भगवान् ब्रह्म के आठ हाथ थे, एक हाथ वरद मुद्रा में था, एक हाथ में रुद्राक्ष माला थी, एक हाथ अभय मुद्रा में था, एक हाथ में अमृत का घड़ा था, एक हाथ में वेद का पुस्तक था, एक हाथ में कमण्डलु थी, एक हाथ में कमल का फूल था, एक हाथ में ब्रह्मपाश था। तप्त सोने के समान भगवान् ब्रह्मा का वर्ण था। भगवान् ब्रह्मा ने किरीट, हार, केयूर, कटक आदि गहनों को धारण किया था। दिव्य वस्त्र से भगवान् शोभित हो रहे थे। दिव्य गन्ध युक्त गन्धादि चर्चित थे। रत्नों से निर्मित दिव्य सिंहासन में पारमेष्ठ्य-पद (परमेश्वर पद) से अकङ्कृत भगवान् ब्रह्मा विराजमान थे। भगवान् ब्रह्मा की देवर्षि नारदादि ऋषिगण, ब्रह्मर्षि, सनकादि-तपस्वी योगीन्द्र गण, और भी अनेक सिद्ध गण, आराधना कर रहे थे। चारों ओर जय-जय कार गूँज रहा था। ऐसे अविनाशी, संपूर्ण लोक के स्रष्टा, संपूर्ण लोक के पितामह भगवान् ब्रह्मा को देवताओं ने (पीड़ित-देवदलों ने) दर्शन कर के नमस्कार किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विलोक्य त्रिदशाः सर्वे परं हर्षं प्रपेदिरे।
नेमुः कृताञ्जलिपुटा देवास्ते दानवारयः ।।५६।।

हे ऋषीश्वरों ! ऐसे बह्माजी को दर्शन करके संपूर्ण देवगण अत्यन्त हर्षित हुए। हाथ जोड़कर दानवों के शत्रु देव गण ने भगवान् ब्रह्माजी को नमस्कार किया।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य माहात्म्ये लक्ष्मीललित-टीकायां पार्वतीश्वरसंवादे ब्रह्मलोकवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

अथ अष्टमोऽध्यायः

शिव उवाच

ततः सर्वे सुरगणाः दृष्ट्वा तत्र पितामहम्।
प्रणम्य भूयः शिरसा दण्डवत् प्रणिपत्य च ।।१।।
उत्थिताश्च पुनः सर्वे ते कृताञ्जलयोऽभवन्।
अस्तुवन् विविधैस्तोत्रैर्बह्माणं जगदीश्वरम् ।।२।।

भगवान् शङ्कर कहते हैं—

हे पार्वती ! उसके बाद ब्रह्मलोक में पहुँचे हुए उन देवगणों ने ब्रह्माजी का दर्शन किया। दण्डवत् प्रमाण किया, बार-बार नमस्कार किया। उठ करके सभी देवता हाथ जोड़ खड़े हो गए, और विविध (अनेक) स्तोत्रों से भगवान् ब्रह्मा की स्तुति देवताओं ने की।

देवा ऊचुः

देवदेव ! जगन्नाथ ! जगद्योने ! जगत्-प्रभो ! ।
सर्वज्ञ ! सकलाध्यक्ष ! सर्वलोक-पितामह ! ।।३।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सच्चिदानन्द-सन्दोह-सदाधृत-कलेवर ! ।
वेदान्तवेद्य-वेदात्मन् ! सर्व-वेदप्रवर्तक ! ॥४॥
निरावरण–विज्ञान ! निरावरण-चिन्मय ।
निरामय ! निराधार ! निरवद्य ! निरञ्जन ! ॥५॥
निष्कलङ्क ! निरातङ्क ! निर्विकार ! निरत्यय ! ।
सत्यज्ञानानन्तरूप ! पर-ब्रह्ममय ! प्रभो ! ॥६॥
साक्षि-स्वरूप ! सद्रूप ! सर्वास्थासु सन्तत ! ।
समस्त-जगदाधार ! समस्त-जगदन्तर ! ॥७॥

देवता गण विनती करते हैं—

हे देव-देव ! हे जगन्नाथ ! हे जगत्-योनि ! हे जगत्मूल ! हे सर्वज्ञ ! हे सच्चिदानन्द-धारा-स्वरूप शरीर धारण करने वाले प्रभो ! हे देव ! वेदान्त विद्या से मात्र पहचाने जाने वाले ईश्वर ! आप स्वयं वेदों के आत्मा है। आप आवरण रहित विज्ञान स्वरूप हैं। आवरण रहित चैतन्य चोला में आप विद्यमान हैं। आप रोग रहित हैं। आपके लिए कोई किसी तरह का आधार नहीं है, और आप समस्त जगत् के आधार हैं। आप निर्दोष हैं। आपमें किसी प्रकार का काला दाग नहीं है। किसी प्रकार की लाञ्छना नहीं है। आप आतङ्क रहित हैं। आप में किसी भी प्रकार का विकार आता नहीं है। आप से सांसारिक कोई भी वस्तु भिन्न नहीं है। आप सत्यज्ञान स्वरूप अनन्त हैं। हे परब्रह्म भगवन् ! हे प्रभो ! आप संम्पूर्ण जगत् के साक्षी हैं और साक्षियों में भी यथार्थ साक्षी हैं। जगत् की लयलीन अवस्था, सृष्टि अवस्था, संहार (प्रलय) अवस्था, उत्पत्ति अवस्था, एवं स्थावर जङ्गम सभी भूत प्राणियों की विभिन्न अवस्थाओं में आप निरन्तर साक्षी रूप से घट-घट वासी होकर प्रेरणा देते हैं। आप समस्त जगत् के आधार होकर भी जगत् से परे रहते हैं।

राजसं रूपमादाय जगत् त्वं सृजसे प्रभो ! ।
सत्त्वात्मना त्वमेवेदं पालयस्यखिलं पुनः ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संहर्त्ता च त्वमेवासि तमोगुण-समन्वितः ।
गुणत्रय-विहीनः सन् स्वे सुखे क्रीडसे पुनः ॥९॥
त्वमेव सर्वलोकानां कर्ता हर्त्ताऽविता तथा ।
विमूढास्त्वां न जानन्ति माया-मोहितचेतसः ॥१०॥
निर्मलज्ञाननिष्णाता निष्पापा निरहङ्क्रियाः ।
भगवन् ! त्वं विजानन्ति सच्चिचानन्दविग्रहम् ॥११॥
त्वमेव शरणं देव ! लोकानां शरणार्थिनाम् ।
आर्त्तानामार्तिहर्त्ता च भीतानामभयप्रदः ॥१२॥

हे प्रभो ! रजोगुण प्रधान शरीर को धारण करके आप ही जगत् को सृष्टि करते हैं, और सतोगुण प्रधान शरीर को धारण करके आप ही जगत् को पालन करते हैं, तथा आप ही तमोगुण प्रधान शरीर को धारण करके सृष्टि जगत् को संहार (लय) कर लेते हैं। इस तरह से त्रिगुण के द्वारा पृथक पृथक काम करते हुए भी, तीनों गुणों से अछूता रह कर अपनी आत्मा की सुख में अपने आप आनन्द पूर्वक क्रीड़ा करते हैं। हे प्रभो ! आप ही सभी लोक के स्रष्टा हर्ता पालनकर्ता हैं। विषय वासनाओं से विमूढता पूर्वक मोहित चित्तवृत्ति वाले मूर्ख व्यक्ति आप को नहीं पहचान पाते हैं। हे भगवन् ! सच्चिदानन्द विग्रह वाले आप को निर्मल पवित्र ज्ञान में निष्णात, पाप रहित एवं अहंकार रहित व्यक्ति मात्र जान पाते हैं। हे भगवन् ! दुःखियों के दुःख हर्ता, भयभीतों के भय हर्ता, आप को छोड़ कर और कोई नहीं हैं। आप ही शरणार्थियों को शरण दे सकते हैं। हे पितामह ! हमलोग आप के शरण में आए हैं।

शिव उवाच

इति स्तुत्वा सुराः सर्वे देवदेवं चतुर्मुखम् ।
ततो विज्ञापयामासुर्निजागमन-कारणम् ॥१३॥

भगवान् शिव कहते हैं—

हे पार्वती ! इस तरह से स्तुति कर लेने के बाद, देवदेव चतुर्मुख ब्रह्मा-जी को अपने आगमन का कारण देवताओं ने बताया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवा उचुः

देवदेव ! जगद्योने ! पद्मयोने ! चतुर्मुख ! ।
यदर्थं वयमायातास्तन्निबोध पितामह ! ॥१४॥

देवता गण धिनति करते हैं,—

हे दवदेव ! देवता के भी देवता ! हे पितामह ! हे जगत्-स्रष्टा ! हे कमलयोनि ! चतुर्मुख ब्रह्माजी ! जिस हेतु से हम सब यहाँ आए हैं, उसका करण हम सब बिनति कर रहे हैं, कृपया आप सुनें और समझ लें।

वयं देवाः पराभूता दानवैस्त्रिपुरालयैः ।
स्वस्थानात् स्वाधिकारात् च च्याविता भयपीडिताः ॥१५॥
विद्रुताः सर्वतो दिक्षु दुःख-शोक-भयार्दिताः ।
भवन्तं शरणं प्राप्ताः शरण्यं शरणार्थिनाम् ॥१६॥
यदत्रानन्तरं कार्यं तद्भवान् कर्तुमर्हति ।
विना भवन्तं त्रातारं न कुत्रापि लभामहे ॥१७॥
अस्माकं कुरु कल्याणं कल्याण-कमलासन ! ।
यथा निर्जित्य तान् सर्वान् दानवान् बलगर्वितान् ॥१८॥
सुखं यथा निवत्स्यामः स्वेषु स्थानेषु पूर्ववत् ।
तथा त्वमेव भगवन् ! विधेहि करुणानिधे ! ॥१९॥

हे पितामह ! त्रिपुरवासी त्रिपुरासुर दानवों के द्वारा हम सब देवता पराभूत हो गए। उन दानवों ने हमारे अधिकार छीन लिए। घर, गाँव, देश, मकानों से निकाल कर वाहर कर दिया। नाना तरह के कष्टों को देकर हम लोगों में भय और त्रास भर दिया। शरणार्थियों को शरण देने में समर्थ आप के शरण में हम सब आये हैं। हे पितामह ! अत्र हमलोगों के प्रति आपकी सहानुभूति स्वरूप ममता की आवश्यकता है, इस समय क्या करना चाहिए आप ही विचार कर के उस कार्य को कर दें। हे भगवन् ! अब आपको छोड़ कर हम लोगों की रक्षा करने वाला रक्षक और दूसरा यहाँ कोई नहीं है। कल्याण-स्वरूप कमल में वैठने वाले हे कमलासन !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आप हमलोगों का कल्याण करें। हे पितामह ! आप ऐसा कोई उपाय कर दें, जिस से उन बलगर्वित घमण्डी दानवों को जीत कर पहले के तरह ही हम सब अपने स्थानों को और अपने अधिकारों को प्राप्त करके सुख पूर्वक जीवन यापन कर पायें। हे दया के सागर ब्रह्मा जी ! हमारी यही विनति है, यही निवेदन है, यही प्रार्थना है।

शिव उवाच

इति विज्ञापितो देवैः सर्वैर्देव-हिते रतः।
समाश्वास्य सुरान् सर्वानिदमाह पितामहः ॥२०॥

भगवान् शिव कहते हैं--

हे पार्वती ! इस तरह से देवताओं के द्वारा विज्ञापित संपूर्ण लोक के पितामह, संपूर्ण लोक के हित में रत हुए ब्रह्मा जी ने सभी देवताओं को समझाया, आश्वासन दिया और इस तरह से कहा।

ज्ञातं सर्वं मया देवा ! भवद्भिर्यन्निवेदितम्।
दानवैर्यत्पराभूताः पुरत्रय-निवासिभिः ॥२१॥
इदानीं ते दानवेन्द्राः प्रबला वीर्यशालिनः।
अशक्या हि मया जेतुं समरे युद्धदुर्मदाः ॥२२॥
किन्तूपायं प्रवक्ष्यामि भवतां कार्यसाधकम्।
यथा विजित्य तान् सर्वान् स्थानं प्राप्स्यथ पूर्ववत् ॥२३॥
वयं सर्वे गमिस्यामो वैकुण्ठं लोकमुत्तमम्।
निलयं देवदेवस्य रमाकान्तस्य धन्विनः ॥२४॥
तस्मै निवेदयिष्यामो दानवानां विचेष्टितम्।
हनिष्यति स तान्सर्वान्दानवान् युधि दुर्मदान् ॥२५॥
दैत्य-दानव-दर्पघ्नः स एव गरुडध्वजः।
शंखचक्र-गदापाणिर्देवानामभयप्रदः ॥२६॥
तमेव शरणं यामो वयं सर्वे सुरोत्तमाः।
इत्युक्त्वा त्रिदशान् सर्वान् स्वयम्भूश्चतुराननः ॥२७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वैः सुरगणैः साकं ययौ वैकुण्ठमुत्तमम् ।
यत्रास्ते भगवान् साक्षात् देवदेवो जनार्दनः ॥२८॥

भगवान् ब्रह्मा जी देवताओं को कहते हैं,—

हे देवताओं ! आप लोगों ने जो मुझसे निवेदन, प्रार्थना की है, वह मैं सब समझ लिया। त्रिपुरासुर दानव गण, जो त्रिपुर निर्माण करके रह रहे हैं, उन दानवों से आप सब पराजित हुए हैं। हाँ तो, वे दानव गण इस समय पराक्रमी हैं, बलवान् हैं, समय उनको साथ दे रहा है। हे देवताओं ! मैं भी युद्ध में उन्हें परास्त नहीं कर सकता, इस समय वे इतने बलवान् हैं। किन्तु आप लोगों की कार्य सिद्धि के लिए मैं उपाय बतलाऊँगा, जिस उपाय के द्वारा उन सब दानवों को जीत कर पहले के तरह ही आप सब अपने-अपने स्थानों को और अधिकारों को प्राप्त कर के सुख पूर्वक जीवन यापन कर पायेगें। हे देवताओं ! चलिए, आप लोगों के साथ सर्वोत्तम लोक वैकुण्ठ के लिए मैं भी चलूंगा। रमापति, देवता के देवता, धनुष-धारियों में सर्वश्रेष्ठ धन्वी, भगवान् विष्णु का वहाँ (वैकुण्ठ में) भवन है, भगवान् विष्णु वहीं रहते हैं। उनको हम सब उन दानवों का उपद्रव विनति करेंगे। हे देवताओं ! हमें विश्वास है कि युद्ध में दुर्मद उन दानवों को वे मार देंगे। दैत्य और दानवों का घमण्ड चूर-चूर करने वाले वही एक गरुड़ध्वज हैं। शंख चक्र गदा पद्म हाथ में लिए हुए, वे देव देवताओं को अभय प्रदान करते हैं। अतः हे देवताओं ! उन्हीं वैकुण्ठवासी भगवान् विष्णु के शरण में हम सब चलें। हे पार्वती ! इतना कह कर चतुर्मुख भगवान् ब्रह्मा जी भी देवताओं को साथ ले कर वैकुण्ठ चले गए, जिस वैकुण्ठ में भगवान् विष्णु साक्षात् विराजमान रहते हैं।

ततः सर्वे सुरगणाः पितामह-समन्विताः ।
गत्वा वैकुण्ठसदनं ददृशुस्तस्य वैभवम् ॥२९॥

हे पार्वती ! पितामह ब्रह्मा जी सहित सभी देवगण वैकुण्ठ लोक पहुँचे। पहुँच कर उन्होंने वैकुण्ठ लोक के वैभव (समृद्धि-सौन्दर्य) को इस तरह देखा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाना रत्न-समाकीर्णं स्वर्णप्राकार-शोभितम् ।
कोटिसूर्य-प्रतीकाशं विद्युत्संघात-भास्वरम् ॥३०॥

सोने का परकोटा था, उसके अन्दर नाना रत्नों से निर्मित वैकुण्ठ भवन था, सुवर्ण के प्राकार से वह रत्न निर्मित वैकुण्ठ भवन ऐसा लगता था कि मानों अनेक बिजुलियों की चमक दौड़ रही हों। वह भवन स्वयं करोड़ों सूर्य के प्रकाश के तरह देदीप्यमान था।

गोपुराट्टाल-संयुक्तं प्रासाद-शत-संकुलम् ।
विमानैर्गगनाकारैः सर्वतः समलङ्कृतम् ॥३१॥

वैकुण्ठ भवन के चारों तरफ सयकड़ों प्रासाद (मन्दिर) थे, उन सभी में गोपुर द्वार और अट्टलिकायें (छत) बने थे। गगन के सदृश विमानों के द्वारा वैकुण्ठ भवन घिरा हुआ था।

उद्यानोपवनारामैर्नाना वृक्षोपशोभितैः ।
सर्वर्तु-कुसुमोपेतैः सदा फल-समन्वितैः ॥३२॥
मन्दारैः पारिजातैश्च सन्तानैर्हरिचन्दनैः ।
कल्पवृक्षैस्तथान्यैश्च कल्पवृक्षोपमैर्द्रुमैः ॥३३॥
तुलसी-वाटिकाभिश्च चम्पकैर्देवदारुभिः ।
मालतीभिः सुगन्धीभिर्वासन्तीभिश्च पङ्कजैः ॥३४॥
भ्रमद्-भ्रमर-संघुष्टैः -पक्षिसंघ-विनादितैः ।
आह्वयद्भिरिवान्योऽन्यं नाना पक्षिगणैस्तथा ॥३५॥

वैकुण्ठ लोक की प्राकृतिक शोभा में उद्यान थे, उपवन थे, आराम वाटिका थे, नाना तरह के फल फूलों के वृक्ष लगे थे, वे वृक्ष सभी ऋतुओं में फूल और फल देते थे। मन्दार थे, पारिजात थे, हरिचन्दन (श्री खण्ड-चन्दन) के अनेक जात और प्रकार के पेड़ थे, कल्पवृक्ष थे (जिनके नीचे छाया में जाकर कल्पना करते ही सब कुछ मिल जाता है।), कल्प वृक्ष के समान गुण धर्म वाले और भी अनेक जाति के वृक्ष थे। चम्पक थे, देवदारु के अनेक जात और प्रकार के वृक्ष थे। तुलसी की वाटिकायें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थीं, मालती लता पुष्प थे, वासन्ती पुष्प लतायें थीं, जलाशयों में कमल खिले हुए थे, चारों तरफ पुष्प की सुगन्धी फैल रही थी। भ्रमरगण निनाद कर रहे थे, झंकार भर रहे थे, पक्षिगण गुल शोर मचा रहे थे, मानों कि आपस में वे बुला रहें हों।

वापी-कूप-तडागैश्च दिव्यामृत-रसोदकैः।
कुमुदोत्पल-कल्हार–शतपत्रोपशोभितैः ॥३६॥
हंस-सारस-चक्राह्व-कारण्डव-निषेवितैः ।
जलकुक्कुट-कोयष्टि-दात्यूह-कुल-नादितैः ॥३७॥
सरित्सरोभिरच्छोदैर्मणिवालुक-संयुतैः ।
रत्नसोपान-संयुक्तैः पद्मोत्पलझषाकुलैः ॥३८॥
मल्लिकाभिश्च जातीभिः कुन्दपुष्पैरशोककैः।
नानाविधाभिर्वल्लीभिः पुष्पिताभिरलङ्कृतम् ॥३९॥

वैकुण्ठ में जलाशयों की भी कमी नहीं थी, वापी थे, कूप थे, तडाग (तालाब) थे, उनमें दिव्य अमृत रस-सा जल भरपूर था। उन जलाशयों में कुमुद, उत्पल, कल्हार, शतपत्र आदि जाति के कमल खिले हुए थे। उन जलाशयों में जलीय पक्षिगण भी परिपूर्ण थे। हंस, सारस, चक्रवाक, कारण्डव, जलकुक्कुट, कोयष्टि, दात्यूह आदि पक्षिगण चारों तरफ निनाद करते थे। नदी, तालाव, पुष्करिणी आदि में मणियों का चूरा (बालू) बिछाया गया था, रत्नों की सीढ़ियाँ बने थे। उन जलाशयों में रङ्ग-विरङ्गी मछलियाँ किलोल कर रही थीं। चारों तरफ रास्ते में और स्थान स्थान पर शोभा के लिए कुन्द, अशोक, मल्लिका जाती आदि लता फूलों के तथा वृक्ष फूलों के पेड लगे हुए थे। और भी अनेक प्रकार के लता पुष्प खिले हुए थे।

वसन्ति यत्र पुरुषा वैष्णवा विष्णुपार्षदाः।
विष्णुभक्ति-परा सर्वे विष्णु-ध्यानपरायणाः ॥४०॥
नीलोत्पलदलश्यामाः पीतकौशेय-वाससः।
शंख-चक्र-गदा-पद्म–लसद्बाहु-चतुष्टयाः ॥४१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मणिप्रवेकाभरणा निष्ककण्ठाः सुवर्चसः ।
किरीट-हार-केयूर-कटकाद्यैरलङ्कृताः ॥४२॥
सर्वे नागायुतप्राणा विष्णुतुल्यपराक्रमाः ।
दैत्यदानव-दर्पघ्नाः समरेष्वनिर्वात्तिनः ॥४३॥

हे पार्वती ! उस वैकुण्ठ में रहने वाले व्यक्ति, अर्थात् वैकुण्ठ निवासी जन वैष्णव थे, (जीवात्मा में प्रविष्ट परमात्मा को सभी जीवात्मा में देखने वाले थे ।) विष्णु के पार्षद थे, और वे सभी विष्णु भक्ति परायण थे; विष्णु का ही ध्यान करते थे । नील कमल के फूल का पत्र के तुल्य श्याम वर्ण के थे, सभी ने कौशेय पीताम्वर धारण किया था । वैकुण्ठ वासी सभी के चार हाथ थे, उनमें क्रमशः शंख-चक्र-गदा-पद्म धारण किए हुए थे । सभी ने मणियों के गहनों को धारण किया था, गले में सोने की हार थी, सभी सुन्दर आकृति के थे, किरीट हार केयूर कटक आदि गहनों से अलङ्कृत थे । सभी वैकुण्ठ वासी दश हजार हाथी के बल से युक्त थे । सभी भगवान् विष्णु तुल्य ही पराक्रमी भी थे । सब दैत्य और दानवों का घमण्ड तोड़ने में समर्थ थे, युद्ध से हार कर लौटने वाले नहीं थे ।

सच्चिदानन्द-सन्दोहं मुकुन्दचरणाम्बुजम् ।
ध्यायन्तः सततं स्वान्ते परानन्दपरिप्लुताः ॥४४॥
विष्णुना सदृशाकाराः समानाम्बरभूषणाः ।
विना पद्मालयां देवीं विना श्रीवत्स-कौस्तुभौ ॥४५॥
शुद्ध-सत्त्वमयं देहं धारयन्तं चिदात्मकम् ।
तमेव देवदेवेशं भजन्ते भक्तिभावतः ॥४६॥
एवं विधैर्महाभागैर्विष्णु-भक्तैर्महात्मभिः ।
सेवितं सदनं विष्णोर्ददृशुः सुरसत्तमाः ॥४७॥

सच्चिदानन्द-धारा को बहाने वाले भगवान् मुकुन्द विष्णु के चरण कमलों को अन्तःकरण में ध्यान करते हुए आनन्द विभोर होने वाले सभी वैकुण्ठवासी भगवान् विष्णु जैसे थे । भगवान् विष्णु के तुल्य वस्त्र और आभूषण पहिरे हुए थे । किन्तु भगवती लक्ष्मी देवी उनके साथ नहीं थीं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और उनके छाती में श्रीवत्स चिह्न (भृगुलाञ्छन) तथा कौस्तुभ मणि नहीं था। शुद्ध सत्त्वमय चिदात्मक देह को धारण करने वाले वे लोग देव देवेश भगवान् विष्णु को भक्ति भावना पूर्वक भजन करते थे। इस तरह के विष्णु भक्त महात्माओं के द्वारा सेवित वैकुण्ठ लोक में पहुँच कर ब्रह्मादि देवता सहित इन्द्रादि देवताओं ने भगवान् विष्णु का निवास धाम वैकुण्ठ भवन का दर्शन किया, देखा।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-माहात्म्ये लक्ष्मीललित टीकायांवैकुण्ठवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

अथ नवमोऽध्यायः

शिव उवाच

ततस्तु त्रिदशाः सर्वे दृष्ट्वा वैकुण्ठमद्भुतम्।
विस्मयं परमं जग्मुर्हर्षोत्फुल्ल-विलोचनाः ॥१॥

भगवान् शङ्कर कहते हैं,—

हे पार्वती! हे ऋषीश्वरों! इसके बाद सभी देवता, आश्चर्य जनक समृद्धिशाली वैकुण्ठ को देख कर हर्ष से प्रफुल्लित नयन हुए। उन्हें आनन्द और आश्चर्य विशेष हुआ।

तस्मिन् वैकुण्ठसदने महाविभव-विस्तरे।
चिन्तामणिगृहे रम्ये रत्नसिंहासने शुभे ॥२॥
उपविष्टं जगन्नाथं देवदेवं जनार्दनम्।
नीलोत्पलदल-श्यामं पद्म-किञ्जल्क-वाससम् ॥३॥

उस वैकुण्ठ भवन में महाविभव का, समृद्धि संपन्न सौन्दर्य का विस्तार था। वैकुण्ठ भवन के अन्दर चिन्तामणियों से निर्मित भगवान् विष्णु के मन्दिर कक्ष (बैठक) में एक सुन्दर कलाकृति से निर्मित सोने के सिंहासन पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् विष्णु विराजमान थे। वे जगत् के नाथ थे, देवताओं के भी देवता थे, जनार्दन थे। उनका वर्ण नीलकमल के फूल के पत्रों के समान आशमानी रङ्ग का था। उन्होंने कमल फूल के पराग का सा पीला कौशेय वस्त्र धारण किया था।

शंखचक्रगदापद्म-राजद्भुजचतुष्टयम् ।
नवरत्नप्रभाजालं क्वणत्कोटीर-मण्डितम् ॥४॥
कनकाङ्गद-केयूर-हार-कङ्कण-शोभितम् ।
शिञ्जान-मणिमञ्जीर-विराजित-पदाम्बुजम् ॥५॥
किङ्किणी-जालविलसत् काञ्चीदाम-क्वणत्कटीम् ।
रत्नांगुलीय-संशोभि-प्रवालमृदुलाङ्गुलम् ॥६॥
प्रसन्न-वदनाम्भोजं पद्मपत्रायतेक्षणम् ।
मन्दस्मित-प्रभापूर-विराजित-मुखाम्बुजम् ॥७॥
श्रीवत्सलक्ष्म्या विलसत् कपाटविपुलोरसम् ।
कोटिसूर्य-प्रतीकाशं कौस्तुभामुक्त-कन्धरम् ॥८॥
अम्लानलक्ष्म्या विनदन् मधुव्रत-वरूथया ।
आपादपद्म-लम्बिन्या शोभितं वनमालया ॥९॥

शंख चक्र गदा पद्म धारण किए हुए भगवान् विष्णु चार हाथों से सुशोभित थे। नये नये रत्नों के प्रभा जालों से सुशोभित अनेक गहनों को आपस में टकराने से उत्पन्न झनझनाहट, भगवान् के शरीर विग्रह से उत्पन्न हो रहा था। कनक निर्मित अङ्गद केयूर हार कङ्कण आदि से भगवान् सुशोभित थे। छमछम शब्द करने वाले मणियों के मञ्जीरों से भगवान् के चरण कमल सुशोभित थे। छुद्र घण्टिकाओं को पिरोय कर बनाई गई करधनी से भगवान् का कटिभाग झुनझुना रहा था। नीले वर्ण के भगवान् की नीली प्रवाल के तरह की अंगुलियों में सोने की अँगुठियाँ शोभित हो रही थीं। उस समय भगवान् का मुखकमल प्रसन्न था। कमल फूल के पुँखड़ियों के समान बड़े और लमचीले भगवान् के नयन थे। मन्दहास की प्रभा से भगवान् का मुख-मण्डल मोहक था। श्रीवत्स चिह्न (भृगुलाञ्छन) से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् की चौड़ी छाती सुशोभित थी। कौस्तुभ मणि से ऊपर का भाग (मुख-मण्डल) भगवान् की छाति में सुशोभित कौस्तुभ मणि के कान्ति-जाल से ऊपर था, स्वयं करोड़ों सूर्य के तेज से युक्त प्रकाशमान था। भगवान् ने कभी भी न मुर्झाने वाली वनमाला पहिर रखी थी, वह वनमाला भगवान के चरण कमल तक झूलती थी, उस वनमाला में मधुकर गण झूम रहे थे, ऐसी वनमाला से भगवान सुशोभित थे।

वक्षःस्थल-विहारिण्या तप्त-स्वर्ण-सवर्णया।
विराजमानं प्रियया दुग्धाम्भोनिधि-कन्यया ॥१०॥
नीलाम्बुदमिवाकाशे तडिद्वल्या विभूषितम्।
त्रातारं सर्वलोकानां जेतारं त्रिदशद्विषाम् ॥११
सुनन्द-नन्द-प्रमुखैः पार्षदैरुपशोभितम्।
सनकाद्यैश्च योगीन्द्रैर्नारदाद्यैः सुरर्षिभिः ॥१२॥
अन्यैरपि च योगीन्द्रैर्ब्रह्मिष्ठैश्च महर्षिभिः।
समन्तात् सेवितं देवं सर्वदेवमयं प्रभुम् ॥१३॥
सर्वाभीष्टप्रदातारं सर्वेषामभयप्रदम्।
ददृशुस्त्रिदशाः सर्वे पितामह-पुरोगमाः ॥१४॥

तप्त सुवर्ण के समान वर्ण वाली, भगवान के वक्ष-स्थल में विहार करने वाली, क्षीर सागर की पुत्री अपनी प्रिया भगवती देवी लक्ष्मी से भगवान सुशोभित थे। भगवान नीले वर्ण के और लक्ष्मी देवी लाल पीली कुछ सफेदी को ली हुई थीं, गरम सोने के रङ्ग की सी। जिससे भगवान् की झाँकी ऐसी थी कि मानों, नील मेघ परिपूर्ण आकाश में बिजुली की रेखायें चमक रहीं हों। भगवान् देवताओं के शत्रुओं का विजेता थे। सभी लोक के रक्षक थे। सुनन्द नन्द आदि अपने पार्षदों से भगवान् युक्त थे। पास में एक तरफ सनकादि ब्रह्मर्षि गण थे, दूसरे तरफ देवर्षि नारदादि ऋषिगण थे, और भी अनेक योगी महर्षि महात्मा आदि खड़े थे। वे सब संपूर्ण देवतामय प्रभु, भगवान् विष्णु की सेवा में संलग्न थे! संपूर्ण लोक की कामनाओं को पूर्ण करने वाले, संपूर्ण लोक को अभय प्रदान करने वाले भगवान् विष्णु को वैकुण्ठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोक में जाकर ब्रह्मादि देवता सहित इन्द्रादि देवताओं ने देखा (दर्शन किया)।

ततो दृष्ट्वा जगन्नाथं रमानाथं महाप्रभुम्।
प्रणेमुस्त्रिदशाः सर्वे शिरोभिरवनीङ्गतैः ॥१५॥
ततः प्रणम्य देवेशमुत्थाय त्रिदशोत्तमाः।
बद्धाञ्जलिपुटाः सर्वे तुष्टुवुर्जगदीश्वरम् ॥१६॥

रमानाथ, जगत् के नाथ, महाप्रभु भगवान् विष्णु का दर्शन कर लेने के बाद, शिर झुका कर दण्डवत् प्रणाम करते हुए उठ कर देवताओं ने भगवान् को बार-बार नमस्कार किया। तदनन्तर हाथ जोड़कर, अञ्जलिपुट बाँध कर देवताओं ने भगवान् विष्णु की स्तुति की।

देवा ऊचुः

देवदेव! जगन्नाथ! भूत-भव्य-भवत्-प्रभो!।
वेदान्तवेद्य! वेदात्मन्! सच्चिदानन्दविग्रह! ॥१७॥
गुणातीत! गुणाधार! सर्वभूताशयस्थित!।
साक्षिस्वरूप! सर्वेषामिन्द्रियाणां प्रवर्तक! ॥१८॥
परमानन्द-सन्दोह! शुद्ध-सत्त्व-प्रवर्तक!।
निरावरण-विज्ञान-सौध-शृङ्गाग्र-केतन! ॥१९॥
स्वेच्छा-शक्ति-विलासेन गृहीतानन्त-विग्रह!।
महन्-मानस-राजीव-मरालकुल-नायक! ॥२०॥
भक्तार्ति-भञ्जन! विभो! भक्ताभीष्टप्रदायक!।
दुष्टदानव-दैत्येन्द्र-गर्व-निर्वापण-क्षम! ॥२१॥
शंखचक्रगदाशार्ङ्ग-विराजित-कराम्बुज!।
सुराणां भूसुराणां च गवां चैवाभयङ्कर! ॥२२॥
त्वमेव सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्त-कारक!।
त्वां विना जगतां हेतुं नान्यं जानीमहे प्रभो! ॥२३॥

देवगण स्तुति (विनति) करते हैं--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवदेव ! हे जगत् के नाथ !आप भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों समयों के स्वामी, प्रभु हैं । आप वेदों के आत्मा हैं, अतः वेदान्त के द्वारा ही आप पहचाने जाते हैं । आपका विग्रह, सत्य (त्रिकाल सत्य, सत्त्वयुक्त) आनन्द स्वरूप चेतन है । आप तीनों गुणों से (सत्त्व, रज तम से) अतीत हैं, मुक्त हैं, तथापि तीनों गुणों के आधार स्वरूप हैं । आप संपूर्ण भूत प्राणियों के घट-घटवासी अन्तर्यामी हैं, अखण्ड सत्य साक्षी स्वरूप हैं । आप ही एकादश इन्द्रियों के प्रवर्तक हैं, कर्ता हैं, तथापि अकर्ता के समान केवल साक्षीरूप मात्र हैं । आप परमानन्द-धारा के प्रवर्तक, परमानन्द समुद्र हैं । आप शुद्ध सत्त्व (प्राण) एवं सतोगण के प्रवर्तक हैं । आप आवरण रहित विज्ञान भवन के ऊपर फहराई गई ध्वजा हैं । भौतिक विज्ञान से परे अलौकिक विज्ञानमय हैं । अपनी ही मर्जी से, स्वेच्छा-शक्ति से खेल-खेल में ही आप अनन्त विग्रहों (असंख्य जीवात्मा के शरीरों को और अवतारों) को धारण करते हैं । हे भगवन् ! आप महात्मा सज्जनों के विशाल मानस (मानसरोवर) में खिले हुए कमलों में विचरण करने वाले राजहंसों के कुल के नायक हैं, राजहंस-हंसराज हैं । आप अपने भक्तों की आर्ति (पीड़ा, दुःख) को भञ्जन करने में (हरण करने में) समर्थ हैं, विभु हैं, व्यापक हैं । आप अपने भक्तों का अभीष्ट (मनोकामना) पूर्ण करते हैं । दुष्ट दानवेन्द्रों का, दुष्ट दैत्येन्द्रों का गर्व तोड़ने में समर्थ हैं । आप देवताओं की और भूमिसुरों की एवं गौओं की रक्षा के लिए शंख चक्र गदा शार्ङ्ग धनु, क्रमशः चारों हाथों में धारण करते हैं । हे भगवन् ! आप ही समस्त सृष्टि स्थिति संहार के कर्ता हैं, संपूर्ण लोक आप से ही आए हैं । हे प्रभु ! आपको छोड़कर और कोई दूसरा व्यक्ति, इस जगत् के लिए कारण (हेतु वीज) स्वरूप नहीं है, ऐसा हम सब जानते हैं । आप एकमात्र हम लोगों के रक्षक हैं ।

अतस्त्वां शरणं प्राप्ताः शरण्यं शरणार्थिनाम् ।
पालयाऽस्मान् भृशं भीतान् दयां दीनेषु दर्शय ।।२४।।

अतएव हे प्रभु ! आपको शरण देने में समर्थ समझकर हम सब शरणार्थी आपके शरण में आए हैं । हम सब अत्यन्त भयभीत हैं, त्रसित हैं, दुःखी हैं, हे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दीनदयालु ! हे दयासागर ! हम दीनों में आप अपनी दया को प्रकट करें, हम लोगों के प्रति दया-दृष्टि दें।

इति स्तुत्वा रमानाथं त्रिदशास्त्रिदशेश्वरम्।
ततो विज्ञापयामासुर्निजागमन-कारणम् ॥२५॥

हे पार्वती ! हे ऋषीश्वरों ! इस तरह से देवताओं ने रमा के पति, देवताओं के ईश्वर, भगवान् विष्णु की स्तुति की। स्तुति के बाद ब्रह्मादि देवता और इन्द्रादि देवताओं ने भगवान् विष्णु को अपने आगमन का कारण विज्ञापित किया।

देवा ऊचुः

यदर्थं वयमायातास्तन्निबोध महाप्रभो !।
पराजिता वयं देवा दानवैस्त्रिपुरालयैः ॥२६॥
त्वां विनाऽन्यं न जानीमो निहन्तुं दैत्य-दानवान्।
अतस्तान् दानवान् जित्वा सुराणां जयमावह ॥२७॥
बहुशो हि वयं सर्वे त्वयैव किल पालिताः।
इदानीमपि देवेश ! पालयाऽस्मान् भयातुरान् ॥२८॥

देवतागण विनती करते हैं—

हे महाप्रभु ! जिसके लिए हम सब आपके शरण में आये हैं, उस कारण को विनति कर रहे हैं, आप हमारे दुःख दर्दों के प्रति जरा सा दया-दृष्टि दें। हे भगवन् ! त्रिपुरवासी दानवों के द्वारा हम देवगण पराजित हो गए हैं। आपको छोड़कर और कोई दूसरा व्यक्ति उन दैत्य और दानवों को जो मार सके ऐसा हम सब कहीं नहीं देख रहे हैं। अतः हे भगवन् ! आप उन दानवों को जीतकर देवताओं से जय-जयकार प्राप्त करें। अनेक बार आपने ही हमारी रक्षा की है। अबकी बार भी आप हमारी रक्षा करें, हम सब भय-भीत हैं, दीन हैं, हीन हैं, आपके शरण में आयें हैं।

शिव उवाच

इति तेषां वचः श्रुत्वा त्रिदशानां गदाधरः।
प्रत्युवाच ततः सर्वान् दैत्यदानवदर्पहा ॥२९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् शिव कहते हैं,—

हे ऋषीश्वरों ! इस तरह की देवताओं की दुःख से भरी वाणी को सुन कर दैत्य और दानवों का दर्प दमन करने वाले गदाधर भगवान् विष्णु प्रत्युत्तर वचन देवताओं से कहने लगे ।

विष्णु रुवाच

श्रृणुध्वं त्रिदशाः सर्वे यथार्थं कथयामि वः ।
विजेतुं न मया शक्या दानवाः पुरवासिनः ॥३०॥
अवश्यं च मया कार्यं भवतां परिपालनम् ।
उपायं तु प्रवक्ष्यामि भवतां कार्यसाधकम् ॥३१॥
इतः सर्वे गमिष्यामः कैलासं पव्वर्तोत्तमम् ।
निलयं देवदेवस्य शङ्करस्य महात्मनः ॥३२॥

भगवान् विष्णु कहते हैं—

हे देवताओं, आप लोग सुनें, मैं आप लोगों को सत्य कहता हूँ कि मैं उन त्रिपुरवासी दानवों को जीत नहीं सकता । उनकी नियति (भाग्य रेखा) अभी चमक रही है । तथापि किसी तरह से भी हमें आप लोगों की भी अवश्य रक्षा करनी है । अतः आप लोगों की कार्यसिद्धि के लिए मैं आप लोगों को उपाय बतलाऊँगा, जिस उपाय के द्वारा आप लोगों के मनोरथ पूर्ण हो जायेंगें । यहाँ से अब हम सब भगवान् शंकर के दरवार कैलाश पर्वत पर चलें । वहाँ भगवान् शंकर, शिव विराजमान हैं, वे महात्मा हैं, बड़े दयालु हैं ।

तत्र स्थितं महादेवं शङ्करं लोक-शङ्करम् ।
प्रणम्य शिरसा भक्त्या त्रिनेत्रं वृषभध्वजम् ॥३३॥
तस्मै निवेदयिष्यामो दानवानां विचेष्टितम् ।
स विधास्यति वः श्रेयः शूलपाणिर्दयानिधिः ॥३४॥

वहाँ कैलाश पर विराजमान भगवान लोक को कल्याण करने वाले शंकर, शिव, महादेव हैं, उन्हें श्रद्धा भक्ति पूर्वक दण्डवत् प्रणाम करके, उन दानवों के उपद्रवों को सुनायेंगे । वे वृषभध्वज भगवान् शूलपाणि शिव बड़े ही दयालु हैं, आप लोगों का अवश्य कल्याण करेंगे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एवमुक्त्वा सुरान् सर्वान् भगवान् मधुसूदनः ।
जगाम निलयं शंभोः सह तैः पद्मजादिभिः ॥३५॥

हे ऋषीश्वरों ! सम्पूर्ण देवताओं को इस तरह से इतना कहकर मधुसूदन भगवान् विष्णु भी ब्रह्मादि और इन्द्रादि देवता सहित भगवान् शंकर का लोक कैलाश के तरफ प्रस्थान कर चल दिए ।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां ब्रह्मादीनां
कैलासगमनं नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

अथ दशमोऽध्यायः

शिव उवाच

ततस्तु त्रिदशाः सर्वे ब्रह्मविष्णुपुरोगमाः ।
कैलास-शिखरं जग्मुर्द्रष्टुकामास्त्रिलोचनम् ॥१॥

भगवान् शिव कहते हैं—

हे पार्वती ! हे ऋषीश्वरों ! ब्रह्मा विष्णु और इन्द्रादि देवताओं को आगे कर, सभी देवगण भगवान् त्रिलोचन शिव का दर्शन करने के लिए कैलाश शिखर पर पहुँचे ।

तत्र दृष्ट्वा महादेवं देवदेवं वृषध्वजम् ।
प्रणम्य शिरसा देवाः कृताञ्जलिपुटास्तदा ॥२॥
प्रहर्षोत्फुल्लनयनाः स्तुत्वा देवं जगत्-प्रभुम् ।
तस्मै विज्ञापयामासुर्निजागमनकारणम् ॥३॥

कैलाश शिखर पर पहुँच कर वहाँ देवदेव वृषभध्वज भगवान् महादेव जी का दर्शन किया । दण्डवत् प्रणाम के बाद देवताओं ने हाथ जोड़ कर जगत् प्रभु शंकर की स्तुति की । शिव दर्शन से प्रफुल्लित नयन वाले उन देवताओं ने भगवान् शिव को अपना आगमन का कारण विज्ञापित किया । विनम्रता पूर्वक दुःख पुकार करने लगे ।

वयं देव ! पराभूता दानवैस्त्रिपुरालयैः ।
भवन्तं शरणं प्राप्ताः शरण्यं शरणार्थिनाम् ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तान् जहीहि महादेव ! दानवान् बलगर्वितान् ।
मयेन दानवेन्द्रेण पालितान् दुर्जयान् परैः ॥५॥
त्वमेव शक्तस्तान् हन्तुं त्वां विनाऽन्यो न विद्यते ।
ततो निर्जित्य तान् सर्वान् ह्यस्माकं जयमावह ॥६॥

हे देव ! मय नाम के दानवेन्द्र के द्वारा पालित, मयपक्षीय दानव गण, जो पाताल लोक के निवासी थे, वे सब अब इधर आ गए हैं, और उन्होंने त्रिकुट पर तीन पुर (शहर) बसाया है, उन्होंने वहाँ शत्रुओं के द्वारा अभेद्य दुर्ग (किला) बना लिया है, जिसके सहारे उन्होंने हम सब देव गण को पराजित कर दिया। वे दानव अति बलवान् हैं, दुर्जय हैं, उनको कोई जीत नहीं पाया। तरह-तरह से उन लोगों ने हम सबको सताया। हे भगवन् ! आप शरण्य हैं, शरणार्थियों को शरण देने में समर्थ हैं, आप के शरण में हम सब आए हैं, हम लोगों की रक्षा कीजिए। हे महादेव ! आप उनको मार दीजिए। आप ही उनको मार सकते हैं, आपको छोड़ कर और कोई दूसरा व्यक्ति उन्हें नहीं मार सकता है। अतः हे भगवन् ! उन सब दानवों को जीत कर हमारे पक्ष का जय करें, हम लोगों का जय-जय कार स्वीकार करें।

इति तेषां वचः श्रुत्वा ब्रह्मादीनां महेश्वरः ।
प्रत्युवाच शुभं वाक्यं तेषामेवार्थसाधकम् ॥७॥

रे ऋषीश्वरों ! इस तरह से ब्रह्मादि वैकुण्ठादि इन्द्रादि देवताओं की विनय वाणी को सुन कर देव पक्ष के लिए हितकर मङ्गलमय प्रत्युत्तर वाक्य भगवान् शंकर उनसे कहने लगे।

मा भैष्ट त्रिदशास्तेभ्यो भयं त्यजत दूरतः ।
विज्ञातं हि मया सर्वं दानवानां विचेष्टितम् ॥८॥
तानहं निहनिष्यामि दानवान् युद्धदुर्मदान् ।
मयेन पालितान् शूरान् पुरत्रयकृतालयान् ॥९॥

हे देवताओं ! उन दानवों से आप लोग भयभीत न हों, उनसे न डरें, भय को दूर फेंक दें। उन दानवों की गतिविधियों से मैं भी परिचित हूँ। उन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दानवों को मय ने हात दे रखा है, उनका पृष्टपोषक मय है, अतएव वे शूर हैं, वीर हैं, युद्ध में दुर्मद हैं, किन्तु मैं उन्हें मार दूंगा ।

न केवलं मया शक्यं हन्तुं तान् दानवान् युधि ।
विना युद्धोपकरणं स्यन्दनादि सुरोत्तमाः ! ।।१०।।
तस्मात् युद्धोपकरणं कल्पयन्तु द्रुतं मम ।
रथं सूतं कार्मुकं च ज्यालतां सायकाँस्तथा ।।११।।
रथाङ्गे सुदृढे चैव रथवाहाँश्च सम्मतान् ।
तूणीरं चाक्षयं दिव्यं सर्वं कल्पयत द्रुतम् ।।१२।।
अहं येन सुसन्नद्धो भवद्भिश्च समन्वितः ।
हनिष्ये दानवान् युद्धे पुरत्रय-निवासिनः ।।१३।।

किन्तु, हे देवताओं ! मैं अकेला युद्ध में उन्हें पराजित नहीं कर सकूँगा, उन्हें मार नहीं सकता । उन्हें विजय करने के लिए युद्ध की सामग्री चाहिए, रथ आदि की आवश्यकता है । अतः हे देवताओं ! युद्ध के लिए उपर्युक्त उपकरणों को जल्दी से जल्दी आप लोग एकत्रित करें । रथ, धनुष, प्रत्यञ्चा, रथ के सुदृढ़ पहिए, होशियार सारथि, सधे हुए घोड़े, अक्षय तूणीर, दिव्य बाण इत्यादि युद्ध के उपकरणों को यथाशीघ्र आप सब उपस्थित करें, जिन उपकरणों से सुसज्जित होकर, आप लोगों को साथ में लेकर वहाँ पहुँच कर उन त्रिपुरासुर दानवों को युद्ध में मैं मार दूँगा ।

इति तस्य वचः श्रुत्वा देवा विष्णुपुरोगमाः ।
युद्धोपकरणं सर्वं कल्पयामासुरञ्जसा ।।१४।।

हे ऋषीश्वरों ! इस तरह भगवान् शिव की वाणी को सुन कर ब्रह्मा विष्णु इन्द्र आदि देवता, जो जो देव दलों के प्रमुख हैं, उन देवताओं ने यथाशीघ्र और सरलता के साथ भगवान् शंकर के लिए युद्ध में उपयुक्त उपकरणों को प्रस्तुत किया ।

धरणीं स्यन्दनं चक्रुः सूतं ब्रह्माणमेव च ।
सुमेरुं कार्मुकं चक्रुः ज्यालतां पन्नगेश्वरम् ।।१५।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिन्धुराजं च तूणीरं सायकं कमलापतिम् ।
रथाङ्गे चन्द्रसूर्यौ च चतुर्वेदाँश्चतुर्हयान् ॥१६॥
एवं युद्धोपकरणं कल्पयित्वा सुरोत्तमाः ।
तस्मै विज्ञापयामासुः बद्धाञ्जलिपुटास्तदा ॥१७॥

सारी पृथ्वी को रथ प्रस्तुत कर के, रथ के रूप में उपस्थित किया। सारथि के रूप में स्वयं भगवान् ब्रह्मा लगाम पकड़ के उपस्थित थे। सुमेरु पर्वत को धनुष के रूप में प्रस्तुत किया। पन्नगेश्वर, नागराज शेष ज्यालता (धनुषतन्तु) बन कर उपस्थित हुए। सिन्धुराज समुद्र अक्षय तूणीर बने। दिव्य, अचूक बाण के रूप में भगवान् विष्णु स्वयं उपस्थित थे। रथ के पहिए चन्द्र और सूर्य बने। सधे हुए घोड़ों के रूप में स्वयं चार वेद उपस्थित हुए।

हे ऋषीश्वरों! इस तरह से सारे युद्ध के उपकरणों को प्रस्तुत कर के, देवताओं ने हाथ जोड़ कर भगवान् शिव से कहा। हे शंकर! युद्धोपकरणों को हम लोगों ने प्रस्तुत कर लिया है।

देवदेव! महादेव! त्रिनेत्र! मदनान्तक!।
युद्धोपकरणं सर्वं त्वदर्थं कल्पितं प्रभो! ॥१८॥
तदालोकय देवेश! यदस्माभिर्विनिर्मितम् ।
रथ-सारथि-चापादि सकलं परिकल्पितम् ॥१९॥
त्वमारोह रथं दिव्यं गृहाण धनुरुत्तमम् ।
सायकञ्च महावेगं सर्वदानव-शातनम् ॥२०॥
सर्वोपस्कर-संयुक्तः सहितोऽस्माभिरेव च ।
निर्जित्य दानवान् घोरानस्माकं जयमावह ॥२१॥

हे देवदेव! हे महादेव! हे त्रिनेत्र! हे मदनान्तक! हे प्रभो! आप के लिए उपयुक्त और योग्य युद्ध के उपकरणों को हम लोगों ने प्रस्तुत कर लिया है। हे देवेश! जिन सामग्रियों को हम लोगों ने एकत्रित किया है, वे सब उपयुक्त, आप के लिए योग्य, सुदृढ़ हैं या नहीं हैं, आप स्वयं निरीक्षण कर लें। रथ, सारथि, वाण, घोड़ा, धनुष, प्रत्यञ्चा, रथ के चक्र, सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपस्थित हैं । हे देव ! अब आप इस दिव्य, दृढ रथ पर चढ़ें । उत्तम धनुष को ले लें । महा वेगवान्, अचूक, संपूर्ण दानवों को विनाश करने वाला, बाण को हाथ में ले लें । संपूर्ण उपकरणों से युक्त आप के साथ पदाति सेना हम सब चलेंगे । आप उन दुर्जय भयानक दानवों को जीत कर, मार कर, हम लोगों का जय करें, देव दल को विजयी बनावें । और देवताओं का जय जय कार स्वीकार करें ।

इति तेषां वचः श्रुत्वा त्रिदशानां महेश्वरः ।
युद्धोपकरणं दृष्ट्वा प्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत् ॥२२॥

हे ऋषीश्वरों ! इस तरह की देवताओं की वाणी सुन कर महेश्वर भगवान् शिव ने सारी युद्ध सामग्रियों की छानबीन की । निरीक्षण में सब योग्य निकले । उन सामग्रियों को देख कर भगवान् शिव अति प्रसन्न हुए, और देवताओं से इस तरह कहने लगे ।

शिव उवाच

साधु, साधु सुरश्रेष्ठा ! तुष्टोऽहं भवतामिह ।
युद्धोपकरणं सम्यग् भवद्भिः कल्पितं मम ॥२३॥
येनाहं युधि सन्नद्धो हनिष्ये दानवाऽधमान् ।
इत्युक्त्वा सकलान् देवान् ब्रह्म-विष्णु-पुरोगमान् ॥२४॥

भगवान् शिव कहते हैं--

हे देवताओं ! धन्यवाद है आप लोगों को । आप लोगों ने मेरे योग्य सुदृढ़ अचूक युद्ध के उपकरणों को प्रस्तुत किया है, अतः मैं खुश हूँ । आप लोगों के द्वारा प्रस्तुत युद्ध सामग्री से सुसन्नद्ध, सुसज्जित हो कर उन अधम दानवों को युद्ध में मार दूँगा । ब्रह्मा विष्णु इन्द्र जिन देव दलों के मुखिया हैं, उन देव दलों को इतना कह कर भगवान् शिव दिव्य रथ में चढ़ने का उपक्रम करने लगे ।

आरुरोह रथं देवो धरणीमण्डलात्मकम् ।
चतुर्मुखेन सूतेन वाहितं समर-क्षमम् ॥२५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काञ्चनाद्रिमयं दिव्यमाददे कार्मुकं दृढम् ।
आबबन्ध च तूणीरं पयोनिधिमयं शुभम् ॥२६॥
आददे कमलाकान्त-स्वरूपं वाणमुत्तमम् ।
वाहान् वेदमयान् दिव्यान् योजयित्वा रथोत्तमे ॥२७॥
जगाम त्रिदशैः साकं ब्रह्म-विष्णुपुरःसरैः ।
हिमशैलेन्द्रश्रृङ्गस्थं दानवानां पुरत्रयम् ॥२८॥

भगवान् शिव पृथिवी-मण्डल स्वरूप (पृथिवी द्वारा उपस्थित) दृढ़ रथ में चढ़े। वह रथ उस युद्ध के लिए योग्य, समर्थ था। उस रथ के चालक सारथि स्वयं भगवान् चतुर्मुख ब्रह्मा थे। सुमेरु पर्वत दृढ़ धनुष था, जिसको भगवान् शिव ने धारण कर लिया। सागर स्वरूप तूणीर को भगवान् ने बाँध लिया। और कमलाकांत भगवान् विष्णु स्वयं बाण बनकर उपस्थित थे, उन्हें भगवान् शिव ने हाथ में ले लिया। उस रथ के घोड़े चार वेद स्वरूप साक्षात् उपस्थित थे। उन घोड़ों को भगवान् ब्रह्मा ने उस रथ में योजित कर दिया। और ब्रह्मा विष्णु आदि देवता सहित भगवान् शंकर उस रथ में विराजमान हो कर हिमशैलेन्द्र के श्रृङ्गों में (त्रिकूटों में) स्थित त्रिपुरासुर के नगरों के तरफ प्रस्थान कर दिये।

तद् दृष्ट्वा दानवानां तु पुरत्रयमनुत्तमम् ।
संदधे सायकं दिव्यं साक्षात् नारायणात्मकम् ॥२९॥

पहुँचकर, त्रिपुरासुर दानवों के त्रिपुरों को भगवान् शिव ने देखा; सुन्दर हैं, अभेद्य दुर्ग हैं। अच्छी तरह से निशाना साध लेने के बाद, साक्षात् नारायण स्वरूप अमोघ बाण को भगवान् शिव ने अपने धनुष पर चढ़ाया।

सन्धीयमाने विशिखे कार्मुके शूलपाणिना ।
पुरत्रयमभूद्दग्धं तेन सायक-तेजसा ॥३०॥

हे ऋषीश्वरों ! शूलपाणि भगवान् शिव ने साक्षात् नारायण स्वरूप बाण को धनुष में चढ़ाकर निशाना साधते ही उन दानवों के तीनों पुर (त्रिपुर) उस बाण के तेज से दग्ध हो गए, जल गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तस्मिन् पुरत्रये दग्धे दानवाः पुरवासिनः ।
विद्रुता भयवित्रस्ताः केचिद् दग्धाः शराग्निना ॥३१॥
केचित् भूमौ निपतिताः केचित् पातालमाश्रिताः ।
एवं दग्ध्वा, ततो देवो रौद्रं वपुरुपस्थितम् ॥३२॥

हे ऋषीश्वरों ! उस तरह से त्रिपुर के जलते ही सारे दानव में हाहाकर मच गया । त्रिपुर के नायक दानव मारे गये । जो बचे हुए थे वे भी भय के मारे भाग गए, कुछ शराग्नि से ही जल गए, कुछ भाग कर पाताल चले गए । कुछ भूमि में पछाड़ खाकर ही मर गये । हे ऋषीश्वरों ! त्रिपुर दाह के समय भगवान् शिव ने रौद्र शरीर को (भयङ्कर डरावने शरीर को) धारण किया था, उसी रूप ने त्रिपुर को जलाया ।

पुरत्रयं दानवानां ददाह भगवान् भवः ।
ततः प्रहृष्टास्त्रिदशा ब्रह्मविष्णु-पुरोगमाः ॥३३॥
रुद्रं रौद्राकृतिधरं देवदेवमुमापतिम् ।
अस्तुवन् बहुभिः स्तोत्रैर्हर्षगद्गदया गिरा ॥३४॥

हे ऋषीश्वरों ! इस तरह से भगवान् शिव ने दानवों का त्रिपुर को जलाया । त्रिपुर दाह से प्रहृष्ट, आनन्दित देवगण, जिनके प्रमुख ब्रह्मा एवं विष्णु तथा इन्द्र हैं, ऐसे देवगणों ने रौद्र आकृति को धारण करने वाले रुद्र, भगवान् शिव की स्तुति की । उनकी वाणी हर्ष से गद्गद थी, स्तोत्रमय उनकी भाषा थी ।

देवा ऊचुः

देवदेव ! महादेव ! त्रिनेत्र ! त्रिपुरान्तक !
मेरुधन्वन् ! रमाकान्तशर ! क्षितिरथ ! प्रभो ! ॥३५॥
ज्यावल्लीकृतभोगीश ! वेदाश्व-विधिसारथे ! ।
रथाङ्गीकृतचन्द्रार्क ! तूणीरीकृतवारिधे ! ॥३६॥
भवता दानवा घोरा निर्जिता लीलया प्रभो ! ।
इषुसन्धानमात्रेण निर्दग्धं च पुरत्रयम् ॥३७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवानाञ्च कृतं कार्यं ह्यनायासेन वै त्वया ।
को वान्यस्त्वामृते देव ! हन्तुं शक्तः पुरत्रयम् ॥३८॥
दानवाँश्च महावीर्यान् पुरत्रयनिवासिनः ।
देवानामभयं दत्तं दानवा विनिपातिताः ॥३९॥
वयं च पालिताः सर्वैर्दानवैः पीडिताः भृशम् ।
त्वत्प्रसादेन देवेश ! प्रहृष्टाः साम्प्रतं वयम् ॥४०॥
इत्युक्त्वा त्रिदशाः सर्वे प्रहृष्टहृदयास्तथा ।
प्रणम्य शिरसा देवं बद्धाञ्जलिपुटाः स्थिताः ॥४१॥

देवतागण विनति करते हैं,—

हे देवदेव ! हे महादेव ! हे त्रिनेत्र ! हे त्रिपुर–अन्तकर ! हे त्रिपुरकाल ! हे शंकर ! आपका धनुष मेरुपर्वत है । आपके बाण रमाकान्त भगवान् विष्णु हैं । आपका रथ पृथिवी है । हे प्रभो ! आपने नागराज शेष को प्रत्यञ्चा बनाया । आपके घोड़े साक्षात् चारों वेद हैं । भगवान् ब्रह्मा स्वयं आपके उन घोड़ों को हाँकते हैं, सारथि हैं । चन्द्र और सूर्य आपके रथ के पहिए हैं । आपने समुद्र को ही तूणीर बनाया । भयंकर अजेय उन त्रिपुरासुर दानवों को खेल खेल में ही जीत लिया । आपको शस्त्रास्त्रों का प्रयोग भी नहीं करना पड़ा । धनुष में बाण को चढ़ाते ही त्रिपुर दग्ध हो गया, राख हो गया । मय दानवेन्द्र से संरक्षित महा पराक्रमी वे त्रिपुरवासी दानवों को आप छोड़कर और दूसरा कोई भी नहीं मार सकता था । वैसे दानवों को मारकर देवताओं का कार्य आपने अनायास ही कर दिया । दानवों को मारकर देवताओं को अभय प्रदान किया । दानवों के द्वारा पीड़ित हम लोगों की भी रक्षा हो गई, अब हम सब जी सकते हैं । हे भगवन् ! आपकी कृपा से आज हम सब देवगण उठकर अत्यन्त हर्षित हृदय वाले हो गए हैं । इतना कहकर भगवान् शिव को दण्डवत् प्रणाम करके हाथ जोड़ के सब के सब भगवान् शिव के सामने खड़े हो गए । हे ऋषीश्वरों ! उस समय भगवान् शिव युद्ध विजय के हर्ष में रौद्र रूप में थे ।

ततस्तैस्त्रिदशैः सार्धं त्रिनेत्रस्त्रिपुरान्तकः ।
तस्मात् देशात् परावृत्य हिमाद्रेः शृङ्गमुत्तमम् ॥४२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अविदूरस्थितं तस्मादाजगाम प्रहृष्टधीः ।
आसाद्य शैलशृङ्गं तत् विशश्रामाऽमरैः सह ।।४३।।
विश्रम्य च पुनः शर्वः प्रहर्षेण समन्वितः ।
जहासोच्चैस्ततो रुद्रस्तदा जयसमन्वितः ।।४४।।

इसके बाद भगवान् शिव ने इशारा की कि चलो हमारे साथ । त्रिपुर-अन्तक, त्रिपुर के काल, त्रिनेत्र भगवान् शंकर भी उस युद्धभूमि को छोड़कर उस त्रिपुर से थोड़ी ही दूर में हिमालय पर्वतराज के एक सुन्दर शिखर पर, आनन्दित देवगण सहित हँसते खेलते हुए आ पहुँचे । वहाँ पहुँच कर देवता सहित भगवान् शिव ने विश्राम लिया । युद्ध से उत्पन्न थकान मिट जाने पर भगवान् शर्व (शिव) अत्यन्त हर्षित हुए । विजयी भगवान् रुद्र उस हर्ष के मारे खूब हँसने लगे, हँसते हँसते भगवान् रुद्र (शिव) के नेत्र से आँसू टपक पड़े ।

हसतस्तस्य नेत्राभ्यां तदा हर्षाश्रुबिन्दवः ।
अपतन् शैलशिखरे चत्वारो धरणीतले ।।४५।।
तेभ्यः सलिल बिन्दुभ्य; सञ्जता धरणीरुहाः ।
चत्वारः फलपुष्पाढचाः पत्राङ्कुर-समन्विताः ।।४६।।
रुद्राक्ष-जलबिन्दुभ्यो यतो जाता महीरूहाः ।
ततो रुद्राक्ष-वृक्षास्ते विख्याता धरणीतले ।।४७।।
तेभ्यः समभवन् वृक्षास्तस्मिन्देशे सहस्रशः ।
प्रत्यब्दान्ते फलन्ति स्म शरत्-काले सहस्रशः ।।४८।।
सर्वे रुद्रस्वरूपास्ते वृक्षाश्चैव फलानि च ।
अतस्तत्-दर्शनं पुंसां सर्वकाम-फलप्रदम् ।।४९।।

हे ऋषीश्वरों ! हँसते हुए भगवान् शिव के (रौद्र रूप शिव के—रुद्र के) नेत्रों से उस समय चार बूद आँसू (हर्ष के आँसू) हर्षाश्रु उस शीत शैल शिखर में[1] टपक पड़े । उन आँसुओं से ४ अंकुर पैदा हुए । वे चारों अंकुर फल पुष्प

---

१. हाल अनुसन्धान से प्रमाणित पता चल रहा है विजयपुर धरान, सुनसरी, कोशी नेपाल का विजयपुर ही शीतशैल है जहाँ सर्वप्रथम रुद्राक्ष उत्पत्ति हुए ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पत्र आदि से हरे भरे हो गये। रुद्र के नेत्रबिन्दु, अश्रुजलबिन्दु से वे अंकुर पैदा हुए और वृक्ष तैयार हुए, इसीलिए उनको रुद्राक्ष वृक्ष के नाम से लोग पुकारने लगे, रुद्राक्ष नाम से ही वे विख्यात हो गए। उस प्रदेश में उन पेड़ों से और अनेक पेड़ उत्पन्न हुए तो रुद्राक्षारण्य नाम से सर्वप्रथम रुद्राक्ष उत्पत्ति स्थान परिचित हुआ। प्रति वर्ष वे रुद्राक्ष शरत्काल में फल देते हैं। सभी रुद्राक्ष वृक्ष रुद्र स्वरूप (शिव स्वरूप) हैं, सभी रुद्राक्ष के दाने भी साक्षात् शिव स्वरूप हैं। हे ऋषीश्वरों ! इसीलिए रुद्राक्ष वृक्ष का दर्शन करना, रुद्राक्षारण्य का दर्शन करना सभी मनुष्यों के लिए, पुरुषों के लिए, सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला हैं, अग्रीम उन्नति कारक हैं।

इति देवि ! तवाख्यातं रुद्राक्षोत्पत्ति-कारणम्।
शृण्वतां सर्वपापघ्नं सर्वाभीष्ट-फलप्रदम् ॥५०॥

भगवान् शिव कहते हैं कि हे देवी ! हे पार्वती ! इधर, हे ऋषीश्वरों ! आप लोगों ने, उधर, हे महेश्वरी ! हे रुद्राणी ! तुमने, जो रुद्राक्ष उत्पत्ति कारण को पूछा था, वह सब यहाँ तक हमने सुना दिया। यह रुद्राक्षोत्पत्ति कारण कथा सुनने मात्र से भी संपूर्ण पापों को नष्ट करता है, सभी मनोकामनाओं को पूर्ण कर देता है।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां त्रिपुरासुरवधादिपूर्वकं रुद्राक्षोत्पत्तिकारणकथनं नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥

अथ एकादशोऽध्यायः

शिव उवाच

इति ते कथितं देवि ! रुद्राक्षोत्पत्तिकारणम्।
अथाऽन्यत् कथयिष्यामि शृणुस्वावहिता प्रिये ! ॥१॥

भगवान् शंकर कहते हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवी ! हे रुद्राणी ! यहाँ तक इस तरह से मैंने तुम्हें रुद्राक्षोत्पत्ति-कारण कथा सुनाई । हे प्रिये ! तुम सावधान होकर सुनो, रुद्राक्ष के विषय में तुम्हें और कुछ सुनाऊँगा ।

रुद्राक्षाणां हि वीजानि स्पृष्टानि मनुजैर्भुवि ।
न प्ररोहन्ति देवेशि ! सत्यमेव वदामि ते ॥२॥

हे देवताओं की ईश्वरी ! हे पार्वती ! मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, यदि जमीन में गिरे हुए रुद्राक्ष के बीजों को मानव छू भी देते हैं तो वे बीज उगते नहीं हैं । बीजारोपण की तो वात ही क्या है ?

नराणां पापबाहुल्यात् तेषां स्पर्शनमात्रतः ।
प्ररोहशक्तिस्तत्रस्था तत्-क्षणादेव नश्यति ॥३॥
अतः पृथिव्यामुप्तानि मानवैर्दुष्टचेष्टितैः ।
न जायन्ते प्रयत्नेन पालितान्यपि सुन्दरि ! ॥४॥

हे सुन्दरी, गौरी ! तो वे रुद्राक्ष के बीज मानव के स्पर्शमात्र से भी सूख जाते हैं, क्यों कहोगी ? तो सुनो, मानवों में पाप अधिक बढ़ गया है, अतः उनके छूने से मात्र उन रुद्राक्षों के बीजों में जो प्ररोह शक्ति होती है, वह नष्ट हो जाती है । अतः दुष्ट चरित्र वाले व्यक्ति यदि रुद्राक्ष के बीजों को पृथ्वी में कहीं रोपते हैं, लगाते हैं तो वे ऊगते ही नहीं, यदि ऊग भी गए तो भी अनेक प्रयत्न करने पर भी बचते नहीं हैं ।

विना तु शीतशैलेन्द्रं भूमौ नाऽन्यत्र कुत्रचित् ।
आरोपिताः प्ररोहास्ते न वर्द्धन्ते कदाचन ॥५॥
कदाचित् दैवयोगेन प्ररूढा अपि ते द्रुमाः ।
न फलन्ति वरारोहे ! सत्यमेव मयोच्यते ॥६॥

हे वरारोहे ! हे पार्वती ! शीतशैल (हिमालय पर्वत, परिकर पर्वत सहित) को छोड़कर अन्यत्र कहीं भी रुद्राक्ष के प्ररोहों को लगाया जाय, तो वे बढ़ते ही नहीं हैं । कदाचित् दैवयोग से वे ऊग जाय, और बढ़ भी जायँ, तो भी वे वृक्ष फल नहीं देते हैं, हे देवी ! मैं तुम्हें सत्य कह रहा हूँ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मम नेत्रात् समुत्पन्ना मयैवोत्पादिता द्रुमाः ।
मत्-स्वरूपा महादेवि ! मम प्रीतिविवर्द्धनाः ॥७॥

हे महादेवी ! रुद्राक्षों को मैंने ही उत्पन्न किया है, रुद्राक्ष मेरे ही नेत्रों से उत्पन्न हुए हैं, रुद्राक्ष मेरे ही स्वरूप हैं, रुद्राक्ष मेरी प्रीति को बढ़ाते हैं ।

मयैव तानि वीजानि व्युप्यन्ते धरणीतले ।
हिमाद्रिश्रृङ्गे[1] नाऽन्यत्र प्ररोहन्ते ततः प्रिये ! ॥८॥

हें प्रिये ! रुद्राक्ष के बीजों को मैं ही पृथ्वी में रोपण करता हूँ, अतएव हिमाञ्चल भाग को छोड़कर अन्यत्र रुद्राक्ष ऊगते नहीं हैं ।

तस्यैव शैल-श्रृङ्गस्य समीपे धरणीतले ।
प्ररोहास्तत आनीय रोपिताश्चेत् भवन्ति हि ॥९॥
यत्नेन महता देवि ! पालिताश्चेत् फलन्ति च ।
अपवित्रैर्दुराचारैः पापिष्ठैः पापकर्मभिः ॥१०॥
रजस्वलाभिः स्त्रीभिश्च चाण्डालैः पतितैः खलैः ।
रुद्राक्षवृक्षाः पृष्टाश्चेत् सद्यः शुष्यन्ति पार्वति ! ॥११॥

हे देवी हे पार्वती ! हिमालय पर्वत श्रृङ्ग से नीचे धरणीतल में (हिमालय की तराई भूमि में) यदि पर्वतीय भाग से रुद्राक्ष के प्ररोहों को लाकर लगाया जाय तो वे ऊगते हैं । प्रयत्न पूर्वक लालन-पालन किया जाय तो वे वृक्ष फल भी देते हैं । किन्तु अपवित्र, दुराचारी, पापिष्ठ, पापकर्म करने वाले तथा रज-स्वला स्त्री, चाण्डाल कर्म करने वाले, पतित व्यक्ति उन वृक्षों को छू भी देते हैं, स्पर्श कर देते हैं, तो भी सूख जाते हैं ।

रुद्राक्षवृक्षा यैर्दृष्टा दृष्टोऽहं तैर्न संशयः ।
रुद्राक्षवृक्षा यैः पृष्टाः पृष्टोऽहं तैर्न संशयः ॥१२॥
रुद्राक्षं धार्यते येन धृतस्तेनाऽहमद्रिजे ! ।
रुद्राक्षं पूजितो येन तेनाऽहं पूजितः प्रिये ! ॥१३॥

---

१. शिव कैलाशी हैं, हिमालय उनका खेत है, जहाँ वे रुद्राक्ष के बीजों को बोते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे प्रिये ! रुद्राक्ष के वृक्षों का जिसने दर्शन किया, उसने साक्षात् मेरा दर्शन कर लिया, रुद्राक्ष के वृक्षों को जिसने स्पर्श किया उसने मेरा ही स्पर्श कर लिया, इस तथ्य में कहीं संशय नहीं है। रुद्राक्ष को जिसने धारण किया, उसने रुद्र को ही धारण कर लिया, रुद्राक्ष को जिसने पूजा किया, उसने साक्षात् शिव को पूज लिया।

तस्मादवश्यं ,द्रष्टव्यं रुद्राक्षारण्यमुत्तमम् ।
धार्य्यं चैव हि रुद्राक्षं मानवैर्मोक्षकांक्षिभिः ॥१४॥

यदि मानव को मोक्ष की चाहना हो तो, रुद्राक्षारण्य का दर्शन करना और रुद्राक्ष को धारण करना अत्यावश्यक है, अनिवार्य है।

इति सर्वं मयाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वया प्रिये !।
अथाऽन्यत् कथयिष्यामि श्रृणु शैलेन्द्रनन्दिनि ! ॥१५॥

हे प्रिये ! हें शैलेन्द्रनन्दिनी ! रुद्राक्षारण्य के विषय में जो तुमने हम से पूछा था, वह सब इस तरह से यहाँ तक मैंने तुम्हें सुनाया। रुद्राक्षारण्य में फिर क्या-क्या हुआ, अर्थात् रुद्राक्ष उत्पन्न होने के बाद क्या-क्या हुआ, वह सब मैं तुम्हें सुनाऊँगा, तुम सावधान होकर सुनो।

ततोऽहं त्रिपुरं दग्ध्वा दानवान्स्तान् निहत्य च ।
शैलेन्द्र-श्रृङ्गमासाद्य सह सर्वैमरुद्गणैः ॥१६॥
विश्रान्तः शान्तकोपश्च प्रसन्नेन्द्रियमानसः ।
तस्मिन्नेव गिरेः श्रृङ्गे रुद्राक्षवनमण्डिते ॥१७॥
विल्वादिभिः परिवृते वृक्षैरन्यैश्च शोभिते ।
शीतलाऽमलपानीये मन्दमारुतसेविते ॥१८॥
कैलासादधिके पुण्ये पुण्यारण्य-विराजिते ।
अरोचयं निवासाय रुद्राक्षारण्य-लोभतः ॥१९॥

हे देवी ! त्रिपुर दाह के बाद बचे हुए उन दानवों को मारकर मैं शैलराज हिमालय के उस शिखर में संपूर्ण देवताओं के साथ गया था। उस शिखर पर पहुंच कर कुछ समय तक मैंने आराम किया। आराम करने से मेरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रोध शान्त हुआ। मेरे सब इन्द्रिय प्रसन्न हो गए। तदनन्तर रुद्राक्ष वन से सुशोभित विल्व वृक्षों से मण्डित और भी अनेक तरह के वृक्षों से पवित्र छाया युक्त, शीतल अमृत तुल्य, स्वच्छ जल से परिपूर्ण जलाशयों से युक्त, मन्द मारुत से आनन्ददायक, उसी पर्वत शिखर पर कुछ दिन आवास करने की मेरी इच्छा हुई। हे देवी! वह स्थान कैलाश से भी अधिक रमणीय और पवित्र है, पुण्यारण्य रुद्राक्षारण्य है। रुद्राक्षारण्य के लोभ में उस स्थान पर मैं रहने लगा।

अदृश्यः सर्वभूतानां विना देवान् सहाऽऽस्थितान्।
साक्षात् ज्योतिःस्वरूपः सन्स्तत्रैव न्यवसं सुखम् ॥२०॥

उस समय वहाँ मैं अदृश्य रूप में रहा। मेरे साथ जो देवगण थे, वही देवगण मात्र मुझे देख पाते थे। और अन्य भूतप्राणी नहीं देख पाते थे। साक्षात् ज्योतिः स्वरूप में मैं पुण्यारण्य रुद्राक्षारण्य में विहार करने लगा।

ततस्ते त्रिदशाः सर्वे ब्रह्मविष्णुपुरोगमाः।
तत्रैव न्यवसन् देवि! मंद्दर्शन-कृतोत्सुकाः ॥२१॥

हे देवी! इसके बाद ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि सभी देवता मेरी नित्य दर्शन की उत्सुकता से रुद्राक्षारण्य में ही सुखपूर्वक रहने लगे।

त्रिकालं मां पूजयन्तः स्तुवन्तः स्तुतिभिर्मुदा।
सेवमानाः सदा भक्त्या मम प्रीतिविवर्द्धनाः ॥२२॥
ततस्तेषां निवासाय[1] विजयाख्यं पुरं महत्।
तस्मिन् शैलेन्द्र शिखरे निर्मितं विश्वकर्मणा ॥२३॥

हे देवी! वे देवगण त्रिकाल मेरी पूजा करते थे, स्तुति करते थे, स्तोत्र गाते थे, सदा प्रसन्न रहते थे, भक्ति-भावना से मेरी सेवा करते थे, अतएव मेरे बड़े ही प्यारे भक्त हो गए। मैंने देखा, बिचारे देवगण मेरी ममता से रुद्राक्षों के पेड़

---

१. विजयपुर 'धरान' रुद्राक्षारण्य का पञ्चक्रोशी क्षेत्र प्रमुख देवता पिण्डेश्वर और बालाम्बा जहाँ हैं वह स्थान सुनसरी जिला, कोशी अञ्चल, पूर्वी नेपाल में है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के नीचे तरुतल में रह रहे हैं, मुझे दुःख हुआ। अतः मैंने शिल्प सम्राट् विश्वकर्मा से कहा, त्रिपुरासुर विजय के उपलक्ष्य में उस शैलेन्द्र के शिखर पर एक सुन्दर पुर का निर्माण किया जाय। तब एक सुन्दर पुर का निर्माण हो गया, जिसका नाम विजयपुर रखा गया।

नानारत्नसमाकीर्णं मणिकाञ्चनगोपुरम्।
प्राकारैर्बहुभिर्युक्तं मणिकाञ्चनचित्रितैः ॥२४॥
उच्चाटालध्वजोपेतं प्रासादैर्बहुभिर्युतम्।
रम्यचत्वरसम्बाधं विचित्रभवनैर्युतम् ॥२५॥
त्रिविष्टपाद् विशिष्टं तत् विलोक्य त्रिदशोत्तमाः।
मुदा परमया युक्ता निवसन्तो यथासुखम् ॥२६॥

हे देवी! उस विजयपुर को सावधानी के साथ विश्वकर्मा ने निर्माण किया। पुरद्वार के निर्माण में सोना और मणियों से काम लिया गया, स्थान-स्थान पर नाना विध रत्नों का जड़ान था, अच्छी चित्रकारी थी, प्राकार, दीवालों में मणि और सुवर्ण से चित्रकारी की गई थी, वे ऊँचे-ऊँचे थे। अनेक देव-भवन (प्रासाद) निर्माण हुए थे, ऊँचे-ऊँचे छत बने थे, छतों के ऊपर ध्वजा पाताकायें फहराये गये थे। चतुष्पथ (चौराहें) ठीक जगह पर बने थे, उनमें देवताओं की भीड़ होती थी। वहाँ के भवन चित्र विचित्र आकृति, बनावट से युक्त थे। देवताओं ने उस पुर को देखा और स्वर्ग से भी विशिष्ट पाया। अतः देवगण अति हर्षित हुए और आनन्द के साथ सुखपूर्वक वहीं रहने लगे।

सूत उवाच

नित्यं त्रिपुरहन्तारं रुद्राक्षारण्यवासिनम्।
त्रिकालं पूजयन्तश्च परं ज्योतिःस्वरूपिणम् ॥२७॥
रुद्राक्षाणि महार्हाणि दत्तानि त्रिपुरारिणा।
धारयन्तः शरीरेषु त्रिपुण्ड्राङ्कितविग्रहाः ॥२८॥
ध्यायन्तः शङ्करं नित्यं स्वान्ताम्भोरुहमन्दिरे।
शाम्भवाग्रेसराः सन्तः शम्भुसेवा-परायणाः ॥२९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्रैव न्यवसन् सर्वे ब्रह्मविष्ण्वादयः सुराः ।
रुद्राक्षारण्यनाथं तं वीक्षमाणाः पुरान्तकम् ॥३०॥

सूत जी कहते हैं,--

हे ऋषीश्वरों ! वे देवगण, रुद्राक्षारण्य के वासी त्रिपुर दाह करने वाले परम ज्योतिःस्वरूप भगवान् शिव की नित्य पूजा करते थे । भगवान् शिव के द्वारा प्रदत्त बहुगुण एवं बहुपूज्य तथा बहुमूल्य रुद्राक्ष, शरीर के अङ्गों में धारण करते थे । भस्म त्रिपुण्ड्र तिलक धारण करते थे । नित्य ही त्रिपुरारि भगवान् शंकर को अपने हृदय-कमल के मन्दिर में ध्यान करते थे । शंभु सेवा परायण थे । शंकर के भक्तों में अग्रणी थे । ऐसे वे देवगण, जिन के प्रमुख ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र थे, वे सब पुरान्तक, रुद्राक्षारण्य के नाथ भगवान् शिव का नित्य दर्शन करते हुए, सुखपूर्वक उस रुद्राक्षरण्य में रहने लगे ।

तद्दर्शनकृतोत्साहास्तत्पूजासक्तमानसाः ।
स्वस्थानानि स्वाधिकारान् विसृज्य नियतेन्द्रियाः ॥३१॥
विरक्ता कामभोगेषु शिवध्यानपरायणाः ।
अभवन् परमानन्द-पारावार-परिप्लुताः ॥३२॥

हे ऋषीश्वरों ! देवगण भगवान् शिव के दर्शन में उत्साह लेते थे, भगवान् शिव की पूजा में उनकी चित्तवृत्ति लगी रहती थी । भगवान् शिव की भक्ति में वे इतने तल्लीन हुए कि वे अपना देश स्वर्ग, (स्वस्थान) को भी भूल गए । अपनी-अपनी अधिकार की भी उन्हें चिन्ता नहीं रही । सब छोड़ कर, इन्द्रियजयी, जितेन्द्रिय होकर, काम-भोग से विरक्त बनकर, शिव ध्यान परायण हो, परमानन्द सागर में मग्न हो गए । अर्थात् शिव-भक्ति में विभोर हो गए ।

ततस्तान्स्त्रिदशान् वीक्ष्य भगवान्स्त्रिपुरान्तकः ।
उवाच वचनं देवस्तेषां भक्त्या प्रहर्षितः ॥३३॥

हे ऋषीश्वरों ! इस तरह से अनेक दिन तक अपनी भक्ति में तल्लीन देवगण को देख कर उनकी भक्ति से प्रसन्न भगवान् शिव ने देवगण से कहा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिव उवाच

प्रसन्नोऽस्मि सुरश्रेष्ठा ! भवतां भक्तियोगतः ।
व्यतीतः सुमहान् कालो भवतां वसतामिह ॥३४॥
अनुज्ञाता मया सर्वे स्वानि स्थानानि गच्छत ।
स्वाधिकारेषु तिष्ठन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥३५॥
मम ध्यानपरा नित्यं मम भक्तिपरायणाः ।
जीवन् मुक्तपदे स्थित्वा विहरध्वं यथासुखम् ॥३६॥

भगवान् शिव (महादेव) कहते हैं,--

हे सुरश्रेष्ठों ! देवताओं ! आप लोगों के भक्ति योग से मैं प्रसन्न हूँ। रुद्राक्षारण्य में आवास करते हुए आप लोगों का लम्बा समय बीत गया। अब आप लोगों को मैं खुश होकर बिदा देता हूँ। आप लोग अपने-अपने स्थान में पहुँच जायँ, और अपने-अपने कामों को करें। स्वर्ग में भी आप सब मेरी ही भक्ति में लगे रहेंगे, मेरा ही ध्यान करते रहेंगे। इस तरह से जीवन मुक्त (जीवित मुक्ति) पद में रह कर सुख पूर्वक विचरण करें।

सूत उवाच

इति सर्वे सुरश्रेष्ठा अनुज्ञाताः पिनाकिना ।
स्वानि स्थानानि जग्मुस्ते ब्रह्मविष्णुपुरःसराः ॥३७॥
ततस्तु विज़याख्यं तत् पुरं शून्यं बभूव ह ।
रत्नानि च सुवर्णानि मृत्पाषाणत्वमाययुः ॥३८॥
ततस्त्रिपुरहन्ता तु तस्मिन् रुद्राक्षकानने ।
अदृश्यः सर्वभूतानां परं ज्योतिःस्वरूपतः ॥३९॥
विजहार महादेवः सच्चिदानन्द-विग्रहः ।
तेषु रुद्राक्षवृक्षेषु बभूवाऽन्तर्हितस्तदा ॥४०॥

सूत जी कहते हैं,--

हे ऋषीश्वरों ! इस तरह से भगवान् पिनाकी शिव से बिदा प्राप्त देवगण, जिनके प्रमुख ब्रह्मा विष्णु इन्द्र थे, सब अपने-अपने स्थान (देव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्राम-स्वर्ग) को चले गए। देवताओं के चले जाने पर वह विजयपुर शून्य हो गया। वहाँ के रत्न धातु सब मिट्टी और पत्थर हो गए। किन्तु त्रिपुरहन्ता भगवान् रुद्र (शिव) उस रुद्राक्षारण्य में संपूर्ण भूत प्राणियों से अदृश्य हो कर, ज्योति:स्वरूप बन कर, सच्चिदानन्द विग्रह वाले हो कर, रुद्राक्षारण्य के रुद्राक्ष वृक्षों के अन्दर अन्तरित हो, रुद्राक्षारण्य में ही विचरण करने लगे।

शिव उवाच

इति देवि! मयाख्यातं रुद्राक्षारण्य-वैभवम्।
श्रृण्वतां सर्वपापघ्नं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥४१॥

भगवान् शिव कहते हैं,—

हे देवी! हे पार्वती! रुद्राक्षारण्य के वैभव के विषय में यहाँ तक मैंने तुम्हें बताया। इस वृत्तान्त को सुनने मात्र से ही संपूर्ण पाप नष्ट होते हैं, और मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां विजयपुरनिर्माणकथनं
नाम एकादशोऽध्याय: ॥११॥

अथ द्वादशोऽध्याय:

शिव उवाच

एवं ते सर्वमाख्यातं यत् पृष्टोऽहं त्वयाऽनघे!।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम् ॥१॥

भगवान् शंकर कहते हैं—

हे अनघे! हे पापरहिते! पार्वती! रुद्राक्षारण्य के विषय में जो तुमने मुझ से पूछा था, वह यहाँ तक मैंने सब सुना दिया। तीनों लोकों में, तीनों लोक के निवासियों के लिए यह रुद्राक्षारण्य माहात्म्य अति दुर्लभ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथाऽन्यत् कथयिष्यामि शृणुष्वैकमनाः प्रिये ! ।
एकदा तु सुराः सर्वे महेन्द्रवरुणादयः ॥२॥
समेत्य मन्त्रयामासुर्मन्त्रमात्मसुखावहम् ।
अजरा अमराश्चैव कथं स्याम निरामयाः ॥३॥

हे प्रिये ! तुम दत्तचित्त होकर सुनो ! और भी रुद्राक्षारण्य के बारे में तुम्हें विशेष परिचय कर लेना उचित है । रुद्राक्ष उत्पत्ति और रुद्राक्षारण्य का मूल स्थल, मात्र से तुम को परिचय प्राप्त हुआ है । अब और वृत्तान्त सुनो ।

त्रिपुरासुर वध के बाद भी असुरादियों से आक्रमण की शंका दूर नहीं हुई, तो किसी समय फिर सभी देवगण (महेन्द्र-वरुणादि देवगण) एकत्रित होकर सलाह करने लगे । बन्धुओं ! यदि हम सब देवगण अजर और अमर (न बूढे हों, न मरें) हो जायँ तो, ब्रह्माण्ड में किसी से भयभीत होने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी । तो बन्धुओं ! ऐसा उपाय अथवा औषधि सेवन क्यों न किया जाय ? यदि आरोग्य पूर्ण अजरत्व और अमरत्व प्राप्त हो जाता है तो बहुत ही अच्छा है । हे देवी ! इतना कह कर सभी देवगण के देवता अजरत्व अमरत्व के खोज में प्रयत्नशील रहे, तरह-तरह से अजरत्व और अमरत्व उन्होंने खोजा । इसी खोज में उनके अनेक दिन बीत गए ।

विचार्य सुचिरं कालं नाध्यगच्छत निश्चयम् ।
ततस्ते शरणं जग्मुः देवदेवं जनार्दनम् ॥४॥

बहुत दिन तक खोज करने पर भी अजर अमर होने का कोई औषधि उन्हें नहीं मिली, न कोई उपाय ही उन्हें सूझा, किसी निश्चय पर वे नहीं पहुँचे । किन्तु अजर अमर बनने का निश्चय को उन्होंने नहीं छोड़ा । अन्ततो गत्वा, सब देवगण, देव-देव जनार्दन भगवान् विष्णु के शरण में पहुँचे ।

तस्मै निवेदयामासुरात्मनो मतमान्तरम् ।
तच्छ्रुत्वा भगवान् विष्णुस्त्रिदशानां हिते रतः ॥५॥
उपायं कथयामास तेषामिष्टार्थसिद्धये ।
क्षीरोदमथनं कृत्वा सुधां प्राप्स्यथ चेत् सुराः ! ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अजरा अमराश्चैव यूयं सर्वे भविष्यथ।
क्षीरोदमथनार्थाय यतध्वं विबुधोत्तमाः ॥७॥

वैकुण्ठ में पहुँच कर देवताओं ने अपनी मनोगत सारी भावना (मनोकामना) भगवान् विष्णु को निवेदन किया। देवताओं का निवेदन सुन कर देवताओं के हितैषी भगवान् विष्णु ने देवताओं को अजर-अमरत्व प्राप्ति हेतु उपाय बतलाये। भगवान् विष्णु ने कहा, हे देवताओं! यदि क्षीरोद (क्षीर समुद्र=समुद्र) को मथन किया जाय, और उससे अमृत पैदा हो जाय, तो उस अमृत को यदि आप सब पी लें, तब आप सब अमृत पान करने वाले अजर अमर हो जायेंगे। आप सब शूर वीर, उद्यमी हैं, विशेष बुद्धि में उत्तम होने से ही आप लोगों को विबुधोत्तम कहा जाता है, अतः अमृत प्राप्ति के लिए आप सब प्रयत्न करें।

युष्माभिः केवलैर्देवा न शक्यं वार्धिमन्थनम्।
असुरैः सह संगम्य कर्तव्यं वार्धिमन्थनम् ॥८॥

हे देवताओं! केवल, आप देवगण मात्र समुद्र मन्थन नहीं कर सकेंगे। अतएव आप लोगों को असुरों के साथ मेल करके, उनको सहभागी का प्रलोभन देकर, सहयोगी बनाकर, समुद्र मन्थन करना होगा।

तद् यात यूयं प्रथममसुरान् बलशालिनः।
सौहार्देन समागम्य सन्धिं कुरुत तैः सह ॥९॥
कृत्वा तु सन्धिं ह्यसुरैस्तैः समेता महार्णवम्।
गच्छध्वं त्रिदशाः सर्वे मन्थनार्थं पयोनिधेः ॥१०॥

अतएव हे देवताओं! आप लोग चले जाइए, और सब से पहले असुरों से मित्रता कीजिए, सौहार्द की उसमें कमी न दीखे। सभी बलवान् असुरों से मिल लीजिए, उनसे सन्धि कर लीजिए। सन्धि करने के बाद उन असुरों से युक्त होकर, दानवादि असुरगण और देवगण मिल कर, समुद्र मन्थन के लिए, सब समुद्र में जायँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अहमप्यागमिष्यामि भवतां कार्यसाधकः ।
अमृते तु समुत्पन्ने वञ्चयित्वा सुरानहम्[1] ॥११॥
अमृतं पाययिष्यामि युष्मानेव सुरोत्तमाः ।
पीत्वाऽमृतं ततो यूयमसुरान् युधि जेष्यथ ॥१२॥

हे देवताओं ! आप लोगों की सहायता के लिए मैं भी वहाँ पहुँच जाऊँगा, तो भगवान् शिव और भगवान् ब्रह्मा भी आप लोगों के सहायता में आ जायँगे । जब अमृत उत्पन्न हो जायगा, तो मैं अपनी माया से असुरों को मोहित कर अमृत पीने से वञ्चित कर, आप लोगों को मात्र अमृत पिला दूँगा, और अमृत को पीते ही आप सब अजर-अमर हो जायेंगे । फिर क्या है ? असुरों से युद्ध भी हो जाय, तो आप सब उन्हें मार देंगे, भागने पर ही वे प्रयत्नशील रहेंगे ।

क्षीरोद-मन्थनार्थाय साधनानि ब्रवीमि वः ।
मन्दरं शैलमानीय मन्थनं कुरुताऽमराः ! ॥१३॥
वासुकिं पन्नगश्रेष्ठं रज्जुं कुरुत सादरम् ।
ततः क्षीरोदमथनं कुरुध्वं यत्नमास्थिताः ॥१४॥

---

१. कथा वाचकों को सूचना :—

रुद्राक्षारण्य माहात्म्य का उद्देश्य रुद्राक्षारण्य से और रुद्राक्ष से है, सभी माहात्म्यों के उद्देश्य अपने-अपने मूल वस्तु से होते हैं, उन्हें स्पष्ट करने में उनसे संबन्धित कथा सहायक होती हैं। वे कथा अपनी ही प्रधानता से अन्य पुराणों में वर्णित हो चुकी हैं; यहाँ सहायक मात्र हैं । अतः उनकी स्मृति मात्र हैं, जैसे समुद्र मन्थन, त्रिपुरदाह आदि कथा । अतः यहाँ उन कथाओं की स्मृति मात्र है, जिनके सहारे रुद्राक्षारण्य का परिचय पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है । समुद्र मन्थन की अनेक प्रकार से अनेकों रोचक कहानियाँ अन्य पुराणों में वर्णित हैं । कथा वाचक उन पुराणों से भी इन कथाओं को वाच लें । सभी माहात्म्य में गतार्थ की स्मृति मात्र होती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवताओं ! समुद्र मन्थन के लिए मैं आप लोगों को साधन (सामग्री) बताऊँगा। मन्दराचल पर्वत शिखर को मन्थन दण्ड (मथानी) के स्थान पर आप लोगों को समुद्र में पहुचाना होगा। पन्नगराज वासुकी (शेष) की स्तुति करनी पड़ेगी, उन्हें वहाँ मन्थन रज्जु (मथानी की रस्सी) बनाकर रगडना है, और उनके मुख के तरफ दानवों से पकड़वाना होगा, उनके विष युक्त श्वास से ही दानवों की आधी शक्ति समाप्त करनी होगी, सारी औषधियों को समुद्र में डालकर मन्थन करना होगा। सतर्कता एवं सावधानी के साथ सब काम करना है। अतः आप सब जायँ, और प्रयत्न करें।

इति विष्णोर्वचः श्रुत्वा कार्यसाधकमात्मनः।
तथेत्युक्त्वा सुराः सर्वे तमनुज्ञाप्य सादरम् ॥१५॥
असुरान् प्रति जग्मुस्ते सुधार्थं सौहृदान्विताः।
तैः समेत्याऽसुरैः साकं सन्धि कृत्वा यथोचितम् ॥१६॥
काञ्चनं शैलमादाय मन्दरं देवदानवाः।
क्षीराम्बुधेस्तटं जग्मुर्मन्थनाय कृतोद्यमाः ॥१७॥

हे पार्वती ! हे ऋषीश्वरों ! इस तरह से अपना कार्य साधक भगवान् विष्णु के वचन को सुनकर, हम सब आप के बताए हुए उपायों में संलग्न रहेंगे, इत्यादि देवताओं ने कहा। भगवान् विष्णु ने भी उन लोगों को कार्य सिद्धि के लिए जाने की अनुमति दे दी। हे देवी ! भगवान् विष्णु से विदा प्राप्त देवगण, दानव-दैत्य-असुर-राक्षस सभी जाति के बड़े-बड़े वीरों से मेल करने लगे। दानवों से देवदलों की पक्की सन्धि हो गई। इसके बाद हिमालय पर्वत का सबसे ऊँचा शिखर मन्दराचल को लेकर दोनों दल समुद्र मन्थन के लिए समुद्र तट पर पहुँचे।

मन्थनं मन्दरं कृत्वा रज्जुं कृत्वा च वासुकिम्।
ममन्थुरुदधिं सर्वे त्रिदशाः सह दानवैः ॥१८॥

मन्दराचल को मन्थन दण्ड और वासुकी का मन्थन रज्जु बनाकर, सारी औषधियों को समुद्र में डाल कर, देव दल और दानव दल दोनों मिल कर समुद्र को मथने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समुत्पन्नान्यनेकानि रत्नानि जलधेस्तदा ।
ऐरावतो द्विपश्रेष्ठश्चतुर्दन्तः शशिप्रभः ॥१९॥
हय उच्चैःश्रवा नाम समुत्पन्नोऽम्बुदप्रभः ।
ततश्च वारुणी देवी निर्गता हर्षवर्धिनी ॥२०॥
ततश्चाप्सरसो नाम सञ्जाता वामलोचनः ।
ततो वै विजया नाम सञ्जाता वीजपूरिका ॥२१॥
सर्वदुःख - प्रसमनी धैर्यशौर्यविवर्धिनी ।
ततो भृंगी समुत्पन्ना धत्तूरः पुष्करस्तथा ॥२२॥
ततश्च कौस्तुभं नाम कोटिसूर्यसमप्रभम् ।
समुत्पन्नं महारत्नं रत्नानामुत्तमोत्तमम् ॥२३॥

हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! समुद्र मन्थन से अनेक रत्न उत्पन्न हुए । चार दाँत वाला, पूर्ण चन्द्र की चाँदनी सा ऐरावत हाथी (जो द्विपश्रेठ, हाथियों का राजा कहा जाता है) उत्पन्न हुआ । उच्चैःश्रवा नाम का, नीला, समुद्र के वर्ण का घोड़ा उत्पन्न हुआ । उसके वाद वारुणी (शराव के कलशों को हाथों में लेकर सुन्दरी कन्याओं का दल जिन्हें और पुराणों ने सन्ध्या नाम दिया है) देवी उत्पन्न हुई, जो वारुणी सभी को हर्षित करती थी । उसके बाद अप्सरा नाम की सुन्दरियों का दल उत्पन्न हुआ । इसके बाद विजया नाम की वीजों से भरी हुई वूटी (गाँजा) उत्पन्न हुई । विजया बूटी दुःख और शोक को समन करने वाली, धैर्य और शौर्य को वढाने वाली है । इसके बाद भृङ्गी नाम की वूटी उत्पन्न हुई (भङ्ग) । इसके बाद धतूरा उत्पन्न हुआ । इसके वाद कमल उत्पन्न हुआ । इसके वाद कौस्तुभ नाम का महारत्न उत्पन्न हुआ, जो कौस्तुभ करोड़ों सूर्यों की प्रभा के समान है, और रत्नों में उत्तम महारत्न कहा जाता है ।

तानि सर्वाणि रत्नानि जगृहुर्देवदानवाः ।
यथायोग्यं यथेच्छं च यथाकालं यथार्हतः ॥२४॥

हे देवी ! समुद्र मन्थन से उत्पन्न इन सब वस्तुओं को देव और दानव दलों ने अपनी, अपनी पसन्द की अपनी-अपनी रुचि के अनुसार बटवारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करके ले लिया। असुरों ने सुरा (शराव) वारुणी, और सन्ध्या सुन्दरी को ग्रहण किया, ऐरावत और उच्चैःश्रवा आदि को देवदल ने लिया, कौस्तुभ को भगवान् विष्णु ने लिया।

ततो लक्ष्मी समुत्पन्ना पद्महस्ताऽखिलेश्वरी।
भेजे सा पद्मपत्राक्षी शङ्खचक्रगदाधरम् ॥२५॥

हे देवी ! इसके वाद कमल में बैठी हुई, कमल को हाथ में ली हुई, कमल के तुल्य नेत्र वाली लक्ष्मी देवी उत्पन्न हुई, उन्होंने स्वयं भगवान् विष्णु (शंख-चक्र गदाधर) को वरण किया, जिससे भगवती लक्ष्मी अखिलेश्वरी हो गईं।

पुनश्च मथ्यमाने तु दुग्धाब्धौ देवदानवैः।
विनिर्गतं महाघोरं विषं हालाहलाभिधम् ॥२६॥
ज्वालामालाकरालं तत् लोकान् दग्धुं प्रचक्रमे।
ततो दृष्ट्वा विषं घोरं ज्वलत् कालानलोपमम् ॥२७॥
विद्रुता भयवित्रस्ताः सर्वे ते देवदानवाः।
जग्मुः शरण्यं शरणं देवदेवं वृषध्वजम् ॥२८॥

हे ऋषीश्वरों ! देव और दानव दल मिल कर अभी और कुछ बाँकी है, कहकर, फिर क्षीर समुद्र को मन्थन करने लग गए तो, अत्यन्त भयानक हालाहल नाम का विष (जहर) निकला। वह विष अग्नि-ज्वालाओं से भयानक था, स्वयं जल रहा था, और चारों तरफ़ उसकी अग्नि सुलग रहा था, अनेक व्यक्ति, झुसल गए, संसार को ही जलाने के लिए वह विष उद्यत हो गया। जलता हुआ कालानल के समान भयानक विष को देख कर देवदल और दानवदल मन्थन कार्य को छोड़ कर भाग गए। जो सबको शरण देते हैं, जो देवदेव हैं, जो वृषभध्वज हैं, जो शिव कहलाते हैं, जो आशुतोष, जल्दी ही खुश हो जाते हैं, ऐसे भगवान् शंकर के पास पहुँचे।

स तेषां संकटं दृष्ट्वा देव-दारव-रक्षसाम्।
चुल्लीकृत्य तदा घोरमपिबत् विषमीश्वरः ॥२९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततस्ते त्रस्तहृदया, निर्भया विगतज्वराः ।
पुनर्ममन्थुरुदधिममृतार्थं सुरोत्तमाः ।।३०।।

भगवान् शंकर के पास जाकर देव दानव एवं राक्षस दलों ने कहा, भगवन् ! बचाइए, आप समर्थ हैं, हालाहल विष विश्व जला रहा है । देव दानव असुर आदिके ऐसे संकट को देख कर भगवान् ईश्वर शिव ने सारे विष को समेट कर अञ्जली में ले लिया और पी गए । इसके बाद वे डर के मारे त्रस्त हृदय समुद्र मन्थन करने वाले सब के सब भय रहित हो गए । और फिर अमृत के लिए समुद्र मन्थन करना शुरू कर दिए ।

ततश्च मथ्यमाने तु दुग्धाब्धौ देवदानवैः ।
सञ्जातममृतं दिव्यं जरामृत्युविदारणम् ।।३१।।
दृष्ट्वा तदमृतं तेषां विवादः सुमहानभूत् ।
अहं पूर्णमहं पूर्णमिति तेषां प्रभाषताम् ।।३२।।
ततस्तु भगवान् विष्णुर्गृहीत्वाऽमृतभाजनम् ।
त्रिदशान् पाययामास वञ्चयित्वा तदाऽसुरान् ।।३३।।

हे देवी ! देवदलों का और दानव-दलों का अमृत में ही स्वार्थ था, दानव-दल भी तो अजर-अमर बनना चाहते थे । अतः फिर क्षीर समुद्र का मन्थन शुरू हो गया । मन्थन करते-करते कुछ देर बाद अमृत निकला । अमृत पात्र को दोनों हाथ से थामे हुए भगवान् धन्वन्तरी प्रकट हुए । अमृत को देखते ही दोनों दलों में शोर मचने लगी 'मैं पहले पीऊँगा तो मैं पहले पीऊँगा' कहने लगे, खूब झगड़ा हुआ, इन्द्रपुत्र जयन्त कौवा का रूप धारण कर, अमृत पात्र को धन्वन्तरी के हाथ से छीन कर उड गया, अमृत छलक कर प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नाशिक चार जगह थोड़ा-थोड़ा गिरा, जिन स्थानों पर अमृत गिरा; पीछे चल कर उन स्थानों में कुम्भ का आयोजन किया गया । अमृत को गरुड़ जी भी पीछा कर रहे थे, गरुड़ के डर के मारे अमृत को लेकर जयन्त पुनः देवदल के पास आया, जयन्त से भगवान् विष्णु ने अमृत-भाजन को अपने हाथ में ले लिया, भगवान् के हाथ में अमृत आते ही भगवान् ने भी मोहिनी रूप धारण कर लिया, फिर क्या था, जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहो सो दोनों दल मानने लगे। भगवान् ने कहा जयन्त के उद्दण्डता से इस अमृत में कुछ धूल पड़ गया है, अतः इसे छान लिया जाय। अमृत छान लिया गया। भगवान् ने अलग-अलग पंक्तियों में दोनों दलों को बैठा कर अमृत बरतना प्रारम्भ कर दिया, देवदल के तरफ से अमृत बरतने लगा, देवदल में छिप कर राहु ने भी अमृत पी लिया, भगवान् को पता चला, सुदर्शन को भगवान् से आज्ञा मिली, राहु का गला काट दिया गया; अमृत के प्रभाव से वह नहीं मरा, और राहु और केतु दो ग्रह बन गए। इधर यह हंगामा शुरू हुई थी, उधर सब देवताओं को भगवान् ने अमृत पिला दिया, देवगण अजर-अमर हो गए, अमृत समाप्त हो गया, असुरों को अमृत नहीं मिला। अमृत पीने से देवदल बलवान हो गए। युद्ध में हार कर असुर दल भाग गए।

तदा तदमृतं देवः कृत्वा वस्त्रेण गालितम्।
पिष्टिं निष्कास्य निक्षिप्य पाययामास तान् सुरान् ॥३४॥

अमृत पिलाने से आगे भगवान् विष्णु ने जो अमृत को छान कर छूँच (सार सिट्टी) को निकाल के एक तरफ रख दिया था, तब अमृत पिलाया गया था।

ततः पीत्वा सुधां सर्वे प्रहृष्टाः सुरपुङ्गवाः।
असुरान् समरे जित्वा त्रिलोकीं बुभुजुर्मुदा ॥३५॥

अमृत पीने के बाद देवदल अत्यन्त खुश हुए थे, असुरों से युद्ध हुआ, किन्तु अजर-अमर के सामने वे क्या करते, बिचारे सब के सब भग गए। देवदल सदा के लिए निश्चिन्त हो गए।

ततस्तु तां सुधापिष्टिं गृहित्वा त्रिदशास्तथा।
पिण्डीकृत्य प्रहृष्टास्ते लिङ्गं चक्रुरनुत्तमम् ॥३६॥
तल्लिङ्गं स्थापयामासुस्तस्मिन् रुद्राक्षकानने।
स्थापयित्वा ततो लिङ्गं पूजयामासुरादरात् ॥३७॥
नाम चक्रे ततस्तस्य पिण्डेश्वर इति प्रभो।
सुधापिण्डीकृतो यस्मात् पिण्डेश्वर इति स्मृतः ॥३८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे पार्वती ! हे ऋषीश्वरों ! वह जो कि अमृत को छानने से शेष बची हुई पिष्टि, अमृत का सार छूँच (सिट्ठी) थी, उसका एक सुन्दर शिवलिङ्ग बना कर रुद्राक्षारण्य में ही देवताओं ने स्थापित कर दिया। देवदल उस लिङ्ग को स्थापित करके अति प्रसन्न हुए, और विधिपूर्वक भक्तिभाव से उस अमृत-सार शिवलिङ्ग की पूजा देवताओं ने ही सब से पहले की। प्राणप्रतिष्ठा करते समय उस लिङ्ग का नाम पिण्डेश्वर प्रभु रखा गया। देवताओं का तात्पर्य था अमृत के पिण्ड से इनका निर्माण हुआ है, अतः इन्हें पिण्डेश्वर नाम से पुकारा जाय।

तस्मिन् सुधापिण्डमये लिङ्गे देवैर्विनिर्मिते।
रुद्राक्षकाननान्तस्थः पुराऽऽसीत् त्रिपुरान्तकः ॥३९॥
अदृश्यः सर्वभूतानां परं ज्योतिर्मयः प्रभुः।
प्रविश्य तत्-सुधालिङ्गं दृश्योऽभूत् सर्वदेहिनाम् ॥४०॥
पिण्डेश्वराख्यामापन्नस्ततः प्रभृति शङ्करः।
तस्मिन् रुद्राक्षकान्तारे स्थिरोऽभूत् त्रिपुरान्तकः ॥४१॥

हे ऋषीश्वरों ! देवताओं के द्वारा निर्मित उस अमृत पिण्ड में [जो कि पहले त्रिपुर वध के बाद रुद्राक्षारण्य (सर्वप्रथम रुद्राक्षोत्पत्ति स्थान, त्रिजयपुर) में रुद्राक्षवृक्षों के अन्दर अन्तर्लीन अदृश्य होकर जो त्रिपुरारि भगवान् शिव विराजमान थे, वे अब उस लिङ्ग में] प्रविष्ट होकर सभी भूत प्राणियों से दृश्य हो गए। भगवान् पिण्डेश्वर-शिवलिङ्ग विशिष्ट ज्योतिर्लिङ्ग हैं। अतः उस दिन से उस लिङ्ग की ख्याति पिण्डेश्वर नाम से हुई। और भगवान् शङ्कर रुद्राक्षारण्य में स्थिर हो गए।

ब्रह्माण्डं पिण्डमित्युक्तं तस्याऽयं यत ईश्वरः।
तेन पिण्डेश्वर इति ख्यातपूर्वं महेश्वरः ॥४२॥

हे ऋषीश्वरों ! रुद्राक्षारण्य के प्रमुख देवता, विशिष्ट ज्योतिर्लिङ्ग अमृत पिण्ड, शिवलिङ्ग को पिण्डेश्वर नाम देने में देवताओं का तात्पर्य अमृत पिण्ड मात्र से नहीं था। देवताओं का तात्पर्य था, ब्रह्माण्ड ही पिण्ड है, पिण्ड-स्वरूप ब्रह्माण्ड के ईश्वर भगवान् शंकर हैं, भगवान् शंकर ही शिव हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतः इस शिवलिङ्ग को पिण्डेश्वर कहा जाय। और आन्तरिक तात्पर्य है, यदि भगवान् शिव पिण्डेश्वर का कोई आराधना करता है, तो वह पिण्ड से वञ्चित नहीं रहेगा।[1]

तस्मिन्नस्तु स्थापिते लिङ्गे तदावरण-देवताः।
त्रिदशाः स्थापयामासुः परितस्तस्य शूलिनः ॥४३॥
विघ्नेश्वरं कुमारं च दक्षिणामूर्तिमेव च।
सभापतिश्च चण्डेशं सोमास्कन्दं च भैरवम् ॥४४॥
नन्दीश्वरं च पुरतो देवदेवस्य वाहनम्।
पिण्डेश्वरप्रियां देवीं बालाम्बां परमेश्वरीम् ॥४५॥
ततः पिण्डेश्वरो देवः परिवारसमन्वितः।
पूजितस्त्रिदशैः पूर्वं ततो मर्त्यैश्च पूजितः ॥४६॥

हे ऋषीश्वरों ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिवको रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र विजयपुर में स्थापित करके देवताओं ने भगवान् पिण्डेश्वर के आवरण देवता, अर्थात् परिकर देवता, पिण्डेश्वर परिवार देवाता की भी स्थापना की। क्रमशः भगवान् पिण्डेश्वर के चारों तरफ विघ्नेश्वर, कुमार, दक्षिणा-मूर्ति, सभापति, चण्डेश, सोमास्कन्द, भैरव, आदि देवता विराजमान हैं। भगवान् पिण्डेश्वर के आगे भगवान् पिण्डेश्वर के वाहना नन्दीश्वर हैं। भगवान् पिण्डेश्वर की प्रिया सहचरी, देवी पार्वती परमेश्वरी, बालाम्बा नाम से रुद्राक्षारण्य में विराजमान हैं।[2] इस तरह से भगवान्

१. शिवकालीन कथा वस्तु अति प्राचीन मानी जाती है, उस समय की भाषा न होने पर भी कथा वस्तु प्राचीन है, जो कर्णपरम्परा से लिखित पुराण के रूप में आती है। शिव के समय में समुद्र पूर्वीय हिमालय के तलहटी तक था; अतः अमृत पान स्थली विजयपुर है, इत्यादि हिन्दी आलोचनात्मक रुद्राक्षारण्य में तथा अंग्रेजी प्रतिलिपि में पढ़ें।

२. हाल बालाम्बा का भग्न मन्दिर है, स्थानीय जनता बालकुमारी नाम से पुकारती है। सती देह पतन के बाद ब्याही गई माता पार्वती को उस समय शिवगण बालाम्बा (बाल माता) कहते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिण्डेश्वर को सपरिवार संपन्न करके सबसे पहले देवताओं ने ही भगवान् पिण्डेश्वर की पूजा की। देवताओं के पूज लेने के बाद मानवों ने (मृत्यु-धर्मी जनों ने) पूजा की।

तत्रैव न्यवसद्देवः पुण्ये रुद्राक्षकानने।
दर्शनादेव सर्वेषां सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥४७॥

इस तरह से सपरिवार भगवान् शिव उस पवित्र रुद्राक्षारण्य में स्थित अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिवलिङ्ग में प्रत्यक्ष रूप से सदा के लिए स्थायी रूप में विराजमान हो गए। भगवान् पिण्डेश्वर के दर्शन से सभी को सब कुछ अभीष्ट फल प्राप्ति होती है।

ततस्तु त्रिदशाः सर्वे स्थापयित्वा महेश्वरम्।
पूजयित्वा यथान्यायं तत्प्रसादमवाप्य च ॥४८॥
प्रहर्षमतुलं प्राप्ता भक्ताः परमया युताः।
अनुज्ञातास्ततस्तेन स्थानानि स्वानि भेजिरे ॥४९॥

हे ऋषीश्वरों! इस तरह से देवताओं ने महेश्वर भगवान् पिण्डेश्वर शिव को स्थापित कर, विधिपूर्वक उनकी पूजा करके, उनसे वर प्रसाद प्राप्त कर परम भक्ति से युक्त देवगण अति हर्षित हुए, और भगवान् पिण्डेश्वर से विदा प्राप्त करके, अपने-अपने स्थानों में चले गए।

तदा प्रभृति देवेशस्तस्मिन् रुद्राक्षकानने।
राजते लिङ्गरूपेण बालाम्बासहितः प्रभुः ॥५०॥

देवताओं के चले जाने पर, उस दिन से भगवान् शिव, उस रुद्राक्षारण्य में, अपनी प्रिया बालाम्बा सहित होकर शिवलिंग (विशिष्ट ज्योतिर्लिङ्ग-पिण्डेश्वर) के रूप में विराजमान हैं।

इति देवि! तवाऽऽख्यातः पिण्डेश्वरसमुद्भवः।
शृण्वतां सर्वपापघ्नः किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥५१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् शंकर कहते हैं,—

हे देवी ! हे पार्वती ! तुमने जो पिण्डेश्वर समुद्भव, पिण्डेश्वर उत्पत्ति विषय में पूछा था, अर्थात् रुद्राक्षारण्य के प्रमुख देवता कौन हैं ? कह कर प्रश्न किया था, उत्तर में मैंने तुम्हें इस उपाख्यान को सुना दिया। यह उपाख्यान सुनते ही संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। हे देवी ! अब तुम क्या सूनना चाहती हो ?

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां पिण्डेश्वरोत्पत्ति
कथनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

पार्वती-उवाच

देवदेव ! जगन्नाथ ! पुरत्रयतृणाऽनल ! ।
काल-काल ! कलानाथ ! कलाधर ! घृणाकर ! ॥१॥
पिण्डेश्वर-समुत्पत्तिः श्रुता त्वत्तो मया प्रभो !
पिण्डेश्वरस्य माहात्म्यं श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥२॥

देवी पार्वती प्रश्न करती हैं—

हे देवदेव ! हे जगन्नाथ ! तृण के ढेर को जिस सुगमता से अग्नि जला देता है, उस तरह से त्रिपुरासुर के तीनों पुरों को जला देने वाले आप काल के भी काल हैं। हे कलानाथ ! आप कला के आधार हैं और अत्यन्त दयालु हैं। हे प्रभो ! आप से मैंने भगवान् पिडेश्वर की उत्पत्ति कथा सुन ली है। अब इस समय मैं आप से भगवान् पिडेश्वर का माहात्म्य सुनना चाहती हूँ।

कीदृक् प्रभावः पिण्डेशो रुद्राक्षारण्यमध्यगः ।
कस्मै कस्मै स भगवान् प्रसादमकरोत् प्रभुः ॥३॥
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि कीर्त्यमानं त्वया विभो ! ।
यद्यहं ते प्रियतमा कृपया कथय प्रभो ! ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्य के मध्य में विराजमान भगवान् पिण्डेश्वर का प्रभाव कैसा है ? प्रभु पिण्डेश्वर ने प्रसन्न होकर किन-किन को वरदान दिया ? मैं आप से सारी बातें सूनना चाहती हूँ। हे प्रभो ! यदि आप मुझसे प्यार करते हैं, और मैं आपकी प्रियतमा हूँ, तो कृपाकर के आप कहें।

शिव उवाच

साधु पृष्टं त्वया देवि ! लोकानां भक्तिवर्धनम्।
पिण्डेश्वरस्य माहात्म्यं शृणुष्वावहिता प्रिये ! ॥५॥

भगवान् शिव कहते हैं—

हे देवी ! भले ही तुमने पूछा, और अच्छा ही पूछा। भगवान् पिण्डेश्वर की माहात्म्य कथा लोगों में भक्ति बढ़ाने वाली है। हे प्रिये ! दत्तचित्त होकर सावधानी से तुम सुनो, मैं तुम्हें सुनाता हूँ।

द्रविडेषु पुरा देवि ! सह्याद्रितनया-तटे।
कुम्भकोणे महाक्षेत्रे कश्चिदासीद् द्विजोत्तमः ॥६॥

हे देवि ! द्रविड देश में सह्यपर्वत से बहने वाली नदी के तट में कुम्भकोण नामक स्थान पर प्राचीन किसी समय में कोई ब्राह्मण निवास करते थे।

विष्णुमित्रइति ख्यातो नाम्ना द्रविणजातिजः।
पुत्रदाराविहीनश्च गृहक्षेत्रादिवर्जितः ॥७॥
एक एवावसत्तत्र भिक्षाशी विजितेन्द्रियः।
तत्रैवं वर्तमानस्य पञ्चाशद्वत्सरा गताः ॥८॥

वे ब्राह्मण दाक्षिणात्य थे, उनका नाम विष्णुमित्र था, उनकी प्रसिद्धि भी थी, किन्तु वे स्त्री पुत्रों से विहीन थे और घर खेत आदि से भी विहीन थे। इस तरह से वे गरीब होते हुए भी जितेन्द्रिय थे, भिक्षा से गुजारा किया करते थे, अपना एकाकी जीवन व्यतित कर रहे थे। इसी तरह से उन्होंने अपनी आयु के पचास वर्ष पार कर लिए थे।

कदाचिद्दैवयोगेन द्विजस्य विजितात्मनः।
तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना निर्विण्णस्यैकवासतः ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीर्थयात्रां करिष्यामि किमेकत्र वसाम्यहम् ।
करिष्ये जन्मसाफल्यं गमिष्ये गतिमुत्तमाम् ॥१०॥

जितेन्द्रिय वे एकान्त वास करनेवाले द्विज विष्णुमित्र को किसी समय दैव योग से तीर्थयात्रा करने की बुद्धि हुई। एकान्तवास करते-करते वे खिन्न भी हुए थे। अतः उन्होंने सोचा, क्यों मैं तीर्थयात्रा न करूँ? यहाँ एकान्त में अकेले रहने से हमें क्या लाभ है? यदि मैं तीर्थयात्रा कर लूँगा तो मेरा जन्म भी सफल हो जायगा।

इति निश्चित्य सुदृढं मनसा द्विजपुङ्गवः ।
कुम्भकोणाद्विनिर्गत्य ययौ पूर्वां दिशं प्रति ॥११॥

हे देवी! इस तरह से मन के द्वारा तीर्थयात्रा ही करूँगा ऐसा दृढ़ निश्चय करके वे द्विजश्रेष्ठ कुम्भकोण क्षेत्र से निकलकर पूरब के तरफ चल दिए।

माल्यार्जुनं च कुद्दालं गौरिमापुरमेव च ।
श्वेतारण्यं महाक्षेत्रं कावेरीं सिन्धुसङ्गमम् ॥१२॥
समासाद्य स विप्रेन्द्रस्तत्र स्नात्वा यथाविधि ।
त्रिरात्रमुषितः पश्चात् प्रयातो दक्षिणां दिशम् ॥१३॥

कुम्भकोण से पूरब के तरफ वे माल्यार्जुन पर्वत पर पहुँचे, पहुँचकर दर्शन आदि करके कुद्दाल पहुँचे, कुद्दाल से गौरिमापुर पहुँचे, गौरिमापुर से महाक्षेत्र श्वेतारण्य पहुँचे, कावेरी और समुद्र सङ्गम में विधिपूर्वक स्नानादि करके वे द्विजश्रेष्ठ तीन रात तक वहाँ रहकर पुनः दक्षिण दिशा के तरफ मुड़ गए।

समुद्रतीरमार्गेण क्षेत्राणि सुबहून्यथ ।
वीक्षमाणः क्रमेणैव वेदारण्यमुपागतः ॥१४॥
वेदारण्येश्वरस्याग्रे सर्वपापक्षयङ्करे ।
अग्नितीर्थाभिधे सिन्धौ स्नात्वा स द्विजसत्तमः ॥१५॥
वेदारण्येश्वरञ्चैव वीणावादविभूषणम् ।
विलोक्य सम्प्रहृष्टात्मा तत्रैव न्यवसत् सुखम् ॥१६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिरात्रमुषितस्तत्र धनुष्कोटिं ययौ ततः।
स्नात्वा तत्र धनुष्कोट्यां शुचिर्भूत्वा प्रसन्नधीः ॥१७॥
वेदारण्येश्वरं देवं द्रष्टुं पुनरुपागतः।
त्रिरात्रमुषितस्तत्र जपपूजापरायणः ॥१८॥
ततस्तस्माद्विनिष्क्रम्य प्रययौ दक्षिणां दिशिम्।
अचिरेणैव कालेन सेतुबन्धमुपागतः ॥१९॥

अनेकों पुण्यक्षेत्रों का अवलोकन करते हुए, समुद्र के किनारे के रास्ते से वे वेदारण्य में पहुँचे। वेदारण्येश्वर के सामने विद्यमान सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला अग्नितीर्थ नाम के समुद्र तीर्थ में स्नान करके वेदारण्येश्वर एवं वीणावादन मुद्रा में विराजमान भगवान् को दर्शन करके प्रसन्न चित्त वे द्विज तीन रात का सुखपूर्वक वहाँ निवास करने के वाद धनुष्कोटि के तरफ चल दिए। धनुष्कोटि में पहुचकर वहाँ स्नानादि कृत्य करके प्रसन्नचित्त विष्णुमित्र पुनः वेदारण्येश्वर के दर्शन करने के लिए वेदारण्य पहुँचे। वेदारण्य में जप पूजा पाठ आदि करते हुए तीन रात व्यतीत करके वेदारण्थ से प्रस्थान कर दक्षिण दिशा के तरफ चल दिए। थोड़े ही दिनों के बाद सेतुबन्ध रामेश्वर पहुँचे।

नवपाषाणसंघे तु तत्र स्नात्वा महोदधौ।
पितृन्सन्तर्प्य देवाँश्च तीर्थश्राद्धं विधाय च ॥२०॥
समुद्रमध्ये राजन्तं रामेश्वरमुपागतः।
भैरवादिषु तीर्थेषु विधिवत्स्नानमाचरन् ॥२१॥
रामेश्वरालयं दृष्ट्वा परं हर्षमुपागतः।
अग्नितीर्थाभिधे सिन्धौ रामनाथाग्रतः स्थिते ॥२२॥
यथाविधि पुनः स्नात्वा सन्तर्प्य च पितृन्निजान्।
दृष्ट्वा रामेश्वरं देवं देवीं पर्वतवर्द्धिनीम् ॥२३॥
प्रसन्नहृदयो भूत्वा धनुष्कोटिं ययौ पुनः।
रत्नाकरमहोदध्योः सङ्गमे स्नानमाचरन् ॥२४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीर्थश्राद्धादिकं कृत्वा सन्तर्प्य पितृदेवताः ।
रामनाथं पुनर्दृष्ट्वा भैरवाय निवेद्य च ॥२५॥
उषित्वा कतिचित्तत्र दिनानि प्रस्थितस्ततः ।
पश्चिमां दिशमास्थाय प्रययौ द्विजसत्तमः ॥२६॥

सेतुबन्ध में पहुँचकर नये नये प्रस्तरों से निर्मित भगवान् रामचन्द्र की कीर्ति स्वरूप सेतु के निकट समुद्र में स्नान कर विधिपूर्वक देवपूजा करके तीर्थ श्राद्धादि से पितृयों को तृप्त कर समुद्र के मध्य में विराजमान भगवान् रामेश्वर के मन्दिर में पहुँचे। पहुँचकर भैरवादि तीर्थों में विधिपूर्वक स्नान करके भगवान् रामेश्वर का दर्शन कर अति प्रसन्न हुए। रामनाथ (रामचन्द्र द्वारा स्थापित शिव) के सामने विद्यमान अग्नितीर्थ (समुद्र स्नान करने का स्थल) नामक समुद्र में पुनः यथाविधि स्नान कर देवता और अपने पितृयों को तृप्त कर रामेश्वर का दर्शन एवं पर्वतवर्धिनी देवी का दर्शन करके प्रसन्न हृदय हो, पुनः धनुष्कोटि में आकर रत्नाकर नामक समुद्र और महोदधि नामक समुद्र के संगम में स्नान करने के बाद तीर्थश्राद्धादि से पितृ और देवताओं को तृप्त करके पुनः रामेश्वर का दर्शन कर भैरवादि देवताओं को निवेदन करके कुछ दिन वहाँ रहकर वे द्विजसत्तम पश्चिम दिशा की ओर चल दिए।

सम्प्राप्य दर्भशयनं क्षेत्रं सागरतीरगम् ।
शयानं दर्भशयने ददर्श रघुपुङ्गवम् ॥२७॥
चक्रतीर्थे महापुण्ये कृत्वा स्नानादिकं द्विजः ।
त्रिरात्रं न्यवसत्तत्र प्रसन्नेन्द्रियमानसः ॥२८॥

सागर के तीर में दर्भशयन क्षेत्र में पहुँच कर कुश के शयन में सोये हुये (कुशासन में सोये हुए) रघुपुङ्गव भगवान् रामचन्द्र का दर्शन कर महापुण्य दायक चक्रतीर्थ में स्नानादि कृत्य करके प्रसन्नचित्त हो तीन दिन वहाँ रहे।

ततस्तस्माद्विनिर्गत्य हालास्यं क्षेत्रमागतः ।
स्नात्वा हेमाञ्जिनीतीर्थे वैहायस्यां तथैव च ॥२९॥
हालास्यनगरीनाथं दृष्ट्वा श्रीसुन्दरेश्वरम् ।
हालास्यनगरीनाथां देवीं श्रीमीनलोचनाम् ॥३०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रहृष्टो न्यवसत्तत्र दिनानि कतिचिद् द्विजः।

दर्भशयन से प्रस्थान करके हालास्य क्षेत्र में पहुँचे। हालास्य में हेमाब्जिनी तथा वैहायसी तीर्थ में स्नान कर हालास्य नगरीनाथ श्री सुन्दरेश्वर का और देवी मीनलोचना (मीनाक्षी) का दर्शन करके विष्णुमित्र ब्राह्मण अति प्रसन्न हुए, और कुछ दिन वहीं रहे।

ततः कन्यां कुमारीं स दृष्ट्वा सागरतीरगाम् ॥३१॥

हालास्य नगरी से प्रस्थान करके वे द्विज कन्याकुमारी पहुँचे और वहाँ सागर के तीर पर कन्याकुमारी का दर्शन किया।

अनन्तपद्मनाभस्य दर्शनार्थं ययौ ततः।
सम्प्राप्य पद्मनाभस्य मन्दिरं सुन्दरं महत् ॥३२॥
ददर्श पद्मनाभाख्यं रमाकान्तं जगत्-पतिम्।
शयानं शेषशय्यायां नीलाम्बुदसमप्रभम् ॥३३॥

कन्याकुमारी से अनन्तपद्मनाभ का दर्शन करने के लिए उन्होंने प्रस्थान किया। अति सुन्दर पद्मनाभ के मन्दिर में पहुँचकर शेषशय्या में सोये हुए नील मेघ के समान वर्णवाले लक्ष्मी के पति जगत्-प्रभु भगवान् पद्मनाभ का दर्शन किया।

पद्मनाभस्य सदनात् स जगाम जनार्दनम्।
स्नात्वा रत्नाकरे तत्र ददर्श च जनार्दनम् ॥३४॥
निर्जगाम ततस्तस्मादुत्तारां दिशमास्थितः।
पश्यन् बहूनि क्षेत्राणि तीर्थानि विविधानि च ॥३५॥

पद्मनाभ के भवन से जनार्दन भगवान् का दर्शन करने के लिये समुद्र तीर पर पहुँचे। वहाँ जनार्दन का दर्शन कर समुद्र में स्नान करके वहाँ से अनेक क्षेत्रों का दर्शन करते हुये उत्तर दिशा के तरफ विष्णुमित्र ने प्रस्थान किया।

कावेरीसङ्गमं प्राप्य तत्र स्नात्वा यथाविधि।
सुब्रह्मण्यं महाक्षेत्रं सम्प्राप्तः स द्विजोत्तमः ॥३६॥
नित्यानन्देषु निरतं सुब्रह्मण्यं ददर्श सः।
ततो निर्गत्य विप्रेन्द्रः पश्चिमं सिन्धुमागतः ॥३७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कावेरी और समुद्र के संगम में पहुँचकर विधिपूर्वक वहाँ स्नान करके वे द्विजश्रेष्ठ सुब्रह्मण्य नामक महाक्षेत्र में पहुँचे। पहुँचकर नित्यानन्द में निरत सुब्रह्मण्य का दर्शन करके, वहाँ से निकलकर पश्चिम समुद्र के तरफ चल दिए।

समुद्रतीरमार्गेण कौबेरीं दिशमास्थितः।
कोटीश्वरं विलोक्याऽथ ययौ मूलाम्बिकां द्विजः ॥३८॥

समुद्र तीर के मार्ग से उत्तर दिशा के तरफ मुड़कर कोटीश्वर में पहुँचकर दर्शन करके मूलाम्बिका के तरफ वे द्विज चल पड़े।

दृष्ट्वा मूलाम्बिकां देवीं लिङ्गरूपेण संस्थिताम्।
गोकर्णाख्यं महाक्षेत्रं ययौ सिन्धुतटे स्थितम् ॥३९॥

मूलाम्बिका देवी जो लिङ्ग रूप में (मूर्ति स्वरूप में) विराजमान हैं, उनका दर्शन करके सिन्धु तट में स्थित गोकर्ण नामक महाक्षेत्र के तरफ चल दिए।

महाबलेश्वरं देवं पश्चिमाभिमुखं स्थितम्।
विलोक्य ताम्रपर्णाख्यां गौरींश्च परमेश्वरीम् ॥४०॥

गोकर्णादि का दर्शन करके पश्चिमाभिमुख होकर विराजमान महाबलेश्वर देव को दर्शन कर परमेश्वरी गौरी ताम्रपर्णा का दर्शन कर—

प्रहृष्टहृदयो भूत्वा त्रिरात्रं न्यवसद्द्विजः।
पश्चिमाम्बुधितीरेण सोमनाथमुपागतः ॥४१॥

अति प्रसन्न हृदयवाले वे विष्णुमित्र तीन रात तक वहाँ रहकर पश्चिम समुद्र तीर के मार्ग से सौराष्ट्र पहुँचे।

तत्र दृष्ट्वा सोमनाथं द्वारकां प्रययौ ततः।
समुद्रमध्यगां पुण्यां पुरीं मुक्तिप्रदायिनीम् ॥४२॥
तत्र श्रीद्वारकानाथं दृष्ट्वा गोपीमनोहरम्।
पिण्डारकादितीर्थेषु स्नानं चक्रे द्विजोत्तमः ॥४३॥
तत्र स्थित्वा सप्तरात्रं प्रभासं समुपागतः।
तत्र स्नानादिकं कृत्वा त्रिरात्रमुषितस्ततः ॥४४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौराष्ट्र में सोमनाथ का दर्शन कर द्वारका के तरफ चल दिए। मुक्ति प्रदान करने वाली समुद्र के मध्य में स्थित द्वारकापुरी में पहुँच कर गोपीजन वल्लभ भगवान् द्वारकानाथ का दर्शन करके पिण्डारकादि तीर्थों में वे द्विजोत्तम विष्णुमित्र ने स्नानादि कर सात रात वहाँ व्यतित करने के बाद प्रभास क्षेत्र के तरफ प्रस्थान किया। वहाँ स्नानादि करके तीन रात रहकर वहाँ से—

क्रमेण शीतशैलेन्द्रं प्रययौ द्विजसत्तमः।
हिङ्गुलाख्यां महादेवीं दृष्ट्वा तत्र निवासिनीम् ॥४५॥
दृष्ट्वा चाऽमरनाथं स त्रिकूटमगमत्ततः।
ततो जालन्धरं गत्वा दृष्ट्वा ज्वालाम्बिकां शिवाम् ॥४६॥

प्रस्थान कर क्रमशः हिमालय के तरफ वे विष्णुमित्र बढ़े। हिंगुल नाम की महादेवी का दर्शन करके अमरनाथ पहुँचे। अमरनाथ का दर्शन कर त्रिकूट पर्वत का दर्शन करते हुए, उतर कर जालन्धर पहुँचकर ज्वालाम्बिका देवी का दर्शन करने के बाद—

केदारं समनुप्राप्य दृष्ट्वा केदारनाथकम्।
नरनारायणौ तस्माद्विशालां च ततस्ततः ॥४७॥

पुनः हिमालय के तरफ बढ़े। केदार पहुँचकर केदारनाथ का दर्शन करने के बाद बद्रीनाथ पहुँचे। वहां नर-नारायण का दर्शन करके पुनः नीचे उतरे। विशाला (हरिद्वार) पहुँचकर वहाँ के देवी देवताओं का विष्णुमित्र ने दर्शन किया, विशाला को दर्शन करने के बाद वहाँ से पुनः किसी सुगम रास्ते को पकड़ कर—

शालग्रामशिलाशैलं मुक्तिनाथं च गण्डकीम्।
रुरूक्षेत्रं मनुक्षेत्रं कैलासं मानसं तथा ॥४८॥

विणुमित्र पुनः हिमालय के तरफ बढ़े। शालग्रामशिलाशैल होते हुए शालग्रामी गण्डकी गङ्गा के किनारे-किनारे चलते हुए रुरुक्षेत्र, मनुक्षेत्र आदि को पार कर मुक्तिनाथ कैलाश मानसरोवर तक पवित्र नदियों में स्नान करते हुए एवं देवी देवताओं के दर्शन करते हुए पहुँचे[1]।

---

१. उक्त सभी तीर्थ हाल नेपाल में पड़ते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततो नेपालमासाद्य दृष्ट्वा पशुपतीश्वरम् ।
नीलकण्ठं ददर्शाऽथ शयानं सलिलान्तरे ॥४९॥

फिर कैलाश मानसरोवर से लौटकर विष्णुमित्र नेपाल पहुँचे । नेपाल में पहुँचकर पशुपतिनाथ का दर्शन कर जलशायी भगवान् नीलकण्ठ का दर्शन करके काष्ठमण्डप के सारे देवी देवताओं का दर्शन किया ।

अवतीर्य ततः शैलादयोध्यामगमद् द्विजः ।
तत्र दृष्ट्वा रामन्द्रं लक्ष्मणादि समन्वितम् ॥५०॥

पुनः पर्वत से उतर कर वे ब्राह्मण अयोध्या पहुँचे । अयोध्या में पहुँचकर लक्ष्मणदियी से युक्त भगवान् रामचन्द्र का दर्शन किया ।

ततः प्रयागमगमत् सर्वकामफलप्रदम् ।
गङ्गायमुनयोस्तत्र सङ्गमे स्नानमाचरत् ॥५१॥

योध्या से सभी कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ, गङ्गा और यमुना के सङ्गम स्यल तीर्थराज प्रयाग में पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने स्नान किया ।

तत्र स्थित्वा सप्तरात्रं ततः काशीपुरीं ययौ ।
स्नात्वा भागीरथीतीर्थे ददर्श मणिकर्णिकाम् ॥५२॥
तस्यां स्नात्वा यथाशास्त्रं दृष्ट्वा विश्वेश्वरं हरम् ।
नित्ययात्रां ततः कृत्वा भैरवादीन् ददर्श ह ॥५३॥
पञ्चक्रोशाभिधां यात्रां ततः कृत्वा द्विजोत्तमः ।

और प्रयाग में वे सात रात रहकर वहाँ के सारे देवी देवताओं के दर्शन करके काशीपुरी के तरफ चल दिए । काशी पहुँचकर भागीरथी गंगा में स्नान करके भागीरथी गङ्गा के तीर में स्थित मणिकर्णिका का दर्शन एवं विधिपूर्वक स्नान करके भगवान् विश्वनाथ तथा अन्नपूर्णा आदि के दर्शन के बाद नित्य यात्रा कर भैरवादि देवताओं का दर्शन किया । इसके बाद पञ्चक्रोशी यात्रा करके काशी के सारे देवी देवताओं का दर्शन किया ।

गयाभिधं महाक्षेत्रं पितॄणां मुक्तिदायकम् ॥५४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आगत्य फल्गुतीर्थे च स्नात्वा स द्विजसत्तमः ।
पितृकार्याणि सर्वाणि चक्रे तत्र यथाविधि ।।५५।।

तदनन्तर पितृयों को मुक्त करने में समर्थ गया नामक महाक्षेत्र में पहुँच कर फल्गु नदी के तीर्थ में स्नानकर उन ब्राह्मण ने विधिपूर्वक अपने पितृयों को तर्पण एवं पिण्डदान आदि से तृप्त किया ।

ततो गत्वा वैद्यनाथं ददर्श वनमध्यगम् ।
ततस्तस्मात् विनिष्क्रम्य ददर्श मिथिलापुरीम् ।।५६।।

इसके बाद वन के मध्य में स्थित भगवान् श्री वैद्यनाथ का वैद्यनाथ धाम में जाकर दर्शन किया । फिर वैद्यनाथ धाम से चलकर मिथिलापुरी को चले गए ।

दृष्ट्वा श्रीरामचन्द्रेण भग्नं चण्डीशकार्मुकम् ।
ततश्च कौशिकीं प्राप्य रुद्राक्षारण्यमागतः ।।५७।।

मिथिलापुरी में पहुँचकर श्री रामचन्द्र के द्वारा भग्न शिवधनुष का दर्शन कर, मिथिलापुरी के देवी देवताओं का दर्शन करने के बाद कौशिकी गङ्गा में पहुँचे । कौशिकी में स्नानादि करके रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र विजयपुर पहुँचे।

ततः पिण्डेश्वरं देवं रुद्राक्षारण्यमध्यगम् ।
बालाम्बा-सहितं दृष्ट्वा परं हर्षमुपागतः ।।५८।।

रुद्राक्षारण्य में पहुँचकर रुद्राक्षारण्य के मध्य में विराजमान भगवती बालाम्बा से युक्त भगवान् पिण्डेश्वर शिव का दर्शन करके विष्णुमित्र अतीव प्रसन्न हुए ।

रुद्राक्षैर्विल्ववृक्षैश्च शोभिते परमाद्भुते ।
स्नात्वा सरस्वतीतीर्थे तस्थौ रुद्राक्षकानने ।।५९।।

रुद्राक्षवृक्ष और विल्ववृक्षों से सुशोभित अति आश्चर्यजनक परम रमणीय सरस्वती तीर्थ में स्नान कर तीर्थयात्री द्विजश्रेष्ठ विष्णुमित्र रुद्राक्षारण्य में ही निवास करने लगे ।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां विष्णुमित्रस्य
तीर्थयात्राकथनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ।।१३।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

शिव उवाच

ततो दृष्ट्वा द्विजश्रेष्ठः शीतशैलेन्द्रमुत्तमम् ।
विल्ववृक्षैः समाकीर्णं रुद्राक्षतरुमण्डितम् ॥१॥
दर्शनीयतमं दिव्यं कैलाशादपि सुन्दरम् ।
अतीव रमणीयञ्च दृष्ट्वा हर्षसमन्वितः ॥२॥
निवासाय मनश्चक्रे तत्रैव द्विजसत्तमः ।
ततो निवसतस्तस्य शीतशैले द्विजन्मनः ॥३॥
बभूव हृदये पुण्या मनीषा धर्मवर्द्धिनी ।
पिण्डेश्वरप्रसादार्थं करिष्ये तप उत्तमम् ॥४॥

हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! शीत शैलेन्द्र (हिमालय पर्वतराज का भाग) विजयपुर रुद्राक्षारण्य (पञ्चक्रोशी क्षेत्र) में पहुँचकर रुद्राक्षवृक्ष एवं विल्ववृक्ष[1] आदि वृक्षों से मण्डित, कैलाश से भी सुन्दर, दिव्य दर्शनीय, अतीव रमणीय उक्त रुद्राक्षारण्य को देख कर अति प्रसन्न उन देवदत्त ब्राह्मणोत्तम को वहीं रहने की इच्छा हुई । वहाँ रहते हुए उन्हें धर्मवृद्धि कराने वाली पवित्र इच्छा भी प्रकट हुई कि क्यों मैं भगवान् पिण्डेश्वर को प्रसन्न करने के लिए तपस्या न करूँ ?

इति सञ्चित्य मनसा निश्चित्य नियतेन्द्रियः ।
तपस्तप्तुं समारेभे परं नियममास्थितः ॥५॥

---

१. रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र विजयपुर में रुद्राक्ष वेल अशोक मौलशरी आदि वृक्षों का विशेष वर्णन है, किन्तु पुरोहितों ने दक्षिणा के लोभ में वेलों की टहनियों को काट-काट कर न्यस्तनामूद कर दिए, वैद्यों ने अशोक और मौलशरियों के छालों को खुरच कर न्यस्तनामूद कर दिए । अपवित्रता से रुदाक्ष स्वयं सूख गए । पुनः पुनरुत्थान किया जा रहा है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब इस तरह से निश्चय कर, जितेन्द्रिय हो, तपश्चर्या में पालन करने योग्य नियमों को पालन करते हुए, उन द्विजोत्तम ने तपस्या करना प्रारम्भ कर दिया।

मासमेकं फलाहारः पञ्चाक्षरमनुत्तमम्।
आमध्याह्नं जपन्मन्त्रं समाप्य विधिपूर्वकम् ॥६॥
कृत्वा माध्याह्निकं कर्म यथाविधि ततः परम्।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं पिण्डेश्वरमनःप्रियम् ॥७॥
पठन्नेकाग्रचित्तः सन्नष्टोत्तरसहस्रकम्।
जगाम शरणं देवं पिण्डेश्वरमुमापतिम् ॥८॥

तपश्चर्या में उन्होंने एक मास तक फलाहार करके पञ्चाक्षर मन्त्र (ॐ नमः शिवाय) को मध्याह्न समय तक जप करने के बाद विधि पूर्वक समाप्त कर के मध्याह्न का नित्यकर्म कर विधिपूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करते रहे। यह स्तोत्र भगवान् पिण्डेश्वर को अति प्रिय है। उक्त स्तोत्र को अष्टोत्तर सहस्र (१०८) वार एकाग्र चित्त होकर पाठ करते थे। पाठ करते हुए वे उमा के पति देव (शिव) पिण्डेश्वर के शरण में समर्पित हो जाते थे।

विष्णुमित्र उवाच

चण्डांशुमण्डलान्तस्थं चण्डांशुशतभास्वरम्।
चण्डीसहायं सदयं पिण्डेश्वरमहं भजे ॥९॥

विष्णुमित्र स्तोत्र पाठ करते हैं--

सूर्यमण्डल के अन्दर यदि एक सौ सूर्य हों, और उनके तेजपुञ्ज प्रकाशित हों तो वह तेजपुञ्ज जैसा होता है वैसे ही तेजपुञ्ज से प्रकाशित होने वाले हे भगवान् शिव ! आप माता पार्वती (शक्ति-स्वरूपा) से विराजित हैं, और दया के सागर भी हैं। ऐसे ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक अमृत पिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव को मैं भजता हूँ।

ब्रह्माण्डाख्येषु पिण्डेषु हिण्डन्तं चण्डभानुवत्।
पण्डां दिशन्तं श्रीमन्तं पिण्डेश्वरमहं भजे ॥१०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड रूप पिण्डों में सूर्य के समान सञ्चरण करने वाले, सत्य एवं असत्य का निर्णय कर सत् बुद्धि प्रदान करने वाले, श्री आदि ऐश्वर्य सम्पन्न, ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव को मैं नमस्कार करता हूँ (भजता हूँ)।

कुण्डलीकृतकोदण्डं दण्डितारातिमण्डलम् ।
शुण्डादण्डाभदोर्दण्डं पिण्डेश्वरमहं भजे ॥११॥

पिनाक धनुष (हिमालय पर्वत रूप) को खैंच[1] कर कुण्डल के रूप में अर्ध चन्द्राकार कर देने वाले एवं शत्रुओं के समूह को दण्ड देने वाले (संसार-रूप शत्रु को दण्ड देकर, निवार्णपदवाच्य (मोक्ष देकर) मुक्ति प्रदान करने वाले, तथा ऐरावत हाथी के समान बाहु दण्डों को धारण करने वाले, ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक-अमृत पिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर को मैं भजता हूँ (नमस्कार करता हूँ)।

कुण्डलीकृतनागेन्द्रं गङ्गाचन्द्रविभूषणम् ।
शुण्डालचर्मवसनं पिण्डेश्वरमहं भजे ॥१२॥

नागराज शेष को धनुष-तन्तु बनाकर कुण्डलाकार प्रत्यञ्चा के समान कर देने वाले, एवं गङ्गा और चन्द्र को आभूषण के रूप में धारण करने वाले, तथा गजासुर के चर्म को वस्त्र के रूप में धारण करने वाले, ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक, अमृत पिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर को मैं भजन करता हूँ (नमस्कार-करता हूँ)।

पञ्चाननं त्रिनयनं पञ्चाशद्वर्णविग्रहम् ।
पञ्चाक्षरान्तरचरं पिण्डेश्वरमहं भजे ॥१३॥

---

१. हिमालय जम्बुद्वीप भरत खण्ड में कुण्डल के तरह अर्ध-चन्द्राकार है, जो शिवधनुष पिनाक है, कल्पना प्रकृति से दृश्यरूप में मिलती है। शिव देह संपूर्ण जम्बुद्वीप है। हिमालय शिवदेह का हृदय है-जिसके नदियों से जम्बुद्वीप जीता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पञ्चमहाभूत स्वरूप पाँच मुख वाले, एवं सूर्य सोमाग्नि रूप तीन नयन धारण करने वाले, तथा पचास अक्षरों (ॐ श्री स्वर व्यञ्जन) का शरीर (अक्षरमय शरीर) धारण करने वाले, और पञ्चाक्षर मन्त्र (ॐ: नमः शिवाय) के अन्दर संचरण करने वाले, ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव को मैं भजन करता हूँ (नमस्कार करता हूँ)।

नीहारशैलशिखरे वसन्तं विजये पुरे।
शान्ति दिशन्तं भजतां पिण्डेश्वरमहं भजे ॥१४॥

हिमालय शैल शिखर विजयपुर में निवास करने वाले, भक्तों को शान्ति प्रदान करने वाले ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव को मैं भजता हूँ (नमस्कार करता हूँ)।

रुद्राक्षमालाभरणं रुद्राक्षारण्यचारिणम्।
रुद्राक्षमालादातारं पिण्डेश्वरमहं भजे ॥१५॥

रुद्राक्ष मालाओं के आभरण धारण करते वाले, रुद्राक्षारण्य में विचरण करने वाले, रुद्राक्ष मालाओं को देनेवाले, ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिन्ड, भगवान् पिण्डेश्वर शिव को मैं नमस्कार करता हूँ (भजता हूँ)।

यक्षेशमित्रं चिद्गात्रं नेत्रीकृतरुचित्रयम्।
गोत्रात्मजालसद्गात्रं पिण्डेश्वरमहं भजे ॥१६॥

यक्षराज गुह्यकेश्वर कुवेर के मित्र, चैतन्य चिन्मय शरीर धारण करने वाले सूर्य चन्द्र अग्नि स्वरूप त्रिनयन से तीन प्रकार की रुचि (सत्व रज तम, सृष्टि स्थिति प्रलय, दान सेवा नया) लेने वाले पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के शरीर से सुशोभित, अर्धनारीश्वर, ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव को मैं भजन करता हूँ (नमस्कार करता हूँ)।

इदं स्तोत्रं पठन्नित्यं मासं निन्ये द्विजोत्तमः।
द्वितीयं च तथा मासं शीर्णपर्णकृताशनः ॥१७॥
जितेन्द्रियो जितक्रोधो निन्ये हर्षसमन्वितः।
तृतीयञ्च तथा मासमब्भक्षस्तप आचरन् ॥१८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुर्थे मासि सम्प्राप्ते वायुभक्षश्चरत्तपः ।
तस्यैवं वर्तमानस्य तपतस्तप उत्तमम् ।।१९।।

हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! उन विष्णुमित्र ब्राह्मण ने फलाहार करके उक्त स्तोत्र का पाठ करते हुए एक महीना व्यतीत किया । सूखे और पेड़ से स्वयं गिरे हुए पत्तों को खाकर दूसरा महीना भी उसी स्तोत्र को पाठ करते हुए व्यतित किया । पानी मात्र पीकर उसी स्तोत्र को पाठ करते हुए तीसरा महीना भी गुजर गया । चौथे महीने में तो वायु मात्र भक्षण कर स्तोत्र पाठ करते हुए बीत गया । इसी उपक्रम से तपस्या करते हुए—

ध्यायतो हृदयाम्भोजे देवदेवं वृषध्वजम् ।
चन्द्रार्धशेखरं शम्भुं बालाम्बालंकृतं प्रभुम् ।।२०।।
पञ्चवक्त्रं त्रिनयनं दशबाहुविराजितम् ।
नीहार-हार-पाटीर-घनसार-सम-प्रभम् ।।२१।।
कोटिसूर्य-प्रतीकाशं चन्द्रकोटि-समप्रभम् ।
बालभानु-प्रतीकाशं जटामुकुट-भूषणम् ।।२२।।
रुद्राक्षमालाभरणं भस्मोद्धूलितविग्रहम् ।
नागेन्द्रकृत्तिवसनं व्याघ्रचर्मोत्तारीयकम् ।।२३।।
भुक्तिमुक्तिप्रदं देवं भजतां भक्तिभावतः ।
वेदान्तवेद्यममृतं सच्चिदानन्दविग्रहम् ।।२४।।
समाधौ स ददर्शैवं भगवन्तं सदाशिवम् ।
बभूव हृदये तस्य प्रमोदः सुमहाँस्तथा ।।२५।।

ध्यान में इस तरह का रूप धारण करते रहे । देवता के देवता, वृषभध्वज, शिव अर्धचन्द्र को शिर में धारण किए हुए बालाम्बा से युक्त अर्धनारीश्वर शंकर, जो पाँच मुख, दश बाहु, त्रिनयन वाले एवं करोड़ों सूर्य के तेज से विराजमान, तथा करोड़ों चन्द्रमा की शीतल चन्द्रकान्ति से सुशोभित और उदयकालीन सूर्य की लालिमा से युक्त अरुण वर्ण के जटामुकुट को धारण किए हुए विराजमान, भस्मचर्चित शरीर, रुद्राक्ष माला धारण किये हुए, हस्तिचर्म को कटिवस्त्र एवं व्याघ्रचर्म को उत्तरीय वस्त्र के स्थान में धारण किये हुए,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भक्ति भावना पूर्वक भजन करने वालों को भुक्ति और मुक्ति देनेवाले, वेदान्त विद्या के विद्वानों के लिए अमृत स्वरूप, सच्चिदानन्द विग्रह वाले, ऐसे भगवान् शंकर का स्वरूप को ध्यान में वे धारण करते थे। ठीक वैसे ही रूप में भगवान शंकर भी उनके ध्यान से दृढ़ हुए। इस तरह से ध्यान में दृढ़ हुए भगवान् शंकर को प्राप्त करके उनका हृदय अति प्रफुल्लित हुआ।

ततः प्रसन्नः पिण्डेशो ध्यातस्तेन हृदम्बुजे।
आविर्बभूव पुरतो ब्राह्मणस्य तपस्यतः ॥२६॥

प्रसन्न हुए भगवान् पिण्डेश्वर शिव को ध्यान में जैसे देखा था उसी रूप में वैसे ही बाहर भी उन्होंने उसी क्षण अनुभव किया और भगवान् पिण्डेश्वर प्रकट हो गए।

समाधौ हृदये देवं दृष्टवान् संभ्रमाऽन्वितः।
उन्मील्य नेत्रयुगलमपश्यत् पुरतः स्थितम् ॥२७॥

ध्यान में जो रूप प्रकट था उसी रूप को उन्हें दर्शन करने की इच्छा हुई और हड़बड़ा के आँखें खोला, आँख खोलते ही भगवान् शिव को वही रूप में प्रत्यक्ष किया।

यथा हृदम्बुजे ध्यातस्तथारूपं विलोक्य सः।
प्रहर्षमतुलं लेभे ब्रह्मानन्दनिमग्नवत् ॥२८॥

ध्यान में जैसे देखा वैसे ही बाहर भी भगवान् पिण्डेश्वर को देखकर विष्णुमित्र अत्यन्त प्रसन्न हुएं, मानों कि वे ब्रह्मादन्द में ही निमग्न हो गए !

प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा ननाम भुवि दण्डवत्।
उत्थाय च ततो विप्रो बध्वाञ्जलिपुटः स्थितः ॥२९॥
आनन्दाश्रुपरीताक्षो हर्षगद्गदया गिरा।
तुष्टाव प्रणतो भूत्वा पिण्डेश्वरमनन्यधीः ॥३०॥

फिर उन्होंने भगवान् पिण्डेश्वर शिव की तीन वार परिक्रमा की, फिर पृथिवी में झुककर दण्डवत् प्रणाम करने के वाद उठकर हाथ जोड़ के खड़े हो गए। आनान्दाश्रुओं से टलपल आँखें होते हुए, हर्ष गद्गद वाणी में अति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नम्र भावनायुक्त भाव से एक चित्त होकर भगवान् पिण्डेश्वर शिव का स्तवन किया ।

विष्णुमित्र उवाच

रुद्राक्षविल्वतरुमण्डलमण्डितश्री-
शीताद्रिश्रृङ्गकृतसङ्गमसङ्गमाद्यम् ।
खण्डेन्दुमौलिमखिलश्रुतिमौलिवेद्यं
पिण्डेश्वरं पुरहरं शरणं प्रपद्ये ॥३१॥

आदि समय में हिमालय पर्वत श्रृङ्गों से संगम प्राप्त एवं रुद्राक्ष तथा विल्ववृक्षों की शोभा से अतिरणीय विजयपुर में (रुद्राक्षारण्य में) विराजमान, अष्टमी चन्द्रखण्ड को शिर में (जटामुकुट में) धारण करने वाले, आदिनाद ॐकार स्वरूप होने से संपूर्ण वेदों के वीज (शीर्ष) स्वरूप, संपूर्ण वेदों के ज्ञाताओं के द्वारा ज्ञेय, त्रिपुर को दहन करने वाले, ब्रह्मांड पिण्ड के प्रतीक अमृतपिण्ड, भगवान् पिण्डेश्वर शिव के चरणों में मैं शरणागत हूँ ।

वेदाश्वमिन्दुरविविम्ब-रथाङ्गयुग्म-
क्षोणीरथं द्रुहिणसारथिमाश्रितो यः ।
तिस्रः पुरः स्वहसितेन ददाहतं श्री-
पिण्डेश्वरं पुरहरं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥

चार वेद जिनके चार घोड़े बने, सूर्य और चन्द्र रथ के पहिये बने, पृथिवी रथ बनी, ब्रह्मा सारथी बने और जिन्होंने स्मितहास से तीनों पुरों को (त्रिपुर के पुरों को) जला दिया, ऐसे श्री आदि ऐश्वर्य संपन्न त्रिपुरासुरों के तीनों पुरों को जलाने वाले ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर भगवान् शिव के चरणों मैं शरणागत हूँ ।

मन्दारकुन्दकरवीरकपारिजातैः
पुन्नागनागबकुलासनकोविदारैः ।
संशोभिते गिरिवरे सततं वसन्तं
पिण्डेश्वरं पुरहरं शरणं प्रपद्ये ॥३३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन्दार कुन्द करवीर पारिजात पुन्नाग नाग बकुल असन कोविदार आदि वृक्षों से सुशोभित गिरिवर में सदा निवास करने वाले त्रिपुरासुर के तीनों पुरों को ज़लाने वाले, ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव के चरणों में मैं शरणागत हूँ ।

दीव्यन्तु देवनिवहास्त्रिदशेन्द्रमुख्याः
प्रख्यातसम्पदुदयप्रदपादसेवाः ।
देवाधिदेव इति यः श्रुतिभिस्तुतस्तं
पिण्डेश्वरं पुरहरं शरणं प्रपद्ये ॥३४॥

अनन्त ऐश्वर्यादि सम्पत्तियों से प्रख्यात, जिनकी चरण सेवा से जिनका उदय हुआ है, ऐसे देवदल, जिन में मुख्य इन्द्र हैं, वे देवदल सदा ही खुश रहें। किन्तु मैं तो देवताओं के भी देवता कह कर श्रुतियाँ जिन्हें पुकारते हैं त्रिपुरासुर के तीनों पुरों को जलाने वाले ऐसे ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड, भगवान् पिण्डेश्वर शिव के चरणों में मैं शरणागत हूँ ।

किं कालवेगविधुतेन कलेवरेण
किं कामिनीभिरनिशं व्यसनप्रदाभिः ।
ध्यातः सकृत् स्वपदवीं प्रददाति यस्तं
पिण्डेश्वरं पुरहरं शरणं प्रपद्ये ॥३५॥

इस काल से नष्ट होने वाले शरीर से ही क्या होगा ? रात दिन व्यसन मात्र देने वाली कामिनियों से भी क्या होगा ? जब कि एक बार मात्र भक्ति भावना से ध्यान करने से अपनी शिवपदवी को ही देनेवाले अमृतपिण्ड शिव विद्यमान हैं, मैं तो उन्हीं को सब कुछ समझता हूँ । ऐसे त्रिपुरासुर के तीनों पुरों को दहन करने वाले, ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव के चरणों में मैं शरणागत हूँ ।

नाऽहं वृणे क्षितितले वसुधाधिपत्यं
नैवामरेन्द्रपदवीं न रसाधिपत्यम् ।
विश्वाधिकं सकलविश्वहृदन्तरस्थं
पिण्डेश्वरं पुरहरं हरणं प्रपद्ये ॥३६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैं पृथिवीतल का राजसिंहासन नहीं वरण करता हूँ, न तो अमरेन्द्रपदवी को प्राप्त कर स्वर्ग का सम्राट बनना ही चाहता हूँ। संपूर्ण विश्व से भी अधिक जो हैं और संपूर्ण विश्व के अन्तर्हृदय में जो विराजमान रहते हैं, वही शिव सर्वस्व हैं, जो ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक हैं, जो अमृत के पिण्ड हैं और जो त्रिपुर हर हैं, ऐसे भगवान् पिण्डेश्वर शिव के चरणों में मैं शरणागत हूँ।

पञ्चाननं त्रिनयनं दशबाहु-दण्डं
चण्डादिसेवितसुदारमहीन्द्रहारम्।
वीरेन्द्रवन्द्यचरणं करुणाधुरीणाम्
पिण्डेश्वरं पुरहरं शरणं प्रपद्ये ॥३७॥

पञ्चमुख, त्रिनयन, दशबाहु एवं चण्डादि गण के द्वारा सेवित, छिप्रप्रसन्न इत्यादि उदार गुणवाले, नागराज के हार पहिरने वाले, वीराग्रगण्य जनों के द्वारा पूजित चरण, करुणा के सागर, त्रिपुरहर ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव के चरणों में मैं शरणागत हूँ।

विश्वोद्भवस्थितिलयादिषु यश्चिदात्मा
ब्रह्मेति विष्णुरिति रुद्र इति त्रिमूर्तिः।
पूर्तेष्ट दानतपसां फलदं प्रभुं तं
पिण्डेश्वरं पुरहरं शरणं प्रपद्ये ॥३८॥

जो चिदात्मा स्वरूप शिव संसार उत्पत्ति के समय में ब्रह्मा होकर, संसार को पालन करने के समय में विष्णु होकर, संसार को लय होने के अवस्था में रुद्र होकर, संसार के सृष्टि स्थिति प्रलय पर्यन्त के अधिष्ठाता, बीज स्वरूप ॐकार मूलक एक ही ईश्वर त्रिमूर्ति कहलाते हैं और जो पूर्तकर्म, इष्टकर्म, दानकर्म, तपकर्मों का फल देने में (प्रभु) समर्थ हैं, त्रिपुरहर हैं, ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिड भगवान् पिण्डेश्वर शिव के चरणों में मैं शरणागत हूँ।

इति स्तुत्वा महेशानं पिण्डेश्वरमनन्यधीः।
आनन्दसिन्धुमग्नात्मा, तूष्णिमासीद् द्विजोत्तमः ॥३९॥

भक्तिभावपूर्वक, चित्तवृत्ति को स्थिर कर भगवान् पिण्डेश्वर को इस तरह से स्तुति करके आनन्द सिन्धु में निमग्न वे द्विजोत्तम चुप हुए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तं विलोक्य महादेवस्तूष्णीभूतं पुरःस्थितम् ।
हर्षाश्रुपूर्णनयनं भक्तिप्रेमरसान्वितम् ॥४०॥
बद्धाञ्जलिपुटं प्रह्वं विस्मयोत्फुल्ललोचनम् ।
प्रत्युवाच महादेवस्तपसा तस्य तोषितः ॥४१॥

उस तरह से स्तोत्र गाता हुआ अपने आगे स्थित एकाएक जो चुप हो गया वैसे उस ब्राह्मण को भगवान् पिण्डेश्वर ने देखा, उसका मुखड़ा भक्ति और प्रेम के रस से युक्त था, उसकी आँखें हर्षाश्रुओं से टलपल थे, वह हाथ जोड़कर समाने में खड़ा था, विस्मय से उसके नेत्र प्रफुल्लित थे, वह अति नम्र होकर झुका हुआ था, वैसे उस ब्राह्मण को उसकी तपस्या से संतुष्ट भगवान् पिण्डेश्वर कहते हैं—

शिवः पिण्डेश्वर उवाच

तुष्टोऽहं द्विजशार्दूल ! तपसा तव सुव्रत ! ।
वरं वरय भद्रं ते यत्ते मनसि काङ्क्षितम् ॥४२॥

भगवान् पिण्डेश्वर शिव कहते हैं—

हे द्विजश्रेष्ठ ! व्रत-निष्ठा संपन्न तुम्हारी तपस्या से मैं सन्तुष्ट हूँ । हे भक्त ! वर मागो ! तुम्हारे मन में जो अभिलाषा है उसे माँगो ! मैं तुम्हें दूँगा ! तुम्हारा कल्याण हो !

इति श्रुत्वा वचस्तस्य देवदेवस्य शूलिनः ।
प्रत्युवाच महादेवं प्रहृष्टो ब्राह्मणोत्तमः ॥४३॥

देवदेव शूलपाणि महादेव की इस तरह की वाणी सुन अत्यन्त आनन्दित वे ब्राह्मण श्रेष्ठ भगवान् पिण्डेश्वर शिव के प्रति प्रत्युत्तर निवेदन करने लगे ।

विष्णुमित्र उवाच

धन्योऽस्ति कृतकृत्योऽस्मि कृतार्थोऽस्मि जगत्पते ! ।
त्वद्दर्शनेन पिण्डेश ! दुर्लभेन दुरात्मनाम् ॥४४॥
किं वृणे ? त्वां महादेव ! भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ।
त्वत्पादकमले मेऽस्तु भक्तिरव्यभिचारिणी ॥४५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्रकुत्र ! स्थितस्यापि त्वन्माया-मूढचेतसः ।
त्वत्पादाम्बुरुहे शम्भो ! भक्तिमेव प्रयच्छ मे ॥४६॥

विष्णुमित्र कहते हैं-—

हे जगत्पति ! आज मैं धन्य हो गया हूँ, कृत्यकृत्य हूँ और कृतार्थ हूँ। इस दुरात्मा को आपका दुर्लभ दर्शन मिल गया है। हे पिण्डेश्वर शिव ! हे महादेव ! आपसे मैं क्या माँगू ? जब कि मुक्ति और भुक्ति देनेवाले आप मेरे ही सामने में प्रत्यक्ष हैं। हे प्रभो ! मैं आप से सिर्फ इतना ही मागता हूँ, आपके चरण कमलों में अव्यभिचारिणी मेरी भक्ति बनी रहे। हे भगवन् ! आपकी माया से विमोहित मूढ़ चित्तवृत्ति वाला होता हुआ भी मैं जहाँ कहीं भी रहूँ, जिस योनि में भी पहुँचूँ, हे शम्भो ! बस आप इतना ही कृपा करें कि आपके चरण कमलों की भक्ति मात्र मुझे प्राप्त हो।

इति श्रुत्वा वचस्तस्य द्विजस्य त्रिपुरान्तकः ।
पिण्डेश्वरः प्रसन्नात्मा तमुवाच तथास्त्विति ॥४७॥

वे द्विज के इस तरह की वाणी को सुनकर त्रिपुरान्तक भगवान् पिण्डेश्वर शिव ने भी अति प्रसन्न होकर उन्हें, 'तथास्तु' तुमने जैसा कहा वैसा ही होगा, जो तुम्हारी इच्छा है वही होगी, ऐसा कहा !

शिवः पिण्डेश्वर उवाच

यत्र कुत्र स्थितो वाऽपि मद्भक्तस्त्वं भविष्यसि ।
देहान्ते मम सायुज्यं लप्स्यसे नात्र संशयः ॥४८॥

भगवान् पिण्डेश्वर शिव कहते हैं—

हे द्विजश्रेष्ठ ! आप जहाँ भी, जिस योनि में भी जिस हालत में भीं रहेंगे, मेरे ही भक्त होकर रहेंगे। देहान्त में मेरी सायुज्य मुक्ति आपको मिलेगी, इसमें सन्देह नहीं है।

इत्युक्त्वा तं महादेवः पुरत्रयविदारणः ।
पश्यतस्तस्य विप्रस्य तत्रैवान्तरधीयत ॥४९॥

इस तरह से उन द्विजश्रेष्ठ विष्णुमित्र को कहकर त्रिपुरान्तक महादेव भी उन द्विजश्रेष्ठ के द्वारा देखते-देखते ही वहीं पर अन्तर्धान हो गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तस्मिन्नन्तर्हिते देवे पिण्डेशे त्रिपुरान्तके ।
अवाप्य तपसः सिद्धिं प्रहृष्टोऽभूद् द्विजोत्तमः ।।५०।।

भगवान् त्रिपुरान्तक देव पिण्डेश्वर शिव के अन्तर्धान हो जाने पर अपनी तपस्या की सिद्धि प्राप्त हो गई है, ऐसा समझकर वे द्विजोत्तम भी अत्यन्त खुश हुए ।

किञ्चित्कालं स्थितस्तत्र पिण्डेश्वर-समीपतः ।
ततस्तस्माद्विनिष्क्रम्य गङ्गासागरसङ्गमम् ।।५१।।
संप्राप्य स द्विजस्तत्र स्नात्वा सन्तर्प्य देवताः ।
त्रिरात्रमुसितस्तस्माज्जगन्नाथमुपागतः ।।५२।।

इसके बाद, वे द्विज भी पिण्डेश्वर समीप कुछ दिन तक रहकर रुद्राक्षारण्य विजयपुर से प्रस्थान कर गंगासागर पहुँचे । गंगासागर पहुँचकर वहाँ स्नानादि नित्य कृत्य करके पितृयों को तर्पण पिंड और देवता को पूजा आराधना से तृप्त कर तीन रात वहाँ रहकर वहाँ से भी प्रस्थान कर जगन्नाथ पहुँचे ।

तं दृष्ट्वा देवदेवेशं सत्यमूर्तिधरं हरिम् ।
प्रहृष्टो न्यवसत्तात्र किञ्चित्कालं द्विजोत्तमः ।।५३।।

सत्यमूर्तिधर हरि भगवान् जगन्ननाथ का दर्शन करके अत्यन्त आनन्दित वे ब्राह्मण कुछ दिन तक वहीं रहकर—

ततो गोदावरीं प्राप्य स्नात्वा तत्र यथाविधि ।
सन्तर्प्य च पितृन्देवान् न्यवसत्सप्तरात्रकम् ।।५४।।

गोदावरी पहुँचे । गोदावरी पहुँचकर यथाविधि गोदावरी में स्नानकर देवता और पितृयों को सन्तुष्ट कर, वहाँ (गोदावरी के तट पर) भी सात रात रहे ।

ततः श्रीशैलमासाद्य दृष्ट्वा श्रीमल्लिकार्जुनम् ।
भ्रमराम्बासमायुक्तं कृष्णावेणीतटे स्थितम् ।।५५।।

गोदावरी से प्रस्थान कर श्रीशैल में पहुचे, श्रीशैल में पहुँचकर मल्लिकार्जुन का भ्रमराम्बा से सहित कृष्णा वेणी के तट में दर्शन कर—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततः सह्याचलं दृष्ट्वा महानन्दिमुपागतः ।
वेङ्कटाद्रिं समासाद्य तत्र वेङ्कटनायकम् ॥५६॥
ददर्श कमलाकान्तं हरिं पुष्करिणीतटे ।
वसन्तं देवदेवेशं सर्वकामफलप्रदम् ॥५७॥

वहाँ से सह्याचल का दर्शन करते हुए महानन्दी पहुँचे, महानन्दी से वेङ्कटाचल पहुँचे, वहाँ वेङ्कटेश्वर का दर्शन करके पुष्कर क्षेत्र में पुष्करणी के तट में विराजमान, देवता के भी देवता, संपूर्ण कामनाओं के फल देने वाले, लक्ष्मी के पति भगवान् विष्णु का दर्शन किया ।

ततः काञ्चीपुरीं प्राप्य कामाक्षीं कामदायिनीम् ।
एकाम्रनाथं देवेशं सर्वतीर्थसमीपगम् ॥५८॥
विलोक्य परमं हृष्टस्त्रिरात्रमुषितस्तदा ।
गत्वा वरदराजस्य मन्दिरञ्च ददर्श सः ॥५९॥
ततश्चिदम्बरं क्षेत्रं सम्प्राप्य द्विजसत्तम ।
दृष्ट्वा सभापतिं देवं तत्रैव न्यवसत् सुखम् ॥६०॥

पुष्कर से काञ्चीपुरी पहुँचे । काञ्ची पहुँचकर कामनाओं को प्रदान करने वाली भगवती कामाक्षी का दर्शन करके, सर्वतीर्थ के समीप में स्थित देवेश एकाम्रनाथ का दर्शन कर अति प्रसन्न वे द्विज तीन रात तक वहाँ रहकर, वहाँ से वरदराज के मन्दिर में पहुँचकर उन ब्राह्मण ने वरदराज का दर्शन किया । उसके बाद वे द्विजसत्तम चिदम्बर क्षेत्र में पहुँचे, वहाँ पहुँचकर भगवान् सभापतिका दर्शन करके वहीं कहीं सुखपूर्वक विराजने लगे ।

ततः कालेन महता दिष्टान्तं प्राप्य स द्विजः ।
शिवदूतैः समानीतः शिवसायुज्यमाप्तवान् ॥६१॥

चिदम्बर क्षेत्र में रहते हुए, बहुत दिनों के बाद वे द्विज (विष्णुमित्र) ने पाञ्चभौतिक देह त्याग कर दिया । उसके बाद शिवदूतों ने उन्हें शिव सन्निधि में पहुँचाया और उन्हें भगवान् शिव की सायुज्य मुक्ति (निर्वाण) प्राप्त हुआ ।

एवं प्रभावः पिण्डेशो नृणां क्षिप्रप्रसादकृत् ।
तस्मादवश्यं द्रष्टव्यः श्रेयस्कामैः शरीरिभिः ॥६२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदृच्छया सकृद्वाऽपि जन्ममध्ये शरीरिणः ।
येन पिण्डेश्वरो दृष्टः स मुक्तो नात्र संशयः ।।६३।।

हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! भक्तों के प्रति अतिशीघ्र प्रसन्न होने वाले भगवान् पिण्डेश्वर शिव हैं । अतएव कल्याण चाहने वाले मनुष्यों के द्वारा जीवन में एक बार अवश्य दर्शन योग्य भगवान् पिण्डेश्वर शिव हैं । बिना जाने बूझे भी अनायास मात्र एक बार यदि किसी के जीवन में भगवान् पिण्डेश्वर का दर्शन हो जाय तो भी वह व्यक्ति मुक्त हो जाता है, इस तथ्य में संशय नहीं है ।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-माहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां पिण्डेश्वर माहात्म्यवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

शिव उवाच

अथाऽन्यत्कथयिष्यामि पिण्डेशस्य पुरद्विषः ।
माहात्म्यं देवदेवस्य श्रृणुष्वावहिता प्रिये ! ।।१।।

भगवान् शिव कहते हैं ।

हे प्रिये ! तुम्हारे प्रश्नों के क्रम से त्रिपुरहर देवदेव भगवान् पिण्डेश्वर का माहात्म्य मैं और आगे सुनाता हूँ । हे देवी ! सावधान होकर तुम सुनो !

पुरा स्वयम्भूर्भगवान् सृष्टिकाल उपागते ।
न किञ्चित् ज्ञातवान् लोकान् स्रष्टुं मायाविमोहितः ।।२।।

पहले (प्रथम) सृष्टि समय उपस्थित होने पर 'किस तरह से सृष्टि की जाय' भगवान् ब्रह्मा जी को कुछ भी उपाय नहीं सूझा, ब्रह्मा जी माया से विमोहित थे, माया से सवलित विग्रह थे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स विचार्य तदा देवः शीतशैलमुपागतः ।
पिण्डेश्वरं समुद्दिश्य तपस्तेपे सुदारुणम् ॥३॥
स्तोत्रमेतत् पठन्नित्यं दिव्यं वर्षशतं प्रभोः ।
जितेन्द्रियो जितप्राणो जितात्मा दृढनिश्चयः ॥४॥

तब ब्रह्मा जी ने सोचा तपस्या करनी चाहिए, तपस्या के विचार में ब्रह्मा जी हिमालय पर्वत शीत शैल विजयपुर पधारे, विजयपुर पहुँचकर भगवान् पिण्डेश्वर की तपस्या की, तपस्या कष्टतर थी । अनुष्ठित तप में वे इस स्तोत्र को नित्य पाठ करते थे, इसी दिनचर्या में ब्रह्मा जी के दिव्य हजार वर्ष व्यतित हुए । ब्रह्मा जी ने जितेन्द्रिय होकर जितप्राण होकर (प्राणवायु को जीतकर) जितात्मा होकर दृढ़ निश्चय को लेकर तप किया ।

ब्रह्मोवाच

ये पित्रादिसुहृद्गणाः शुभगुणाः स्नेहारुणास्तेषु मां
त्रातुं कोपि नहि प्रभुः पशुपते ! भीतं भवाम्भोनिधेः
हालाहालगराशन ! त्रिनयन ! स्वानन्दसम्पद्घन !
श्रीपिण्डेश्वर ! शीतशैलग ! महादेव ! प्रसीद प्रभो ! ॥५॥

चतुर्मुख ब्रह्मा जी शिव-स्तुति करते हैं—

हे शिव ! इस संसार समुद्र से भयभीत मुझे माता-पिता इष्ट मित्र स्नेही शुभचिन्तक कोई भी रक्षा नहीं कर सकते । यदि रक्षा करने के लिए समर्थ हैं तो वही जो संपूर्ण जीवात्माओं के पति हैं । एवं पशुपति हैं वही समर्थ हैं । हे हालाहल विषपान करने वाले ! भगवन् तीन नयन धारण करने वाले ! अतुलनीय स्वात्मानन्द संपत्ति के ईश्वर ! हिमालय पर्वत भाग विजयपुर रुद्राक्षारण्य में निवास करनेवाले ! महादेव ! ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर हे मेरे प्रभु ! मेरे प्रति आप प्रसन्न हों

वीराराधित ! बोधसौधशिखरस्फूर्जन्महामण्डपे
वेतुण्डाननषाण्मुखप्रभृतिभिः साकं प्रभो ! खेलसे ।
सीदन्तं व्यसनार्णवे निपतितं भीतं न मां विस्मर,
श्रीपिण्डेश्वर ! भक्तवत्सल ! महादेव प्रसीद ! प्रभो ! ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ज्ञान-विज्ञान बल ऐश्वर्य में अग्रणी ! वीरों के द्वारा आराधित ! आप देदीप्यमान ज्ञान भवन के ऊपर महामंडप में विराजमान हो, सिद्धिविनायक गणेश और कार्तिकेय देव सेनापति बालकों के साथ क्रीडा करते हैं। व्यसन के समुद्र में डूबता हुआ, कष्टतर दशा को प्राप्त हुआ, अति भयभीत मुझें आप न भूलें। हिमालय पर्वत भाग विजयपुर में निवास करने वाले ! हे भक्तवत्सल ! हें अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! हे ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक ! हे महादेव ! हे मेरे प्रभु ! मेरे प्रति आप प्रसन्न हों।

देव ! त्वं विधिरूपतस्त्रिभुवनं निर्माय, लीलावशात्
पासि श्रीपतिनामतस्तदखिलं शम्भो ! स्वसृष्टं पुनः।
संहर्तुं हरतामुपैषि वद मां त्रातुं कथं न प्रभुः ?
श्रीपिण्डेश्वर ! चन्द्रशेखर ! महादेव! प्रसीद प्रभो ! ।।७।।

हे देव ! आप ब्रह्मा का रूप धारण करके अपनी लीला से उत्पन्न विश्व को, लक्ष्मीपति विष्णु का रूप धारण कर, पालन करते हैं। हे शम्भो ! अपनी ही सृष्टि और स्थिति को हर रूप धारण करके पुनः प्रलय में हरण करते हैं, तो बताइए ? क्या आप हमें रक्षा नहीं कर पाएँगे ? हें ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! हे चन्द्रशेखर ! हे महादेव ! हे मेरे प्रभु ! आप मुझ में प्रसन्न हों।

क्षोणीतोयहुताशनानिलवियत्सूर्येन्दुहोत्रात्मभिः
विश्वातीत ! चिदात्मक ! त्रिभुवनं पुष्णासि मूर्त्यष्टकैः।
कष्टात्कष्टतरं दशामधिगते किं मय्युपेक्षातव,
श्रीपिण्डेश्वर ! दीनपोषण ! महादेव ! प्रसीद प्रभो ! ।।८।।

पृथिवी, पानी, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, होता, स्वरूप आठ प्रकार के शरीर धारण करने वाले हे अष्टमूर्तिधर हर ! आप स्वयं त्रिभुवन को ही शिवतत्व से पालन करते हैं, विश्व से परे हैं, चैतन्य आत्मा स्वरूप हैं, तो क्या अनेकों दुःखतर दशाओं को प्रप्त मुझे आपकी उपेक्षा उचित है ? हे ब्रह्मण्डपिण्ड के प्रतीक ! दीन दुखियों को पालन करने वाले, अमृतपिण्ड ! महादेव ! मेरे प्रभु ! आप मुझ में प्रसन्न हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिद्व्योमामृतसिन्धुबन्धुरधरा धीरा विहारक्रिया-
दूरीभूत-दुरन्तसन्ततभवव्याल-प्रतापानलाः ।
त्वां ध्यायन्ति, कथं वयं जडधियो ध्यायेम कारुण्यतः
श्रीपिण्डेश्वर ! वीरवन्दित ! महादेव ! प्रसीद प्रभो ! ॥९॥

चैतन्य ब्रह्मस्वरूप ! आकाशगङ्गा के हिलोरों में गोता लेने में निपुण, अतएव अनिवार्य संसार सर्प दंशन से निकलने वाली विषज्वाला से दूर महापुरुष हीं आप को ध्यान में स्थिर कर पाते हैं, तो हे भगवान् ! मैं करुणा का पात्र, जडबुद्धि आपका ध्यान कैसे कर पाउगा ? हे ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक ! हे वीरवन्दितचरण ! हे अमृतपिण्ड-पिण्डेश्वर ! हें महादेव ! हें मेरे प्रभु ! आप मुझमें प्रसन्न हों ।

शम्भो ! ऽलंकरणानि निश्चितवतां श्रेयांसि भूयांस्यलम्
रागी तेऽङ्घ्रिमुपागतस्तव विभो ! सर्वार्थसिद्धिप्रदम् ।
वीराधीश्वरमेव कार्मुकधरं स्वामिन् ! वदान्याग्रणी !
श्रीपिण्डेश्वर ! पण्डितस्तुत ! महादेव ! प्रसीद प्रभो ! ॥१०॥

हे शंभो ! अनेकों लोकोपकार करके ख्याति प्राप्त (गंगा, चन्द्र, नाग नन्दी, गौरी, गणेश) आदि भी ओग्य आश्रय को खेजते हुए एक मात्र आपको अनुरूप प्राप्त कर सेवक हो, सेवा कर रहे हैं। आप वीरों के वीर हैं, हिमालय पर्वत स्वरूप पीनाक धनुष धारण करते हैं। हे स्वामी ! हे दानियों में अग्रणी ! हे ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक ! हे अमृतपिण्ड-पिण्डेश्वर ! हे सदसद् विवेकशील बुद्धिमानों के द्वारा स्तुत्य ! हे महादेव ! है मेरे प्रभु ! आप मुझमें प्रसन्न हों ।

ऋक्षाध्यक्षवलक्षपक्षविशदत्र्यक्षाम्बुजाक्षार्चित !
प्रेक्षावत्परिरक्षणक्षम ! विभो ! दक्षाध्वरध्वंसन ! ।
वीक्षाक्षिप्तपुरत्रय ! स्मरहर ! क्षेमाब्धिचन्द्रोदय !
श्रीपिण्डेश्वर ! खण्डिताहित ! महादेव ! प्रसीद प्रभो ! ॥११॥

शुक्ल पक्ष के चन्द्र किरण के समान शुक्ल वर्ण हे त्रिनयन ! हे जगत्-पूज्य ! हे विभो ! आपकी दृष्टि मात्र भी जगत् रक्षा रकने में समर्थ हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे दक्षयज्ञ ध्वंसक ! त्रिपुर के पुरों को दृष्टि मात्र से ही जला देने वाले ! हे स्मरहर ! हे कल्याणचन्द्रोदय ! है ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक ! अहितों को (अत्रुओं को) नष्ट करने वाले ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! हे मेरे प्रभु ! आप मुझ में प्रसन्न हों ।

श्रीकान्तप्रमुखामरार्चित ! बुधस्वान्तारविन्दालय ! ।
भ्रान्तानामतिदूर ! वीर ! महतां सन्तानवत्सर्वद !
नादान्तः स्थित ! नाथ ! बोधितनिराबाधात्मबोधात्मक !
श्रीपिण्डेश्वर ! शांतशाश्वत ! महादेव ! प्रसीद प्रभो ! ।।१२।।

हे श्रीपति विष्णु प्रमुख देवताओं के द्वारा अर्चित चरण ! विद्वानों के हृदय कमलों में निवास करने वाले ! हे वीर ! आप भ्रान्त व्यक्तियों से अति दूर रहते हैं, और अभ्रान्त महान् व्यक्तियों के लिए सब कुछ देने वाले कल्पवृक्ष के समान हैं । आप नादविन्दु ॐ: के ऊपर की विन्दु ँ का आधार ँ रेखा (आधार स्वरूप ॐ: रूप) नाद के अन्त्य में रहने वाले हैं । आप जगत् के नाथ हैं । निर्वाध वेधात्मक दर्शन ज्ञान के द्वारा आप बोधित होते हैं । हे ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक ! शान्तिदाता शान्त शिव ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर महादेव ! हे मेरे प्रभु ! आप मुझ में प्रसन्न हों ।

सूत उवाच

इमं स्तवं पठन्नित्यं नियतेन्द्रियमानसः ।
चचार परमं तीव्रं तपः सर्वपितामहः ।।१३।।
तप्यमाने तपस्तस्मिन् साग्रं वर्षशतं विधौ ।
आविर्बभूव पिण्डेशस्तत्पुरः परमेश्वरः ।।१४।।

सूत जी कहते हैं ।--

हे ऋषीश्वरों ! इन्द्रियों को वश में रख कर उक्त स्तोत्र को नित्य पाठ करते हुए, तीव्र तपस्या में सभी के पितामह ब्रह्माजी ने पूरे दिव्य एक सौ वर्ष व्यतित किये, तब उनके सामने परमेश्वर अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शंकर भगवान् प्रकट हुए ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तं दृष्ट्वा देवदेवेशं पिण्डेश्वरमनामयम् ।
आविर्भूतं स्वपुरतः परं हर्षमुपागतः ॥१५॥

प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा ननाम भुवि दण्डवत् ।
प्रणम्य देवदेवेशमुत्थायानन्दनिर्भरः ॥१६॥

आनन्दाश्रुपरीताक्षो हर्षगद्गदया गिरा ।
पिण्डेश्वरं प्रभुं ब्रह्मा स्तोतुं समुपचक्रमे ॥१७॥

अपने सामने प्रकट हुए भवरोग वर्जित, ब्रह्माण्ड पिण्डके प्रतीक, अमृत-पिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव, देवदेवेश को देखकर, चतुर्मुख सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी अति हर्षित हुए। तीन परिक्रमा करके पृथिवी में झुक कर दण्डवत प्रणाम कर उठे और आनन्द अधिक होने से आनन्द के आशू बहाते हुए हर्ष से गद्गद वाणी में भगवान् पिण्डेश्वर की स्तुति करने लगे।

ब्रह्मोवाच

विश्वेश्वर! विश्वात्मक! पश्वादिषु सततसन्ततानन्त!।
निःश्वासनिर्मितागम! पिण्डेश्वर! पाहि चण्डिकारमण! ॥१८॥

ब्रह्मा जी शङ्कर की स्तुति करते हैं--

हे विशेश्वर! हे विश्व आत्मा स्वरूप! विभिन्न विश्व के विभन्न जीवात्माओं के अन्तः करण में विराजमान! हे अनन्त! आप के निःश्वास से वेद प्रकट हुए हैं, हे चन्डिकारमण! शक्ति के पति! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव! मेरी रक्षा करें।

सीमातीतगुणार्णव! सामादिकनिगमवेद्य! निखिलाद्य!।
सोमाङ्कुराङ्क! शङ्कर! पिण्डेश्वर! पाहि चण्डिकारमण! ॥१९॥

हे असीमगुणसमुद्र! हे सामादि वेदों के द्वारा वेद्य! हे सम्पूर्ण जगत् के आदि! हे चन्द्रमा को शरीर में (जटाजूट में) धारण करने वाले! हे शंकर! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर! हे शक्ति (दुर्गा) के पति! हे शिव! मेरी रक्षा करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताराधीश्वरसप्रभ ! हारायितभुजगराज ! रवितेज ! ।
माराहित ! वीरार्चित ! पिण्डेश्वर ! पाहि चण्डिकारमण ! ।।२०।।

हे चन्द्रतुल्य शीतल उजियारे ! नागराज को हारके स्थान में पहिरने वाले ! रवितुल्य तेजोमय ! कामदेव को जला देने वाले, वीरों के द्वारा वन्दित ! हे शक्ति के पति ! ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक ! अमृत पिण्ड पिण्डेश्वर ! मेरी रक्षा करें ।

बालारुणारुणजट ! लीलाधृतदिव्यदेह ! जितमोह ! ।
बालाम्बिकामनोहर ! पिण्डेश्वर ! पाहि चण्डिकारमण ! ।।२१।।

हे अरुणोदय की लालिमा से तुल्य लाल वर्ण के जटाओं को धारण करने वाले ! अगत्‌रक्षण लीला के लिए अनेकों अवतार धारण करने वाले ! हे माया मोह को जीतने वाले ! बाल अम्बिका (सती के देहपतन के बाद व्याही पार्वती) के लिए भी मनोहर ! स्थिर यौवन ! हे शक्ति के पति ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! मेरी रक्षा करें ।

विद्यामय ! हृद्याशय ! विद्यावैशद्यवेद्य ! निरवद्य ! ।
पर्श्चानन ! वृषवाहन ! पिण्डेश्वर ! पाहि चण्डिकारमण ।।।२२।।

हे विद्यामय ! हे घट-घट वासी ! विद्या के द्वारा परिस्कृत बुद्धिवालों के द्वारा वेद्य ! हे प्रशंशनीय गुण वाले ! हे पञ्चानन ! हे वृषवाहन ! हे शक्ति के पति ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! मेरी रक्षा करें ।

ज्ञानयोगघन ! शिव ! पञ्चाशद्वर्णरूप ! धुतपाप ! ।
पञ्चाक्षरान्तरचर ! पिण्डेश्वर ! पाहि चण्डिकारमण ! ।।२३।।

हे ज्ञान एवं योग से परिपूर्ण ! हे कल्याण कारक ! हे पचास अक्षरों के शरीर धारण करने वाले ! हे पापको जला देने वाले ! हे पञ्चाक्षर मन्त्रके अन्दर विचरण करने वाले, हे शक्ति के पति ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! हे शिव ! मेरी रक्षा करें ।

बालेन्दुमुकुट ! दृक्तटफालेक्षणदहनदग्धकुसुमवाण ! ।
पद्मातिप्रिय ! सदुदय ! पिण्डेश्वर ! पाहि चण्डिकारमण ! ।।२४।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे बालचन्द्रको मुकुट में धारण करने वाले ! हे मस्तक स्थित नयन के कोंण से उत्थित अग्नि के द्वारा कामदेव को जला देने वाले ! हे पार्वती स्वरूप लक्ष्मी के प्रिय ! हे सत्कर्मों के उदय ! हे शक्ति के पति ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! मेरी रक्षा करें।

पूर्तादिकफलाशय ! धूर्ताशयदूरचरण ! बुधशरण ! ।
प्रालेयशैलश्रृङ्ग ! पिण्डेश्वर ! पाहि चण्डिकारमण ! ॥२५॥

हे पूर्तादि (धार्मिकता (परोपकार) से युक्त सामजिक निर्माण) कर्म फलके आधार ! हे धूर्तोंकि हृदय से दूर रहने वाले ! हे जञ्जनों को शरण देने वाले ! हे हिमालय शैल श्रृग में रहने वाले ! हे शक्ति के पति ! हे अमृत-पिण्ड पिण्डेश्वर ! मेरी रक्षा करें।

पिण्डेषु सततसन्तत ! चण्डेषु ! प्रकरदलितरिपुखण्ड ! ।
मूर्तामूर्त ! चिदात्मक ! पिण्डेश्वर ! पाहि चण्डिकारमण ! ॥२६॥

हे ब्रह्माण्डादि पिण्डों से लेकर जीव स्वरूप पिण्डों में भी सदैव रहने वाले ! हे विष्णु वैश्वानर स्वरूप वाणको धारण करने वाले ! हे रिपुदलको दलित करने वाले ! हे मूर्ति एवं अमूर्ति स्वरूप रहने वाले ! हे चैतन्य ब्रह्म-स्वरूप ! हे शक्ति के पति ! हे अमृतपिण्ड-पिण्डेश्वर शिव ! मेरी रक्षा करें।

विद्याविवेकवि:श्वासमूर्तिधर ! अनन्तपूजितचरण !
खण्डेन्दुचूड ! हर !मृड ! पिण्डेश्वर ! पाहि चण्डिकारमण ! ॥२७॥

हे विद्या विवेक एवं वि:श्वास से मूर्ति धारण करने वाले ! हे अनन्त-विष्णु के द्वारा पूजित चरण ! हे अर्धचन्द्र को शिरमें धारण करने वाले ! हे संपूर्ण पाप एवं अनिष्टों तथा भवरोग को ही हरण करने वाले ! हे संपूर्ण जगत् को सुख देने वाले ! हे शक्ति के पति ! हे अमृत पिण्ड-पिण्डेश्वर शिव ! मेरी रक्षा करें।

इति स्तुत्वा महादेवं पिण्डेश्वरमनन्यधी: ।
आनन्दनीरधौ मग्नस्तूष्णीमासीत् पितामहः ॥२८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! तनमन को वश में रख कर एकाग्र हो भगवान् पिण्डेश्वर की इस तरह से स्तुति करने के बाद, आनन्द समुद्र में मग्न पितामह चुप हो गए ।

तमुवाच ततोदेवः पिण्डेशश्चतुराननम् ।

जब ब्रह्मा जी चुप हुए तो भगवान् पिण्डेश्वर ने ब्रह्माजी से कहा ।

शिवः पिण्डेश्वर उवाच

किमर्थं तप्यसे ब्रह्मन् ! किन्ते मनसि काङ्क्षितम् ॥२९॥

भगवान् शिव पिण्डेश्वर कहते हैं ।

हे ब्रह्माजी ! आप क्यों तपस्या कर रहे हैं ? आप के मन में क्या अभिलासा जम गई है, बताइए ? ।

तद् वृणुष्वाविशङ्केन ददामि तव वाञ्छितम् ।
तपसा तव तुष्टोऽहं सुतप्तेन चतुर्मुख ! ॥३०॥

जो आपको चाहिए वह वेखट्के आप मागें, आप जो चाहेंगे वह मैं दूँगा । हे चतुर्मुख ब्रह्माजी ! आपने भली भाँती मेरी तपस्या की है । आपकी तपस्या से मैं सन्तुष्ट हो गया हूँ ।

इति तस्य वचः श्रुत्वा देवदेवस्य शूलिनः ।
प्रत्युवाच प्रजाध्यक्षः पिण्डेशं चतुराननः ॥३१॥

देवदेव शूलपाणी भगवान् पिण्डेश्वर के इस तरह के वचनों को सुनकर चतुरानन प्रजाके अध्यक्ष ब्रह्मा जी ने भी भगवान् पिण्डेश्वर से कहा ।

ब्रह्मोवाच

सृष्टोऽहं भवता देव ! प्रजाः स्रष्टुं महेश्वर ! ।
न ज्ञायते मया किञ्चित् प्रजाः स्रष्टुं चतुर्विधाः ॥३२॥
अतस्तद्विषयं ज्ञानं देहि शक्तिं च मे प्रभो ! ।
त्वत् प्रसादेन देवेश ! ज्ञानवाँञ्छक्तिमाँश्च सन् ॥३३॥
स्रक्ष्यामि विविधाँल्लोकान् यथापूर्वं महेश्वर ! ।
प्रसन्नो यदि मे देव ! दीयतां काङ्क्षितं मम ॥३४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुर्मख ब्रह्मा जी शिव से विनती कहते हैं ।

हे महेश्वर ! हे देव ! प्रजा सृष्टि करने के लिए आपने हमें सृष्टि किया है । किन्तु हे देव ! किस उपाय से मैं चतुर्विध प्रजाओं को सृष्टि करूँ, कुछ सूझता ही नहीं है । अत एव हे शंकर ! सृष्टि विषयक ज्ञान एवं शक्ति आप हमें दें । आप की करुणा कृपा से हे देवेश ! मैं ज्ञानवान् शक्तिमान् होकर जैसे पहले था वैसे ही विविध लोकों में सारी प्रजा को सृष्टि कर सकूँ । हे देव ! यदि आप मुझसे प्रसन्न हो गए हैं तो यही मेरी अभिलासा पूर्ण कर दें ।

इति तस्य वचः श्रुत्वा पद्मजस्य महेश्वरः ।
सम्प्रत्युवाच पिण्डेशस्तपसा तस्य तोषितः ॥३५॥

ब्रह्मा जी की ऐसी वाणी सुनकर, वह्मा जी की तपस्या से सन्तुष्ट पिण्डेश्वर भगवान् महेश्वर भी इस तरह ब्रह्मा जी से कहने लगे ।

पिण्डेश्वर उवाच

मत् प्रसादेन ते ब्रह्मन् ! लोकान् स्रष्टुं चराचरान् ।
ज्ञानशक्तिश्च बुद्धिश्च भविता नात्र संशयः ॥३६॥

भगवान् पिण्डेश्वर शिव कहते हैं ।

हे ब्रह्मा जी ! मेरी कृपा से चर अचर चतुर्विध जीवात्मा सहित सारे लोकों को सृष्टि करने की शक्ति आपको प्राप्त हो जायगी । ज्ञान शक्ति और बुद्धि से परिपूर्ण होकर आप सृष्टि करेंगे ।

इत्युक्त्वा देवदेवेशः पश्यतः परमेष्ठिनः ।
तत्रैवान्तर्दधे सद्यः श्रीमान्पिण्डेश्वरस्ततः ॥३७॥

इतना कहकर ब्रह्मा जी के देखते-देखते ही देवदेवेश श्रीमान् अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर भगवान् वहीं अन्तर्धान हो गए ।

ततः पितामहो देवः पिण्डेशस्य प्रसादतः ।
लब्ध्वा ज्ञानञ्च शक्तिञ्च नमस्कृत्य पुनः पुनः ॥३८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्नानं कृत्वा सूर्यकुण्डे सूर्यपर्वणि सादरम् ।
नमस्कृत्यादिवाराहं कोकामुखमुपागतः ॥३९॥
तत्र स्नानादिकं कृत्वा गायत्रीं वेदमातरम् ।
सस्मार स्मरणात्तस्य गायत्री ब्रह्मलोकतः ॥४०॥
आजगाम विशालाक्षी ब्रह्मणः शक्तिरुत्तमा ।
तया समन्वितो देवः ससर्ज विविधाः प्रजाः ॥४१॥

शिव अन्तर्धान हो जाने के बाद, भगवान् पिण्डेश्वर शिव के प्रसाद से ज्ञान और शक्ति को प्राप्त कर, भगवान् पिन्डेश्वर को बार बार नमस्कार कर के, सूर्य पर्व (रविवार, रवियुक्त पुण्य तिथियों) में सादर (भक्ति युक्त हो) सूर्यकुण्ड में स्नानकर आदिवाराह भगवान् विष्णु को नमस्कार करके, कोका और कौशिकी के संगम पर स्नान कर[1] ब्रह्मा जी ने वेदों की माता गायत्री का संस्मरण किया। ब्रह्मा जी के स्मरण करते ही ब्राह्मणों की उत्तम शक्ति स्वरूपिणी गायत्री देवी भी ब्रह्मलोक से ब्रह्मा जी के सामने उपस्थित हुई। विशाल नयन वाली गायत्री देवी से युक्त होकर ब्रह्मा जी ने विविध प्रजाओं की सृष्टि की।

एवं प्रभावः पिण्डेशो ब्रह्मणोऽपि वरप्रदः ।
द्रष्टव्यः सर्वयत्नेन काङ्क्षमाणैः शुभं नरैः ॥४२॥

हे देवी !, हे ऋषीश्वरों ! भगवान् पिण्डेश्वर इसी तरह के प्रभावशाली हैं, जो ब्रह्मा जी को भी वरप्रदान करते हैं। अतएव अपनी उत्तरोत्तर उन्नति की इच्छा करने वाले मानवों को चाहिए कि हर प्रयास से जीवन में एक बार भगवान् पिण्डेश्वर का दर्शन करलें।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्मे लक्ष्मीललितटीकायां पिण्डेश्वरवरप्रसादो
नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

---

१. वराहक्षेत्र से ऊपर भग्नावशेष के रूप में सूर्यकुण्ड आज भी विद्यमान है। ब्रह्मानन्द नदी (खोलो) भी आज तक जीवित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ षोडशोऽध्यायः

शिव उवाच

अथ ते कथयिष्यामि कथामन्यां शुभप्रदाम् ।
पिण्डेश्वरस्य माहात्म्यद्योतिनीं शत्रुघातिनीम् ॥१॥

भगवान् शिव कहते हैं ।

हे पार्वती !, भगवान् पिण्डेश्वर के माहात्म्य को बढ़ाने वाली, शत्रुओं को नाश करने वाली, उत्तरोत्तर मङ्गल बढ़ाने वाली, और एक कथा मैं तुम्हें सुनाउगा, हे देवी ! तुम सावधान होकर सुनो ।

पिण्डेश्वरप्रसादेन लब्धकामः पितामहः ।
ससर्ज सकलाँल्लोकान् भूत्वा शक्तिसमन्वितः ॥२॥

भगवान् पिण्डेश्वर के वरप्रसाद से पितामह ब्रह्मा जी की कामना पूर्ति हुई, और उसी वरप्रसाद के प्रभाव से शक्ति सम्पन्न होकर संपूर्ण लोक की ब्रह्मा जी ने सृष्टि की ।

ब्रह्मणा सृष्टलोकानां रक्षणाय नियोजितः ।
शिवेन देवदेवेन महाविष्णुमहीयसा ॥३॥

तो, हे देवी ! ब्रह्मा जी के द्वारा सृष्ट लोकों को रक्षा करने के लिए देवदेव शिव ने महाविष्णु को नियोजित (नियुक्त) किया था ।

अशक्तः सर्वलोकानां रक्षणायाम्बुजेक्षणः ।
शीतशैलेन्द्रमासाद्य पिण्डेश्वरसमीपतः ॥४॥
तपश्चचार परमं दिव्यं वर्षसहस्रकम् ।
रुद्राक्षमूलजं तोयं भद्राक्षमूलजं तथा ॥५॥
हिमाचलोच्चशिखरपुण्यभूरुहमूलजम् ।
एषां त्रयाणां संयोगस्त्रिवेणीति निगद्यते ॥६॥
तत्र स्नानादिकं कृत्वा जलमादाय निर्मलम् ।
स्नापयामास पिण्डेशं रुद्रसूक्तैः समर्चयन् ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वयं निपतितैर्वृक्षाज्जलप्रक्षालितैः शुभैः ।
रुद्राक्षपत्रैर्धत्तूरैर्बिल्वपत्रैर्मनोहरैः ॥८॥
नाना सुगन्धिपुष्पैश्च पूजयामास सादरम् ।
इमं स्तवं पठन्नियं पिण्डेशप्रीतिकारकम् ॥९॥

संपूर्ण लोकों की रक्षा करने में असमर्थ कमलेक्षण विष्णु पिण्डेश्वर शिव के पास हिमालय पर्वत भाग शीत शैल विजयपुर में जाकर दिव्य हजार वर्ष तक तपस्या में संलग्न रहे । रुद्राक्ष वृक्ष मूल से उत्पन्न जल से निर्मित एवं भद्राक्ष वृक्षके मूलों से उत्पन्न जल से निर्मित रुद्रवारि एवं भद्रवारि एवं हिमालय पर्वत के उच्च उच्च अनेक शिखरों से उत्पन्न जल से निर्मित तमोरि, इन तीन नदों के समूहको त्रिवेणी (नद त्रिवेणी) कहते हैं । वहाँ स्नानादि कृत्य करके[1] निर्मल जल लेकर, विजयपुर में आकर, भगवान् पिण्डेश्वर को स्नान करा कर, रुद्रसूक्त (रुद्राष्टाध्यायी) से पूजा अर्चना जलधारा इत्यादि करके, वृक्ष से स्वयं पतित रुद्राक्ष पत्र पुष्प धत्तूर पुष्प, बिल्वपत्र आदि को जल प्रक्षालन से शुद्धकर, नाना सुगन्धि द्रव्यों से और पुष्पों से भगवान् पिण्डेश्वर को पत्र पुष्पाञ्जलि समर्पित कर भगवान् विष्णु पिण्डेश्वर शिवकी आराधना करने लगे । आराधना के अन्त्य में पिण्डेश्वर को प्रसन्न करने के लिए इस स्तोत्रको पाठ करते रहे ।

महाविष्णु उवाच

त्वं सर्वभूतपतिरित्यखिलान्तरात्मे—
त्यव्याजनिर्भरघृणाशरणं सखेति ।
सद्वृन्दवन्दितगुण ! त्रिपुरान्तक ! श्री-
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१०॥

भगवान् महाविष्णु शिव स्तोत्र पाठ करते हैं ।

हे शिव ! आप संपूर्ण भूत प्राणियों के पति हैं, यह मैं जानता हूँ । संपूर्ण विश्व की अन्तरात्मा भी आप ही हैं, यह भी मैं जानता हूँ । छल

[1] तेलिया एवं छरुवा नाम से प्रसिद्ध खोला (रुद्रवारि, भद्रवारि नद जो तमोरि, तमर) से मिलती हैं, इनका सङ्गम नद त्रिवेणी है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कपट रहित एकान्तिक आपकी ममता भी मुझ पर है, आप ही मेरे शरण्य हैं। हे महादेव ! इतना मात्र नहीं किन्तु आप मेरे साथी सहयोगी अनन्य मित्र भी हैं। हे त्रिपुरान्तक ! आपके गुणों को सत् वेदादि और सज्जनों ने अनेक गाए हैं। हे विनम्रजन प्रतिपालक ! हे अमृत पिण्ड पिण्डेश्वर ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

पञ्चास्य पञ्चशरनाशनकारणस्त्वं
पञ्चेन्द्रियेश ! धरणीधर-शोभितस्त्वम् ।
पञ्चप्रपञ्चपरिरक्षणकर्णधार !
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥११॥

हे पञ्चमुख शिव ! पञ्चवाण धारण करने वाले कामदेव को विनाश करने में कारण स्वरूप आप ही हैं। हे पाँचों इन्द्रियों के ईश्वर ! आप नागों के द्वारा शोभित हैं। हे पञ्चमहाभूत के पञ्चीकरण आदि प्रपञ्चों को रक्षण करने में (जगत् रक्षा करने में) कर्णधार शिव ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! हे प्रणत जन पालक ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

पञ्चास ! पञ्चशरसञ्चयवञ्चितोऽहं,
पञ्चाशुगात्र ! धरणीधरमण्डनस्त्वम् ।
पञ्चाशवर्णमय ! पञ्चमनुस्वरूप !
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१२॥

हे पञ्चाक्षर मन्त्र में विचरण करने वाले ! शंकर ! मैं तो पञ्चशरों के सञ्चयों से ताडित हूँ। हे पञ्चप्राणमय शरीर धारण करने वाले देव ! आप नागों से अलङ्कृत हैं। हे स्वर व्यञ्जन ॐ: आदिनाद मङ्गल श्री सम्पन्न शरीर धारण करने वाले शिव अक्षरमय ! आप पञ्चमनु (मनु-अवबोधन-जागरण-जीवन-पञ्चप्राण) जीवनतत्त्वमय शरीर संपन्न हैं। हे विनम्र जन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

अत्ता समस्तजगतां त्वमसि त्रिनेत्र !
सत्ताप्रदश्च जगतां भगवंस्त्वमेव ।
वित्तादिभिर्विरहिते शरणं गते त्वां
पिंडेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हें गुणात्मकनयन ! तीन नयनधारण करने वाले देव ! सारे जगत् के हर्ता कर्ता रक्षक आप ही हैं। हे देव ! हे भगवन् ! इस जगत् को सत्ता प्रदान करने वाले भी आप ही हैं। बौद्धिक एवं भौतिक संपत्ति से रहित होकर के आपके चरण का शरणागत मुझसे हे अमृतपिण्ड-पिण्डेश्वर ! हे प्रणतजन पालक ! आप प्रसन्न हों।

चिद्राजबिम्बगलितामृतचारुधारा-
दूरीकृतामय-निरामय-वीरगेय !।
श्रेयःप्रदाश्रितवतां महतां विधेय
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१४॥

हे शिव ! आप, चैतन्य अमृत चन्द्र बिंब में भरपूर होकर गिरे हुए रस धारा को पीकर अथवा उन रसधाराओं में स्नान कर, जिन्होंने भवरोगों को दूर कर दिया है, अत एव जो स्वस्थ हो गये हैं ऐसे वीर व्यक्तियों के द्वारा, ज्ञेय हैं और आश्रित भक्तों का कल्याण करते हैं, और उन्हीं भक्तों को विशेष प्रेम करते हैं, यहाँ तक कि अपने आप भी उन्हीं के वशीभूत होकर सेवक के तरह उनकी आज्ञा पालन करते हैं। हे प्रणतजन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! मुझसे आप प्रसन्न हों।

ताराधिनाथरुचिगौरशरीर ! नील—
धाराधराभगल ! बालसुधांशुमौले !।
घोरारिभिर्विदलिते पतिते भवाब्धौ,
पिण्डेश्वर ! प्राणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१५॥

हे देव ! आप चन्द्रमा के समान गौर वर्ण का शरीर धारण करते हैं और मेघ के समान नीला रङ्ग का आपका गला है, एवं अरुण पिङ्गल जटा-मुकुट में बालचन्द्र को धारण करते हैं। हे भगवन्, मैं तो अति भयानक जन्म मरण जरा व्याधि स्वरूप अरियों से (शत्रुओं से) विदलित हो गया हूँ, भव-सागर में गिर गया हूँ, पुत्र पौत्रादि जलजन्तु खानेको दौड़ रहे हैं, हे प्रणतजन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कपट रहित एकान्तिक आपकी ममता भी मुझ पर है, आप ही मेरे शरण्य हैं। हे महादेव ! इतना मात्र नहीं किन्तु आप मेरे साथी सहयोगी अनन्य मित्र भी हैं। हे त्रिपुरान्तक ! आपके गुणों को सत् वेदादि और सज्जनों ने अनेक गाए हैं। हे विनम्रजन प्रतिपालक ! हे अमृत पिण्ड पिण्डेश्वर ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

पञ्चास्य पञ्चशरनाशनकारणस्त्वं
पञ्चेन्द्रियेश ! धरणीधर-शोभितस्त्वम् ।
पञ्चप्रपञ्चपरिरक्षणकर्णधार !
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥११॥

हे पञ्चमुख शिव ! पञ्चवाण धारण करने वाले कामदेव को विनाश करने में कारण स्वरूप आप ही हैं। हे पाँचों इन्द्रियों के ईश्वर ! आप नागों के द्वारा शोभित हैं। हे पञ्चमहाभूत के पञ्चीकरण आदि प्रपञ्चों को रक्षण करने में (जगत् रक्षा करने में) कर्णधार शिव ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! हे प्रणत जन पालक ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

पञ्चास ! पञ्चशरसञ्चयवञ्चितोऽहं,
पञ्चाशुगात्र ! धरणीधरमण्डनस्त्वम् ।
पञ्चाशवर्णमय ! पञ्चमनुस्वरूप !
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१२॥

हे पञ्चाक्षर मन्त्र में विचरण करने वाले ! शंकर ! मैं तो पञ्चशरों के सञ्चयों से ताडित हूँ। हे पञ्चप्राणमय शरीर धारण करने वाले देव ! आप नागों से अलङ्कृत हैं। हे स्वर व्यञ्जन ॐ: आदिनाद मङ्गल श्री सम्पन्न शरीर धारण करने वाले शिव अक्षरमय ! आप पञ्चमनु (मनु-अववोधन-जागरण-जीवन-पञ्चप्राण) जीवनतत्वमय शरीर संपन्न हैं। हे विनम्र जन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

अत्ता समस्तजगतां त्वमसि त्रिनेत्र !
सत्ताप्रदश्च जगतां भगवंस्त्वमेव ।
वित्तादिभिर्विरहिते शरणं गते त्वां
पिंडेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हें गुणात्मकनयन ! तीन नयनधारण करने वाले देव ! सारे जगत् के हर्ता कर्ता रक्षक आप ही हैं। हे देव ! हे भगवन् ! इस जगत् को सत्ता प्रदान करने वाले भी आप ही हैं। वौद्धिक एवं भौतिक संपत्ति से रहित होकर के आपके चरण का शरणागत मुझसे हे अमृतपिण्ड-पिण्डेश्वर ! हे प्रणतजन पालक ! आप प्रसन्न हों।

चिद्राजबिम्बगलितामृतचारुधारा-
दूरीकृतामय–निरामय–वीरगेय ! ।
श्रेयःप्रदाश्रितवतां महतां विधेय
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१४॥

हे शिव ! आप, चैतन्य अमृत चन्द्र बिंब में भरपूर होकर गिरे हुए रस धारा को पीकर अथवा उन रसधाराओं में स्नान कर, जिन्होंने भवरोगों को दूर कर दिया है, अत एव जो स्वस्थ हो गये हैं ऐसे वीर व्यक्तियों के द्वारा, ज्ञेय हैं और आश्रित भक्तों का कल्याण करते हैं, और उन्हीं भक्तों को विशेष प्रेम करते हैं, यहाँ तक कि अपने आप भी उन्हीं के वशीभूत होकर सेवक के तरह उनकी आज्ञा पालन करते हैं। हे प्रणतजन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! मुझसे आप प्रसन्न हों।

ताराधिनाथरुचिगौरशरीर ! नील—
धाराधराभगल ! बालसुधांशुमौले ! ।
घोरारिभिर्विदलिते पतिते भवाब्धौ,
पिण्डेश्वर ! प्राणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१५॥

हे देव ! आप चन्द्रमा के समान गौर वर्ण का शरीर धारण करते हैं और मेघ के समान नीला रङ्ग का आपका गला है, एवं अरुण पिङ्गल जटा-मुकुट में वालचन्द्र को धारण करते हैं। हे भगवन्, मैं तो अति भयानक जन्म मरण जरा व्याधि स्वरूप अरियों से (शत्रुओं से) विदलित हो गया हूँ, भव-सागर में गिर गया हूँ, पुत्र पौत्रादि जलजन्तु खानेको दौड़ रहे हैं, हे प्रणतजन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चण्डांशुचण्डरुचिमण्डलखण्डनश्री-
भास्वत्कपर्द ! शुभहार्द ! जनार्दनार्च्य ।
दुर्द्दान्तिहार्दजविमर्दितमानसे, श्री-
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१६॥

हे देव ! आप सूर्यमण्डल की कान्ति को भी जीतने वाली कान्ति से सुसंपन्न जटा-मुकुट को धारण करते हैं। मङ्गलमय हृदय जनार्दन द्वारा पूज्य हे शिव ! सर्व ऐश्वर्य संपन्न अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! हे प्रणतजन पालक ! मैं तो अजेय और अपने आप स्वहृदय में ही पैदा होने वाला अरि (शत्रु) भूत इच्छादि कामनाओं से कुण्ठित चित्त बुद्धि वाला हो गया हूँ, आप मुझसे प्रसन्न हों।

दक्षाध्वरक्षपण ! रक्षितपक्षिवाह !
यक्षाधिराजसख ! शिक्षितवैरिपक्ष !।
भिक्षाशिभिः स्वहृदि लक्षितशान्तरूप।
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१७॥

हे दक्षयज्ञहर ! हे विष्णु-पक्ष के रक्षक ! हे कुबेर के (धनाध्यक्ष के) मित्र ! वैरिपक्ष (दानव पक्ष) को शिक्षा देने वाले ! भिक्षान्नभोजी सज्जन साधु महात्माओं के हृदय में शान्त (शान्ति के प्रतीक) रूप में प्रस्फुरित होने वाले हे प्रणतजन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

क्वाहं पशुः पशुपते ! पतिताग्रगण्यः ?
पुण्यं भवत्पदसरोरुहदर्शनं क्व ?
प्राप्तो भवत्करुणया चरणं तवाद्य
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१८॥

हें पशुपते ! आप प्रजारूप (जीवात्मा स्वरूप) पशुओं के पति हैं, तो भगवन् ! मैं तो पशु हूँ, और पतितों में अग्रगण्य हूँ। पुण्यमय आपके चरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कमलों का दर्शन कहाँ, और मैं खलनायक कहाँ ? तो भी मैंने आज आपके चरण-कमलों का दर्शन कर लिया, आपकी ही यह करुणा है। हे प्रणतजन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

त्वं जातु चित्तनुभृतां हृदये धृतश्चेत्,
तं जातबोधविभवं विभवं करोषि।
किं जातके समुचिता तव मय्युपेक्षा ?
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥१९॥

हे भगवन् ! आपको कोई भी चैतन्य युक्त जीवात्मा अपने हृदय में कथञ्चित् भूल भटक में भी जमा लेता है, चन्द समय के लिए ही हो, तो भी उसे आप ज्ञान (बोधमय) सम्पत्ति का धनी बना देते हैं। तो बताइए ! मैं आपका ही तो जातक (पुत्र) हूँ, बताइए ! मेरे प्रति आपकी उपेक्षा क्या उचित है ? हे प्रणतजन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

यस्ते प्रतापविभवस्त्रिपुरं निहन्तुम्,
कर्तुं निहन्तुमपि यत्तव देव ! शौर्य्यम्।
तेनाद्य पालय विभो ! शरणागतं मां,
पिण्डेश्वर ! प्रणतपाल ! मयि प्रसीद ॥२०॥

हे शिव ! आपका प्रताप, त्रिपुर (स्वर्ग-मर्त्य-पाताल, भूर्भूवःस्वः, त्रिपुरासुर के तीन पुर) को बनाने और संरक्षण करने तथा बिगाडने में समर्थ है, तो हे देव ! उसी शक्ति से शरणागत मुझे भी आप पालन करें। हे प्रणतजन पालक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! आप मुझसे प्रसन्न हों।

इमं स्तवं पठन्नित्यं पिण्डेश्वरमनःप्रियम्।
चचार परमं तीव्रं तपः कमललोचनः ॥२१॥

हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! भगवान् पिण्डेश्वर को रुचिकर इस स्तोत्र को नित्य पाठ करते हुए कमललोचन भगवान् महाविष्णु ने अति कठोर तपस्या की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तप्यमाने तपस्तीव्रं देवदेव - जनार्दने ।
दिव्यं वर्षसहस्रं च व्यतीतं निमिषार्धवत् ॥२२॥

देवदेव जनार्दन भगवान् महा विष्णु के तप करते हुए, दिव्य हजारों वर्ष भी आधी निमेष के तरह व्यतीत हो गये ।

ततः प्रसन्नो भगवाञ्छ्रीमत्पिण्डेश्वरः स्वयम् ।
प्रादुर्बभूव पुरतो बालाम्बा-सहितस्तदा ॥२३॥
प्रसन्नवदनाम्भोजः प्रसादाभिमुखेक्षणः ।
रमाकान्तस्य पुरतः प्रादुर्भूय व्यवस्थितः ॥२४॥

उसके बाद भगवान् पिण्डेश्वर भगवान् महा विष्णु के प्रति प्रसन्न हो गये । प्रसन्न मुद्रा में विराजमान, प्रसन्नता प्रकट करने में आतुर एवं बालाम्बा से सहित होकर स्वयं भगवान् पिण्डेश्वर भगवान् विष्णु (रमा के पति) के सामने प्रकट हो कर सामने ही स्थिर रहे ।

तं विलोक्य पुरः सन्तं पिण्डेश्वरमधीश्वरम् ।
प्रहृष्टः प्रणतो भूत्वा बद्धाञ्जलिपुटः स्थितः ॥२५॥
आनन्दबाष्पपूर्णाक्षो हर्षगद्गदया गिरा ।
तुष्टाव कमलाकान्तः पिण्डेश्वरमनन्यधीः ॥२६॥

संपूर्ण लोक के अधीश्वर, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर को अपने सामने में उपस्थित देखकर भगवान् विष्णु अति प्रसन्न हुए और हाथ जोड़कर विनम्र हो आनन्दाश्रुओं को बहाते हुए हर्ष से गद्गद हो कर भगवान् पिण्डेश्वर के प्रति दत्तचित्त होकर इस स्तोत्र से स्तवन करने लगे ।

महाविष्णुरुवाच

सन्ध्यारागसरागभासुरजटाभाराय धाराधर-
छायासोदरकन्धराय शशभृन्नीहारहारत्विषे ।
हारीभूतभुजङ्गमाधिपतये वेदान्तवेद्यश्रिये
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तनागात्मने ॥२७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् महाविष्णु शिव-स्तुति करते हैं--

सन्ध्या समय के सूर्य की लालिमा से तुल्य लाल पीली एवं भूरी जटा भारको (जटाजूट को) धारण करने वाले, तथा जलयुक्त मेघकान्ति के समान कण्ठ (नीलकण्ठ) धारण करने वाले और चाँदनी के समान उजियारा, हिमके समान शीतल, मोती के समान चमक युक्त देहकान्ति से विराजमान हे शिव ! आपने भुजङ्गाधिपति नागों को हार के स्थान में पहिरा है। आप वेदान्त विद्या में निपुण ज्ञानवानों के ऐश्वर्य हैं। हे नादबिन्दु (योगशास्त्र प्रसिद्ध ॐ के ऊपर का बिन्दु) के अन्त्य में स्थिर रहने वाले ! हे ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! अन्धकार से उजियारे के तरफ ले जाने वाले हे शिव ! आप को नमस्कार है।

वेद्यातीतचिदात्मने विदलितावेद्याय वेदाशयै-
र्वेद्याय स्वसुखानुभूतिमुदितस्वान्ताय शान्तात्मने।
सद्धात्रादिभिरर्चिताय धरणीवृन्दारवृन्दैः सदा,
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तनागात्मने ॥२८॥

हे भगवन् ! आपसे परिचित होना असंभव है, आप वेद्य वस्तुओं से अतीत हैं, किन्तु आप चित् आत्मा (चेतन आत्मा) स्वरूप हैं। अज्ञान को नाश करने वाले एवं ज्ञान स्वरूप वेदों के आशयों को (सारभूत तथ्यों को) जानने वाले आपको जानते हैं। आप स्वात्मानन्दानुभूति से मुदित अन्तः-करण वाले हैं। आप शान्त आत्मा से युक्त हैं। आप सत्य हैं, और ब्रह्मा विष्णु इन्द्र पृथिवी आदि देवताओं के द्वारा पूजित्त चरण हैं। हे अन्धकार से उजियारे के तरफ ले जाने वाले ! नादविन्दु के अन्त्य में नाग स्वरूप होकर स्थिर रहने वाले ! ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव आपको नमस्कार है।

गोत्राधीश्वरनन्दिनीप्रविलसद्गात्राय धात्रादिभि-
र्गात्रैः स्वैर्जगदुद्भवस्थितिलयक्रीडां सदा कुर्वते।
चिद्व्योमाऽमृतसिन्धुबन्धुरझरीदोलाविहाराय ते
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तगागात्मने ॥२९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के आधो अंग से सुशोभित अर्ध-नारीश्वर हर ! आप ब्रह्मा विष्णु रुद्र आदि प्रजापतियों के रूप को धारण कर सृष्टि पालन संहार आदि कर्मों से क्रीड़ा करते हैं। और आप अमृतमय चैतन्यब्रह्मसिन्धु के ऊर्मियों में झूला विहार करते हैं । हे अन्धकार से उजियारे के तरफ ले जाने वाले, नादविन्दु के अन्त्य में नागस्वरूप स्थिर होकर रहने वाले ! ब्रह्माण्ड पिण्डके प्रतीक ! हे अमृतपिण्ड परमेश्वर पिण्डेश्वर शिव ! आपको नमस्कार है ।

विश्वाकारविराजिताय विबुधस्तुत्याय सत्यात्मने
विश्वोत्तीर्णमहाप्रमातृवपुषे विद्यापुषे श्रीपुषे ।
विश्वत्राणपरायणाय विजितामित्राय मित्रत्विषे
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तनागात्मने ।।३०।।

हे विश्वस्वरूप से विराजमान शिव ! विद्वान् बुद्धिमान् जन आपकी स्तुति करते हैं । आप सत्यात्मा हैं । हे भगवन् ! विश्व से भी वृहत् शरीर को धारण करने वाले आप विद्या से ही पुष्ट हैं, श्री आदि ऐश्वर्य से युक्त हैं। विश्व रक्षा करने में आप व्यस्त हैं, हलाहल पान करके भी विश्व को आपने बचाया है। शत्रुओं को जीतने वाले आप सूर्य सम कान्ति से युक्त हैं। अन्धकार से उजियारे के तरफ ले जाने वाले हे भगवन् ! आप नादविन्दु के अन्त्य में नाग स्वरूप रेखा में स्थिर रहते हैं। हे ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! आपको नमस्कार है ।

वीराराधितपादुकाय विपदां जेत्रे लवित्रे रुजां,
राजद्राजकलाविराजितजटाजूटस्फुरन्मौलये ।
दारिद्र्यद्रुमभञ्जनाय दमिनां दारिद्र्यदात्रेऽसतां
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तनागात्मने ।।३१।।

हे भगवन् ! आप विश्ववीरों के द्वारा पूजित चरण हैं। विपत्तियों को जीतने वाले हैं। रोगों को दूर करने वाले हैं। पूर्ण प्रकाशित चाँदनी से सुशोभित जटाजूट को धारण करने वाले हे शिव ! आप सन्तों के लिए दरिद्रता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वरूप जङ्गली पेड़ों को तोड़ देने वाले हैं। असन्तों के लिए दरिद्रता बढ़ा देने वाले हैं। अन्धकार से उजियारे के तरफ ले जाने वाले! नादबिन्दु के अन्त्य में स्थिर होकर रहने वाले हे ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव! आपको नमस्कार है।

नीहाराचलतुङ्गशृङ्गरचितावासाय दासायित-
ब्रह्मादित्रिदशेन्द्रवन्दितपदद्वन्द्वाय बिन्द्वात्मने।
स्वर्गङ्गाजलतुङ्गभङ्गलहरीधाराभृते श्रीमते
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तनागात्मने ॥३२॥

हिमालय पर्वतराज के चोटियों में निवास करने को विशेष रुचि रखने वाले हे शिव! ब्रह्मादि देवताओं के द्वारा दास बन कर आराधित चरण युगल वाले! आप विन्दु (वीज) स्वरूप ॐ के ऊपर का ˘ बिन्दु) हैं, और अपनी ऊर्मियों से उत्तुङ्ग स्वर्गङ्गा को जुटामुकुट में धारण करते हैं। श्री आदि ऐश्वर्य संपन्न हैं। हे नादविन्दु के अन्त्य में स्थिर होकर रहने वाले! अन्धकार से उजियारे के तरफ ले जाने वाले! ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव! आपको नमस्कार है।

निःश्वासायितनैगमाय महते पश्वादिहृत्सद्मने
मानातीतघृणाघनाय महतां मान्याय दैन्यच्छिदे।
नेत्रीभूतकृशानुभानुशशिने वन्दारुशंदायिने,
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तनागात्मने ॥३३॥

हे भगवन्! आपके निश्वास से निर्मित निगम (वेद) हैं। आप महत् तत्त्व स्वरूप हैं, अपरिमेय हैं। आप चतुर्विध जीवात्माओं के (प्रजा-पशुओं के) हृदय रूप घर में (सभी के घट-घट में) विराजमान् हैं। हे शिव! आप विशिष्ट भक्तों के लिए अपरिमेय दया के सागर हैं। आप विशिष्ट जनों के द्वारा मान्य हैं। दरिद्रता को हटाने वाले हैं। हे हर! सूर्य अग्नि एवं चन्द्र आपके नेत्र हैं। भक्तों को कल्याण देने वाले हैं। हे अन्धकार से उजीते के तरफ ले जाने वाले देव! आप नादबिन्दु के अन्त्य में स्थिर रहते हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुरणन स्वरूप हैं। हे ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! आपको नमस्कार है।

हुङ्कारक्षत-पङ्कजास्त्रवपुषे स्वानन्दसम्पज्जुषे
रोषध्वस्तपुरत्रयाय दमिने दक्षाध्वरध्वंसिने।
विद्या-दानविशारदाय शमिताविद्याय विद्यात्मने
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तनागात्मने ॥३४॥

हे भगवन् ! अपके हुंकार से ही कमलशर कामदेव ध्वस्त हो गया। आपके रोष से ही त्रिपुर जल गया। आप स्वात्मानन्द संपत्ति से युक्त हैं। आप इन्द्रियजयी हैं। आप दक्षयज्ञ को ध्वंस करने वाले हैं। आप विद्याके अधिष्ठाता देवता हैं, अतः विद्यादान देने में विशारद हैं, विख्यात हैं। अज्ञान को शमन करने वाले हैं। हे शिव ! आप विद्यात्मा हैं। अन्धकार से उजीते के तरफ ले जाने वाले ! आप नादविन्दु के अन्त्य में स्थिर रहते हैं। हे ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! आपको नमस्कार है।

स्वेच्छाशक्तिविलासलालितशरीरायामृताम्भोनिधि-
क्षीरस्वारपटीरहारघनसारासारहीरत्विषे ।
भाषाधीश्वरवन्दिताय धिषणाहीन्द्रस्तुतार्थश्रिये
पिण्डेशाय नमः शिवाय गुरवे नादान्तनागात्मने ॥३५॥

हे भगवन् ! आप अपनी ही इच्छा से विलास के लिए अनेक शरीर (अवतार) धारण करते हैं। आप अमृत समुद्र के समान, क्षीर के सार नवनीत के समान स्निग्ध, मोती के माला के सामन चमक युक्त, कपूर के समान श्वेत सुगन्ध युक्त, हिमके समान शीतल, शरीर को धारण करते हैं, और हीरे के समान नील वर्ण का काण्ड आपका है। भाषा के अधीश्वर ब्रह्मा विष्णु सरस्वती बृहस्पति शुक्राचार्य वाल्मीकि व्यास शेष आदि के द्वारा वन्दित हैं। बुद्धिपूर्वक आपकी स्तुति शेषजी करते हैं। श्री आदि ऐश्वर्य से आप सम्पन्न हैं। हे अन्धकार से उजीते के तरफ ले जाने वाले भगवन् ! आप नादविन्दु के अन्त्य में स्थिर होकर विराजते हैं। हे ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक ! अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव ! आपको नमस्कार है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इति स्तुत्वा महाविष्णुः पिण्डेश्वरमनन्यधीः ।
प्रणम्य शिरसा भूमौ शतशोऽथ सहस्रशः ॥३६॥
आनन्दाश्रुपरीताक्षो रोमाञ्चिततनूरुहः ।
हर्षेण महता पूर्णस्तूष्णीमासीद्रमापतिः ॥३७॥
तूष्णीभूतं हरिं दृष्ट्वा श्रीमत्पिण्डेश्वरः प्रभुः ।
मेघगम्भीरया वाचा प्रोवाच कमलापतिम् ॥३८॥

इस तरह से एकाग्र चित्त होकर भगवान् पिण्डेश्वर की महाविष्णु ने स्तुति की। स्तुति के बाद भूमि में शिर रख कर शयों बार, हजारों बार प्रणाम किया और सानन्द के आसुओं से भरी आँखें लेकर हर्ष से रोमाञ्चित शरीर होते हुए लक्ष्मीपति भगवान् महा विष्णु चुप हो गए। भगवान् महाविष्णु को चुप होते हुए देख कर भगवान् पिण्डेश्वर शिव मेघ की तरह गम्भीर वाणी से भगवान् महाविष्णु को कहने लगे।

पिण्डेश्वर उवाच

वरं वरय भद्रं ते यत्तो मनसि कांक्षितम् ।
प्रसन्नस्तपसा तेऽहं वरं दातुमुपागतः ॥३९॥

भगवान् पिण्डेश्वर शिव कहते हैं—

हे महाविष्णु आपका कल्याण हो। वर माँगिये। जो आपके मन में हो सो माँगिए। मैं आपकी तपस्या से सन्तुष्ट हूँ। आपको वर देने के लिए यहाँ उपस्थित हूँ।

इति श्रुत्वा वचस्तस्य पिण्डेशस्य रमापतिः ।
हर्षगद्गदया वाचा तमुवाच जनार्दनः ॥४०॥

इस तरह की भगवान् पिण्डेश्वर शंकर की वाणी सुनकर हर्ष से गद्गद वाणी में लक्ष्मीपति जनार्दन भगवान् महाविष्णु भगवान् शिव से कहने लगे।

महाविष्णुरुवाच

प्रसन्नो यदि मे देव ! वरं देहि ममेप्सितम् ।
सत्यवाग्भव देवेश ! पिण्डेश्वर ! महेश्वर ! ॥४१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् महाविष्णु कहते हैं—

हे देव ! हे महेश्वर ! हे ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक ! हे अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर ! यदि आप मुझमें प्रसन्न हो गए हैं तो, मुझे मेरी अभिलषित मनःकामना से सञ्चित वरदान दीजिए। हे देवेश ! आप सत्य वक्ता हैं और सत्य वक्ता ही रहें।

अहं त्वया नियुक्तोऽस्मि लोकानां रक्षणे प्रभो !
अशक्तोऽहं परित्रातुं लोकान्सर्वान् महेश्वर ! ॥४२॥
शक्तिमव्याहतां मह्यं देहि पिण्डेश्वर ! प्रभो !।
त्वत्प्रसादेन देवेश ! भूत्वा शक्तिसमन्वितः ॥४३॥
रक्षां करोमि लोकानां त्वदाज्ञां पालयन् प्रभो !।
"इति विष्णोर्वचः श्रुत्वा पिण्डेशः प्राह माधवम् ॥४४॥

हे प्रभो ! आपने हमें ब्रह्माजी द्वारा की गई सृष्टि की रक्षा करने का काम दिया है। किन्तु हे नाथ ! मैं इस लोक को कैसे रक्षा करूँ, कुछ उपाय भी मुझे नहीं सूझता है। अतः हे महेश्वर ! लोकों को रक्षा करने में मैं असमर्थ हो रहा हूँ। हे पिण्डेश्वर ! हे प्रभो ! आप मुझे सर्वसमर्थ शक्ति दें। आप की ही कृपा से अव्याहत शक्ति से युक्त होकर संपूर्ण लोकों को रक्षा करने में मैं समर्थ हो सकूँ। जिससे कि आपकी आज्ञा पालन हो सके, ऐसा उपाय कर दें। भगवान् महाविष्णु की इस तरह की वाणी को सुनकर भगवान् पिण्डेश्वर शिव भगवान् महाविष्णु से कहने लगे।

पिण्डेश्वर उवाच

मत्प्रसादेन ते शक्तिर्भविष्यति रमापते !।
यया शक्त्या समायुक्तो लोकाँस्त्वं पालयिष्यसि ॥४५॥

भगवान् पिण्डेश्वर शिव कहते हैं—

हे रमापति ! महाविष्णु ! मेरी कृपा प्रसाद से आपको सृष्टि-रक्षा करने की शक्ति प्राप्त होगी। जिस शक्ति से सम्पन्न होकर आप चराचर संपूर्ण लोकों को सरलता से ही पालन करने में समर्थ हो जायेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूत उवाच

इति तस्मै वरं दत्त्वा पिण्डेशः श्रीश्वराय च ।
पूजितो भक्तिभावेन श्रद्धया चक्रपाणिना ॥४६॥
तत्रैवान्तर्दधे देवः पश्यतस्तस्य शार्ङ्गिणि ।
ततः श्रीकमलाकान्तो वरं लब्ध्वा यथेप्सितम् ॥४७॥
पिण्डेश्वरप्रसादेन परं हर्षमुपागतः ।
चकार कमलाकान्तः पिण्डेशस्य महोत्सवम् ॥४८॥

सूतजी कहते हैं ।

हे ऋषीश्वरों ! हे पार्वती ! भगवान् पिण्डेश्वर भगवान् महाविष्णु लक्ष्मी पति को इस तरह से उस प्रकार का वर देकर, उनके द्वारा श्रद्धा भक्ति भावना पूर्वक पूजित हो उनके देखते-देखते ही, वहीं अन्तर्धान हो गए। इसके बाद मनचाहा वर भगवान् पिण्डेश्वर से प्राप्त करके भगवान् महाविष्णु अति प्रसन्न हुए । इसी प्रसन्नता में भगवान् महाविष्णु ने भगवान् पिण्डेश्वर का एक बृहत् उत्सव से आराधन किया।

वसन्तकाले संप्राप्ते चैत्रे मासि मनोहरे।
शुक्लप्रतिपदारभ्य पौर्णमास्यवधि प्रिये ! ॥४९॥
रथोत्सवादिकं कृत्वा, पिण्डेश्वरविनिर्मिते ।
शिवगङ्गाभिधे तीर्थे चक्रे चाऽवभृथं ततः ॥५०॥
एवं तस्योत्सवं कृत्वा पिण्डेशस्य रमापतिः ।
जगाम निलयं स्वस्य वैकुण्ठं लोकमुत्तमम् ॥५१॥

वसन्त ऋतु, चैत्र महीना, शुक्ल पक्ष के प्रतिपदा तिथि से आरम्भ कर पूर्णिमा तक १५ दिन तक हे प्रिये ! वह उत्सव चलता है। उस उत्सव में रथोत्सव मुख्य है। पिण्डेश्वर भगवान् शिव के द्वारा निर्मित शिवगङ्गा के तीर्थ में अवभृथ स्नान कर वह उत्सव समाप्त होता है। इस तरह से भगवान् पिण्डेण्वर का उत्सव मनाकर रमापति महाविष्णु अपना आवास उत्तम लोक वैकुण्ठ चले गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततो ब्रह्मा समागत्य कार्तिके मासि शोभने ।
पौर्णमास्यां महार्हेण शाल्यन्नेन महीयसा ।।५२।।
अभिषिच्य महादेवं पिण्डेश्वरमनन्यधीः ।
कृत्तिकायां चकाराऽथ महादीपोत्सवं विधिः ।।५३।।
पूजाञ्च महतीं कृत्वा पिण्डेशस्य महाप्रभोः ।
लब्ध्वा तस्य प्रसादं च जगाम स्वनिकेतनम् ।।५४।।

इसके वाद पुनः ब्रह्माजी आए और उन्होंने अति मनोहर कार्तिक महीने के पूर्णिमा के दिन शाली अन्न (बढ़ियाँ वासमती चावल) के पकवान्न आदि तयार कर अन्नकूट का भोग लगाकर, एकचित्त हो रुद्राभिषेक आदि से भगवान् अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव का अभिषेक कर, कृत्तिका नक्षत्र के दिन रात को लक्ष्यवर्ती आदि दीपमालिका जलाकर उत्सव और पूजा की । इस तरह से भगवान् पिण्डेश्वर का बृहत् पूजा कर, भगवान् पिण्डेश्वर से वर प्रसाद प्राप्त करके ब्रह्मा जी भी अपना निवास धाम ब्रह्मलोक चले गए ।

ततः सर्वे सुरश्रेष्ठा महेन्द्रवरुणादयः ।
पिण्डेश्वरं समाराध्य तत्प्रसादेन भूयसा ।।५५।।
दिक्पालत्वं समासाद्य महाविभवसंयुताः ।
दैत्यदानवरक्षांसि विजित्य बहुशो रणे ।।५६।।
दिव्यस्थानं समासाद्य दिव्यभोगसमन्विता; ।
पूज्यमानाः सुरैः सर्वैः क्रीडन्ते विगतज्वराः ।।५७।।

इसके बाद, देवेन्द्र वरुण आदि सभी देवता भगवान् पिण्डेश्वर को दर्शन करने के लिए रुद्राक्षारण्य विजयपुर पधारे । भगवान् ब्रह्मा और भगवान् विष्णु के द्वारा जो उत्सव प्रारम्भ हुए थे, उन उत्सवों को देवताओं ने सुचालित करके बढ़ाया । भगवान् पिण्डेश्वर से वर प्रसाद प्राप्त कर महा विभव (संपत्ति) से युक्त हो दिक्पाल पदवियों को प्राप्त कर, रण में दैत्य, दानव, राक्षस सभी को जीत करके, दिव्य स्थान और अधिकार एवं भोगों को प्राप्त हो, सभी अन्य देवताओं के द्वारा पूजित होते हुए आज पर्यन्त निश्चिन्त स्वर्ग भोग कर रह रहे हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततः कदाचित् त्रिदशा इन्द्रोपेन्द्रानलादयः ।
शीतशैलेन्द्रमासाद्य पिण्डेश्वरनिकेतनम् ॥५८॥
प्रविष्टे मकरं भानावुत्तरायणपर्वणि ।
कृत्वा पूजां च महतीं महाविभवविस्तरम् ॥५९॥
धूपदीपोपहारैश्च गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ।
महाविभवनैवेद्यैः पायसान्नपुरः-सरैः ॥६०॥
पूजयित्वा महादेवं पिण्डेश्वरमुमापतिम् ।
कृत्वा महोत्सवं शम्भोर्भक्तिभावसमन्विताः ॥६१॥

फिर किसी समय में इन्द्र विष्णु वरुण अग्नि आदि देवता शीतशैल रुद्राक्षारण्य विजयपुर में भगवान् अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर का दर्शन करने के लिए पधारे । उत्तरायण में सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते ही देवताओं ने भगवान् पिण्डेश्वर का एक बृहत् उत्सव किया । विधिपूर्वक अनेक वस्तुओं को जुटाकर धूप दीप उपहार पुष्प चन्दन अक्षता आदि से भगवान् की पूजा की । अनेक प्रकार के नैवेद्य निवेदित किए, पायसान्न विशेष का महाभोग लगाकर भक्ति भावनापूर्वक भगवान् पिण्डेश्वर उमापति शिव की अर्चना की ।

ततश्च पुष्यनक्षत्रे पौर्णिमायां महातिथौ ।
शिवगङ्गाभिधे तीर्थे स्नापयित्वा महेश्वरम् ॥६२॥
स्नात्वा स्वयं ततः सर्वे प्रसन्नेन्द्रियमानसाः ।
पिण्डेश्वरं पूजयित्वा तत्प्रसादमवाप्य च ॥६३॥
स्वं स्वं स्थानमुपाजग्मुः प्रहर्षेण समन्विताः ।
ततः प्रभृति देवस्य मनुजा प्रतिवत्सरम् ॥६४॥

उस तरह से माघ महीना भर उक्त उत्सव को देवताओं ने किया । पुष्यनक्षत्र से युक्त पौष पूर्णिमा के दिन से मकर संक्रान्ति तक शिवगङ्गा तीर्थ में भगवान् पिण्डेश्वर को स्नान कराकर स्वयं भी स्नान करके प्रसन्न चित्त हो, पुनः भगवान् पिण्डेश्वर का पूजन करके, भगवान् पिण्डेश्वर से वर प्रसाद प्राप्त कर, अत्यन्त हर्षित देवगण अपने अपने स्थान को चले गए ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवताओं के चले जाने के बाद उन उत्सवों को मानवों ने मनाना प्रारम्भ किया, प्रतिवत्सर उन उत्सवों को मानव आज भी मना रहे हैं।

मकरे मासि सम्प्राप्ते पौर्णिमायां महेशितुः।
पूजां कुर्वन्ति महतीं नाना विभवविस्तराम् ॥६५॥
पुष्यभे समनुप्राप्ते देवदेवं महेश्वरम्।
शिवगङ्गाभिधे तीर्थे स्नापयित्वा विधानतः ॥६६॥
पूजयित्वा महेशानं श्रद्धाभक्तिसमन्विताः।
स्वयं च शिवगङ्गायां स्नानं कुर्वन्ति भक्तितः ॥६७॥

हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! माघ महीना आने पर पौष पूर्णिमा से आरम्भ करके मनुष्य गण उस उत्सव को माघ पूर्णिमा तक मनाते हैं। भगवान् महेश्वर अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव की विधिपूर्वक विशेष पूजा करते हैं। पुष्य नक्षत्र युक्त पौषीं पूर्णिमा के दिन भगवान् पिण्डेश्वर को शिवगङ्गा तीर्थ में स्नान कराकर स्वयं भी स्नान कर श्रद्धा भक्तिपूर्वक भगवान् पिण्डेश्वर की पूजा करते हैं। इस तरह से पूर्ण एक महीना (पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा) तक प्रतिवर्ष मनुष्यगण इस उत्सव को मनाते हैं।

प्राप्ते तु मकरे भानौ उत्तरायणपर्वणि।
पुष्यभे शिवगङ्गायां यः स्नायान् मनुजो भुवि ॥६८॥
तस्य पुण्यफलं वक्ष्ये शृणुष्वावहिता प्रिये !।

सूर्य मकर में आ जाने पर उत्तरायण पर्व में, पुष्य नक्षत्र में सूर्य आते ही प्रारम्भ कर जो मनुष्य पूरा एक महीना शिवगङ्गा तीर्थ में स्नान करता है, उस स्नान से उसे क्या पुण्यफल प्राप्त होता है ? वह मैं सुनाता हूँ, हे प्रिये ! तुम सावधान होकर सुनो।

प्रयागे मकरे मासि स्नानं कृत्वा निरन्तरम् ॥६९॥
यत्फलं समवाप्नोति तत्फलं लभते नरः।"
"कार्तिके मासि सम्प्राप्ते काश्यां विश्वेशसन्निधौ ॥७०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

य: स्नायात् पञ्चगङ्गायां तस्य पुण्यफलं लभेत्" ।
"पुष्करे च महाक्षेत्रे कार्तिकं पञ्चवासरम् ।।७१।।
यः स्नाति मनुजो देवि ! श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
यत्फलं लभते जन्तुस्तत्फलं लभते पुमान्" ।।७२।।

माघ के महीने में गङ्गा यमुना सरस्वती संगम त्रिवेणी तीर्थराज प्रयाग में एक महीना तक निरन्तर स्नान करके मनुष्य जो फल प्राप्त करते हैं, वह फल मकर में सिर्फ एक ही दिन एक बार शिवगङ्गा में स्नान करके मानवगण प्राप्त करते हैं। और कार्तिक महीना भर पञ्चगङ्गा में स्नान कर काशी विश्वनाथ का दर्शन करने से जो फल मानव प्राप्त करते हैं, वह फल मात्र एक बार कार्तिक महीना में शिवगङ्गा तीर्थ में स्नान कर पिण्डेश्वर का दर्शन करने से प्राप्त करते हैं। एवं कार्तिक महीना के पाँच दिन तीर्थराज पुष्कर में स्नान करके मनुष्यगण जो पुण्यफल प्राप्त करते हैं, वह पुण्य का फल कार्तिक महीना में एक बार शिवगङ्गा तीर्थ में श्रद्धा भक्ति पूर्वक स्नान करके मनुष्य गण प्राप्त करते हैं।

कुरुक्षेत्रे महापुण्ये राहुग्रस्ते दिवाकरे ।
स्नात्वा यत् पुण्यमाप्नोति तत्पुण्यं लभते नरः ।।७३।।

सूर्यग्रहण के महापर्व में कुरुक्षेत्र में स्नान करके मनुष्यगण जो फल प्राप्त करते हैं, वह फल शिवगङ्गा तीर्थ में एक बार मात्र भी किसी दिन स्नान करके प्राप्त करते हैं।

तस्मादवश्यं मर्त्येन शिवगङ्गा - सरोवरे ।
मकरे पुष्यनक्षत्रे स्नातव्यं शुभमिच्छता ।।७४।।
एवं प्रभावः पिण्डेशो ब्रह्मादीनां वरप्रदः ।
द्रष्टव्यः पूजनीयश्च सेवनीयश्च मानवैः ।।७५।।
पूजितः सेवितो दृष्टः सर्वान् कामान् प्रयच्छति ।
विरक्तैः सेवितो नित्यं मुक्तिं तेषां प्रयच्छति ।।७६।।

अतः, हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! शिवगङ्गा के सरोवर में पौष संक्रांति एवं पौष पूर्णिमा से मकर संक्रान्ति एवं माघी पूर्णिमा तक एक महीना अथवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक दिन भी सभी मनुष्यों को स्नान करना उचित है, उनका मङ्गल होता है। भगवान् पिण्डेश्वर ब्रह्मादि देवताओं को भी वर प्रदान करते हैं, ऐसे प्रभावशाली भगवान् पिण्डेश्वर हैं, मनुष्यों के द्वारा दर्शनीय हैं, पूजनीय हैं, सेवनीय हैं। जो मनुष्य ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिव को रुद्राक्षारण्य में दर्शन करता है, पूजा करता है, सेवा करता है, वह मनुष्य अपनी सारी कामनाओं को प्राप्त करता है। यदि विरक्त जन भगवान् पिण्डेश्वर की ऐसी सेवा करते हैं तो उन्हें मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

पिण्डेश्वर इति क्वाऽपि कदाचित् येन केन वा।
कीर्तितश्चेत् प्रसन्नः सन् स्वसायुज्यं ददाम्युमे ! ॥७७॥

हे उमे ! हे ऋषीश्वरों ! 'हे पिण्डेश्वर !' मात्र एक बार कोई भी मनुष्य कदाचित् किसी प्रसङ्ग में कह देता है अथवा भगवान् पिण्डेश्वर को स्मरण करता है, भक्ति भावना पूर्वक पुकारता है तो उसे प्रसन्न होकर मैं स्वसायुज्य (शिवसायुज्य) मुक्ति देता हूँ।

पिण्डेश्वरं कीर्तयतां नास्ति क्वापि पराभवः।
पिण्डेश्वरसमो देवो नास्ति लोकत्रये प्रिये ! ॥७८॥

भगवान् पिण्डेश्वर का भजन कीर्तन स्मरण करने वाला व्यक्ति कहीं भी पराभव नहीं होता है, सर्वत्र विजय प्राप्त करता है। हे प्रिये ! भगवान् पिण्डेश्वर के समान प्रभावशाली एवं दानी तीनों लोक में कोई देवता नहीं हैं।

रुद्राक्षारण्यसदृशं नास्ति क्षेत्रं धरातले।
इति ते कथितं देवि ! शम्भोस्त्रिपुरवैरिणः ॥७९॥
पिण्डेश्वरस्य देवस्य माहात्म्यं परमाद्भुतम्।
शृण्वतां सर्वपापघ्नं सर्वकामफलप्रदम् ॥८०॥

हे देवी ! इस पृथ्वीतल में रुद्राक्षारण्य के समान पुण्यदायक पवित्र क्षेत्र अन्यत्र और कोई नहीं है। यहाँ तक मैंने तुमको त्रिपुरहन्ता शिव पिण्डेश्वर का चरित्र सुनाया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् पिण्डेश्वर शिव का माहात्म्य अति अद्भुत है, आश्चर्यजनक है। सुनने मात्र से भी संपूर्ण पापों को नष्ट करता है, सम्पूर्ण कामनाओं को प्रदान करता है।

यस्मै कस्मै न वक्तव्यं गोपनीयं प्रयत्नतः।
शिवभक्ताय दातव्यं शिवपूजापराय च ॥८१॥
इति ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वया प्रिये!।
पिण्डेश्वरस्य माहात्म्यं, किं भूयः श्रोतुमिच्छसि?॥८२॥

हे देवी! इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को अति गोपनीय (सम्यक् रक्षा-गुपु-रक्षणे) रखना, कहीं कीड़े मकोड़े न लग जायँ, पानी न पड़े, न जल जाय। शिव (कल्याण) के भक्तों को, (शिवपूजा में संलग्न जनों को) देना, सुनाना, लिखके देना।

हे प्रिये! हे पार्वती! तुमने जो पूछा था, जो तुम्हारा प्रश्न था, उसके उत्तर में मैंने तुमको रुद्राक्षारण्य के प्रमुख देवता, ब्रह्माण्डपिण्ड के प्रतीक, अमृतपिण्ड भगवान् पिण्डेश्वर शिवका माहात्म्य सुनाया। अब तुम क्या सुनना चाहती हो, बताओ? मैं सुनाऊँगा।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां
पिण्डेश्वरमाहात्म्यवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

अथ सप्तदशोऽध्यायः

देव्युवाच

देवदेव! जगन्नाथ! सच्चिदानन्दविग्रह!।
त्वत्तः श्रुतं मया सर्वं रुद्राक्षोत्पत्तिकारणम् ॥१॥
तथा पिण्डेश्वरोत्पत्तिस्त्वत्त एव श्रुता मया।
पिण्डेश्वरस्य माहात्म्यं विस्तरेण त्वयोदितम् ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सावधानेन मनसा मया श्रुतमशेषतः ।
तस्मिन् रुद्राक्षकान्तारे न किञ्चित्तीर्थमीरितम् ॥३॥
यत्र स्नात्वा नरः सद्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
सरिद् वाऽथ सरो वाऽपि विद्यते चेद्वदा प्रभो ! ॥४॥

देवी पार्वती कहती हैं--

हे देवता के देवता ! हे जगत् के नाथ ! हे सत्य चेतन आनन्द स्वरूप शरीर धारण करने वाले ! महेश्वर ! आपसे मैंने संपूर्ण रुद्राक्ष-उत्पत्ति कारण कथा सुन ली है । तथा पिण्डेश्वर-उत्पत्ति कारण कथा भी सुन ली है । भगवान् पिण्डेश्वर की माहात्म्य कथायें भी विस्तार पूर्वक आप से ही मैंने सुन ली । जो कुछ मैंने सुनी सब सावधान होकर ही सुनी है । किन्तु हे भगवन् ! उस रुद्राक्षारण्य में कोई तीर्थ-विशेष का वर्णन आपने नहीं किया । जिस तीर्थ में स्नान करते ही तत्काल स्नान करने वाले नर नारी सारे पापों से मुक्त हो जायँ । ऐसी नदी हो वा कोई वैसा सरोवर हो, अथवा कोई उस तरह प्रभावकारी जलाशय हो, तो हे प्रभो ! आप उसका भी परिचय दें ।

शिव उवाच

अस्ति देवि ! महापुण्यं सरः सारस्वताभिधम्[1] ।
रुद्राक्षारण्यमध्यस्थं पिण्डेश्वरपुरःस्थितम् ॥५॥

भगवान् शिव कहते हैं--

हे देवी ! स्नान करते ही तत्काल सारे पापों से मुक्त कर देने वाला, महापुण्यदायक सारस्वत सर (सरस्वती सरोवर-सरस्वती कुण्ड) रुद्राक्षारण्य के मध्य में भगवान् पिण्डेश्वर के समीप (सामने) विद्यमान है ।

कदाचिद्भारती देवी ब्रह्मलोकादुपागता ।
द्रष्टुं पिण्डेश्वरं देवं लिङ्गरूपेण संस्थितम् ॥६॥

---

१. हिमाद्रि वर्ष हिमाद्रि खण्ड शीतशैल रुद्राक्षारण्य विजयपुर के प्रधान देवता अमृत पिण्ड पिण्डेश्वर शिव के सामने यह सरोवर का भग्नावशेष छोटा भाग आज भी विद्यमान है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किसी समय में देवी सरस्वती लिङ्गरूप से विद्यमान भगवान् पिण्डेश्वर का दर्शन करने के लिए ब्रह्मलोक से रुद्राक्षारण्य में आई थीं।

तया तत्र कृतं दिव्यं तीर्थं सर्वोत्तमोत्तमम्।
सरः सारस्वतमिति विख्यातं सर्वकामदम् ॥७॥

उन्हीं सरस्वती देवी ने वहाँ एक दिव्य सरोवर का निर्माण किया। वह सरस्वती तीर्थ सर्वोत्तम तीर्थ है। सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है, सरस्वती[1] सरोवर के नाम से पृथिवीतल में विख्यात है।

स्वयं विनिर्मिते तीर्थे, तत्र स्नात्वा सरस्वती।
पिण्डेश्वरं स्नापयित्वा संपूज्य विधिवत्प्रभुम् ॥८॥
तत्प्रसादं समासाद्य देवानामपि दुर्लभम्।
ततः सरस्वती देवी ब्रह्मलोकं जगाम ह ॥९॥

स्वयं निर्मित उस तीर्थ में सरस्वती नहाती थीं। भगवान् पिण्डेश्वर को स्नान करा के विधिवत् पुजा करती थीं। भगवान् पिण्डेश्वर से देवताओं के लिए भी दुर्लभ वर-प्रसाद को प्राप्त कर देवी सरस्वती वह्मलोक चली गयीं।

ततः प्रभृति तत् तीर्थं सारस्वतमिति श्रुतम्।
तस्मिन् सारस्वते तीर्थे यः स्नायान् मनुजः सकृत् ॥१०॥
सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः सर्वैश्वर्यसमन्वितः।
अखण्डितं च पाण्डित्यं कवित्वं लभते नरः ॥११॥

हे देवी! उस दिन से वह तीर्थ सरस्वती तीर्थ के नाम से पृथिवीतल में विख्यात हुआ। उस सारस्वत तीर्थ में जो मनुष्य (नर अथवा नारी) एक बार भी स्नान कर लेते हैं, वे संपूर्ण पापों से मुक्त होकर, संपूर्ण ऐश्वर्य से युक्त हो, अखण्डित पाण्डित्य (विद्वत्ता) कवित्व (कविता-शक्ति), वक्तृता

---

१. आजकल सरस्वती सरोवर कुण्ड के रूप में, भग्नावशेष अवस्था में विद्यमान है, अब निर्मूल होने जा रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(बोलने की शक्ति) प्राप्तकर लेता हैं, गूँगे को भी वाणी (सरस्वती) प्राप्त हो जाती है।

पिण्डतर्पणदानादि यस्य तीरे[1] सकृत् कृते ।
मुक्तो भवति प्रेतोऽपि देवि ! सत्यं वदामि ते ॥१२॥

हे देवी ! जिस सरस्वती तीर्थ के तीर में एक वार भी पिण्ड तर्पण दान आदि अपने पितृयों को दिया जाय तो प्रेत योनि को प्राप्त भी सारे माता पिता आदि पितृवर्ग मुक्त हो जाते हैं। वे प्रेत योनि में भी हों तो मुक्त हो जाते हैं।

अथान्यत्तत्र देवेशि ! तीर्थं पापहरं महत् ।
पिण्डेश्वरेण देवेन स्वयमेव विनिर्मितम् ॥१३॥
शिवगङ्गाभिधं नाम सर्वतीर्थोत्तमोत्तमम् ।
पिण्डेश्वरस्य पुरतः स्थितं परमपावनम् ॥१४॥
स्वयं निर्माय पिण्डेशः स्वाभिषेकार्थमीश्वरः ।
गङ्गया पूरयामास जटाजूटान्तरस्थया ॥१५॥
शिवगङ्गेति विख्यातं ततस्तत्तीर्थमुत्तमम् ।
तस्मिंस्तीर्थे नरः स्नात्वा साक्षाद् गङ्गाधरो भवेत् ॥१६॥

हे देवताओं की ईश्वरी ! और भी तीर्थों का मैं वर्णन कर रहा हूँ, जो रुद्राक्षारण्य में अति पवित्र और पुण्यदायक हैं , तुम सुनो।

(१) शिवगङ्गा का अनेक बार नाम आचुका है। वे संपूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं। शिवगङ्गा को भगवान् पिण्डेश्वर ने स्वयं निर्माण किया है। शिवगङ्गा नाम से ही वह तीर्थ विख्यात है। संपूर्ण तीर्थों में वह तीर्थ उत्तम है। भगवान् पिण्डेश्वर के सामने उत्तर-पूर्व दिशा में वह तीर्थ है। उस तीर्थ को स्वयं स्नान करने के लिए भगवान् पिण्डेश्वर ने निर्माण कर के अपनी जटाजूट के अन्तराल में स्थित आकाशगङ्गा की धारा से उसे

१. सरस्वती तीर्थ मातृतीर्थ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पवित्र जलपूर्ण किया है। इसी से उस तीर्थ को शिवगङ्गा कहा जाता है, जो सर्वोत्तम गङ्गा हैं। उस तीर्थ में स्नान करने वाला मानव साक्षाद् गङ्गाधर शिव तुल्य हो जाता है।

पिण्डेशपृष्ठभागे तु कार्त्री नाम शिवा नदी।
पिण्डेश्वरेण देवेन स्वयमेव विनिर्मिता ॥१७॥
यस्यां स्नात्वा पुण्यनद्यां कदाचिदपि मानवाः।
सर्वान्कामानवाप्येह जगत्कर्ता भवेत्ततः ॥१८॥

(२) हे देवी ! भगवान् पिण्डेश्वर के पीछे (पूर्वोत्तर कोण में) कार्त्री नाम की कल्याण-कारिणी नदी है। पिण्डेश्वर भगवान् शिव ने, उसे सुलभ स्नानादि सुविधा के लिए, स्वयं निर्माण किया है। उस पुण्यनदी में कदाचित् भी यदि मानव स्नान कर लेते हैं, तो संपूर्ण कामनाओं को प्राप्त करके जगत्कर्ता (ब्रह्म स्वरूप) हो जाते हैं, अर्थात् मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

पिण्डेशाद्दक्षिणे भागे योजनान्तरदूरतः।
ज्योतिष्मति नाम नदी नदीनामुत्तमोत्तमा ॥१९॥
जोतिर्मयेन देवेन निर्मिता त्रिपुरारिणा।
तस्मात् ज्योतिष्मती नाम निर्मिता धरणीतले ॥२०॥
तस्यां देवि ! देवनद्यां यः स्नायान्मनुजः सकृत्।
साक्षाज्ज्योतिर्मयो भूत्वा शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥२१॥

(३) हे देवी ! पिण्डेश्वर से दक्षिण के तरफ एक योजन (८ माइल) के लगभग में ज्योतिष्मती नाम की नदी है। वह नदी नदियों में उत्तम नदी है। ज्योतिर्मय त्रिपुरारि देव शिव ने उसे निर्माण किया है। इसी से उस नदी का नाम भी ज्योतिष्मती है। हे देवी ! उस देव नदी में एक बार मात्र भी स्नान करके मनुष्यगण साक्षात् ज्योतिर्मय होकर शिव सायुज्य प्राप्त करते हैं।

देव्युवाच

देवदेव ! त्वया प्रोक्ता कौशिकी नाम निम्नगा।
रुद्राक्षारण्यनिकटे पश्चिमे योजनान्तरे ॥२२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तस्याः स्वरूपमिच्छामि ज्ञातुं श्रीपरमेश्वर ! ।
कथं सा कौशिकी नाम्ना विख्याता सरितां वरा ॥२३॥
कस्य वंशे समुत्पन्ना कुतो वा समुपागता ।
तस्याः स्वरूपं माहात्म्यं सर्वं मे वक्तुमर्हसि ॥२४॥

देवी पार्वती प्रश्न करती हैं--

हे देवदेव ! आपने रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र से एक योजन पश्चिम (८ माइल) में रुद्राक्षारण्य में ही कौशिकी गङ्गा की चर्चा की है। उन कौशिकी का स्वरूप मैं जानना चाहती हूँ। हे परमेश्वर ! कौशिकी नाम से उन्हें कैसे ख्याति मिली ? किसके वंश में उनकी उत्पत्ति हुई ? कहाँ से वहाँ आयीं ? उनका स्वरूप और माहात्म्य मैं श्रवण करना चाहती हूँ--

शिव उवाच

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कौशिक्याः संभवं प्रिये ! ।
ब्रह्मयोनिर्महानासीत् कुशो नाम महीपतिः ॥२५॥
तस्य वंशे समुत्पन्ना कौशिकी नाम कन्यका ।
विश्वामित्रस्य भगिनी ऋचीकस्य महात्मनः ॥२६॥
पत्नी पतिव्रता साध्वी भर्तृसुश्रूषणे रता ।
पातिव्रत्यप्रभावेण जाता सा सरितां वरा ॥२७॥

भगवान् शिव कहते हैं--

हे प्रिये ! हे देवी ! तो अब तुम सुनो, मैं तुम्हें कौशिकी गङ्गा की उत्पत्ति बताता हूँ। भगवान् ब्रह्माजी के वृहत् वंश में कुश नाम के राजा

१, २, ३, हाल-शिवगङ्गा को सेवती कहते हैं। उमद्गस्थल को शिवजटा कहते हैं। कार्त्री गङ्गा को खत्री धारो कहते हैं। ज्योतिष्मती को जव्दी वा सुरसरित् (सुनसरी) कहते हैं, किन्तु ज्योतिष्मती अनुसन्धेय है, अनुमान है पकली के पास (जहाँ अष्टभुजा कौशिकी की मूर्ति मिली थी) वहाँ अनेक स्रोत हैं, उनसे एक छोटी-सी नदी बन जाती है, यही हो। जव्दी नाम की एक नदी भी है जो गुप्त होकर पुनः प्रकट होती जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुए। उन्हीं कुश के वंश में (कुशिक वंश में) कौशिकी नाम की कन्या हुई। कौशिकी विश्वामित्र ऋषि की बड़ी बहिन हैं। ऋषि ऋचीक की धर्मपत्नी हैं। कौशिकी पतिव्रता थीं, सज्जन स्वभाव की थीं, पतिसेवा में संलग्न रहती थीं। पतिव्रता धर्म के प्रभाव से कौशिकी सरित्वरा (नदियों में उत्तम) गङ्गा हुई।

हिमाद्रिशिखराद्देवी नदी रूपेण निर्गता।
सर्वपापक्षयकरी सर्वाभीष्टप्रदायिनी ॥२८॥
बहूनि शैलश्रृङ्गाणि भित्वा स्वैरमुपागता।
भागीरथ्यां समागम्य गता नदनदीपतिम् ॥२९॥

हिमालय पर्वतराजके ऊँचे ऊँचे शिखरों के कोशों से (अन्तरालों से) नदी रूप में प्रकट हुई कौशिकी गङ्गा संपूर्ण पापों को नष्ट करने वाली, संपूर्ण कामनाओं को प्रदान करने में समर्थ हैं। पर्वतराज के अनेक शिखरों को ढहाती हुई स्वतन्त्रता से बढ़ती हुई, भागीरथी से मिलकर नदनदियों के पति समुद्र में मिल जाती हैं।

तस्यास्तु सलिले पुण्ये सर्वपापक्षयङ्करे।
यथाविधि नरः स्नात्वा सन्तर्प्य पितृदेवताः ॥३०॥
ब्राह्मणाँश्च यथाशक्ति भोजयित्वा यथार्हतः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वान्कामानवाप्य च ॥३१॥
विमान - वरमारुह्य त्रिदशैरभिवन्दितः।
ब्रह्मलोकमवाप्नोति जरामरणवर्जितम् ॥३२॥

संपूर्ण पापों को नष्ट करने वाला कौशिकी गङ्गा के पवित्र जल में विधिपूर्वक स्नान करके, एवं पितृ और देवताओं को तृप्त कर, ब्राह्मणों को यथाशक्ति यथायोग्य भोजन करवा करके संपूर्ण पापों से मुक्त हो, संपूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर, श्रेष्ठ विमान में चढ़ करके, देवताओं से वन्दित हो, जरामरण वर्जित ब्रह्मलोक को मानवगण प्राप्त कर लेते हैं।

तस्यास्तीरे महापुण्यं क्षेत्रं वाराहसंगितम्।
दर्शनात्सर्वपापघ्नं वर्तते परमेश्वरि! ॥३३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे परमेश्वरी ! उन्हीं कौशिकी गङ्गा के तीर में, कौशिकी-कोका संगम (वेणी) में, महा पुण्यदायक वराह क्षेत्र है। वहाँ वराह रूप (वराह-अवतार) भगवान् लक्ष्मी के साथ विराजमान हैं। उनके दर्शन मात्र से भी संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

पुरा श्रीभगवान् विष्णुर्वाराहं रूपमास्थितः।
हिरण्याक्षं महादैत्यं महाबलपराक्रमम् ॥३४॥
निहत्य समरे तेन पातालं प्रापितां महीम्।
उद्धृत्य स्थापयित्वाप्सु कौशिकीतीरमाश्रितः ॥३५॥
न्यवसद् भगवान् विष्णुर्हिमवच्छैलसानुनि।
तन्नाम्ना प्रथितं तस्मात् क्षेत्रं वाराहसंज्ञितम् ॥३६॥

हे देवी ! प्राचीन समय में भगवान् विष्णु ने वराह का रूप धारण करके महाबली, महा पराक्रमी, महा दैत्य को युद्ध में मारकर उसके द्वारा पाताल पहुँचाई गई पृथिवी को पानी से निकाल कर पानी में ही स्थापित किया। और वहीं कौशिकी के तीर में, हिलालय शैल-शिखर में आनन्द पूर्वक लक्ष्मी के साथ में विराजमान हुए। अतः उस क्षेत्र का नाम भी 'वराह क्षेत्र के नाम' से विख्यात हुआ।

तत्र गत्वा नरः स्नात्वा कौशिक्याः सलिले शुभे।
दृष्ट्वा च कमलाकान्तं वाराहं रूपमास्थितम् ॥३७॥
सर्वान्कामानवाप्येह विष्णोः सायुज्यमाप्नुयात्।
तस्मादवश्यं मर्त्येन द्रष्टव्यं क्षेत्रमीश्वरि ! ॥३८॥

हे ईश्वरी ! वहाँ (वराह क्षेत्र में) कौशिकी के पवित्र जल में (कौशिकी कोका संगम वेणी में) जाकर स्नान करके भगवान् वराह का दर्शन करने वाला व्यक्ति इस लोक में संपूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर देहान्त में भगवान् विष्णु की सायुज्य मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। अतः हे देवी ! मनुष्यों के द्वारा वराह क्षेत्र का दर्शन करना अनिवार्य है।

तदुत्तरे क्रोशयुग्मे कौशिकीनां सुसंगमे।
त्रिवेणीति समाख्यातं तीर्थं परमपावनम् ॥३९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवी ! वराह क्षेत्र से उत्तर के तरफ दो कोश के अन्दर सातों कौशिकियों का संयुक्त संगम स्थल (पञ्च कौशिकी के साथ दुग्ध कौशिकी एवं तमोरिका संगम) है। यह स्थल परम पवित्र तीर्थ है, त्रिवेणी के नाम से विख्यात है। वराह क्षेत्र के साथ कौशिकी का जो माहात्म्य वर्णित है, और हैमवती त्रिवेणियों का जो माहात्म्य वर्णित है, वही माहात्म्य इस त्रिवेणी का है।

वाराहक्षेत्रात्पूर्वस्यां योजनद्वयदूरतः।
रुद्रवारि-भद्रवारि-तमोरीणां च संगमम् ॥४०॥
यत्र विष्णुस्तपस्तप्त्वा बभूव लोकरक्षकः।
त्रिवेणीति समाख्याता तीर्थं पापहरं शुभम् ॥४१॥

हे देवी ! वाराह क्षेत्र से पूर्वोत्तर दो योजन (१६ माइल करीब) में रुद्रवारिनद एवं भद्रवारिनद का तमोरिनद के साथ संगम है। इस त्रिवेणी को नदत्रिवेणी कहा जाता है। यह मङ्लप्रद तीर्थ है, संपूर्ण पापों को नष्ट करने वाला है। यहीं रहकर भगवान् विष्णु ने भगवान् पिण्डेश्वर की तपस्या की थी, जिसके प्रभाव से भगवान् विष्णु लोक-रक्षक हुए।

तस्मादुत्तरतः शैले भद्राक्षाणां वनं महत्।
भद्रवारिर्नाम नदो वनात्तस्माद्विनिर्गतः ॥४२॥
रुद्राक्षमूलादुत्पन्नो रुद्रवारिर्नदः परः।
चैद्यदेशात्समायातो नदराजस्तथापरः ॥४३॥

नद त्रिवेणी से उत्तर के तरफ विद्यमान शैल में भद्राक्षों का बृहत् वन है, उस वन से भद्रवारि नाम का नद निकलता है। नद त्रिवेणी से दक्षिण के तरफ विद्यमान पर्वत पर रुद्राक्ष वन है, रुद्राक्ष वन से रुद्रवारि नामका नद निकलता है। चैद्य देश (चीन) के तरफ से (तिव्वत से) कनेक पर्वतों के शिखरों को भेदन करता हुआ तमोरि नाम का नद निकलता है। तमोरि नदराज है।

तमोरिनाम विख्यातस्तुहिनाचलभेदकः।
दुःखशोकादयः सर्वे तमोगुणसमुद्भवाः ॥४४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अज्ञानं च तमः प्रोक्तं तस्य विध्वंसकारकः ।
रुद्रवारि-भद्रवारि-तमोरीणां च सङ्गमे ॥४५॥
यः स्नाति मनुजो भक्त्या सर्वपापैर्विमुच्यते ।

तमोरि नाम से विख्यात वह नदराज हिमालय पर्वत श्रृङ्गों से उत्तर के तरफ से, हिमालय के श्रृङ्गों को भेदन करता हुआ निकलता है । दुःख शोक आदि सभी तमोगुण से उत्पन्न होते हैं, अज्ञान को ही तम कहते हैं, उस तम को नदराज तमोरि विध्वंस कर देता है, तम का शत्रु है । रुद्रवारि, भद्रवारि, तमोरि इन तीनों के संगम को नद-त्रिवेणी कहते हैं । इन तीनों के संगम में जो मनुष्य भक्तिपूर्वक स्नान करता है, वह मनुष्य संपूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है ।

"भद्राक्षधारणं यो वै कुर्वन्ति मनुजा भुवि ॥४६॥
वीरभद्रस्य देवस्य प्रियास्ते नात्र संशयः ।
भद्राक्षादपि रुद्राक्षं श्रेष्ठाच्छ्रेष्ठतरं भुवि ॥४७॥
असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्राः सन्ति भूतले ।
रुद्राक्षधारणेनैव सन्तुष्टास्ते भवन्ति हि ॥४८॥

जो मनुष्य भद्राक्ष को धारण करते हैं, वे वीरभद्र के प्रिय होते हैं, इसमें संशय नहीं है । भद्राक्ष से भी रुद्राक्ष श्रेष्ठतर हैं । पृथिवीतल में असंख्य, सहस्रों रुद्र हैं, रुद्राक्ष धारण करने मात्र से वे सब संतुष्ट होते हैं ।

पिण्डेश्वरोत्तारे देशे योजनत्रयदूरतः ।
शैलश्रृङ्गे स्थितः शम्भुर्ब्रह्माण्डेश्वरसंज्ञितः ॥४९॥
ब्रह्माण्डसृष्टिकाले तु ब्रह्मणा स्थापितः पुरा ।
ब्रह्माण्डेश्वर इत्युक्तस्तेनैव परमेश्वरः ॥५०॥
तस्य दर्शनमात्रेण सर्वपापक्षयो भवेत् ।
वाञ्छितानि च सिद्ध्यन्ति नराणां भक्तिशालिनाम् ॥५१॥

हे देवी ! भगवान् पिण्डेश्वर के मन्दिर से उत्तर तीन योजन (२४ माइल) की दूरी पर हिमालय-पर्वत-श्रृङ्ग में ब्रह्माण्डेश्वर शिव हैं ! ब्रह्माण्ड-सृष्टि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समय में पिण्डेश्वर से वर-प्रसाद के लिए रुद्राक्षारण्य में पधारे हुए ब्रह्माजी ने उन्हें स्थापित किया है, और उन्होंने ही उनका नाम ब्रह्माण्डेश्वर रखा है। ब्रह्माण्डेश्वर के दर्शन मात्र से सारे पाप नष्ट होते हैं, और अभीष्ट सिद्धि हो जाती है, भक्ति-भावना से उनकी आराधना करना मनुष्यों के लिए श्रेयष्कर है।

तस्यैवोत्तरभागे तु योजनद्वयदूरतः।
तिलेश्वर[२] इति ख्यात आस्ते श्रीत्रिपुरान्तकः ॥५२॥
तस्यापि दर्शनं देवि! सर्वाभीष्टप्रदायकम्।
सर्वारिष्टप्रशमनं शिवसायुज्यदायकम् ॥५३॥

ब्रह्माण्डेश्वर से उत्तर के तरफ करीब दो योजन (१६ माइल) की दूरी पर तिलेश्वर नाम से ख्यातिप्राप्त त्रिपुरान्तक शिव हैं। इनका दर्शन संपूर्ण अभीष्ट को प्रदान करने वाला है, संपूर्ण अरिष्टों को शमन करने वाला है, शिवसायुज्य प्रदान करने में समर्थ है।

पिण्डेश्वरस्य वायव्ये शैलश‍ृङ्गे स्थिता प्रिये!।
दुर्गा नाम महादेवी नृणां दुर्गतिनाशिनी ॥५४॥
कालिकेति समाख्याता शीताचलकृताश्रया।
तस्याः पश्चिमतस्तिस्रो जलधारा विनिर्गताः ॥५५॥
त्रिपथा नाम विख्याता स्वयं देव्या विनिर्मिता!
स्वाभिषेकार्थमेवादौ नदी परमपावनी ॥५६॥
किञ्चिद्दूरं ततो गत्वा पश्चिमायां महावने।
अदृश्यतां पुनर्याति नृणां पापक्षयङ्करी ॥५७॥
तस्यां स्नात्वा वरारोहे! कालिकां भक्तिभावतः।
पूजयित्वा च विधिवद् गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥५८॥

---

१. २. ब्रह्माण्डेश्वर, तिलेश्वर दोनों मन्दिर भग्नावशेष रूप में कोशी अञ्चल, धनकुटा जिला में हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पायसान्नैश्च देवेशि ! श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
सर्वान् कामानवाप्येह सर्वसौभाग्यसंयुतः ॥५९॥
दुर्गा सायुज्यमाप्नोति देहान्ते नात्र संशयः ।

[1]हे प्रिये ! पिण्डेश्वर से वायव्य दिशा में पिण्डेश्वर के समीप में ही पर्वत के ऊपर दुर्गा नाम की महादेवी विराजमान हैं, और मानवों की दुर्गति विनाश करती हैं । कालिका नाम से भी भगवती की ख्याति है, शीताचल (हिमालय) में निवास करती हैं । इनके पश्चिम तीन जलस्रोत प्रकट हुए हैं, जिनका नाम त्रिपथा है । स्वाभिषेक के लिए (स्वयं स्नान करने के लिए) इन्हें भगवती ने निर्माण किया । परम पवित्र त्रिपथा नदी तुल्य हैं । मनुष्यों के पापों को दूर करने वाली त्रिपथा कुछ दूर बह कर पश्चिम महावन में विलुप्त हो जाती हैं । हे वरारोहे ! त्रिपथा में स्नान कर कालिका को भक्ति-भावना से विधिपूर्वक धूप दीप नैवेद्य पायसान्न (खीर-मिठाई) आदि निवेदन कर पूजा करने वाला व्यक्ति, संपूर्ण कामनाओं को प्राप्त करता है, संपूर्ण सौभाग्य से युक्त होता है और देहान्त में दुर्गासायुज्य प्राप्त करता है, इसमें संशय नहीं है ।

रुद्राक्षारण्यतो देवि ! दक्षिणे योजनत्रये ॥६०॥
कौशिक्याः पूर्वभागे तु सार्द्धयोजनदूरतः ।
कदम्बारण्यमित्युक्तं क्षेत्राणामुत्तमोत्तमम् ॥६१॥

हे देवी ! हे ऋषीश्वरों ! रुद्राक्षारण्य-अन्तर्गत, रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र (विजयपुर) पिण्डेश्वर से दक्षिण दिशा के तरफ तीन योजन (२४ माइल भगभग) की दूरी में, एवं कौशिकी गङ्गा से सार्ध योजन (१६ माइल-लगभग) की दूरी पर से कदम्बारण्य आरम्भ हो जाता है । पवित्र पुण्य क्षेत्रों में कदम्बारण्य क्षेत्र उत्तमोत्तम क्षेत्र है ।

तस्मिन्नरण्ये देवेशि ! कैलासादागतः शिवः ।
कैलासपतिरित्येव प्रसिद्धो धरणीतले ॥६२॥

---

1. दुर्गा देवी-महाकाली हाल (दन्तकाली) नाम से परिचित हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थितो वेत्रावतीतीरे पश्चिमे परमेश्वरः ।
स्नात्वा वेत्रावतीनद्यां कैलासपतिमीश्वरम् ॥६३॥
स्नापयित्वा रुद्रमन्त्रैः पूजयित्वा यथाविधि ।
स्तुत्वा च विविधैः स्तोत्रैः कैलासपतिमीश्वरम् ॥६४॥
कैलासपतिमासाद्य कैलासं लोकमश्नुते ।

हे देवेश्वरी ! उस कदम्बारण्य में कैलाश से आये हुए शिव विराजमान हैं। कैलाशपति नाम से ही पृथिवीतल में विख्यात हैं। वहाँ वेत्रावती नाम की पवित्र नदी है, उसी नदी के पश्चिम तीर में कैलाशपति प्रसिद्ध हैं। वेत्रावती नदी में स्वयं स्नान कर, भगवान् कैलाशपति शिव को भी स्नान करवा कर रुद्रमन्त्र, रुद्राष्टाध्यायी से विधिपूर्वक जलधाराभिषेक करके विविधोपचार द्रव्यों से पूजा कर नाना स्तोत्रों से स्तुति करने वाला व्यक्ति कैलाश लोक को प्राप्त होता है।

तस्योत्तरे क्रोशमात्रे रणकालीति विश्रुता ॥ ६५ ॥
विराजते महादेवी सर्वाभीष्ट फलप्रदा ।"
"पुरा देवासुरे युद्धे देवानां जय हे तवे ॥ ६६ ॥
निजघान महादेवी दैत्यदानवराक्षसान् ।
त्रिदसान्पालयामास दैत्यदानवषीडितान् ॥ ६७ ॥
तेनैव रणयालीति ख्यातिं लोके समागता ।
तत्र स्थितां महादेवीं तां दृष्ट्वा रणकालिकामम् ॥ ६८ ॥
पूजाञ्च महतीं कृत्वा पायशान्नपुरः सराम् ।
सर्वान्कामानवाप्नोति मनुजो नात्र संशयः ॥ ६९ ॥

हे पार्वती ! कैलाशपति से उत्तर लगभग एक कोश की दूरी पर रणकाली नाम से ख्याति प्राप्त महादेवी विराजमान हैं, रणकाली संपूर्ण कामनाओं को

---

१. कदम्बारण्य का मूल स्थान रङ्गेली कदमहा मठ है। रुद्राक्षारण्य के समय से कौशिकी गङ्गा आज लगभग २० माइल पश्चिम से वह रही हैं। कोशी, मोरङ में रङ्गेली स्थान प्रसिद्ध है, रणकाली से ही रङ्गेली नाम पड़ा है। देवीका मन्दिर बाजार में ही है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्ण कर देती हैं। पहले, देवासुर संग्राम के समय में, देवता पक्ष को लेकर, देवदल को विजयी बनाने के लिए महादेवी रणकाली ने दैत्य, दानव, राक्षस अनेकों को मारा। दैत्य और दानव तथा राक्षसों से पीड़ित देवताओं की रणकाली ने रक्षा की। इसीसे भगवती का रणकाली नाम विख्यात हुआ। रणकाली का दर्शन करके पायशान्न, मिष्टान्न आदि एवं फल फूल धूप दीप गन्ध उपहारों को निवेदन करके, भगवती का जो मनुष्य आराधना करता है, वह मनुष्य सभी कामनाओं को प्राप्त करता है।

तस्य कैलासनाथस्य दक्षिणेत्वविदूरतः।
भैरवो धनपालाख्यः कदम्बवनपालकः ॥ ७० ॥
अवश्यमेव द्रष्टव्यो धनपालः शरीरिणा।
अदृष्ट्वा धनपालं यः कैलासपतिमर्चयेत् ॥ ७१ ॥
तस्य पूजा भवेद्देवि! निष्फला नात्र संशयः।
तस्मात्तं पूजयेदादौ धनपालं धनाधिपम् ॥ ७२ ॥
गन्धपुष्पोपहारैश्च पायशान्नैश्च सादरम्।"

कदम्बारण्य का मूल स्थान कैलाश नाथ से थोड़ी ही दूरी में दक्षिण के तरफ धनपाल नाम के भैरव हैं। धनपाल धनाध्यक्ष हैं, धनके लिए धनपाल की अर्चना विशेष होती है। धनपाल भैरव कदम्बारण्य के वनपाल (वन संरक्षक) हैं। मानव मात्र को धनपालका दर्शन आवश्यक है। हे देवी! धनपाल भैरव का दर्शन पहले करके कैलाशपति का दर्शन करना चाहिए। धनपाल का दर्शन विना किये ही कैलाशपति का दर्शन जो करता है उसका फल उसे कुछ नहीं मिलता है, श्रम व्यर्थ होता है। अतः धनपाल भैरव को श्रद्धा भक्ति पूर्वक प्रथम पूजा करना आवश्यक है। पूजा में चन्दन अक्षत, फूल, जल, धूप, वत्ती, फल, पायशान्न, मिष्टान्न, अत्तर, सुगन्धि आदि होना भी आवश्यक है।[1]

---

१. धनपाल गढ़ी कोशी अञ्चल, मोरङ जिला में प्रसिद्ध हैं। जीर्ण शीर्ण भग्नावशेष मात्र जीवित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वस्यां शिवगङ्गायास्तस्मिन् पर्वतसानुनि ॥ ७३ ॥
दानवारिरितिख्यातो भैरवो वनपालकः ।
यस्य स्मरणमात्रेण सिंहादीनां भयं नहि ॥ ७४ ॥

हे देवी ! रुद्राक्षारण्य पञ्चकोशी क्षेत्र विजयपुर के पास ही, शिवगङ्गासे पूर्व पर्वत पर ही दानवारि (दानवों के शत्रु) वनपाल भैरव विराजमान हैं। इनका स्मरण मात्र करने से भी भयावह रुद्राक्षारण्य में वन्यहिंसक पशुओं से भय नहीं होता है । दानवारि भैरव रुद्राक्षारण्य के वनपाल हैं[1] ।

एवं विधान्यनेकानि सन्ति क्षेत्राणि पार्वति ! ।
रुद्राक्षकाननस्यास्य परितः सर्वतोदिशम् ॥ ७५ ॥

हे देवी ! तुमने रुद्राक्षारण्य के तीर्थों के बारे में पूछा था । रुद्राक्षारण्य पञ्चकोशी क्षेत्र के आश पाश के ही तीर्थों का और देवी देवताओं का परिचय इस तरह से सक्षिप्त रूप में मैंने तुम्हे सुना दिया । रुद्राक्षारण्य के चारो तरफ ऐसे असंख्य तीर्थ, देवी, देवता, क्षेत्र आदि हैं ।

पवित्राणि महार्हाणि कानिचित्कथितानि ते ।
देवाश्च वहवः सन्ति सर्वाभीष्टफलप्रदाः ॥ ७६ ॥

हे देवी ! रुद्राक्षारण्य पञ्चकोशी के आश पाश के थोड़े से पवित्र एवं प्रभावशाली तर्थ क्षेत्रों का वर्णन मैंने तुन्हे सुनाया । संपूर्ण रुद्राक्षारणम में तो असंख्य देवी देवता नदी धारा प्रपात कुण्ड सरोवर आदि हैं, और सभी कामनाओं को पूर्ण करने में तथा मुक्ति प्रदान करने में समर्थ हैं ।

तत् सर्वं विस्तराद्देवि ! शक्यते केन वर्णितुम् ।
संग्रहेण महादेवि ! कथितं ते वारनने ! ॥ ७७ ॥

हे देवी ! हे वरानने ! कुछ तीर्थ क्षेत्रों का संग्रह मैंने तुम्हे सुनाया, रुद्राक्षारण्य के सभी तीर्थ स्थानों का वर्णन कोई नहीं कर सकता है ।

---

१. पिण्डेश्वर से पूर्वोत्तर पर्वत शिखर पर दानवारि भैरव हैं। स्थानीय जनता दानावारी से परिचित है । स्थान मात्र है, भग्नावशेष है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षकाननाख्यस्य क्षेत्रस्यास्य महेश्वरि ! ।
क्षेत्रपालो भीम-सेनस्तमादौ पूजयेत्ततः ॥ ७८ ॥
पश्चात् पिण्डेश्वरं देवं तदावरणदेवताः ।
पूजयेत् प्ररमेशानि ! सर्वाभीष्टार्थ सिद्धये ॥ ७९ ॥

हे महेश्वरी ! रुद्राक्षारण्य के क्षेत्रपाल देवता भीमसेन (भयानक सेना से वा अधिक सेना से संपन्न) है। भीमसेन का दर्शन सबसे पहले करना आवश्यक है। भीमसेन का दर्शन पूजा आदि कर लेने के बाद भगवान् ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक, अमृतपिड पिण्डेश्वर शिव का दर्शन करना चाहिये। पिण्डेश्वर का दर्शन करले ने के बाद पिण्डेश्वर आवरण देवताओं का दर्शन करना उचित है। इस दर्शन पूजन क्रम से जो रुद्राक्षारण्य का दर्शन करता है, उसकी अभीष्ट सिद्धि हो जाती है, अरीष्ट समन हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं है[1]।

इति ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वयानघे ! ।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं सर्वाघौघविनाशनम् ॥८०॥
सर्वाभीष्टप्रदं देवि ! शिवसायुज्यदायकम् ।
रहस्याति रहस्यं च गोप्याद्गोप्यतरं प्रिये ! ॥८१॥
तव स्नेहान्मयाख्यातं कथितं नहि कस्यचित् ।
अतः परं महादेवि ! किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥८२॥

हे पापरहिते ! हे महादेवी ! तुमने रुद्राक्षारण्य के विषय में हम से जो पूछा वह यहाँ तक इस तरह से हमने तुम्हें सुनाया (उत्तर दिया) रुद्राक्षारण्य माहात्म्य सभी पापों को नष्ट करने वाला है। सभी अभीष्टों को प्रदान करने वाला है, शिव सायुज्य देने वाला है। हे प्रिये ! रुद्राक्षारण्य माहात्म्य अति रहस्यमय[1] है। रुद्राक्षारण्य अति गोपनीय है (आजतक गुप्त ही रहा) इसे नष्ट होने से बचाना, पानी, ओश, गर्मी, कीड़े, मकोड़ों से इस पुस्तक को बचाये रखना,

१. भीमसेन का मन्दिर विजयपुर बाजार में ही है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब इसकी रक्षा तुम्हारे हाथों पर निर्भर है। तुम्हारे स्नेह से ही मैंने तुम्हें सुनाया है, आज तक किसी को नहीं सुनाया था।[1] हे महादेवी! बताओ, अब तुम क्या सुनना चाहती हो? जो कुछ तुम्हें पूछना है, पूछो! मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्यमाहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां कौशिक्यादिरुद्राक्षारण्य-क्षेत्रवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

अथ अष्टादशोऽध्यायः

देव्युवाच

देवेश! जगतामीशः! पञ्चब्रह्ममय! प्रभो।
वृन्दारकेन्द्रवन्द्याङ्घ्रे! वन्दारुजनवत्सल! ॥१॥
त्वत्तः श्रुतं मया पूर्वं रुद्राक्षारण्यवैभवम्।
त्रिपुराणाञ्च संहारो रुद्राक्षोत्पत्तिरेव च ॥ २ ॥
अमृतोत्पादनं चैव पिण्डेश्वरसमुद्भवः।
तदावरणदेवाश्च तीर्थं सारस्वतादिकम् ॥ ३ ॥
कौशिक्याश्चैव माहात्म्यं क्षेत्रं वाराहमेव च।
त्रिवेण्याश्चैव माहात्म्यं सर्वकल्मषदारणम् ॥ ४ ॥
ब्रह्माण्डेश्वरमुख्याश्च रुद्राक्षारण्यमध्यगाः।
कदम्बकाननं चैव कैलासपति-वैभवम् ॥ ५ ॥
रणकालीस्वरूपञ्च धनपालस्य वैभवम्।
दानवारेर्भैरवस्य भीमसेनस्य सत्कथा ॥ ६ ॥

---

1. अयुर्वैदिक रुद्राक्ष शीर्षक लेख देखें, रुद्राक्षों के रहस्य खुल जायेंगे। हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति रुद्राक्षारण्य पुस्तक पढ़ें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भद्राक्षादपि रुद्राक्षं विशिष्टं भवतोदितम् ।
रुद्राक्षाणां स्वरूपन्तु संग्रहेण त्वयोदितम् ॥ ७ ॥

देवी पार्वती प्रश्न करती हैं ।—

हे देवेश ! हे जगत्पते ! हे नित्यत्व प्राप्त पञ्च परमाणुमय ब्रह्म ! हे प्रभो ! आप देवताओं से वन्दयचरण हैं, हे प्रणतपालक ! आपसे मैंने सर्व प्रथम रुद्राक्षारण्य माहात्म्य कथा सुनी है । त्रिपुर का संहार, रुद्राक्षोपत्ति, अमृत उत्पादन, पिण्डेश्वरोत्पत्ति, पिण्डेश्वर-परिकर देवता, सरस्वती तीर्थ आदि का वर्णन सुन चुकी हूँ । और कौशिकी का माहात्म्य, वाराह क्षेत्र का माहात्म्य, संपूर्ण कामनाओं को प्रदान करने वाली त्रिवेणियों का माहात्म्य, रुद्राक्षारण्य के मध्यस्थित ब्रह्माण्डेश्वर प्रमुख अनेक देवताओं का माहात्म्य एवं कदम्बारण्य के कैलाशपति का माहात्म्य, धनपाल का माहात्म्य, रणका-कीला माहात्म्य तथा भीमसेन विषयक सदुक्ति और दानवारि भैरव परिचय की कथा मैंने सुन ली । और आपने भद्राक्ष से भी रुद्राक्ष विशिष्ट हैं कहा । संग्रह रूप में सामान्यतः रुद्राक्षों से मैं परिचित हो गई ।

इदानीं श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण तवाननात् ।
कति वक्त्राणि जायन्ते रुद्राक्षाणि महीतले ? ॥ ८ ॥

किन्नामानि च देवेश ! कीदृग्रूपाणि वा प्रभो ।
कथं धार्याणि मनुजै रुद्राक्षाणि महेश्वर ! ? ॥ ९ ॥
केषु स्थानेषु धार्याणि कति संख्यानि वा विभो ! ? ।
रुद्राक्ष-धारणफलं तेषां दानफलं तथा ॥ १० ॥

रुद्राक्षारण्य-वासस्य फलञ्च त्रिपुरान्तक ! ।
केभ्यो देयानि देवेश ! रुद्राक्षाणि महीतले ? ॥ ११ ॥
केभ्यो वा न प्रदेयानि मानवेभ्यो महेश्वर ! ? ।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं श्रवणे चापि यत्फलम् ? ॥ १२ ॥
पठने वा महादेव ! सर्वं मे वक्तुमर्हसि ? ।
यद्यहन्ते प्रियतमा दयां कुरु कृपानिधे ! ॥ १३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे भगवन् ! अब मैं आपसे रुद्राक्षों के विषय में—'पृथवीतल में कितने मुख तक के रुद्राक्ष मिलते हैं ? उनका नाम क्या है ? उनके रूप कैसे-कैसे होते हैं ? उन्हें किस विधि से पहिरा जाता है ? किन-किनअ ङ्गों में कितने और कितने मुख के रुद्राक्षों को पहिरना उचित है ? उनको धारण करने से कैसा फल प्राप्त होता है ? उन्हें दान देने से क्या फल मिलता है ? रुद्राक्षारण्य में निवास करने से क्या फल मिलता है ? कैसे लोगों को रुद्राक्ष देना उचित है ? कैसे लोगों को नहीं देना चाहिए ? रुद्राक्षारण्य माहात्म्य श्रवण जन्य फल कैसा प्राप्त होता है ? और वाँचने से कैसा फल मिलता है ?' इत्यादि प्रश्नों का उत्तर सूनना चाहती हूँ । हे त्रिपुरान्तक ! हे शिव ! यदि मैं आपकी प्रियातमा हूँ तो आप दया करें ? आप दयानिधि हैं ।

सूत उवाच

इति पृष्टो महादेवः पार्वत्या प्रियया प्रभुः ।
रुद्राक्षाणां स्वरूपादि प्रतिवक्तुं प्रचक्रमे ।। १४ ।।

सूत जी कहते हैं ।—

इस तरह से अपनी प्रिया पार्वती से पूछे गए महादेव जी भी रुद्राक्षों के स्परूपों को कहने लगे, बताने लगे ।

शिव उवाच

श्रृणु देवि ! प्रवक्षामि यन्मां पृच्छसि शोभने ! ।
रुद्राक्षाणां स्वरूपञ्च प्रभावश्च वदामि ते ।। १५ ।।
रुद्राक्षस्य प्रभेदश्च भद्रमिन्द्राक्षमुच्यते ।
इन्द्राक्षस्य विभेदैव सहस्राक्षश्च कथ्यते ।। १६ ।।
वर्णेषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः गुणाधिक्येन कर्मणा ।
तथैव देवि ! रुद्राक्षं, भेदेषु गुणकर्मणा ।। १७ ।।

भगवान् शिव कहते हैं ।

हे सुन्दरी ! हे देवी ! तुम मुझे जो पूछ रही हो तो सो सुनो, मैं बताता हूँ । रुद्राक्षों के प्रभाव और स्वरूपों को इस तरह से तुम समझो––रुद्राक्ष का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विकल्प भद्राक्ष है, और भद्राक्ष का विकल्प इन्द्राक्ष है तथा इन्द्राक्ष का विकल्प सहस्राक्ष है। वर्णो में गुण और कर्मों से जैसे ब्राह्मण श्रेष्ठ होता है वैसे ही गुण और कर्मों से रुद्राक्ष भी सभी अपने विकल्पों से श्रेष्ठ है।

बहूनि सन्ति रूपाणि रुद्राक्षाणां वरानने !।
तानि सर्वाणि वक्ष्यामि विस्तरेण तवानघे ! ॥ १८ ॥

हे सुन्दरी ! रुद्राक्षों के अनेक रूप हैं, उन सभी भेदों को विस्तार पूर्वक मैं तुम्हें बताता हूँ। एकाग्र हो कर तुम सुनो।

एकवक्त्रं समारभ्य द्वात्रिंशद्वदनावधि।
कृतादिषु प्रजायन्ते रुद्राक्षाणि महेश्वरि ! ॥ १९ ॥
कलौ तु पापबाहुल्यात् नृणां दौर्भाग्ययोगतः।
तावद्वक्त्राणि जायन्ते रुद्राक्षाणां न पार्वति ! ॥ २० ॥
एकं वदनमारभ्य षोडशाष्टादशावधि।
कदाचिद् देवि ! जायन्ते रुद्राक्षाणि महीतले ॥ २१ ॥

हे महेश्वरी ! एक मुख से लेकर बत्तीस मुख तक के रुद्राक्ष सत्यादि युग में होते थे। किन्तु कलियुग में पाप बढ़ गया है, मनुष्यों में पाप बाहुल्य हो गया है, अतः मनुष्यों के दुर्भाग्य से उतने मुख तक के रुद्राक्ष नहीं होते हैं। हे पार्वती ! अब एक मुख से लेकर चौदह मुख तक के रुद्राक्ष होते हैं, कभी-कभी सोलह और अठारह मुख तक के रुद्राक्ष मिल जाते हैं।

गौरीशङ्करसंज्ञं च तथा गोमुखसंज्ञितम्।
रुद्राक्षं जायते देवि ! कदाचिद्दैवयोगतः ॥ २२ ॥

हे देवी ! गौरीशङ्कर और गोमुख नाम के रुद्राक्ष दैवयोग से यदा कदा किसी-किसी वृक्ष में फलते हैं। किसी-किसी को मिल जाते हैं।

एकवक्त्रं हि रुद्राक्षं परब्रह्ममयं स्मृतम्।
एकमेव परं ब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥२३॥
एकवक्त्रं हि रुद्राक्षं येन दृष्टं महात्मना।
तेन साक्षात्कृतं देवि ! परं ब्रह्म न संशयः ॥२४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न पुनर्जायते योनौ जीवन्मुक्तः स उच्यते ।
बहुजन्मार्जितैः पुण्यैर्जपहोमार्चनादिभिः ॥२५॥
तपोभिर्विविधैश्चैव कृच्छ्रचान्द्रायणादिभिः ।
क्षीणाऽभद्रसहस्राणां शान्तानां समदर्शिनाम् ॥२६॥
एकवक्त्रं हि रुद्राक्षं जायते दृष्टिगोचरम् ।
एकवक्त्रं हि रुद्राक्षं तस्मात् सर्वोत्तमोत्तमम् ॥२७॥
अद्वितीयं परं ब्रह्मस्वरूपं वृक्षसम्भवम् ।
निष्कलङ्कं चित्-स्वरूपं प्रकृत्या रहितं परम् ॥२८॥

हे देवी ! एक (१) मुख रुद्राक्ष परब्रह्ममय कहा जाता है। सत्य चैतन्य स्वरूप परब्रह्म एक ही होते हैं, एक मुख रुद्राक्ष उन्हीं का प्रतीक है। एक ब्रह्मस्वरूप एक मुख वाला रुद्राक्ष जिस महात्मा ने देखा, उसने परब्रह्म को ही दर्शन किया, इसमें संशय नहीं है। वह एक मुख रुद्राक्ष को दर्शन करने वाला व्यक्ति को फिर जन्म, मरण, जरा व्याधि युक्त संसार में गोता खाने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है, वह मुक्त हो जाता है। बहुजन्मार्जित पुण्य कर्मों (जप होम, तप, अर्चना, कृच्छ्रचान्द्रायण) के फल से जिनके पाप नष्ट हो गए हैं, ऐसे व्यक्ति जो शान्त और समदर्शी हो गए हैं, उन्हें मात्र एक मुख रुद्राक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। इसीलिए एक मुख रुद्राक्ष सर्वोत्तम है। एक मुख रुद्राक्ष, अद्वितीय परंब्रह्म स्वरूप है, वृक्षसंभव ब्रह्म है, वृक्षसंभव महा-रत्न है, परात् परतर है, प्रकृति से रहित है, चित्-स्वरूप है, निष्कलङ्क साक्षात् ब्रह्म स्वरूप है।

द्विवक्त्रं देवि ! रुद्राक्षं शिवशक्त्यात्मकं विदुः ।
मायाशबलितं ब्रह्म जगत्कारणमुच्यते ॥२९॥
तस्य धारणतो जन्तुर्भुक्तिं मुक्तिञ्च विन्दति" ।

हे देवी ! दो मुख (२) वाला रुद्राक्ष, शिव और शक्ति स्वरूप है। माया से संयुक्त परब्रह्म स्वरूप है, जगत् का कारण बीज स्वरूप है। इसके धारण से मानव भुक्ति और मुक्ति प्राप्त करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वक्त्र-त्रयान्वितं देवि ! रुद्राक्षं त्रिगुणात्मकम् ॥३०॥
इच्छा-ज्ञान-क्रियारूपं शक्तित्रयमयं विदुः ।
त्रिमूर्तिरूपं देवेशि ! त्रैलोक्योत्पत्तिकारणम् ॥३१॥
त्रिकालज्ञानदं पुंसां त्रिवर्गफलदायकम् ।
तस्य धारणमात्रेण त्रिपुरारिर्भवेन्नरः ॥३२॥

हे देवी ! तीन मुख (३) वाला रुद्राक्ष सत्त्व, रज, तम स्वरूप त्रिगुणात्मक है। इच्छा, ज्ञान, क्रिया रूप तीनों शक्तिमय है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव स्वरूप त्रिमूर्तिमय है। तीनों लोक का उत्पत्ति कारण है। मानवों को भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान देने वाला है। त्रिवर्ग धमार्थ काम रूप फल देने वाला है। तीन मुख रुद्राक्ष धारण करने से मात्र भी मानव त्रिपुरारि तुल्य हो जाता है।

चतुर्मुखं च रुद्राक्षं चतुर्मुखमयं शुभे ! ।
चतुर्वेद-स्वरूपश्च चतुराम्नायरूपकम् ॥३३॥
चतुर्वर्गप्रदं पुंसां चतुर्वर्णैः प्रपूजितम् ।
चतुर्भिराश्रमैर्नित्यं सेवनीयं शुभार्थिभिः ॥३४॥
तस्य धारणतो देवि ! चतुर्वर्गफलं भवेत् ।

हें देवी ! चार (४) मुख वाले रुद्राक्ष साक्षात् चतुर्मुख ब्रह्मा हैं। साक्षात् चार वेद हैं। साक्षात् चार धर्मशास्त्र (आन्विक्षीकी, त्रयी, वार्ता, धर्मशास्त्र) हैं। मानवों को 'धर्म अर्थ काम मोक्ष' चतुर्वर्ग देने वाले हैं। चारों वर्ण 'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र' से पूजित हैं। चारों आश्रम 'ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास' से पूज्य हैं। अपनी शुभ कामना करने वालों को चतुर्मुख रुद्राक्ष धारण करना आवश्यक है। हे देवी ! चार मुख रुद्राक्ष को धारण करने से चतुर्वर्ग फल प्राप्ति होती है।

पञ्च-वक्त्रं तु रुद्राक्षं पञ्चब्रह्ममयं प्रिये ! ॥३५॥
पञ्चवक्त्रात्मकं देवि ! पञ्चाक्षरमयं तथा ।
पञ्चभूतात्मकं गौरि ! पञ्चवाहस्वरूपकम् ॥३६॥
पञ्चकृत्यकरं देवि ! पञ्चस्यन्दमयं तथा ।
तस्य धारणमात्रेण पञ्चाननसमो भवेत् ॥३७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवी ! पांच (५) मुख वाला रुद्राक्ष पञ्चमुख ब्रह्मस्वरूप है। पञ्च-परमाणु स्वरूप ब्रह्म है। पञ्चमुख रुद्राक्ष मेरे पाँच मुख हैं। पञ्चाक्षर मन्त्र ॐ:-'नमः शिवाय, ॐ:, 'नमो विष्णवे, ॐ: 'नमे ब्रह्मणे' तुल्य हैं। पञ्चभूत 'पृथिवी, पानी, आग, हवा, आकाश' स्वरूप हैं। पञ्चवाह (शरीर में रहने वाले पाँच वायु-प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान) स्वरूप हैं। पञ्चकृत्यकर (गृहस्थ पञ्चवलि, पाञ्चायन, उत्क्षेपण, प्रक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन; आगमन स्वरूप पञ्च कर्म) हैं। पञ्चस्यन्द (पञ्चनद, पञ्चनाडी, पञ्चामृत) स्वरूप हैं। पञ्चमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति पञ्चानन तुल्य (मेरे समान) हो जाता है।

षडाननं तु रुद्राक्षं षडाननमयं स्मृतम्।
षडङ्गरूपं देवेशि ! षडाम्नायस्वरूपकम् ॥३८॥
षडङ्गशक्तिरूपञ्च षडङ्गमनुविग्रहम्।
षडाधारस्वरूपञ्च षड्वक्त्रोपरिसंस्थितम् ॥३९॥
षडूर्मिभञ्जनं देवि ! षड्वक्त्रत्वप्रदायकम्।
तद्धारणान्महेशानि ! षड्शक्तीनां भवेत्प्रियः ॥४०॥

हे देवी ! छ: (६) मुख वाला रुद्राक्ष, कार्तिकेय षडानन तुल्य हैं। हे देवेश्वरी ! छः मुख रुद्राक्ष षडङ्ग के शक्ति स्वरूप (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिषशास्त्र के शक्तिस्वरूप) हैं। षड्आम्नाय (ऋक्, यजु, साम, अथर्व, आयुर्वेद, धनुर्वेद) वा, ४ वेद एवं रामायण महाभारतादि इतिहास एवं धर्मशास्त्र) स्वरूप हैं। साक्षात् षडङ्ग स्वरूप हैं। योग प्रसिद्ध षड् आधार कमल चक्र स्वरूप हैं। उन रुद्राक्षों को कार्तिकेय स्वयं शिर में धारण करते हैं। छ: प्रकार के ऊर्मि (काम, क्रोध, लोम, मोह, मद मात्सर्य) को नष्ट करने वाले हैं। हे देवी ! छ: मुख रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति कार्तिकेय का सान्निध्य प्राप्त करता है। छ: मुख रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति छहों शक्तियों का (प्रभु-मन्त्र-उत्साह-दैहिक, दैविक, भौतिक) प्रिय होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दशाननं च रुद्राक्षं दश दिक्षु जयप्रदम् ।
दशावतारो भगवान् मुदा यत्रावतिष्ठते ॥४९॥
दशाशा दशदिक्पालाः संतुष्टा यस्य धारणात् ।
दशेन्द्रियकृतं पापं दर्शनादेव लीयते ॥५०॥

हे देवी ! दश (१०) मुख वाले रुद्राक्ष दशों दिशाओं में जय प्रदान करने वाले हैं। दशावतार (मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि) स्वरूप हैं, एवं दशों अवतार प्रसन्न होकर दश मुख रुद्राक्ष में रहते हैं। दश दिशा एवं दश दिक्पाल (इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, अनन्त, ब्रह्मा) संतुष्ट रहते हैं।

दशों इन्द्रियों से किये हुए सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। अतः दश मुख रुद्राक्ष का दर्शन करना एवं धारण करना आवश्यक है।

एकादशमुखं देवि ! रुद्राक्षं रुद्रविग्रहम् ।
एकादश महारुद्रा वीरभद्रादयः शुभे ! ॥५१॥
तस्य धारणतो नित्यं सन्तुष्टाः स्युर्न संशयः ।
असंख्याताः सहस्राणि स्वर्भूपातालचारिणः ॥५२॥
धारणाद्यस्य तुष्यन्ति ते रुद्रा नाऽत्र संशयः ।
एकादशीव्रतमिव लोकानां हितकारकम् ॥५३॥

हे देवी ! एकादश (११) मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात रुद्र के विग्रह हैं। एकादश महारुद्र वीरभद्र आदि (हर, त्र्यम्बक, रुद्र, मृगव्याध, अपराजित, कपाली, भैरव, शंभु, कपर्दि, वृषाकपि, वटु) सभी रुद्रगण एकादश मुख रुद्राक्ष को धारण करने मात्र से भी प्रसन्न होते हैं। स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में विचरण करने वाले असंख्य रुद्र हैं। वे सब रुद्र एकादश मुख रुद्राक्ष को धारण करने से सन्तुष्ट रहते हैं, इसमें संशय नहीं है। एकादशी व्रत के समान लोगों को हितकारक हैं।

द्वादशास्यं तथा देवि ! द्वादशादित्यरूपकम् ।
तथा द्वादशलिङ्गानां स्वरूपं नात्र संशयः ॥५४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा द्वादशमासानां ज्योतिश्चक्रनिवासिनाम् ।
नक्षत्रग्रहताराणां स्वरूपं परिकीर्तितम् ।।५५।।
यत्फलं प्राप्यते पुंभिर्द्वादशाक्षरविद्यया ।
तस्य धारणतो देवि ! द्वादशात्मा प्रसीदति ।।५६।।

हे देवी ! द्वादश (१२) मुख वाला रुद्राक्ष द्वादश आदित्य (सूर्य–१२ महीनोंके १२ धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, इन्द्र, विवस्वान्, पूषा, पर्जन्य, अंशु, भग, त्वष्टा, विष्णु) स्वरूप हैं । और १२ ज्योतिर्लिङ्ग (सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ॐ:कारेश्वर, वैद्यनाथ, भीमशंकर, रामेश्वर, नागेश्वर, विश्वेश्वर, त्र्यम्बकेश्वर, केदारेश्वर घुस्मेश्वर) के स्वरूप हैं, इसमें संशय नहीं है । द्वादश मुख रुद्राक्ष बारहों महीनों के स्वरूप हैं । एवं ज्योतिश्चक्र (आकाश) में विचरण करने वाले ग्रह, नक्षत्र, तारा आदियों के स्वरूप हैं । द्वादशाक्षर मन्त्र (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते गङ्गाधराय) जप करने से जो फल मिलता है, वह फल द्वादश मुख रुद्राक्ष को धारण करने से मात्र भी मिलता है । हे देवी ! द्वादश मुख रुद्राक्ष धारण करने से मात्र भी द्वादशात्मा (विष्णु) प्रसन्न होते हैं ।

त्रयोदशास्यं रुद्राक्षं विश्वेश्वर इति स्मृताः ।
विश्वे देवाः प्रसीदन्ति धारणादेव भामिनि ।।५७।।
तद्दर्शनाद्विनश्यन्ति महापातक-कोटयः ।
धारणात् स्पर्शनाद्वापि पूजनाद्वा महेश्वरि ।।५८।।

हे देवी ! त्रयोदश (१३) मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् विश्वेश्वर स्वरूप हैं । हे भामिनी ! तेरह मुख रुद्राक्ष को धारण करने मात्र से विश्वेदेवा प्रसन्न होते हैं । तेरह मुख रुद्राक्ष को धारण करने से अथवा दर्शन वा स्पर्शन मात्र करने से भी करोडों महापातक नष्ट हो जाते हैं । हे महेश्वरी ! पूजन करने का फल तो कहना ही क्या है ?

चतुर्दशास्यं रुद्राक्षं भुवनेश्वर-संज्ञकम् ।
चतुर्दशानां विद्यानां लोकानां चैव पार्वति ! ।।५९।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्राणां च मनूनाञ्च स्वरूपं वृक्षसम्भवम् ।
ब्रह्मबुद्धिप्रदं पुंसां दुःखदारिद्रचनाशनम् ।।६०।।
धारणीयं प्रयत्नेन चतुर्वर्गफलाप्तये ।

हे देवी ! चतुर्दश (१४) मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भुवनेश्वर नाम से परिचित है । और चौदहों विद्या (ऋक, यजु, साम, अथर्व । शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, पुराण, न्याय, मीमांसा, स्मृति), चौदहों लोक (भूः भुवः स्वः मह जन तप सत्य । अतल, वितल, सुतल, तलातल, महा-तल, रसातल, पाताल) और चौदहों मनु (स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, श्राद्धदेव, वैवस्वत, सावर्णिः, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, देवसावर्णि, इन्द्रसावर्णि) और चौदहों इन्द्र (हरि=यज्ञ, रोचन, सत्यजित्, त्रिशिख, विभु, मन्त्रद्रुम, पुरन्दर, वलि, अद्भुत, शंभु, वैधृत, ऋत-धामा, दिवस्पति, शुचि) के साक्षात् स्वरूप हैं। वृक्ष से उत्पन्न सर्व देवमय, विशिष्ट रत्नमय रुद्राक्ष हैं । ब्रह्मवुद्धि (वेदान्तादि दार्शनिक विद्यायुक्त विचार धारा) प्रदान करने में चौदह मुख रुद्राक्ष समर्थ हैं । और दुःख दारिद्रच दूर करते हैं । चतुर्वर्गों के फल चाहने वालों को प्रयत्न पूर्वक चौदह मुख रुद्राक्ष धारण करना चाहिए ।

अतः ऊर्ध्वं महादेवि सर्वं शिवमयं स्मृतम् ।।६१।।

हे देवी ! चौदह मुख से अधिक मुख के जितने भी रुद्राक्ष हैं, वे सब साक्षात् शिवस्वरूप हैं, यह सत्य है ।

गौरीशङ्करसंज्ञं तु रुद्राक्षमुभयात्मकम् ।
रुद्राक्षद्वयमीशानि ! परस्परसमन्वितम् ।।६२।।
रन्ध्रद्वयसमायुक्तं दृढमन्योन्यसंयुतम् ।
शिवशक्त्यात्मकं पुंसां सर्वकामफलप्रदम् ।।६३।।
दुर्लभं यस्य कस्यापि सुलभं पुण्यशालिनः ।
रुद्रस्यैव प्रसादेन लभ्यते नान्यथा शिवे ! ।।६४।।

हे देवी ! गौरीशङ्कर रुद्राक्ष आपस में दृढ़ता के साथ दो रुद्राक्ष जुटे रहते हैं । उनमें छिद्र (छेद) भी दो ही रहते हैं । गौरीशङ्कर रुद्राक्ष उभयात्मक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(शिव-शक्ति स्वरूप हैं, प्रजनन उत्पादन शक्ति प्रदान करने वाले हैं) शक्ति सम्पन्न हैं। सभी कामनाओं के पूर्ण करने वाले हैं। सर्वसाधारणों को दुलभ हैं। पुण्यवानों को सुलभ हैं। हे शिवे ! भगवान् रुद्र के प्रसाद से मात्र गौरीशंकर नाम वाले रुद्राक्ष मिलते हैं, हे देवी, इस बात को तुम सत्य समझो।

गोमुखाख्यं तु रुद्राक्षं स्थितं गोमुखवत् प्रिये !।
तद्धारणान्महादेवि ! गोसमृद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥६५॥

हे देवी ! गोमुख नाम वाले रुद्राक्ष गोमुख के तरह ऊपर के भाग में कुछ उभरे रहते हैं, इन गोमुख रुद्राक्षों को धारण करने से गोसमृद्धि (गोष्ठवृद्धि) होती है।

एते भेदास्तु देवेशि ! नृणां मोहाय कल्पिताः।
केवलं देवि ! रुद्राक्षं विजानीहि शिवात्मकम् ॥६६॥

हे देवेश्वरी ! रुद्राक्षों के उक्त जो भेद बताए गए हैं, उक्त जो भेद हैं, वे संपूर्ण भेद मानवों को मोहित करने के लिए बताए गए हैं। हे देवी ! तुम्हें इतना समझ लेना आवश्यक है, कि जितने भी, जैसे भी रुद्राक्ष हों वे सब साक्षात् शिवस्वरूप हैं।

यादृग्वा देवि ! रुद्राक्षं स्थूलं वा सूक्ष्ममेव वा।
धार्यते यदि मर्त्येन लभ्यते तेन मत्पदम् ॥६७॥
एकं वा बहुसंख्यं वा रुद्राक्षं मत्स्वरूपकम्।
यो धारयति देवेशि ! स मां धारयति ध्रुवम् ॥६८॥

हे देवी ! जैसे भी रुद्राक्ष हों, चाहे छोटे हों, चाहे बड़े, चाहे जितने भी मुख के हों यदि रुद्राक्ष को मानव धारण करता है तो वह धारण करने वाला व्यक्ति मेरे शिव स्वरूप को प्राप्त हो जाता है। और जो रुद्राक्ष धारण करता है, चाहे एक हो, चाहे अधिक हो वह व्यक्ति मुझे ही धारण करता है, यह मेरा कथन ध्रुवसत्य है।

इति सर्वं समाख्यातं विस्तरेण तवानघे !।
रुद्राक्षाणां प्रभेदं च तेषां रूपञ्च सुन्दरि ! ॥६९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवी ! हे सुन्दरी ! तुमने जो रुद्राक्ष के बारे में मुझसे पूछा था, उसके उत्तर में मैंने तुम्हें विस्तार पूर्वक यहाँ तक रुद्राक्ष के भेद एवं प्रभेदों को और उनके रूपों को सुनाया। अब रुद्राक्ष धारण और प्रदान विधि सुनाता हूँ, सुनो।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्य-
माहात्म्ये लक्ष्मीललित टीकायां रुद्राक्षभेद-तत्स्वरूपवर्णनं
नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

अथ ऊनविंशोऽध्यायः

शिव उवाच

रुद्राक्षाणां स्वरूपञ्च तेषां भेदाश्च कीर्तिताः।
अथ ते सम्प्रवक्ष्यामि रुद्राक्षाणाञ्च धारणम् ॥१॥

भगवान् शिव कहते हैं—

हे पार्वती ! रुद्राक्षों के स्वरूप और भेदों को मैंने तुम्हें सुनाया। अब रुद्राक्ष धारण विधि को सुनाता हूँ, तुम सुनो।

दन्तसंख्यानि धार्याणि कण्ठदेशे महेश्वरि !।
कला-संख्यानि भुजयो रवि-संख्यानि हस्तयोः ॥२॥
एकं शिखायां धार्यं वै चत्वारिंशच्च मस्तके।
कर्णयोरङ्गसंख्यानि धार्याणि परमेश्वरि ! ॥३॥
अष्टोत्तरशतं देवि ! हृदये धारयेद् बुधः।
द्विशरं त्रिशरं वापि पुच्छे पुच्छं मुखे मुखम् ॥४॥
व्यत्ययं नैव कुर्वीत कुर्वाणो रौरवं व्रजेत्।
एवं यो धारयेन्नित्यं स रुद्रो नात्र संशयः ॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवी ! कण्ठ में ३२ दाने रुद्राक्षों को धारण करना चाहिए। भुजाओं में (८+८=१६) आठ आठ (१६) दानों को धारण करना चाहिए। हाथों में (६+६=१२) छः छः (१२) दानों को धारण करना चाहिए। शिखा में एक (१) दाना धारण करना चाहिए। मस्तक में चालीस (४०) दानों को धारण करना चाहिए। कान में अङ्ग (वेदाङ्ग) संख्यक (३ × ३=६) तीन तीन छ, (६) दानों को धारण करना चाहिए।

हे देवी ! एक सौ आठ (१०८) दानों को हृदय में धारण करना चाहिए। माला निर्माण करते समय यह देख लेना आवश्यक है कि दानों के मुख-मुख संयुक्त हों और पुच्छ भाग पुच्छ भाग संयुक्त हों, चाहें माला दो तीन लरियों की बन जाय, कोई आपत्ति नहीं। माला पिरोते समय उलटपुलट न होनी चाहिए, अन्यथा धारण करने से धारण करने वाला रौरव नरक का भागी हो जाता है।

रुद्राक्षाणि महादेवि ! येभ्यो देयानि सुन्दरि।
येभ्यो वा न प्रदेयानि तदद्य कथयाम्यहम् ॥६॥

हे महादेवी ! रुद्राक्ष किसे देना उचित है, किसे अनुचित है ? दान योग्य पात्र कौनहै, कौन नहीं है ? इस विषय को हे सुन्दरी ! मैं सुनाता हूँ, तुम सुनो।

रुद्राक्षाणि प्रदेयानि मद्भक्तानां महात्मनाम्।
साधूनां समचित्तानां शान्तानां ब्रह्मवादिनाम् ॥७॥
मन्नामस्मरतां नित्यं मत्पूजानियतात्मनाम्।
ध्यायतां मत्पदाम्भोजं मन्मयं पश्यतां जगत् ॥८॥
मामेवानन्यभावेन भजतां सत्यवादिनाम्।
रुद्राक्षाणि महार्हाणि बृहन्ति च महान्ति च ॥९॥
प्रदेयानि वरारोहे ! ब्राह्मणानां विशेषतः।
अहं मद्भक्तरूपेण विचरामि महीतले ॥१०॥

हे देवी ! मेरे भक्तों को, महात्माओं को, सज्जन परकार्य साधक साधुओं को, समदर्शी शान्त चित्तजनों को, ब्रह्मवादियों को, नित्य मेरे नाम स्मरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करने वालों को, नित्य मेरी पूजा करने वालों को, मेरे चरण कमलों को ध्यान करने वालों को, शिवमय संपूर्णजगत् देखने वालों को, अनन्य भाव से मेरा भजन करने वालों को, सत्यवादियों को, 'छोटे, बड़े, बहुमूल्य, अमूल्य, चाहे जितने भी मुख के हों, चाहे जैसे भी हों, रुद्राक्ष देना योग्य है। विशेषत: ब्रह्मविद् जनों को देना योग्य है। मैं मेरे भक्तों के रूप में पृथ्वीतल में विचरण करता हूँ।

ये पूजयन्ति मद्भक्तान्मत्स्वरूपान् महेश्वरि !।
ते पूजयन्ति मामेव नात्र कार्या विचारणा ॥११॥

हे महेश्वरी ! जो मनुष्य मेरे भक्तों को पूजा करते हैं, वे मनुष्य साक्षात् मेरी ही पूजा करते हैं। इस तथ्य में विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

मद्भक्तपूजां हित्वा ये पाषाणादिषु पार्वति !।
मामर्चयन्ति मूढास्ते गतिस्तेषां न विद्यते ॥१२॥

मेरे भक्तों की पूजा (सेवा) को छोड़ कर हे पार्वती ! यदि कोई मूढ़ व्यक्ति पत्थरों की पूजा किया करता है तो वैसे व्यक्ति को कोई गति नहीं मिलती है।

वञ्चयित्वा तु मद्भक्ताँल्लोभाद्ये पापबुद्धयः।
रुद्राक्षाणि न यच्छन्ति तेषां नाशं करोम्यहम् ॥१३॥
मद्भक्तवञ्चका ये वै ज्ञेया मद्वञ्चकास्तु ते।
वञ्चनं चैव शाठ्यं च मद्भक्तेषुक्तन कारयेत् ॥१४॥
वञ्चनां चैव शाठ्यं च कार्पण्यं लोभमेव च।
विमुच्य, मम भक्तानां सेवा कार्या महेश्वरि ! ॥१५॥
अयाचितानि देयानि मद्भक्तानां वरानने !
रुद्राक्षाणि महादेवि ! श्रेयस्कामैर्नरोत्तमैः ॥१६॥

हे देवी ! लोभ के वशीभूत होकर जो पापबुद्धि मेरे भक्तों को रुद्राक्ष दान नहीं देता है, उसका मैं सर्वनाश करता हूँ। मेरे भक्तों को ठगने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्ति मुझे भी ठगने वाला है । अतः मेरे भक्तों को ठगना, छलना, शठता करना उचित नहीं है । ठगी, कृपणता, शठता, लोभ आदि को छोड़कर, हे महेश्वरी ! मेरे भक्तों की सेवा करना उचित है । हे वरानने ! बिना माँगे ही मेरे भक्तों को रुद्राक्ष देना चाहिए । इसमें दाता का कल्याण है ।

पापिभ्यः पतितेभ्यश्च पाखण्डिभ्यश्च सुन्दरि ! ।
अभक्तेभ्यश्च दुष्टेभ्यो दुराचारेभ्य एव च ॥१७॥
मद्भक्तनिन्दकेभ्यश्च मन्निन्दाकृद्भ्य एव च ।
रुद्राक्षाणि न देयानि, दत्त्वा पापमवाप्नुयात् ॥१८॥

हे देवी ! पापियों को, पाप कर्म (परपीडन) करने वालों को, पतित (सामाजिक मर्यादा उल्लङ्घन करने वालों) को, पाखण्डियों (समाज को भ्रष्ट करने वाला मत के अनुयायियों) को, ईश्वरत्व बुद्धि शून्य अभक्तों को रुद्राक्ष नहीं देना चाहिए, यदि देता है, तो देने वाला व्यक्ति महा पाप का भागी हो जाता है ।

रुद्राक्षधारणे देवि ! यत्पुण्यं समुदीरितम् ।
तत्पुण्यं समवाप्नोति तेषां दाने महेश्वरि ! ॥१९॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन मद्भक्तेभ्यो महेश्वरि !
रुद्राक्षाणि प्रदेयानि मत्प्रसादाभिकाङ्क्षिभिः ॥२०॥

हे देवी ! रुद्राक्ष धारण करने में जो पुण्य है, वही पुण्य दान करने में भी है, अतः हे महेश्वरी ! मेरी कृपा चाहने वाले को उचित है कि मेरे भक्तों को रुद्राक्ष प्रदान करे । इस तरह से भक्तों की परीक्षा करके रुद्राक्ष प्रदान करे । ढोंगी, भक्त, अभक्तों का पहिचान करके रुद्राक्ष प्रदान करना चाहिए ।

रुद्राक्षारण्यवासे च महत्फलमुदीरितम् ।
काश्यादिषु महादेवि ! वसतां यत्फलं लभेत् ॥२१॥
ततोऽधिकफलं तेषां रुद्राक्षारण्यवासिनाम् ।
तस्मात् रुद्राक्षकान्तारे वस्तव्यं शुभकाङ्क्षिभिः ॥२२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे देवी ! रुद्राक्षारण्य में वास करने से क्या फल प्राप्त होता है ? कह कर तुमने पूछा था, अतः रुद्राक्षारण्य में वास करने का फल भी सुनो। रुद्राक्षारण्य में वास करने का फल अति महान् है। काशी आदि तीर्थों में निवास करने से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी कहीं अधिक रुद्राक्षारण्य में निवास करने से पुण्य फल प्राप्त होता है। अतः कल्याण चाहने वालों को चाहिए कि रुद्राक्षारण्य में निवास करें।

रुद्राक्षवृक्ष-बाहुल्यात् रुद्राक्षारण्यमुच्यते।
शिवगङ्गां विनिर्माय स्वाभिषेकार्थमीश्वर ! ॥२३॥

गङ्गया पूरयामास जटाजूटान्तरस्थया।
उद्वर्तनार्थं स्वस्यैव ससर्जात्मसमीपतः ॥२४॥

हे देवी ! रुद्राक्ष वृक्ष अधिक होने से ही रुद्राक्षारण्य कहा जाता है। शिवगङ्गा को स्वयं पिण्डेश्वर ने निर्माण किया है। उवटन आदि लगा कर स्वयं स्नान करने के लिए सुविधा संपन्न स्वसमीप में ही शिव गङ्ग को निर्माण करके जटाजूटों के अन्तरालों में स्थित आकाशगङ्गा के जलधारा से स्वयं पिण्डेश्वर[1] शिव ने शिवगङ्गा को पूर्ण किया है।

एलाहरिद्रामलकी-क्रमुकानां वनं घनम्।
वृक्षाश्च विविधास्तत्र सुरम्याशोक-चम्पकाः ॥२५॥

नारिकेलाश्च रम्भाश्च शालाः सौवर्णकोमलाः।
पलाशाः श्रीफला निम्बाः कदम्बा रक्तचन्दनाः ॥२६॥

हे देवी ! रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र विजयपुर अतीव रमणीय है। वहाँ इलायची, हलदी, आंवले, सुपाडी आदि के घने वन हैं। अनेक प्रकार के

---

१. रुद्राक्षारण्य के समय में रुद्राक्षारण्य एक रमणीय उपवन था। रुद्राक्ष शिव शरीर हैं, उवटन आदि से नहाने के लिए (विजयपुर रुद्राक्षारण्य के पञ्चकोशी में) शिवगंगा का उद्गम हुआ है। उस समय रुद्राक्षारण्य को सेचन करने के लिए शिवगंगा का नहर था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृक्ष हैं। सुन्दर अशोक, चम्पक, नारियल, केला, शाल, सन्तरा, कमला, पलास, बेल, नीम, कदम्ब, रक्तचन्दन आदि के वृक्ष हैं।

आम्रा आम्रातका नीपा जम्बीराः कोविदारकाः।
पाटलाः पनसा भव्या दाडिमा वीजपूरकाः ॥२७॥

अन्ये च बहवो वृक्षा वंशाश्चैव सहस्रशः।
लता नानाविधाः सन्ति वासन्ती-गजयूथिकाः ॥२८॥

लज्जावती नित्यपुष्पी शारदी माधवी परा।
जयन्ती मालती जाती कण्टकी चापराजिताः ॥२९॥

हे देवी! वहाँ और भी अनेक वृक्ष एवं लतायें हैं। नाना प्रकार के हजारों वाँस, नाना प्रकर के लतायें वासन्ती, गजयूथिका, लज्जवती, नित्यपुष्पी, शारदी, माधवी, जयन्ती, मालती, जाती, कण्टकी, अपराजिता आदि वृक्ष एवं लतायें हैं।

वटपिप्पलरुद्राक्ष-शमीविल्वकदम्बकाः।
मद्रूपाः वृक्षसंघाता रुद्राक्षकानने स्थिताः ॥३०॥

विल्वपिप्पलरुद्राक्षं कदम्बञ्च शमींस्तथा।
वटमुच्छेदकं तस्य सर्वनाशं करोम्यहम् ॥३१॥

विक्षिप्तकुक्कुरस्तुल्यं दुःखं तस्मै ददाम्यहम्।
देहान्ते कुम्भिपाकं च प्रददामि महेश्वरि! ॥३२॥

हे महेश्वरी! वट पीपल रुद्राक्ष शमी बेल कदम्ब आदि वृक्ष मेरे तुल्य हैं, जो रुद्राक्षारण्य में हैं। इन वृक्षों को काटने वाले मनुष्यों का मैं सर्वनाश कर देता हूँ। उनकी दशा पागल कुत्ते की तरह हो जाती है, पागल कुत्ता जिन दुःखों को भोगता है ठीक वे ही दुःख उसे देता हूँ। मरने के बाद भी उसे कुम्भिपाक नर्क देता हूँ।

कृष्णसारमृगा यत्र सञ्चरन्ति यथासुखम्।
खड्गा वराहाः शल्याश्च गोपुच्छा वनहस्तिनः ॥३३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वानराश्च मयूराश्च कोकिला वनकुक्कुटाः ।
जलकुक्कुटदात्यूहकृष्णकुक्कुटसारसाः ॥३४॥
घूकाः सारस्वता हंसा धन्याशाश्चटकादयः ।
सिंहा व्याघ्रा वृकाश्चैव भल्लूकाः शल्लकी तथा ॥३५॥

हे देवी ! रुद्राक्षारण्य में सुखपूर्वक कृष्णसार मृग सञ्चरण करते हैं। गैंडा, वराह, सियार, गोपुच्छ, वन हाथी, वानर, मयूर, कोकिल, वनकुक्कुट, दात्यूह, कृष्णकुक्कुट, सारस, उल्लू, हांस, राजहांस, धनेश, चटक, सिंह, बाघ, वृक, हुँडार, भालू, शल्लकी आदि पशु-पन्छी रुद्राक्षारण्य में सञ्चरण करते हैं।

शशाश्च ,वनमार्जारा महिषा वनसंभवाः ।
एवमेभिस्तथान्यैश्च पशुपक्षिगणादिभिः ॥३६॥

खरगोश, वनबिडाल, अरना (जङ्गली भैंसा) इसी तरह और अनेकानेक अज्ञात नामपरिचय के विविध पशुपा क्षिगण रुद्राक्षारण्य में विरचण करते हैं।

भ्रमरैश्चैव गायद्भिः प्रमत्तै रसलोलुपैः ।
सेवितं परमोदारं रुद्राक्षारण्यमुत्तमम् ॥३७॥

हे देवी ! रुद्राक्षरण्य में रस-पान करके प्रमत्त एवं रसलोलुप भ्रमरगण अपना संगीतमय गान स्वरूप भुनभुनाहट करते हुए डोलते हैं। इस तरह पशु, पक्षी, वृक्ष, लता आदियों से हराभरा, गुलजार, रमणीय, रुद्राक्षारण्य है। अहिंसा व्रत के कारण से परम उदार है, उत्तम है, पवित्र अरण्य रुद्राक्षारण्य है।

पशुपक्षिगणाः सर्वे रुद्राक्षारण्यचारिणः ।
अवध्या शिवरूपास्ते ह्यन्यथा रौरवं व्रजेत् ॥३८॥

रुद्राक्षारण्य में रहने वाले (सञ्चरण करने वाले) सभी पशु पक्षी अवध्य हैं, उन्हें मारना अपराध है, क्योंकि वे सब शिव स्वरूप हैं, यदि कोई मनुष्य उन्हें मारता है तो वह मनुष्य रौरव नर्क को जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्यवासे तु प्रयासः सुमहान् प्रिये !
कामं क्रोधं तथा लोभं मदं मात्सर्यमेव च ।।३९।।
दम्भं मानमहंकारं कार्पण्यं शाठ्यमेव च ।
भूतद्रोहं च निन्दां च परदाराभिमर्शनम् ।।४०।।
परस्वानां च हरणं मधु-मांस-निषेवणम् ।
परेषां पापचिन्तां च हित्वा नियतमानसैः ।।४१।।
युक्ताहारविहारैश्च शान्तैर्दान्तैर्जितेन्द्रियैः ।
सर्वभूतहितैर्युक्तैः सर्वत्र समदर्शिभिः ।।४२।।
शिवपूजारतैर्नित्यं शिवध्यानपरायणैः ।
शिवनामस्मृतिपरैः शिवमाहात्म्यवेदिभिः ।।४३।।
शिवात्मकतया विश्वं पश्यद्भिर्भुवनत्रयम् ।
वस्तुं शक्यं महादेवि ! रुद्राक्षारण्य उत्तमे ।।४४।।

हाँ, तो देवी ! तुम्हारा प्रश्न रुद्राक्षारण्य निवासजन्य फल के प्रति था, मैं भी उसीका उत्तर दे रहा था, तो सुनो ! रुद्राक्षारण्य में निवास करने के लिए बड़ा ही कठोर तप करना पड़ता है, और तीर्थों के तरह यह तीर्थ सरल नहीं है। काम (वासना) को छोड़ कर, क्रोध को त्याग कर, लोभ को न लेकर, मद घमण्ड को छोड़ कर, मात्सर्य ईर्ष्या आदि को त्याग कर, दम्भ, मान, अहंकार, कृपणता, शठता आदिको छोड़ कर, मनुष्य में मात्र नहीं सभी जीव प्राणियों में द्रोह करना छोड़ कर, परनिन्दा को त्याग कर रुद्राक्षारण्य में तीर्थबुद्धि से निवास करना आवश्यक है। परस्त्री गमन, परस्व का अपहरण, मधु (मदिरा) मांस आदि का निषेवण (पीना, भक्षण-करना) इत्यादि सब छोड़ कर, पराये प्रति पाप चिन्तन को त्याग कर रुद्राक्षारण्य में निवास करना पड़ता है। जितेन्द्रिय होना, युक्त आहार-विहार में रहना, शान्त-दान्त रहना, संपूर्ण जीवात्माओं के प्रति हितचिन्तक होना, सभी में समदर्शी रहना, रुद्राक्षारण्य के निवास में आवश्यक है। साथ ही नित्य शिवार्चन करना, शिवध्यान परायण रहना, शिवनाम स्मरण करते रहना, शिवमाहात्म्य में ज्ञान रखना ज़रूरी है। इस तरह से शिवस्वरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सारे विश्व को देखने वाला व्यक्ति मात्र रुद्राक्षारण्य में चिरकाल तक निवास कर सकता है। अन्यथा नहीं।।

अन्यथा वर्ततां पुसां वासस्तत्र महेश्वरि !।
रौरवादि-महाघोर-नरकायैव केवलम्।।४५।।

हे देवी ! उक्त आचरणों से अन्यथा विपरीत आचरण करने वाला व्यक्ति यदि रुद्राक्षारण्य में निवास करता है तो, रौरव आदि अनेक भयावह नरकों की यातना के लिए वह तपस्या कर रहा है, इतना ही समझ लो।

तस्मान्न सुलभस्तत्र वासः सर्वशरीरिणाम्।
शान्तानां महतामेव निवासस्तत्र दृश्यते ।।४६।।
तस्माद्रुद्राक्षकान्तारं गत्वा; स्थित्वा दिनत्रयम्।
दृष्ट्वा पिण्डेश्वरं देवं गच्छेदन्यत्र मानवः ।।४७।।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स गच्छेत्परमं पदम्।

अतः हे देवी ! सभी मानवों के लिए रुद्राक्षारण्य सुलभ है, किन्तु उक्त नियमों को पालन करने मात्र से। अतएव शान्त महात्मा तपस्वियों का ही वहाँ विशेष निवास दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए अच्छा तो यह है कि रुद्राक्षारण्य में तीर्थ के लिए जाय और तीन दिन तक रह कर पञ्चक्रोशी (रुद्राक्षारण्यों) का दर्शन कर उस क्षेत्र को छोड़ दे। भगवान् पिण्डेश्वर का इस तरह से दर्शन करके मानव सभी पापों से मुक्त हो कर परमपद को प्राप्त होते हैं।

कुटुम्बभरणार्थाय जठरीभरणाय वा ।। ४८।।
रुद्राक्षविक्रयं कुर्वन् रौरवं नरकं व्रजेत्।
रुद्राक्षाणां च विक्रेता शालग्रामस्य च प्रिये ! ।।४९।।
नर्मदानां च लिङ्गानां त्रयो नरकगामिनः।
तस्मान्न विक्रयं कुर्याद्रुद्राक्षाणां वरानने ! ।।५०।।
यो विक्रीणाति रुद्राक्षं स विक्रीणाति मां ध्रुवम्।
लोभात्कुर्वन्ति ये मूढा रुद्राक्षाणां च विक्रयम् ।।५१।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेषामहं करिष्यामि सर्वनाशं महेश्वरि ! ।
तस्मान्न विक्रयं कुर्याद्रुद्राक्षाणां कदाचन ॥५२॥

तूष्णीं देयानि सर्वेषां मद्भक्तानां विचक्षणैः ।
रुद्राक्षाणि महादेवि ! मद्भक्तेभ्यो दिशन्ति ये ॥५३॥

तेषामहं प्रसन्नः सन् सर्वाभीष्टं ददाम्युमे ! ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन मद्भक्तेभ्यो महेश्वरि ! ॥५४॥

रुद्राक्षाणि प्रदेयानि मत्प्रसादाभिकाङ्क्षिभिः ।
अहं रुद्राक्षरूपेण तथा मद्भक्तरूपतः ॥५५॥
स्थितः सर्वत्र देवेशि ! न लिङ्गादिस्वरूपतः ।

हे देवी ! धन कमाने के लिए, बाल बच्चों को पोषण करने के लिए अथवा अपना पेट भरने के लिए भी यदि रुद्राक्ष को बेचता है तो वह व्यक्ति रौरव नरकगामी होता है। रुद्राक्ष को बेचने वाला व्यापारी, नर्मदेश्वर को बेचने वाला व्यापारी, शालग्राम को बेचने वाला व्यापारी, (उक्त तीन व्यापारी) नरकगामी होते हैं। इसीलिए रुद्राक्ष नहीं बेचना चाहिए, रुद्राक्ष को बेचने वाला मुझे ही बेचता है। लोभ से जो रुद्राक्ष बेचता है तो हे महेश्वरी ! मैं उसका सर्वनाश करता हूँ। अतः योग्य व्यक्ति को चुपचाप रुद्राक्ष देना उचित है, बेचना उचित नहीं है। जो व्यक्ति मेरे सच्चे भक्तों को रुद्राक्ष दान करते हैं उनसे मैं प्रसन्न रहता हूँ, और वह सभी अभीष्ट प्राप्त कर लेता है। अतः मेरे भक्तों को पहचान करके रुद्राक्ष देने वालों को मेरी प्रसन्नता स्वरूप अनुकम्पा प्राप्त होती है। हे देवताओं की ईश्वरी ! मैं मेरे भक्तों के रूप में और रुद्राक्ष के रूप में सर्वत्र विराजमान हूँ, लिङ्गादि रूप में नहीं ।

रुद्राक्षतरुमूले तु रुद्रसूक्त-विधानतः ॥५६॥
जलधारां चतुर्दश्यां ये कुर्वन्ति शुचिस्मिते ! ।
तेषां पापक्षयोऽवश्यं भवत्येव न संशयः ॥५७॥

हे शुद्धहासिनी ! रुद्राक्ष वृक्ष के नीचे शुक्ल-कृष्ण किसी भी चतुर्दशी के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिन रुद्रसूक्त के विधान से (रुद्राष्टाध्यायी के विधान से) जो शिवजलधारा करता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं है ।

ग्रीष्मे मध्याह्नसमये रुद्राक्षतरुसिञ्चनात् ।
यत्फलं प्राप्यते पुंभिस्तद्वक्तुं कः क्षमो भवेत् ।।५८।।

हे देवी ! ग्रीष्म ऋतु में मध्याह्न के समय में रुद्राक्ष के वृक्षों को जल सिञ्चन करने से जो फल मिलता है, उस फल को कौन वर्णन कर सकता है ? कोई नहीं ।

फलरूपे तु रुद्राक्षे न दद्याज्जलमण्वपि ।
न चन्दनं नानुलेपं स्थापनं न धरातले ।।५९।।
जलयोगाद्विनश्यन्ति लिङ्गानि सकलान्यपि ।
अमेध्यलिप्ते रुद्राक्षे धरायां पतितेऽथवा ।।६०।।
सवल्कले वा रुद्राक्षे प्रक्षालनविधिं चरेत् ।
मालासंस्कारसमये सूत्रान्तरपरिग्रहे ।।६१।।
रजस्वलादिभिः स्पर्शे प्रक्षालनविधिं चरेत् ।
देहे धृतानां मनुजै रुद्राक्षाणां वरानने ! ।।६२।।
स्नानार्द्रदोषो नैवास्ति गङ्गास्नानसमं फलम् ।
आदौ वल्कलमुत्तार्य प्रक्षालनविधिं चरेत् ।।६३।।
कुङ्कुमागुरुकर्पूरकस्तूरीरजसा सह ।
सिन्दूरगैरिकाभ्यां च पुष्पाक्षतफलादिभिः ।।६४।।
पूजयेद्रुद्रमन्त्रेण शिरसा प्रणमेत्ततः ।
धारणीयं प्रयत्नेन यथास्थानं यथाविधि ।।६५।।

हे देवी ! अब रुद्राक्ष को सुरक्षित एवं शुद्ध रखने की विधि मैं तुम्हें बताता हूँ, तुम सुनो ! रुद्राक्ष के दानों में एक बूंद भी जल गिरने नहीं देना; जल और ओस से विशेष बचाना । दानों के ऊपर न तो गीला चन्दन ही चढाना, न तो अन्य अनुलेप ही चढ़ाना, न तो जमीन में ही रखना । जल और ओस से सारे दाने नष्ट हो जाते हैं । अपवित्र वस्तु रुद्राक्ष के दानों में लग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाय, पृथिवी में गिर जाय तो रुद्राक्ष दानों को धोयधाय करके वस्त्र से झट-पट पोंछ लेना चाहिए। माला पिरोते समय, सूत्र बदलते समय, रजस्वला स्त्रियों से स्पर्श हो जाय तो भी उसी तरह दानों को (माला को) धो लेना चाहिए। हे वरानने! शरीर में धारण किए हुए रुद्राक्षों में जलस्पर्श का दोष नहीं लगता है, और गङ्गाजल के बिन्दु के समान रुद्राक्ष से गिरे हुए जल-बिन्दु पवित्र होते है। हाँ, तो इतना अवश्य है कि स्नान कर लेने के बाद रुद्राक्षों को तुरन्त पोंछ लें। धारण किए हुए रुद्राक्षों को भी संस्कार करने की आवश्यकता हो तो पहले वस्त्र उतार लें और उन्हें धो लें, धोने के बाद तुरन्त पोंछ लें। पोंछ लेने के बाद धारण किये हुए रुद्राक्षों को और पूजा के रुद्राक्षों को भी सूखा कुङ्कुम, अगरु, कपूर, कस्तूरी, सिन्दूर, गैरिक, पुष्प, अक्षत, फल आदि चढा करके रुद्रमन्त्र (पञ्चाक्षर वा रुद्रसूक्त) से पूजा करे, पूजा के बाद शिर से प्रणाम करे। फिर यथास्थान यथाविधि धारण कर लें।

पञ्चवर्षसहस्राणि कलेर्यास्यन्ति पार्वति!।
गङ्गायास्तावदेव स्यान् माहात्म्यं भूतले स्थितम् ॥६६॥
ततः शिवाज्ञया गङ्गामाहात्म्यं सकलं खलु।
आयाति शिवगङ्गायां रुद्राक्षेषु च पार्वति॥ ६७॥

हे पार्वती! पाँच हजार वर्ष कलियुग के बीत जाने पर पृथिवीतल में गङ्गा (भागीरथी) का माहात्म्य नहीं रह जाता है। पाँच हजार कलियुग बीत जाने के बाद भगवान् शिव की आज्ञा से गङ्गा का संपूर्ण माहात्म्य शिव-गङ्गा में और रुद्राक्ष में चला जाता है।

तथा सर्वाणि तीर्थानि नक्षत्राण्यखिलान्यपि।
गच्छन्ति त्रिदशावासं महारण्यत्रयं विना ॥६८।
वृन्दारण्यं च देवेशि! रुद्राक्षारण्यमेव च।
आनन्दारण्यकं चैव महारण्यमिदं त्रयम् ॥६९॥

उसी तरह से संपूर्ण तीर्थ क्षेत्रों का, सारे नक्षत्रों का माहात्म्य सुरपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चले जाते हैं, किन्तु महारण्य (वृन्दावन, वाराणसी, रुद्राक्षारण्य) को छोड़कर।

वृन्दारण्ये महाक्षेत्रे नित्यं सन्निहितो हरिः ।
आनन्दकानने देवि ! विश्वनाथो विराजते ॥७०॥
कोल-पिण्डेश-रूपाभ्यां देवौ हरिहरावुभौ ।
स्थितौ रुद्राक्षकान्तारे युगेषु सकलेष्वपि ॥७१॥

हे देवी ! वृन्दारण्य (वृन्दावन) में सर्वदा सदा श्रीकृष्ण स्वरूप हरि विराजमान रहते हैं, और आनन्दकानन (वाराणसी, काशी) में सदा सर्वदा श्री विश्वनाथ स्वरूप हर (शिव) विराजमान रहते हैं किन्तु हे पार्वती ! कोल (यज्ञ वराह स्वरूप विष्णु) हरि, और पिण्डेश (पिण्डेश्वर स्वरूप) हर (शिव) सदा सर्वदा सभी युगों में रुद्राक्षारण्य में स्थिर रहते हैं।

तस्मात् हरिहरक्षेत्रं रुद्राक्षारण्यमुत्तमम् ।
अहिंसाव्रतवैशिष्टयं विशिष्टं पुण्यदायकम् ॥७२॥

हे देवी, अतएव रुद्राक्षारण्य एक विशिष्ट हरिहर क्षेत्र है, पवित्र और उत्तम क्षेत्रों में भी विशिष्ट है। इसकी विशेषता अहिंसा व्रत है (यहाँ हिंसा नहीं की जाती है) पुण्यदायक है।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन रुद्राक्षारण्यमुत्तमम् ।
द्रष्टव्यं मनुजैर्देवि मम दर्शनकाङ्क्षिभिः ॥७३॥
येन दृष्टं हि रुद्राक्षारण्यं क्षत्रमनुत्तमम् ।
तेन साक्षात् अहं दृष्टः पुरुषेण न संशयः ॥७४॥
साक्षात्कारो महादेवि ! ब्रह्मणः परमात्मनः ।
मद्रूपस्य तथा भद्रे ! रुद्राक्षस्य च दर्शनम् ॥७५॥

अतएव हे देवी ! संपूर्ण प्रयत्न करके भी उत्तम पवित्र अरण्य रुद्राक्षारण्य का दर्शन करना मनुष्यों के लिए आवश्यक है, यदि मेरे दर्शन को चाहने वाले हों तो, उन्हें अनिवार्य रुद्राक्षारण्य का दर्शन करना आवश्यक है। जिसने उत्तम क्षेत्र रुद्राक्षारण्य को देखा, उसने साक्षात् मुझे ही देख लिया;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसमें कोई संशय नहीं है। हे भद्रे ! मेरे रूपों को और रुद्राक्षों को दर्शन कर लेने से परमात्मा ब्रह्म का दर्शन हो जाता है, दर्शन हो गया है, ऐसा समझ लो।

इति सर्वं मयाख्यातं तव स्नेहेन पार्वति !।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥७६॥
सर्वाभीष्टप्रदं देवि ! सर्वसिद्धिप्रदायकम्।
सर्वदौर्भाग्यशमनं मम सायुज्यदायकम् ॥७७॥

हे पार्वती ! केवल तुम्हारे स्नेह से संपूर्ण रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को मैंने तुम्हें सुनाया। यह रुद्राक्षारण्य माहात्म्य संपूर्ण पापों को नाश करने वाला है, संपूर्ण अभीष्टों को प्रदान करने वाला है, संपूर्ण सिद्धियों को देनेवाला है, सभी दुर्भाग्यों को, अनिष्टों को शमन करने वाला है, और शिव सायुज्य (मुक्ति) प्रदान करने वाला है।

रहस्यातिरहस्यं च गोप्याद् गोप्यतमं प्रिये !।
यस्मै कस्मै न दातव्यं त्वया श्रीपरमेश्वरि ! ॥७८॥
शान्ताय समचित्ताय सर्वभूतदयालवे।
मद्भक्तियुक्तचित्ताय मद्भक्तिनिरताय च ॥७९॥
मत्सेवासक्तचित्ताय मन्नामस्मृतिशालिने।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं प्रदेयं प्राणवल्लभे ! ॥८०॥

हे प्रिये ! यह रुद्राक्षारण्य माहात्म्य[1] रहस्यों में भी रहस्य युक्त है। इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को गोप्य (गुपुरक्षणे—आग, पानी, ओस, मूर्ख, बालक, विक्षिप्तों से बचाना) तरीके से रखना, नष्ट होने न देना, गोप्य में भी गोप्यतर प्रयत्नों से (ममता के साथ) रक्षा करना, हे प्रिये ! अब इसकी रक्षा तुम्हारे हाथों में है। जिस तिस व्यक्ति को भी नहीं देना। हे परमेश्वरी ! शान्त, समचित्त, संपूर्ण प्राणियों में दया रखने वाले, मेरी भक्ति में चित्त देने

---

१. रुद्राक्ष महौषधि है, जो रहस्यमय है। देखें, हिन्दी पुस्तक रुद्राक्षारण्य, एवं अंग्रेजी अनुवाद भी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाले, मेरी भक्ति में संलग्न, मेरी सेवा में संसक्त चित्त वाले, मेरे नामों को सदा सर्वदा स्मरण करने वाले, व्यक्तियों को पहिचान करके इस रुद्राक्षारण्य माहाम्म को देना (सुनाना वा लिखित प्रति दान देना) उचित है।

रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं यः पठेत् प्रयतः पुमान्।
ममालयेमहादेवि ! तस्याभीष्टं ददाम्यम् ॥८१॥

हे महादेवी ! जो व्यक्ति मेरे मन्दिर में रुद्राक्षारण्य माहात्म्य प्रतिदिन शुद्ध हो कर पाठ करता है, उसकी अभीष्ट सिद्धि हो जाती है, उसकी कामनाओं को मैं स्वयं पूर्ण कर देता हूँ।

रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं यः श्रावयति भक्तितः।
मद्भक्ताञ्छ्रद्धयोपेतांस्तस्य तुष्टो भवाम्यहम् ॥८२॥

हे देवी ! रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को श्रद्धापूर्वक मेरे भक्तों को जो सुनाता है, उसके प्रति मैं सन्तुष्ट रहता हूँ।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पठनीयं ममाग्रतः।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं मद्भक्ताञ्छ्रावयेत्तथा ॥८३॥
मत्प्रसादेन मनुजाः सर्वान्कामानवाप्य च।
मम सायुज्यमाप्नोति जीवन्मुक्तो गतश्रमः ॥८४॥

हे देवी ! अतः प्रयत्न करके भी मेरे आगे रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को पाठ करना, और श्रद्धा युक्त हो श्रद्धालु मेरे भक्तों को सुनाना अति उत्तम है। ऐसा करने से मनुष्यगण मेरी प्रसन्नता से संपूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर; मेरी सायुज्य मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं, संसार में आने-जाने का काम समाप्त हो जाने से थकावट रहित होकर जीवन्मुक्त हो जाते हैं।

इति ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वया प्रिये।
कच्चित्त्वया श्रुतं देवि ! सावधानेन चेतसा ? ॥८५॥

हे प्रिये ! हे पार्वती ! तुमने रुद्राक्षारण्य और रुद्राक्ष के विषय में जो पूछा था, वह यहाँ तक, इस तरह से संपूर्ण मैंने तुम्हें सुना दिया। क्या तुमने सावधान होकर सुना तो सही ? ध्यान पूर्वक सुन ली हो न ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देव्युवाच

धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि त्वत्प्रसादान्महेश्वर।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं श्रुतं सर्वमशेषतः ॥८६॥
अतः परं तु मे नास्ति श्रोतव्यमिति निश्चयः।
इत्युक्त्वा शङ्करं देवी तूष्णीमासीत्प्रहृष्टधीः ॥८७॥

देवी पार्वती कहती हैं।—

हे महेश्वर! आपके प्रसाद से मैं धन्य हो गई हूँ अनुगृहित हो गई हूँ। आपकी कृपा से सर्वप्रथम मैंने ही रुद्राक्षारण की संपूर्ण कथा सुन पाई। अब इससे आगे रुद्राक्षारण्य और रुद्राक्ष के विषय में श्रोतव्य मेरे लिए कुछ नहीं रह गया है। हे ऋषीश्वरों! भगवान् शंकर को इतना कह करके प्रसन्न चित्त हुईं माता पार्वती चुप हो गईं।

सूत उवाच

कृष्णद्वैपायनमुखात् भाषितं भूतिदायकम्।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं यच्छ्रुतं तत्तथैव हि ॥८८॥
इति सर्वं मयाख्यातं यत्पृष्टोऽहं तपोधनाः!।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं त्रैलोक्येन प्रपूजितम् ॥८९॥
द्रष्टव्यं चापि युष्माभी रुद्राक्षारण्यमुत्तमम्।
ततश्चित्तस्य पर्याप्तिर्युष्माकं वै भविष्यति ॥९०॥

सूत जी कहते हैं।—

हे ऋषीश्वरों! मेरे गुरु कृष्णद्वैपायन बादरायणी व्यास जी के मुखारविन्द से भाषित, ऐश्वर्यदायक रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को मैंने जैसा सुना था, वैसा ही यथातथ्य आप (ऋषीश्वरों) को सुना दिया। आप लोगों ने रुद्राक्षारण्य के बारे में जो मुझसे प्रश्न किये थे, उन प्रश्नों के उत्तर भी इस तरह रुद्राक्षारण्य माहात्म्य का यहाँ तक के कथन से पूर्ण हो गया। हे ऋषीश्वरों! यह रुद्राक्षारण्य माहात्म्य तीनों लोक निवासियों से पूजित है, उत्तमोत्तम पवित्र पुण्य क्षेत्रों में विशिष्ट (एक बार दर्शन करने मात्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से मुक्ति देने वाला) पुण्य क्षेत्र है। अतः आप लोगों से भी दर्शनीय है, आप लोगों को भी रुद्राक्षारण्य का दर्शन करना अनिवार्य आवश्यक है। रुद्राक्षारण्य का दर्शन कर लेने के बाद आप लोगों के चित्त को पर्याप्त शान्ति मिल जायगी ।

चिद्व्योमामृतसिन्धुबन्धुरधराधीराविहारक्रिया-
दूरीभूतदुरन्तसन्ततभवव्यालप्रतापानलाः ।
तं ध्यायन्ति शिवं सुरासुरगणाः ब्रह्मर्षयश्चामलाः
गत्वा शङ्खमपूरणं समुचितं पिण्डेश्वरस्याग्रतः ॥९१॥

चैतन्य ब्रह्मस्वरूप आकाशगङ्गा के अमृत तुल्य तरङ्गों में विहार करने में निपुण, अतएव अनिवार्य होता हुआ भी संसार स्वरूप सर्प के विष-ज्वाला से अछूते वे महापुरुष एवं देवता तथा असुर व पवित्र वित्त वाले ब्रह्मर्षि, देवर्षि, राजर्षि गण पिण्डेश्वर शिव का ध्यान करते हैं। अतः आप सब रुद्राक्षारण्य के शिव (पिण्डेश्वर) के सामने पहुँच कर शंख न बजावें; जिससे कि उनका ध्यान भङ्ग हो जय। शंख का स्वर अत्यन्त तीव्र होता है।

शान्तं श्रोत्रसुखावहं सुमधुरं पियूषमापूरितम्
वाद्यं कीर्तनकारकैर्भगवतः पिण्डेश्वरस्याग्रतः ।
नित्यं तत्र महेश्वरो विजयते ब्रह्माण्डपिण्डेश्वरो
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा ध्यानेन दृश्यो विभुः॥९२॥

कीर्तन करने वाले आप सब रुद्राक्षारण्य में पहुँचे तो ख्याल रखें कि कीर्तन के बाजा भी उग्र स्वर वाले न हों। कानों को सुख देने वाले अमृत के तरह स्वर से परिपूर्ण शान्त मधुर बाजे बजावें वहाँ तो भगवान् शिव भी नित्य ध्यानमग्न रहते हैं, ध्यान धारण समाधि से ही वे दृश्य (प्रकट) होते हैं, रुद्राक्षारण्य भी नित्य क्षेत्र है, बाबा पिण्डेश्वर शिव ब्रह्माण्डपिण्ड के ईश्वर हैं।

स्वस्ति वोऽस्तु गमिष्यामि तदनुज्ञातुमर्हथः ।
इत्युक्त्वा तैरनुज्ञातो ययौ सूतो यथागतम् ॥९३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे ऋषीश्वरों ! आप सबका कल्याण हो, अब मैं जाता हूँ, मुझे जानेकी आज्ञा दीजिए। हे देवी ! इतना कहकर सूत जी जैसे आए थे वैसे ही (अपनी इच्छा से आए और अपनी ही इच्छा से) चले गए।

देव्युवाच

देवेश ! जगतामीश ! सर्ववेद्य-विचक्षण !
गते सूते ममाख्याहि ऋषीणाञ्च विचेष्टितम् ॥९४॥

देवी पार्वती कहती हैं--

हे देवताओं के ईश्वर ! हे जगत् के मालिक ! हे सर्ववित् ! विलक्षण-बुद्धि वाले महादेव ! सूतजी के चले जाने के बाद उन ऋषियों ने क्या किया ? सो सब मुझे सुनाने का कष्ट करें।

शिव उवाच

ततस्तु ते मुनिगणा नैमिषारण्यवासिनः।
सहस्रवार्षिके सत्रे समाप्ते विधिपूर्वकम् ॥९५॥

कृत्वा चावभृथस्नानं गोमत्यां शौनकादयः।
उषित्वा नैमिषारण्ये दिनानि कतिचित् ततः ॥९६॥
रुद्राक्षकाननं द्रष्टुं तस्माद् देशाद्विनिर्गताः।

भगवान् शिव कहते हैं।—

हे देवी ! सूत जी चले जाने के बाद सूत जी द्वारा रुद्राक्षारण्य दर्शन के प्रति प्रेरित वे नैमिषारण्य निवासी शौनकादि ऋषिगण, वह सरस्रवार्षिक यज्ञ विधिपूर्वक समाप्त हो जाने पर गोमती गङ्गा में अवभृय स्नान करके नैमिषारण्य में ही कुछ दिन रह कर, कुछ दिन बाद रुद्राक्षारण्य दर्शन के लिए, नैमिषाण्य से चल दिये।

अयोध्यां प्राप्य ते सर्वे मुनयः शौनकादयः ॥९७॥
कृत्वा स्नानादिकं तत्र सरय्वां मुनिसत्तमाः।
ददृशुस्ते रघुश्रेष्ठं भरतादिभिरन्वितम् ॥९८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उषित्वा सप्तरात्रं ते तत्र तस्माद्विनिर्गताः ।
मिथिलानगरीं प्राप्य दृष्ट्वा कार्मुकमद्भुतम् ॥९९॥
चण्डीशस्य पुरा भग्नं राघवेण स्वयंवरे ।

वे शौनकादि ऋषिगण नैमिषारण्य से चल कर अयोध्या पहुँचे, अयोध्या में पहुँच कर सरयू गङ्गा में स्नानादि कर्म करके रघुश्रेष्ठ भगवान् रामचन्द्र को 'भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न सीतादि सपरिवार' दर्शन करने के बाद, सात रात तक अयोध्या में रहकर, अयोध्या से आगे चल दिये । वे मिथिला पहुँचे, मिथिला में पहुँच कर ऋषिगण ने भगवान् शिव का अद्भुत धनुष देखा, जो सीता स्वयम्वर के समय में भगवान् रामचन्द्र ने तोड़ा था ।

ततस्तस्माद्विनिष्क्रम्य कौशिकीं प्राप्य ते द्विजाः ॥१००॥
कौशिक्यां ते महानद्यां कृत्वा स्नानादिकं ततः ।
उपत्यकायां शैलस्य कोलरूपं जनार्दनम् ॥१०१॥
ददृशुस्तं परिक्रम्य कोकासङ्गम-पावने ।
अगाधे निर्मले रम्ये जले मग्ना बभूविरे ॥१०२॥

मिथिला नगरी जलेश्वर आदिका दर्शन करके, मिथिला से आगे वे ऋषिगण कौशिकी गङ्गा में पहुँचे । कौशिकी में स्नानादि कर्म करके हिमालय पर्वत शाखा के ऊपर उपत्यका में विराजमान कोल रूप (यज्ञ वराह अवतार-स्वरूप) 'भगवान वराह रूप विष्णु' का दर्शन करने के बाद उनकी परिक्रमा करके सप्तकौशिकी गङ्गा और कोका गङ्गा के पवित्र संगमस्थल, अगाध निर्मल जलपूर्ण मनोहर वेणी में स्नान कर अति प्रसन्न हुये ।

प्रदक्षिणार्थं शैलस्य रुद्राक्षारण्यचारिणः ।
शीतस्यातिविशालस्य पर्वतस्य महात्मनः ॥१०३॥
जलमार्गविधानज्ञा योगैश्वर्यसमन्विताः ।
पूर्वं गताः पूर्वमुखास्तुहिनाचलसानुनि ॥१०४॥

उस (वाराह शैल और रुद्राक्षारण्य की) परिक्रमा (प्रदक्षिणा) करने के लिए वे नैमिषारण्यवासी शौनकादि ऋषिगण (जो रुद्राक्षारण्य के यात्री हैं) पूर्वाभिमुख हो, पूर्व दिशा के तरफ हिमालय पर्वत ऊपर के पथ से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वीय हिमालय के तरफ चल दिए। हिमालय अत्यन्त शीत पर्वत है, ऋषिगण महात्मा हैं, योग के द्वारा प्राप्त ऐश्वर्य संपन्न भी हैं, पर्वतीय नदियों के किनारे आगे बढ़ने लगे, योगाभ्यासी होने से उन्हें बरफीली ठण्डी ने (शर्दी ने) नहीं सताया।

हिमेश्वरं नमस्कृत्य शीतोष्णादिविवर्जिताः।
हिमालयस्य मार्गेण ब्रह्मपुत्रं महानदम् ॥१०५॥
जग्मुस्ततोम्बिकास्थानं कामाक्षाया महालयम्।
मासि मासि रजो यत्र भगवत्याः प्रदृश्यते ॥१०६॥

वे ऋषिगण हिमालय पर्वत पथ से चलते हुए, हिमेश्वर पहुँचे[1] वहाँ हिमेश्वर को उन्होंने नमस्कार किया। हिमेश्वर के दर्शन से वे ऋषिगण शीत-ऊष्ण आदि प्राकृत बाधाओं से मुक्त हो गए। आगे उन्हें सुविधा रही, हिमालय के पथ से ही वे ब्रह्मपुत्र महानद तक पहुँचे। ब्रह्मपुत्र से वे भगवती सती अम्बिका का स्थान (काम-क्षय-आलय) कामाक्षालय (कामरूपिक-कामरूप) पहुँचे। जहाँ हर महीना भगवती सती अम्बिका का रज दर्शन होता है।

उषित्वा मासमेकं ते तत्र तस्माद्विनिर्गताः।
पश्चिमाभिमुखाः सर्वे निर्गता वनवासिनः ॥१०७॥
मुञ्जाटव्यां भ्रष्टमार्गा रुद्राक्षारण्यदर्शकाः।
प्रतीच्यां दिशि ते जग्मू रविणा सहमार्गगाः ॥१०८॥
वनप्रिया वनरता वनमार्गविदोऽखिलाः।
वनाद्वनं समायाताः शालारण्यं विशालकम् ॥१०९॥
'कृष्णसारमृगा यत्र स देशस्तपसः शुभः।
कृष्णसारमृगो यत्र कीकटोपि शुभप्रदः' ॥११०॥
इति सूतवचः स्मृत्वा कृष्णसारान्विलोक्य ते।
तद्वनं तपसो योग्यं सेविरे नैमिषाधिकम् ॥१११॥

---

१. संभव कोशी अञ्चल, धनकुटा जिल्ला, हिले में हिमेश्वर का मन्दिर था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे ऋषिगण कामरूप कामक्षा में एक महीना पूरा रहकर परशुराम कुण्ड, शोणितपुर (तेजपुर) आदि का अवलोकन करके, कामाक्षा से पश्चिमाभिमुख होकर, हिमालय पर्वत से नीचे का रास्ता (तराईका रास्ता) को लेकर चल दिये। वनवासी तो थे ही, किन्तु वनवासी होते हुए भी मुञ्जाटवी में रास्ता भूल गए। रास्ता भूल जाने पर सूर्य के साथ-साथ पूरब से पश्चिम चलते-चलते आगे बढ़े। वे वन प्रिय थे, वनवासी थे, वन में चलने फिरने की उनकी आदत वन चुकी थी, अतएव वे सब वनपथ को जानते थे। ऐसे ही वन-वन से चलते हुए, घना शालवन में (शालारण्य में) आ पहुँचे। उस शालारण्य में कृष्णसार मृगों को चरते देखा तो, सुत जी की उक्ति "कृष्णसार मृग (काला मृग) जहाँ रहते हैं, वह देश तपस्या करने के लिए सर्वोत्तम है, चाहे कीकट देश ही क्यों न हो" स्मृति हुई। इससे शालारण्य के प्रति उनकी पवित्र भक्ति जागृत हुई, और नैमिषारण्य से भी अधिक उस शालारण्य को उन्होंने समझा। अतः सभी पवित्र नदियों में स्नान जप तप करते हुए धीरे-धीरे आगे बढे।

महावनं झिल्लिकघोरदंश-
वनद्विपव्याघ्रकुरङ्गजुष्टम्।
निर्वैरभावं सहसा बभूव,
जग्मुः प्रतीच्यां दिशि निर्भयास्ते ॥११२॥

वह शालारण्य भयानक वन था। झिल्ली और दंशक भरे पड़े थे, जङ्गली हाथी थे, बाघ थे, हरिण थे। स्वभावतः आपस में वैरभाव युक्त होने वाले पशु पक्षियों से भरा हुआ भी वह वन, उन ऋषियों के प्रवेश करते ही निर्वैर भाव में परिणत हो गया। जिससे उन्हें भय दूर हो गया, और वे सब ऋषिगण धीरे-धीरे पश्चिम दिशा के तरफ बढ़े।

स्वर्धूनितीर्थं परमं पवित्रं
ज्योतिष्मतीतीरगतं निरीक्ष्य।
जलं पपुस्तेऽश्रमकर्षिताङ्गाः
श्रीकौशिकीं प्राप्य मुदा विरेजुः ॥११३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चलते-चलते वे ऋषिगण महारण्य रुद्राक्षारण्य के परिधि में ही आ पहुँचे। आगे बढ़कर स्वधूनि (सरधू) गङ्गा का पवित्र जल जहाँ ज्योतिष्मती गङ्गा के पवित्र[1] जल के साथ संगम है, उस संगम स्थल (वेणी) को उन्होंने देखा। ऋषिगण अत्यन्त थके हुए थे, उन्हें पानी पीने की इच्छा हुई, पानी पीकर आगे बढ़े तो कौशिकी गङ्गा के तट पर पहुँच गये। अब रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र (मूल स्थान) विजयपुर के निकट आ गये हैं ऐसा समझ कर वे अति हर्षित हुए।

कौशिक्यां ते महानद्यां कृत्वा स्नानादिकं तथा।
कौशिक्यष्टभुजा देवी शुक्लकौशेयवाससी ॥११४॥
विभ्राणा सुदती शुभ्रूः शौनकादीनुवाच ह।

कौशिकी के तट पर पहुँच कर, महा नदी सप्त कौशिकी गङ्गा में स्धानादि कृत्य कर लेने के बाद, सफेद कौशेय वस्त्र को धारण की हुई, सुन्दर दाँत वाली, सुन्दर भ्रुकुटी वाली, कौशिकी अष्टभुजा देवी कौशिकी के जल से प्रकट होकर, रुद्राक्षारण्य दर्शनार्थी, नैमिषारण्य निवासी, शौनकादि ऋषियों के दलसे बोलीं।[2]

पञ्चवर्षसहस्राणि कलेर्यास्यन्ति वै यदा ॥११५॥
तदा देवगणाः सर्वे काशीं वृन्दावनं विना।
भूर्लोकं सम्परित्यज्य गमिष्यन्ति सुरालयम् ॥११६॥

---

१. स्वधूनि गङ्गा को स्थानीय जनता इस समय सर्धू कहती है। ज्योतिष्मती को जब्दी कहती है। हजारों वर्षों के बाद आज भूकम्पादि से स्थिति बदल गई है।

२. कौशिकी अष्टभुजा जो कौशिकी के तट में थी, उनका मन्दिर कौशिकी कटान से दब गया था, और आज से लगभग ३ सौ वर्ष पूर्व एक कृषक को मिली थी, उन्हें रुद्रक्षारण्य के प्रमुख देवता पिण्डेश्वर मन्दिर में लाकर स्थापित किया गया था, मूर्ति अति सुन्दर होने से ही वि० सं० २०३१ में ही तस्कर उठा ले गए, आसन मात्र छोड़ गए हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दशवर्षसहस्राणि कलेर्यास्यन्ति वै यदा ।
पुरुषोत्तमदेवोऽपि वैकुण्ठं परिगच्छति ॥११७॥
अहं गच्छामि वैकुण्ठं पतिलोकं सनातनम् ।
लिङ्गादीनां च माहात्म्यं तुलस्याश्च वटस्य च ॥११८॥
तदागच्छति तत्रैव रुद्राक्षेषु न संशयः ।
'भवन्तो विमलात्मानो दूरदेशादिहागताः ॥११९॥
मुञ्जाटव्यां भ्रष्टमार्गा विशेषश्रमलोलिताः ।
रुद्राक्षकाननं द्रष्टुं, गच्छन्तु विगतज्वराः ॥१२०॥
अभीष्टसिद्धिर्वो भूयात् पिण्डेशस्य प्रसादतः ।
पूर्वोत्तरे नातिदूरे पीयूषपिण्डरूपिणः ॥१२१॥
पिण्डेश्वरस्य भवनं, स्वस्ति वोऽस्तु मुनीश्वराः !' ।
इत्युक्त्वा कौशिकी देवी जलेऽदर्शनतां ययौ ॥१२२॥

हे ऋषीश्वरों ! पाँच हजार वर्ष कलयुग के बीत जाने पर काशी और वृन्दावन मात्र को छोड़कर इस पृथ्वी को त्याग कर, सभी देवगण स्वर्ग चले जायेंगे । हे ऋषीश्वरों ! दश हजार वर्ष कलियुग के बीत जाने पर तो भगवान् पुरुषोत्तम विष्णु भी वैकुण्ठ चले जायेंगे । मैं भी अपने पतिका लोक, सनातन लोक वैकुण्ठ चली जाऊँगी । तब गङ्गा, तुलसी, वट आदि का माहात्म्य भी रुद्राक्षों में (रुद्राक्षारण्य में) चले जायेंगे ।

आप सब विमल आत्मा वाले महात्मा अति दूर देश से यहाँ रुद्राक्षारण्य दर्शन के लिए पधारे हैं । आते समय मुञ्जाटवी (मूज वन) में रास्ता भूल जाने से आप लोगों को पथ में विशेष श्रम हुआ । अब आप सब रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र के निकट आ पहुँचे हैं । अब रुद्राक्षारण्य में पहुँचने के लिए कोई संकट झेलना नहीं पड़ेगा, सुखपूर्वक पहुँच जायेंगे । आप सब अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर लें, भगवान् पिण्डेश्वर आप सबके ऊपर प्रसन्न रहें । यहाँ से पूर्वोत्तर कुछ दूरी में अमृतपिण्ड-ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक, भगवान् रुद्र रुद्राक्षारण्य के प्रमुख देवता, पिण्डेश्वर का भवन 'धाम' है । हे मुनीश्वरों आपका कल्याण हो, अब आप सब रुद्राक्षारण्य में जायँ' । हे देवी ! इतना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कह कर भगवती कौशिकी अष्टभुजा देवी कौशिकी के जल में अदृश्य हो गईं।

तेऽपि सिद्धा महात्मानो मुनयः शौनकादयः।
कौशिक्या तीरतस्सर्वे गता रुद्राक्षकाननम् ॥१२३॥
प्रदक्षिणीकृत्य महानुभावाः
शीताचलं तं शिरसा प्रणम्य।
हर्षेण रुद्राक्षवनं प्रविष्टाः
शनैः शनैः श्रीगिरिशं स्मरन्तः ॥१२४॥

वे सिद्ध महात्मा, शौनकादि ऋषियों का दल भी सप्त कौशकी गङ्गा के तीर से रुद्राक्षारण्य के तरफ चल दिये।

रुद्राक्षारण्य पञ्चक्रोशी क्षेत्र विजयपुर पर्वत खण्ड, शीताचल को इस तरह से परिक्रमा कर प्रदक्षिणा करने वाले उन ऋषियों ने शीताचल रुद्राक्षारण्य विजयपुर को शिर झुका कर के नमस्कार किया, और अति हर्षित हो, भगवान् गिरिश शंकर को स्मरण करते हुए धीरे-धीरे रुद्राक्षारण्य में प्रवेश कर गये।

शिवगङ्गाभिधे तीर्थे रुद्राक्षारण्यमध्यगे।
स्नात्वा सर्वे मुनिगणाः सन्तर्प्य पितृदेवताः ॥१२५॥
रुद्राक्षवनमध्यस्थं दृष्ट्वा पिण्डेश्वरं प्रभुम्।
स्नापयित्वा महामन्त्रै रुद्राध्यायपुरःसरैः ॥१२६॥
पूजयित्वा यथान्यायं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।
स्तुत्वा च विविधैस्तोत्रैः श्रद्धाभक्तिसमन्विताः ॥१२७॥
तत्रैव न्यवसन्सर्वे कन्दमूलफलाशनाः।
हर्षेण महता युक्ता प्रसन्नेन्द्रियमानसाः ॥१२८॥
पूजयन्तस्त्रिकालं ते पिण्डेश्वरमुमापतिम्!
रुद्राक्षारण्यमध्यस्थं सर्वकामफलप्रदम् ॥१२९॥

रुद्राक्षारण्य में प्रवेश कर, रुद्राक्षारण्य के मध्य में स्थित शिवगङ्गा तीर्थ में स्नान करके, देवता और पितृयों को तृप्त कर, रुद्राक्षारण्य के मध्य में स्थित भगवान् पिण्डेश्वर का दर्शन करके भगवान् पिण्डेश्वर को महामन्त्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(शिव पञ्चाक्षरी एवं रुद्राष्टाध्यायी) से विधिपूर्वक गन्ध पुष्पाक्षत आदि अर्पण कर पूजन जलधारा आदि करके श्रद्धा भक्ति से युक्त हो विविध मन्त्र एवं स्तुतियों से स्तुति कर, सभी ऋषिगण कन्दमूल फलाहार करते हुए वहीं विराजने लगे। उन्हें बड़ा भारी हर्ष था, उनके इन्द्रिय और चित्त प्रसन्न हुए। इस तरह से रुद्राक्षारण्य के मध्य में स्थित, उमा के पति, सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाले भगवान् पिण्डेश्वर को तीनों समय पूजा करके रुद्राक्षारण्य में सुखपूर्वक विचरण करते हुए तप करने लगे।

पिण्डेश्वरप्रसादेन रुद्राक्षाणि तपोधनाः।
लब्ध्वा बहूनि स्थूलानि बहुवक्त्राण्यनेकशः ॥१३०॥
धारयन्तः शरीरेषु भस्मोद्धूलितविग्रहाः।
पिण्डेश्वरं वीक्षमाणाः बालाम्बासहितं प्रभुम् ॥१३१॥
त्रिमासमुषितस्तत्र ततः पिण्डेश्वराज्ञया।
रुद्राक्षारण्यतः सर्वे नैमिषं प्रति प्रस्थिताः ॥१३२॥

नैमिषारण्य निवासी शौनकादि ऋषियों की इस तरह की तपस्या से सन्तुष्ट पिण्डेश्वर शिव की प्रसन्नता से अनेकानेक मुखवाले, बड़े से बड़े, छोटे से छोटे, अच्छे अच्छे रुद्राक्षों को शरीर में धारण कर, भस्मचर्चित शरीर से आनन्दित ऋषिगण भगवती बालाम्बा सहित भगवान् पिण्डेश्वर का दर्शन करते हुए तीन महिनों तक रुद्राक्षारण्य में रहे। इसके बाद भगवान् पिण्डेश्वर की आज्ञा से सभी ऋषिगण रुद्राक्षारण्य से नैमिषारण्य के प्रति लौट गये।

साक्षीविनायकं नत्वा पश्चिमाभिमुखागताः।
नमस्कृत्य किरातेशमरुणोदसरोवरे ॥१३३॥
भीमेश्वरं च भस्मेशं द्विभुजेशं तथैव च।
नेपालेशं पशुपतिं गुह्यकालीं तथापरम् ॥१३४॥
नमस्कृत्य ततो याता मुक्तिक्षेत्रं सनातनम्।
हृषीकेशं नमस्कृत्य गता बदरिकाश्रमम् ॥१३५॥
नरनारायणौ नत्वा पुनर्नैमिषमागताः।
पिण्डेश्वरस्य देवस्य कुर्वाणा विविधाः कथाः ॥१३६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिण्डेश्वरं हृदम्भोजे रुद्राक्षारण्यमध्यगम् ।
ध्यायन्तः सततं भक्त्या कीर्तयन्तश्च तं विभुम् ॥१३७॥
पिण्डेश्वरं हृदम्भोजे धारयन्तस्सदाशिवम् ।
न्यवसन्नैमिषारण्ये यथापूर्वं यथासुखम् ॥१३८॥

प्रस्थान करते समय, भगवान् पिण्डेश्वर के सामने साक्षी विनायक को नमस्कार कर, पश्चिमाभिमुख हो, पर्वतीय पथ से ही पश्चिम दिशा की ओर बढ़े। आगे चल कर अरुणोद सरोवर[1] में पहुँच कर भगवान् शिव किरातेश्वर को नमस्कार करके भीमेश्वर[2] भस्मेश्वर शिव को नमस्कार करने पहुँचे। वहाँ से[3] द्विभुजेश हरि को दर्शन करके नेपाल पहुँचे। नेपाल पहुँच कर[4] नेपालेश भगवान् पशुपति नाथ, भगवती गुह्यकाली नीलकण्ठ आदि अनेक देवी देवताओं का दर्शन कर लेने के बाद सनातन क्षेत्र मुक्तिक्षेत्र पहुँचे। मुक्तिक्षेत्र में पहुँच कर मुक्तिनाथ एवं प्रत्यक्ष वैश्वानर ज्वाला आदि का दर्शन करके, नीचे उतर कर हृषीकेश पहुँचे। हृषीकेश से पुनः ऊपर चढ़कर बदरिकाश्रम पहुँचे। बदरिकाश्रम में भगवान् नर-नारायण का दर्शन करके पुनः नीचे उतर कर नैमिषारण्य के तरफ चल दिये। संपूर्ण ऋषिगण पथ में भगवान पिण्डेश्वर की विविध कथा, चर्चा, वार्ता आदि करते हुए चलते रहे। रुद्राक्षारण्य के मध्य में विराजमान भगवान् पिण्डेश्वर शिव को हृदय से स्मरण करते हुए, भक्ति भावना पूर्वक पूजा आराधना में संलग्न हो, जैसे सुखपूर्वक नैमिषरण्य में पहले रहते थे, वैसे ही उसी तरह सुखपूर्वक पुनः नैमिषारण्य में पहुँच कर रहने लगे।

इति श्रीस्कन्दपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे रुद्राक्षारण्यमाहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां शौनकादीनां रुद्राक्षारण्यगमन-पिण्डेश्वरदर्शन-कथनं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

---

१. २. ३. ४. अरुणोद सरोवर 'रौता पोखरी' उदयपुर-सगरमाथा वा अरुण नदी का उद्गम स्थल। भीमेश्वर-भीमफेदी, भस्मेश्वर—भस्मासुर बध स्थल (हलेशी) सगरमाथा। द्विभुजेश संभव सप्तरी के उत्तर चूरे (मैनाक) के ऊपर मोहरी ही हो। काठमाडौं, नेपाल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विंशोऽध्याय

शिव उवाच

कच्चित् त्वया श्रुतं देवि ! सावधानेन चेतसा ?।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं तव स्नेहान् मयोदितम् ॥१॥
इदानीं तु कथासारं वक्षे तत् स्मृतिहेतवे।
सावधानेन मनसा श्रृणुष्वावहिता प्रिये ! ॥२॥

भगवान् शिव कहते हैं--

हे देवी ! हे पार्वती ! तुम्हारे स्नेह से रुद्राक्षारण्य माहात्म्य मैंने तुम्हें सुनाया। क्या तुमने शान्त चित्त होकर, सावधानी से रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को सुन तो लिया ? कहीं तुम न भूल जाओ, इस हेतु से अब मैं तुम्हें रुद्राक्षारण्य का कथासार सुनाता हूँ। दत्त चित्त हो सावधानी से तुम सुनो।

अत्रादौ कथितं पुण्यं नैमिषारण्यवैभवम् ।
सूतशौनकसंवादस्ततः परमुदीरितः ॥३॥
सूतं प्रति ततः प्रश्नो नैमिषारण्यवासिनाम्।
ततः कैलासशैलस्य वर्णनं परमाद्भुतम् ॥४॥

हे देवी ! सर्वप्रथम इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य में नैमिषारण्य का वर्णन बताया गया। उसके बाद सूत और शौनकों का संवाद प्रस्तुत किया गया। फिर नैमिषारण्य वासियों ने सूत जी से प्रश्न किये। रुद्राक्षारण्य के बारे में किया गया प्रश्न के उत्तर में, शिव पार्वती प्रश्नोत्तर उपाख्यान भूमिका के लिए, कैलाश हिमालय पर्वत का अद्भुत वर्णन उपस्थित किया गया।

पार्वत्याश्च ततः प्रश्नः शंकरं प्रति सादरम्।
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं रुद्राक्षस्य च वैभवम् ॥५॥

फिर भगवान् शंकर के प्रति, भगवती पार्वती ने, रुद्राक्षारण्य एवं रुद्राक्षा के विषय में माहात्म्य सुनने की इच्छा प्रकट करते हुए प्रश्न किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवदत्तस्य विप्रस्य कथा तत्र प्रकीर्तिता ।
दानवैस्त्रिदशानाञ्च भयं त्रिपुरवासिभिः ॥६॥
महेन्द्रवरुणादीनां त्रिदशानां ततः परम् ।
ब्रह्मलोकस्य गमनं ब्रह्मलोकस्य वर्णनम् ॥७॥
ब्रह्मणो दर्शनं पश्चाद् ब्रह्मणः स्तवनं ततः ।
ब्रह्मणे त्रिदशैः पश्चाद् वृत्तान्तस्य निवेदनम् ॥८॥
ब्रह्मणा सान्त्वनं चैव त्रिदशानां ततः परम् ।
ब्रह्मणा सहदेवानां वैकुण्ठगमनं ततः ॥९॥

पारलौकिक शक्ति संपन्न रुद्राक्ष हैं, इस कथ्य की पुष्टि में देवदत्त ब्राह्मण की कथा वर्णन सुनाया गया। रुद्राक्षोत्पत्ति-कारण प्रस्तुत करने के लिए, मय से रक्षित दानवों ने आक्रमण कर हिमालय पर्वत-प्रदेश में त्रिपुर को निर्माण करके देवताओं को दुःख देना, और सभी देवता एकत्रित हो, महेन्द्र वरुण आदि सहित ब्रह्मलोक पहुँचना, ब्रह्मलोक का वर्णन करना, ब्रह्माजी को दुःख पुकारा करना, ब्रह्माजी द्वारा देवताओं को समझाना, ब्रह्मा जी सहित देवगण विष्णु लोक में भगवान् विष्णु के पास चले जाना। इत्यादि वर्णन किया गया।

वैकुण्ठवर्णनं पश्चात् दर्शनं च रमामतेः ।
स्तवनं देवदेवस्य चक्रपाणेः सुरेस्ततः ॥१०॥
कमलापतये देवैर्निजागमनिवेदनम् ।
विष्णुना सह देवानां कैलासगमनं ततः ॥११॥

विष्णु लोक में पहुँच कर वैकुण्ठ का वर्णन करना एवं भगवान् विष्णु की स्तुति करना और भगवान् विष्णु को दुःख निवेदन करना तथा भगवान् विष्णु सहित ब्रह्मा एवं इन्द्रादि देवताओं का कैलाश चले जाना इत्यादि वर्णन किया गया।

दर्शनं देवदेवस्य शूलपाणेस्ततः परम् ।
निवेदनं च देवानां निजागमनहेतुजम् ॥१२॥
युद्धोपस्करनिर्माणं शङ्करस्य महात्मनः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मविष्णुप्रभृतिभिः सुरैः सह महेशितुः ॥१३॥
निहन्तुं दानवान् वीरान् गमनं त्रिपुरं प्रति ।
त्रिपुराणाश्च दहनं दानवानां निवर्हणम् ॥१४॥

कैलाश में पहुँच कर भगवान् शिव का दर्शन करना एवं अपने आगमन का कारण, दुःख-निवेदन करना इत्यादि वर्णन किया गया ।

भगवान् शंकर की आज्ञा से, त्रिपुरासुर के साथ युद्ध करने के लिए उपयुक्त युद्ध सामग्रियों को संकलन करना, ब्रह्मा विष्णु इन्द्र अग्नि आदि देवता सहित त्रिपुरासुर के साथ युद्ध के लिए भगवान् शंकर के साथ चले जाना, भगवान् शंकर के द्वारा त्रिपुर को जला देना, त्रिपुर को जीत लेना इत्यादि वर्णन किया गया ।

ततश्च देवदेवस्य हिमाद्रिशिखरं प्रति ।
आगमश्चैव विश्रान्तिः शङ्करस्य गिरेस्तटे ॥१५॥
हिमालयोच्चशिखरे रमणीयेऽतिशीतले ।
अधित्यकायां शय्यायां शयनं हि मया कृतम् ॥१६॥
गिरिश इति मां सर्वे प्रवदन्ति मनीषिणः ।
तस्य पर्वतराजस्य बाहुभूतस्य सुन्दरि ! ॥१७॥
शीताचलस्य महतो लम्बमानोरगाकृतेः ।
उपत्यकायां भूयस्यां शयनेच्छा ममाऽभवत् ॥१८॥

त्रिपुर विजय के बाद भगवान् शंकर का हिमालय पर्वत राज का शृङ्ग (एक भाग का एक शिखर) पर पहुचना, गिरि तट में विश्राम लेना; अतिरमणीय, समशीतोष्ण अधित्यका पर शयन करना, गिरिश (पर्वत में सोने वाला) मेरा नाम हो जाना, उस नाम से विद्वान् ऋषि मुनियों के द्वारा मेरा पुकार होना, हिमालय पर्वत राज का बाहुभूत, सर्पाकार अति सुन्दर उस पर्वत पर निश्चिन्तता से पुनः यथेच्छ शयन करने की इच्छा मुझे हो जाना इत्यादि वर्णन किया गया ।

तदा हासश्च जृम्भा च निद्रालस्यादयोऽभवन् ।
रुद्राक्षाणां समुत्पत्तिर्नेत्रेभ्यो मम चाभवन् ॥१९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विजयाख्यस्य निर्माणं पुरस्य तदनन्तरम् ।
ब्रह्मविष्णुसमेतानां पालितानं पुरारिणा ॥२०॥
विजये नगरे वासः सर्वेषां स्वर्गचारिणाम् ।
यक्षादयो गणाधीशा गिरिश्रृङ्गनिवासिनः ॥२१॥
धारानिपातोत्तुङ्गेषु भृगुनिर्झर · सानुनि ।
गण्डशैलेषु सर्वेषु वनदेव्यः समाश्रिताः ॥२२॥

उस समय हँसी आना (त्रिपुर विजय जन्य उपहास) जृम्भा, निद्रा, आलस्य आदि (थकान से और निश्चिन्तता से उत्पन्न) होना, त्रिपुर विजय जन्य उपहास में हँसते हुए मेरे नेत्र से चार बूंद हर्षाश्रु टपकना, उन हर्षाश्रुओं से चार जाति के रुद्राक्ष पैदा होना, रुद्राक्षारण्य में, रुद्राक्षवृक्षों में अन्तर्लीन देवताओं के द्वारा मात्र दृश्य हो कर मेरा रुद्राक्षारण्य में रहना, मेरे साथ के ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि देवताओं की कठिनाइयों को देखते हुए, मेरी कृपा से विश्वकर्मा के द्वारा विजयपुर का निर्माण होना, सभी देवताओं के साथ अनेक दिन तक शीतशैल (विजयपुर रुद्राक्षारण्य) में मेरा निवास रहना, धारा, झरना, नदी, पर्वत के श्रृङ्ग, खोंच आदि में गण देवताओं का निवास रहना इत्यादि वर्णन किया गया ।

रुद्राक्षाणां वने तस्मिन्नन्तर्ज्योतिःस्वरूपवान् ।
अदृश्यः सर्वभूतानां विना देवान् सह स्थितान् ॥२३॥

अनेक दिनों के बाद देवता गण अपने अपने स्थान को चले जाना, विजयपुर नष्ट हो जाना । तब उस रुद्राक्षारण्य में अदृश्य (अन्तर्ज्योति स्वरूप) होकर देवताओं से मात्र दृश्य, मेरा यथावत् रुद्राक्षवृक्षों में रहना इत्यादि वर्णन किया गया ।

अमृतोत्पादनं पश्चात् त्रिदशैः सह दानवैः ।
पीयूषलिङ्गरूपेण पिण्डेश्वर-समुद्भवः ॥२४॥
तस्मिन् सुधापिण्डमये लिङ्गे देवविनिर्मिते ।
ज्योतिर्मयस्य देवस्य प्रवेशः त्रिपुरद्विषः ॥२५॥
तदावरणदेवानां स्थापनं त्रिदशैः कृतम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दानव असुर राक्षस आदियों से त्रिपुरासुर बध हो जाने पर भी देवताओं को भय दूर नहीं हुआ। देवताओं को अमृत की आवश्यकता हुई, देव और दानवादि के द्वारा मिल कर समुद्र मथा गया, अमृत उत्पादन के बाद अमृत को छान लिया गया, छन कर जो अमृत का सार बचा उस सार का शिवलिङ्ग निर्माण करके रुद्राक्षारण्य में देवताओं ने स्थापित किया। उस अमृत पिण्ड का नाम पिण्डेश्वर[1] देवताओं ने पुकारा। जो रुद्राक्षारण्य में मैं अदृश्य रूप से रुद्राक्षावृक्षों में रह रहा था, उस अमृत पिण्ड में दृश्य ज्योतिःस्वरूप होकर रहने लगा, और ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि देवताओं ने पिण्डेश्वर आवरण (परिकर) देवताओं को स्थापित किया इत्यादि वर्णन किया गया।

विष्णुमित्रकृतं तत्र तीर्थयात्रा कथानकम् ॥२६॥
शिवलोकस्य गमनं शिवसायुज्यमेव च।
ब्रह्मणस्य तपश्चर्या पिण्डेश्वरसमीपतः ॥२७॥
पिण्डेश्वरप्रसादेन ब्रह्मणस्य तपस्विनः।
पिण्डेश्वरस्य निकटे ब्रह्मणश्च तपस्यतः ॥२८॥
पिण्डेश्वरः प्रसन्नोभूद् द्रुहिणस्य महात्मनः।
जगन्निर्माणसामर्थ्यं प्राप्तिज्ञानोदयोप्यभूत् ॥२९॥

फिर विष्णुमित्र की तीर्थयात्रा वर्णन, पिण्डेश्वर तपश्चर्या से विष्णुमित्र को शिवलोक शिवसायुज्य प्राप्ति इत्यादि वर्णन किया गया। फिर भगवान् ब्रह्मा के द्वारा पिण्डेश्वर के समीप पिण्डेश्वर की तपस्या करना, पिण्डेश्वर के वरप्रसाद से जगत्-निर्माण करने की शक्ति और ज्ञानोदय हो जाना इत्यादि वर्णन किया गया।

ततो विष्णोस्तपश्चर्या पिण्डेश्वर-समीपतः।
जद्गक्षणसामर्थ्यं पिण्डेशस्य प्रसादतः ॥३०॥

---

१. अमृत पिण्ड पिण्डेश्वर का शिवलिङ्ग विचित्र प्रकार से प्राकृतिक बनावट का है। पाडलभर परिधिका एक पत्थर का पहाड़ के ऊपर का शिखर है। पुजारियों से पूछें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रथोत्सवादिनिर्माणं पिण्डेशस्य मुरारिणा ।
ब्रह्मणा च ततः शम्भोः पौर्णमास्यां महेशितुः ॥३१॥
तत्राभिषेकः सुमहान् कार्तिके मासि शोभने ।
कृत्तिकायां ततः शम्भोर्महादीपप्रदर्शनम् ॥३२॥

फिर ब्रह्मा द्वारा निर्मित सृष्टि रक्षा में असमर्थ विष्णु द्वारा पिण्डेश्वर के समीप में ही पिण्डेश्वर की तपस्या करना, पिण्डेश्वर के वरप्रसाद से जगत् रक्षा करने की शक्ति एवं ज्ञानोदय हो जाना, विष्णु के द्वारा विशेष उत्सव रथ यात्रा की प्रथा प्रारम्भ हो जाना इत्यादि वर्णन किया गया ।

फिर कार्तिक पूर्णिमा के दिन ब्रह्मा द्वारा पिण्डेश्वर का शिवगङ्गा स्नान, रथोत्सव, महाभिषेक, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि में महादीप (लक्षवर्ती) आदि प्रदान करना इत्यादि वर्णन किया गया ।

महेन्द्रवरुणादीनां पिण्डेशस्य प्रसादतः ।
दिक्पालत्वसमावाप्तिर्दानवानां जयस्तथा ॥३३॥
महाविभवसम्प्राप्तिराज्ञा चाव्याहता गतिः ।

इसके बाद, देवताओं के द्वारा ब्रह्मा और विष्णु से सञ्चालित उन दोनों उत्सवों को मानव द्वारा मनाना, पिण्डेश्वर के वरप्रसाद से देवताओं को अखण्डित रूप में दिक्पालों के अधिकारों को प्राप्त करना, बचेखुचे दानवों को जय करना महावैभव एवं आज्ञा (हुक्म) तथा अव्याहत गति (जहाँ जाना चाहे वहीं पहुँचने की शक्ति) प्राप्त करना इत्यादि वर्णन किया गया ।

सारस्वतादितीर्थानां माहात्म्यं च ततः परम् ॥३४॥
ऋचीकपत्न्या माहात्म्यं कौशिक्याश्च ततः परम् ।
तथा वराहक्षेत्रस्य माहात्म्यमपि वर्णितम् ॥३५॥

फिर सरस्वती का रुद्राक्षारण्य विजयपुर पिण्डेश्वर के दर्शन के लिये आगमन, सारस्वत तीर्थका निर्माण एवं माहात्म्य इत्यादि वर्णन किया गया ।

और ऋचीक-पत्नी कौशिकी का माहात्म्य, वराहक्षेत्र का माहात्म्य इत्यादि वर्णन किया गया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिवेण्योश्चैव माहात्म्यं भद्राक्षाणां तथैव च।
ब्रह्माण्डेश्वरमाहात्म्यं तिलेशस्य च वैभवम् ॥३६॥

कौशिकी त्रिवेणी एवं नद त्रिवेणी आदि का माहात्म्य, भद्राक्षों का माहात्म्य, ब्रह्माण्डेश्वर और तिलेश्वर का माहात्म्य इत्यादि वर्णन किया गया।

कालिकायाः प्रभावश्च त्रिपथायास्तथैव च।
कदम्बवनमाहात्म्यं कैलासपतिवैभवम् ॥३७॥
रणकालीप्रभावश्च धनपालस्य वैभवम्।
दानवारेर्भैरवस्य माहात्म्यं भयहारिणः ॥३८॥

पुनः कालिका का माहात्म्य, त्रिपथा का माहात्म्य, कदम्बारण्य का माहात्म्य कैलाशपति का माहात्म्य, रणकाली का माहात्म्य, धनपाल का माहात्म्य-भयहारी दानवारि भैरव का माहात्म्य इत्यादि वर्णन किया गया।

रुद्राक्षाणां स्वरूपस्यैकवक्त्रादिविभेदतः।
वर्णनं चैव रुद्राक्ष-दान-धारण-वैभवम् ॥३९॥
रुद्राक्षारण्यवासे च महत्फलमुदीरितम्।
काश्यादिषु महादेवि! वसतां यत्फलं लभेत् ॥४०॥
ततोऽधिकफलं तेषां रुद्राक्षारण्यवासिनाम्।
इति सर्वं समाख्यातं पुराणेऽस्मिन् समासतः ॥४१॥

और, रुद्राक्षों के एक मुख से लेकर अनेक मुख, गौरीशंङ्कर, गोमुख आदि का माहात्म्य, रुद्राक्ष दान, रुद्राक्ष धारण आदि का माहात्म्य रुद्राक्षारण्य में निवास करने से काशी आदि तीर्थ में निवास करने से जो पुण्यफल प्राप्त होते हैं, उनसे भी अधिक पुण्य प्राप्त होता है इत्यादि इस पुराण में (स्कन्दपुराण हिम्राद्रिखण्ड पूर्व भाग रुद्राक्षारण्य माहात्म्य में) संक्षिप्त वर्णन किया गया।

रुद्राक्षारण्यगमनं नैमिषारण्यवासिनाम्।
अयोध्या-दर्शनं चैव मिथिलागमनं ततः ॥४२॥

१. उक्त सभी देवी देवता नदी धारा आदि आज तक सनाम जीवित हैं।[1]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कौशिक्या दर्शनं स्नानं जलपानं विधानतः ।
प्रदक्षिणां प्रकुर्वाणास्तुहिनोत्तुङ्गसानुनि ॥४३॥
हिमेश्वरं नमस्कृत्य कामाक्षालयमुत्तमम् ।
दृष्ट्वा निर्वर्तिता भूयः पश्चिमाभिमुखागताः ॥४४॥

पुनः, सूतजी के चले जाने के बाद, सूत जी के कथन से नैमिषारण्य वासियों का रुद्राक्षारण्य प्रति गमन, पथ में अयोध्या दर्शन, मिथिला दर्शन, कौशिकी का दर्शन, स्नान, जलपान, वराह क्षेत्र का दर्शन के बाद रुद्राक्षारण्य को प्रदक्षिणा करने के लये उत्तर-पूर्व पर्वतीय पथ से हिमेश्वर को नमस्कार करते हुये नैमिषारण्य वासियों का आसाम कामरूप पहुँचना, कामाक्षा, परशुराम कुण्ड आदि का दर्शन करके नीचे के रास्ते से पश्चिमाभिमुख हो प्रस्थान करना् इत्यादि वर्णन किया गया ।

मुञ्जाटव्यां भ्रष्टमार्गा महारण्यवनप्रियाः ।
वनाद्वनं समायाताः कौशिकीं सरितां वराम् ॥४५॥
दिव्यरूपं समादाय नानाभरणभूषिता ।
शौनकादीन् मुनिवरान् पूजयामास सादरम् ॥४६॥
रुद्राक्षारण्यगमने मार्गं ऋजुमुवाच सा ।
तेन मार्गेण ते सिद्धाः पिण्डेश्वरमुपागताः ॥४७॥

और, मुञ्जाटवी में पथ भूल जाना, वनप्रिय ऋषिगण वन वन डोलते हुए कौशिकी के तट में आ जाना, फिर दिव्यरूप को धारण करके कौशिकी के द्वारा शौनकादियों का स्वागत करना, रुद्राक्षारण्य में जाने के लिए सीधा रास्ता बता देना, उस रास्ते से चल कर उन ऋषियों को रुद्राक्षारण्य स्थित भगवान् पिण्डेश्वर धाम को पहुँच जाना इत्यादि वर्णन किया गया ।

दर्शनं देवदेवस्य रुद्राक्षाणां च धारणम् ।
प्रत्यहं शिवगङ्गायां स्नानतर्पणपूजनम् ॥४८॥
त्रिमासमुषितस्तत्र तदनुज्ञामवाप्य च ।
नमस्कृत्य पुनः सिद्धाः पश्चिमाभिमुखा गताः ॥४९॥

रुद्राक्षारण्य विजयपुर पिण्डेश्वर में पहुँच कर, भगवान् पिण्डेश्वर का दर्शन करके रुद्राक्षों को धारण करना, प्रतिदिन शिवगङ्गा में स्नान करके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तर्पणं पूजन इत्यादि करना, तीन महीनों तक रुद्राक्षारण्य विजयपुर में रह कर पिण्डेश्वर की आज्ञा प्राप्त कर, पिण्डेश्वर को नमस्कार करके सिद्ध गण पुनः पश्चिमाभिमुख होकर पर्वतीय पथ से नैमिषारण्य के लिए लौट जाना इत्यादि वर्णन किया गया।

नमस्कृत्य किरातेशमरुणोदसरोवरे।
भीमेश्वरं नमस्कृत्य द्विभुजेशं तथैव च ॥५०॥
नेपालेशं पशुपतिं गुह्यकालीं तथापरम्।
नमस्कृत्य ततो याता मुक्तिक्षेत्रं सनातनम् ॥५१॥
हृषीकेशं नमस्कृत्य गता बदरिकाश्रमम्।
नर नारायणौ नत्वा पुनर्नैमिषमागताः ॥५२॥
पिण्डेश्वरस्य देवस्य कुर्वाणा विविधाः कथाः।
इति सर्वं समाख्यातं पुराणेऽस्मिन् समासतः ॥५३॥

अरुणोद सरोवर में[1] पहुँच कर किरातेश्वर को नमस्कार करके भीमेश्वर भस्मेश्वर[2] का दर्शन द्विभुजेश[3] को नमस्कार करते हुए नेपाल पहुँच कर नेपालेश्वर पशुपतिनाथ एवं गुह्यकाली को नमस्कार करने बाद सनातन क्षेत्र मुक्तिक्षेत्र पहुँचे। मुक्तिक्षेत्र से नीचे उतर कर हृषीकेश को दर्शन करते हुए, बदरिकाश्रम पहुँचे। बदरिकाश्रम में नर-नारायण को नमस्कार करके नैमिषारण्य निवासी शौनकादि ऋषिगण रुद्राक्षारण्य की तीर्थयात्रा को समाप्त कर पुनः नैमिषारण्य में ही पहुँचे। और भगवान् पिण्डेश्वर की विविध कथा वार्ता करते हुए सुखपूर्वक पुनः तपस्या में संलग्न हो, शेष जीवन व्यतीत करने लगे। इस स्कन्दपुराण हिमाद्रिखण्ड पूर्व भाग रुद्राक्षारण्य माहात्म्य में इस तरह से उक्त कथायें हैं जो तुम्हें मैंने सुनाया, और उनका संक्षिप्त सार इस तरह स्मृति के लिए संकलित करके भी सुनाया।

---

१. अरुणोद सरोवर (रौता पोखरी) सगरमाथा अञ्चल उदयपुर जिला उत्तरी भाग अथवा अरुण नदी का उद्गम स्थल।

२. भीमेश्वर भीमफेदी, भस्मेश्वर भस्मासुर बधस्थल।

३. द्विभुजेश, संभव सप्तरी उत्तर नन्दमोहरो में कहीं भगवान् नारायण मन्दिर कथालेखन के समय में था, अब है या नहीं ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं श्रोतव्यं शिवसन्निधौ ।
रुद्राक्षवृक्षमूले वा ह्यश्वत्थवृक्षसन्निधौ ॥५४॥
सर्वा बाधा प्रशमनं सर्वरोगनिवर्हणम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं देवि ! भूतग्रहविनाशनम् ॥५५॥
कार्तिक्ये श्रावणे मासि सोमे च शिववासरे ।
शुक्लकृष्णचतुर्दश्यां यस्मिन् कस्मिन् दिनेऽथवा ॥५६॥
नारी वा पुरुषो वापि यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥५७॥

हे देवी ! इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को शिव-सन्निधि (शिवमन्दिर-शिव-स्थापना करके) में श्रवण करना उचित हैं । अथवा रुद्राक्ष वृक्ष के मूल (नीचे) वा अश्वत्थ वृक्ष के (वट-पीपल-शमी-औदुम्बर-पलाश-पर्वतीय शमी 'पुयौं') नीचे वैठ कर सुनने से संपूर्ण वाधा (आपत्ति) राजवाधा, भूतप्रेतादि बाधा, ग्रहवाधा आदि बाधायें प्रशमन (नष्ट) हो जाते हैं । सभी प्रकार के रोग एवं भवरोग भी नष्ट हो जाते हैं । भुक्ति (भोगैश्वर्य) एवं मुक्ति (लयलीन-निर्वाण) तक देने में रुद्राक्षारण्य माहात्म्य समर्थ है । हे देवी ! रुद्राक्षारण्य माहात्म्य भूत प्रेत पिशाच चुडेल, डायन एवं शनि साढ़े साती, शनि ग्रह अढ़ैय्या, राहु, केतु, मङ्गल, शुक्र, वृहस्पति, रवि, चन्द्र, बुध आदिका अनिष्ट दोष निवारक है । हे देवी ! कार्तिक एवं श्रावण महीनों में, सोमवार के दिन में, शिव उत्सव तिथियों में, सभी महीनों के दोनों पक्षों के (शुक्ल कृष्ण के) चतुर्दशी तिथियों में रुद्राक्षारण्य माहात्म्य कथा श्रवण करना उत्तम है । समय न हो तो किसी भी दिन रुद्राक्षारण्य माहात्म्य श्रवण किया जा सकता है । इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को स्त्री पुरुष सभी पाठ कर सकते हैं ! प्रतिदिन शुद्ध होकर भक्ति भावना के साथ नारी अथवा पुरुष पाठ करें तो उनकी मनोगत गुप्त कामनायें भी पूर्ण हो जाती हैं । इसमें कोई संशय नहीं है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं श्रोतव्यं ब्रह्मविज्जनात् ।
क्षत्रियैश्च तथा वैश्यैः शूद्रैश्च श्रद्धयान्वितैः ॥५८॥
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्यं ये शृण्वन्ति समाहिताः ।
तेषां प्रसन्नो भगवान् रुद्रः कामान् प्रयच्छति ॥५९॥
श्रुत्वा तु नियमेनैव रुद्राक्षारण्य-वैभवम् ।
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति मानवः ॥६०॥
धनार्थी धनमाप्नोति यशोर्थी प्राप्नुयाद्यशः ।
विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्यां सुतार्थी प्राप्नुयात्सुतम् ॥६१॥
कन्यां वरो वरं कन्या लभते नात्र संशयः ।
उमे ! त्वया तपस्तप्त्वा लब्धोऽहं कोत्र संशयः ॥६२॥
श्रोतव्यं श्रद्धया नित्यं नियमेन समाहितैः ।
कामं क्रोधं तथा लोभं विसृज्य धर्मतत्परैः ॥६३॥

हे पार्वती ! इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को ब्रह्मवित् (वेदान्त दर्शन शास्त्रों के विद्वान्) जनों से क्षत्री, वैश्य, शूद्र जनों को श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर सुनना उचित है। दत्तचित्त हो कर पवित्रता के साथ जो नर नारी इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को सुनते हैं, उनकी कामनायें भगवान् रुद्र (शिव) पूर्ण कर देते हैं। जो नियम पूर्वक रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को सुनते हैं, वे जिन-जिन कामनाओं को करते हैं, उनकी उन-उन कामना की पूर्ति सरलता से स्वाभाविक तौर से ही हो जाती है, ईप्सित वस्तुओं को मनुष्य प्राप्त कर लेता है। धनार्थी धन को प्राप्त करता है, यश चाहने वाला यशोर्थी यश प्राप्त करता है, विद्यार्थी विद्या प्राप्त करता है, पुत्र-पौत्र सन्तान चाहने वालों को मनचाहा सन्तान प्राप्त होता है। कन्या मनोरथ में विराजमान वर प्राप्त करती है, और वर अभिलषित कन्या प्राप्त कर लेता है, हे उमा ! पार्वती ! उक्त मेरे वाक्य में विश्वास करो, तुमने भी तो हमें तपस्या करके ही न पाई हो ? हे महेश्वरी ! इस रुद्राक्षारण्य माहात्म्य को नित्य नियम के साथ श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद मात्सर्य से दूर रहकर धर्म-तत्पर हो श्रवण करना श्रेयस्कर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्येवं सर्वशास्त्रेषु गुह्याद् गुह्यतरं कृतम् ।
मया ते विंशत्यध्यायैः प्रीत्या ह्यत्र सुभाषितम् ॥६४॥

हे देवी ! यह रुद्राक्षारण्य माहात्म्य एवं रुद्राक्ष-माहात्म्य सभी शास्त्रों में रहस्यातिरहस्यमय करके व्याख्यान[1] किया गया है। मैंने तुम्हारी प्रीति (प्यार) से इस तरह बीस अध्याय में विभाजन करके सुना दिया।

टीकाकारः

सुधासारं सारं गरलमशनं प्राप्तममृतं
पवित्रं पापघ्नं भजत मनुजाः शंकरवनम् ।
न किञ्चित्पीयूषादपरमिहमृग्यं शिवकथा
कृता 'लक्ष्मी-टीका' भवतु भवतां मङ्गलपरा ॥

हे मानवों ! अति पवित्र और संपूर्ण पापों को नष्ट करने में समर्थ शङ्कर वन (रुद्राक्षारण्य) की सेवा करें। (शंकर का अर्थ कल्याण कारक 'कल्याण करने वाला भी होता है। 'रुद्राक्षारण्य' हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति के 'महौषधि रुद्राक्ष' लेख से पता चलता है कि रुद्राक्ष प्रत्यक्ष शंकर हैं।) रुद्राक्षारण्य पापघ्न है (पाप का अर्थ पीडा भी है, सभी रोगों के एक औषधि स्वरूप रुद्राक्ष हैं) अतः पापघ्न हैं। रोग नष्ट होते ही मानव पवित्र हो जाता है, उसकी इन्द्रियाँ प्रसन्न हो जाती हैं।

हे मानवों ! रुद्राक्षारण्य में रुद्राक्षारण्य के प्रमुख देवता रुद्र (भगवान् पिण्डेश्वर शिव) हैं। वे ब्रह्माण्ड पिण्ड के प्रतीक अमृतपिण्ड होने से ही पिण्डेश्वर नाम से विख्यात हैं, भगवान् शंकर ने समुद्र मन्थन से निकला हुआ हलाहल गरल (विष) को पान किया है, भगवान् पिण्डेश्वर अमृत के पिण्ड हैं। अतः इसी स्थली में अमृत उत्पन्न हुआ। क्योंकि यहीं देवताओं ने अमृत पान किया है। यदि नहीं है कहते हैं तो अमृत के सार शिव यहीं क्यों विराजमान होते, अतः अमृत उत्पादन एवं अमृत पान

---

१. रुद्राक्ष महौषधियों में सर्वश्रेष्ठ है। हिन्दी तथा अंग्रेजी में 'रुद्राक्षारण्य' पुस्तक पढ़ें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहीं हुआ, यह तथ्य है। इस तरह का रुद्राक्षारण्य पवित्र है, पापघ्न है, और संसार का सारभूत क्षेत्र है।

मानवों! जब अमृत मिल जाय, तब फिर और क्या ढूँढने की आवश्यकता है? अमृत उत्पादक स्थल प्राप्त हो जाने के बाद और आगे पवित्रता के लिए पवित्र क्षेत्र ढूँढने की आवश्यकता नहीं है।

लक्ष्मी आचार्य द्वारा टीका लिखी गई शिव कथा आप सब की मङ्गल बढ़ाने वाली बने।

इति श्रीस्कन्धपुराणे हिमाद्रिखण्डे पूर्वभागे
रुद्राक्षारण्यमाहात्म्ये लक्ष्मीललितटीकायां
सर्वकथासंग्रहो नाम विंशोऽध्यायः ॥२०॥

ॐ

सुभम्—समाप्तम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुभकामना (सम्मति)

श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड़
("शास्त्ररत्नाकर", "पद्मभूषण", "पण्डितराज")

के. २०।३५४, राजमन्दिर
वाराणसी--१.

दिनाङ्क २४ मार्च १९७४

भारतवर्षं यैः पवित्रतमैररण्यादिभिस्तत्र तत्र स्थितैर्विभूषितं, तान्यध्युष्य अनेके धन्यतमा आत्मानं पवित्रतमं चक्रुः। तानि सम्प्रति कालमहिम्ना श्रुतिपथमपि नारोहन्ति। नापि तत्तत्स्थलानां प्रतिपादकानि वाङ्मयानि अपि दृश्यन्ते। परं विलुप्तानां तेषां संशोधनं प्रकाशनञ्चातीवापेक्षितं वर्तते। तेषु रुद्राक्षारण्यं तत्प्रतिपादकं हिमवत्खण्डमपि ईदृशीमेवावस्थामापन्नं वर्तते। मया क्वचिदापणे (गुद्दड़े) इदं पुस्तकं दृष्टमपि पुनरन्तर्हितमभूत्। परमिदं महत्सौभाग्यं यत् अन्तर्हितं स्कन्दपुराणान्तर्गतं हिमवत्खण्डं श्रीयोगिराजनरहरिनाथमहोदयैः कथञ्चिद्यावत्प्राप्तं तावत्प्रकाशितम्। तदाधारेण नेपालदेशे स्थितस्य रुद्राक्षारण्यस्य विषये कश्चन प्रकाशो राष्ट्रभाषा (हिन्दी) भाषिणां कृते श्रीमद्भिः लक्ष्मी आचार्य महोदयैः दातुमभिलष्यते। तदिदमेतेषां कार्यं शिवभक्तानां भक्तिविवर्धने सहकारी स्यादित्याशास्ते।

श्रीराजेश्वर शास्त्री द्राविड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्य

नेपाल परिचय अन्तर्गत पूर्वाञ्चल का परिचय नाम से जो पुस्तिका हिन्दी में छपी थी, जिस पुस्तिका के बारे में पण्डितराज जी ने सम्मति प्रदान की थी, उस पुस्तिका की यह भूमिका है।

भूमिका

रुद्राक्षारण्य का अनुसंधान (खोज)

रुद्राक्ष और वृन्दा का महत्व जब से मैं समझने लगा, तब से रुद्राक्षारण्य के प्रति उत्सुकता जागृत हुई, वृन्दारण्य में मैं विचर चुका था।

उत्सुकता से प्रेरित नेपाल दर्शन के प्रसङ्ग में मैं पथिक रहा, और अपने को प्रवासी समझा। राहगीर की भाषा में नेपाल दर्शन, जिला जिला का दर्शन, हिमाली-सन्देश, स्मृति-संकलन आदि लिखते हुए पश्चिम महाकाली से मैं तराई-तराई पूर्व कोशी अञ्चल विराटनगर पहुँचा। जन्मभूमि का इस अञ्चल से मेरा मोह भी अधिक रहा, यह अञ्चल तिलस्मियों का पिटारा भी है। प्राय: ५-७ वर्षों के परिश्रम पर फलप्राप्ति हुई—'सुनसरी जिल्ला दर्शन और देशको माटो देशका ढुङ्गा द्वितीय भाग।' उक्त दोनों पुस्तकों के सहयोगी इसी क्षेत्र के रहे। देशको माटो- पथिक कवि लक्ष्मी आचार्य देशका ढुङ्गा, द्वितीय भाग का प्रकाशक धरान नगर पञ्चायत ही रहा। प्रकाशन हेतु मैं वाराणसी पहुँचा रुद्राक्षारण्य भी चर्चित विषय बना।

रविवार २१ अप्रैल १९७४ का साप्ताहिक "आज" के अङ्क में—रुद्राक्षारण्य (जिसका अस्तित्व अब मिट रहा है) लेख प्रकाशन में भी आया। इससे पूर्व अप्रकाशित पाण्डुलिपि (हिन्दी, नेपाली) प्रतियों को लेकर मैं पण्डित-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राज, राजेश्वर शास्त्री द्राविड़ जी के पास पहुँचा। राम घाट साङ्गवेद विद्यालय में आदरणीय, अब स्वर्गीय, पण्डितराज जी एवं आप के सहयोगी शिष्य आदरणीय विद्वान् हेंक्वार शास्त्री, होशमणि शास्त्री, दातार शास्त्री; जयराम शास्त्री आदि विद्वानों से कथा मात्र जीवित "रुद्राक्षारण्य" के विषय में चर्चा चली। और आप के निर्देशन में पुस्तकालयों में जाकर अनेक पुराण एवं आयुर्वेद के कोश ग्रन्थों को देखा। किन्तु रुद्राक्षारण्य भरत भारतवर्ष में कहाँ है, दिशा और स्थान संकेत नहीं मिला, मिला तो कथा रुद्राक्ष का माहात्म्य, केवल रुद्राक्ष महिमा मात्र।

निवेदन के वाद ! आह और अनुभूति पूर्ण वाणी में आप (पण्डितराज) ने कहा—'रुद्राक्षारण्य' वास्तविक कथा मात्र जीवित है। सुना था, स्कन्द-पुराण हिमवत् खण्ड में रुद्राक्षारण्य का विस्तृत वर्णन है, किन्तु हिमवत् खण्ड ही अनुपलब्ध है। फिर योगिराज नरहरिनाथ जी ने वर्षों तक नेपाल भ्रमण कर हिमवत् खण्ड का कुछ अंश प्रकाशित किया, उन सब को मैंने पाठ भी किया, उन अंशों में भी रुद्राक्षारण्य किस दिशा में था, स्थान संकेत नहीं मिला। फिर वर्षों के बाद, रुद्राक्षारण्य माहात्म्य नाम से प्रकाशित कई प्रतियों के साथ—"हिमवत् खण्ड–अन्तर्गत प्रस्तुत रुद्राक्षारण्य माहात्म्य है, युगों से इतिहास को संकेत करने वाला रुद्राक्षारण्य जो गुप्तवास के गर्भ में था, वह अब प्रकट हो गया है। इत्यादि लिखा हुआ पत्र भी मिला–योगिराज नरहरिनाथ जी का।

उन्हीं पुस्तकों को आधार मानकर आँखों से देखा और इतिहास एवं अवशेषों से सांकेतित वस्तु निर्णय हेतु "सुनसरी जिल्ला दर्शन, देशको माटो-देशका टुक्रा' द्वितीय भाग, 'रुद्राक्षारण्य (जिसका अस्तित्व अब मिट रहा है) इत्यादि पुस्तक और लेख हैं।

भला ! रुद्राक्षारण्य कहीं नहीं मिलेगा, मिलने की जो आशा हिमवत् खण्ड में ही थी, वह अब पूर्ति हो गई, जो मिला, सो सही।

मेरी बचपन की बात याद आई,––"करीवन मैं ग्यारह साल का था, एक दिन मैंने गुद्दड़ के एक दुकान में हस्त लिखित पुस्तक देखा, वह पत्रेदार था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसमें "स्कन्दपुराण हिमवत् खण्ड, रुद्राक्षारण्य" लिखा हुआ था। पास में पैसे न रहने पर घर में आकर पिता जी से कहा, तो "जाओ! ले आओ! जल्दी ले जाओ!" भला! हिमवत् खण्ड स्कन्दपुराण नहीं मिलता है, अनुपलब्ध है, गुद्दड़ वाला दो चार आना लेगा, दे आओ! पिता जी के कहते ही मैं दौड़े-दौड़े उक्त गुद्दड़ के दुकान पर पहुँचा, तब तक उसने पन्सारी को बेच दिया, पन्सारी दुकान को भी पता लगा कर उसके दुकान पर पहुँचे तो, उसने पुस्तक को फाड़ कर नून, मिर्च, हल्दी, जीरा की पुड़िया बाँध कर, शहर में बरता चुका था। तब से मैं भी रुद्राक्षारण्य के प्रति जागरूक रहा। जो उपलब्ध हो रहा है। वह यही रुद्राक्षारण्य है" कहते हुए पण्डितराज राजेश्वर शास्त्री द्राविड़ जी ने उक्त उद्गार को व्यक्त किया था।

पर दुर्भाग्य है, आज तक प्रयत्नशील रहने पर भी प्रस्तुत पुस्तिका प्रकाशन में न आ पाई। नेपाल में सर्वप्रथम ही होगा, ऐतिहासिक, पुरातात्विक व धार्मिक पर्यटन केन्द्रों का परिचयात्मक पुस्तक लिखकर किसी लेखक ने स्थानीय जनता को दान दिया हो, और उन केन्द्रों का परिचयात्मक बोर्ड बनवाकर चौराहों पर अङ्कित कर दिया हो। किन्तु कोई प्रच्छन्न उन्हें उखाड़ता जाता है, जो नेपाली राष्ट्रीयता और संस्कृति से उसे चीढ़ है। इत्यादि अनेक परिश्रम करने पर भी "देशको माटो-देशका ढुंगा (२) भाग" सनातन हिन्दू एक अरब जनसमक्ष पर्याप्त परिचय प्रस्तुतीकरण में उन्हीं कारणों से असमर्थ रहा। अतः हिन्दी की संक्षिप्त प्रति (रुद्राक्षारण्य का विस्तृत वर्णन, स्थान परिचय पथप्रदर्शक) आप के हाथों में है।

प्रस्थान करें! अब दर्शन को

विनीत, पथिक कवि
लक्ष्मी आचार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महौषधि रुद्राक्ष

(आयुर्वेदिक रुद्राक्ष)

सनातन संस्कृति गुण-पूजक है, गुणवान् की पूजा करती है। "गुणाः पूजास्थानं" कहती है। सनातन देश में ही सनातनत्व के प्रतीक स्वर्णमय शिला-शालग्राम और रुद्राक्ष होते हैं। शालग्राम में सुवर्ण है, तो रुद्राक्ष में क्या है ? जिससे कि सनातन संस्कृति रुद्राक्ष की महिमा गाती है, और पूजा-विधान वताती है।

तो क्यों बताती है ? रुद्राक्ष में प्रत्यक्ष विद्यमान क्या गुण हैं ? इत्यादि आज तक कोई तरीके का खोज, अनुसन्धान नहीं हो पाया।

आयुर्वेद ने चर्चा परिचर्चा के तौर पर खोज प्रारम्भ किया तो हमारे धार्मिक बन्धु कहने लगे—"अरे" रुद्राक्ष तो साक्षात् भगवान् शिव के अंश हैं, इन्हें काटना-फोड़ना-पीसना-भस्म तयार करना, जलाना, महा पाप है, अरे !! इनकी पूजा होती है, पूजा करो, और माला पहिरो, माला-मन्त्र सीखो; किसी गुरु से दीक्षा लो, रुद्राक्ष भगवान् शिव के अंश हैं, समझे ?" इत्यादि कहते हुए एक मुख से चौदह मुख तक के रुद्राक्ष की महिमा सुनाते हैं।

इसीसे औषधियों के कामों में रुद्राक्ष को प्रयोग करना वैद्यों ने भी छोड़ दिया। केवल पूजा और माला में उपयोगी रुद्राक्ष रह गये।

किन्तु आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्रों के कोश ग्रन्थ, रुद्राक्ष के परिचय को निम्न-प्रकार से प्रस्तुत करते हैं,—

१—रुद्राक्ष, २—भद्राक्ष, ३—इन्द्राक्ष, तीन प्रकार के रुद्राक्ष होते हैं। रुद्राक्ष-आवले के बराबर गोल होता है, पूजा-मन्त्र-तन्त्र मालाधारण और औषधि निर्माण में सर्वोत्तम माना जाता है।

२—भद्राक्ष बेर की गुठली के बराबर गोल होता है, उक्त प्रयोगों (कामों) में मध्यम माना जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३–इन्द्राक्ष कुछ लमचैला, गोल, मूंगफली के दाने के बराबर होता है, उक्त प्रयोगों में कनिष्ठ माना जाता है। और इन्द्राक्ष के ही जाति में कुछ थोड़ा सा चिपटा पनको लिए हुए एक अलग जाति होती है, उसे सहस्राक्ष कहते हैं। इस तरह से इनकी जाति परिचय हो जाती है। यही चार जाति के रुद्राक्ष शिव-बिन्दु हैं।[1]

"धन्वन्तरी राजनिघण्टु" रुद्राक्ष को इन नामों से पुकारता है—१–रुद्राक्ष, २–शिवाक्ष, ३–नीलकण्ठाक्ष, ४–हराक्ष, ५– भूतनाशन, ६–शिवप्रिय, ७–पावन, ८–शर्वाक्ष। शिवविन्दु नाम से भी रुद्राक्ष परिचित है।

उक्त निघण्टु ही रुद्राक्ष के इन गुणों को व्यक्त करता है—रुद्राक्ष अम्ल होता है। उष्ण होता है। वातघ्न होता है। कफनाशक होता है। शिर दर्द को आराम पहुँचाता है। रुचि बढ़ाता है। भूतों की बाधा, और ग्रहों की पीड़ा से बचाता है, इत्यादि।

उक्त गुण-धर्मों से ही पता चलता है कि रुद्राक्ष महौषधि हैं। अम्ल होने से—रक्तवर्धक, रक्तशोधक, रक्तविकार नाशक, रुद्राक्ष सि भिटामिन से परिपूर्ण हैं। उष्ण होने से,—शर्दी से और कफ से होने वाले सभी रोगों में रुद्राक्ष उपयोगी हैं। वातघ्न होने से—सभी प्रकार के वाथ रोगों में (गठियावाथ, जहरवाथ आदि में) रुद्राक्ष लाभदायक हैं। अम्ल, उष्ण, वातघ्न, भी होने से—कफनाशक हैं, कफ द्वारा ही टि० बि०, दमा, गेस्टिक आदि रोग आरम्भ होते हैं। रुद्राक्ष से उपचार किया जाय तो लाभ होगा। रुद्राक्ष शिर दर्द को आराम पहुँचाता है—तो, थकावट, चिन्ता, बेचैनी, पागलपन; भ्रान्ति एवं काम विकार-जन्य उन्माद आदि से होने वाले रोगों में रुद्राक्ष का प्रयोग लाभदायक रहेगा। स्नायुदौर्बल्य में भी रुद्राक्ष उपयोगी हैं। पेट साफ,

---

१. माहात्म्य ने भगवान् शिव के हर्षाश्रु के चार विन्दुओं में से चौथा विन्दु कदम्ब को माना है। संभव है—सहस्राक्ष को इन्द्राक्ष में ही अन्तरित कर दिया गया, और रुद्राक्ष के गुणों से मिलते जुलते कदम्ब में भी आयुर्वैदिक गुण हैं, अतः कदम्ब को भी शिव-विन्दु बताया गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्नि तेज, (लिवर ठीक) उदर विकार को दूर करना, रुचि बढ़ाना, रुद्राक्ष के गुण हैं। भूत, प्रेत, पिशाच, चुडेल, डायन और नदी, जङ्गल, पहाड़ के देवताओं का बाधा, आदि, उदर विकार, रक्त विकार, मस्तिष्क विकार, हृदय विकार आदि विकारों से ही उत्पन्न होते हैं, इन्हीं विकारों को भूत और ग्रहों की पीड़ा कही जाती है, रुद्राक्ष-भूतों और ग्रहों की पीड़ा को दूर करते हैं।

आयुर्वेद के ग्रन्थ लिखते हैं,—रुद्राक्ष के दाने को पानी में घोट कर विषाक्त फोड़ों पर लेप किया जाय तो, ठीक हो जाता है। इससे यह भी पता चलता है कि बाहरी चर्म रोगों पर रुद्राक्ष-मरहम से भी आराम पहुँचता है। हो सकता है,—भीतरी विषव्रण (केन्सर) आदि में भी रुद्राक्ष उपयोगी हों! सेप्टिक आदि में तो काम देते ही हैं।

माता, माता के प्रकार और पित्ती आदि रोगों में रुद्राक्षमाला के साथ पपीते की बीज की माला रोगी को पहिरा देने से मात्र भी आराम पहुँचता है।

रुद्राक्ष का छाल सन्धिवाथ और सभी प्रकार के पित्तविकारों में तथा निमोनियाँ एवं मृगी रोगों में रामवाण का काम करता है।

रुद्राक्ष छाती के लिए अति उत्तम है। हृदय-शक्ति बढ़ाता है। दीर्घायु प्रदान करता है। बाहरी विद्युत का प्रभाव रुद्राक्ष में नहीं पड़ता है, इत्यादि प्राचीन आयुर्वेद के ग्रन्थों से पता चलता है।

घरेलु वैद्यों में से कोई जान कार वैद्य होते हैं, तो वे भादों कुँवार के महीनों में (जब कि रुद्राक्ष के दाने कच्चे रहते हैं) यदि कोई सर्पदंशन का रोगी आ जाय, रुद्राक्ष के कच्चे दाने भी तुरन्त मिल जायँ तो, दानों को कूट कर, घोल बनाकर पिलाते हैं। रोगी को उल्टी हो जाती है। वमन से अक्सर रोगी बच जाते हैं। कच्चे रुद्राक्ष के दाने में उग्र गन्ध रहता है, और कशैला होता है, जिससे कय हो जाती है।

बालकों को जब कफ जम जाता है, छाति और गले में घरघराहट आरम्भ हो जाता है, तो माता के दूध में रुद्राक्ष के दाने को घोट कर चटाते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं, कफ निकल जाता है, बालक को आराम पहुँचता है। उमर वाले व्यक्तियों को भी आधी दाना पानी में घोट कर शहद के साथ चटाने से कफ निकल जाता है, आराम पहुँचता है।

बालक जब चौंकने लगते हैं, और माता पिता भूत प्रेत आदि की पूजा करना तथा मनौती चढ़ाना आरम्भ कर देते हैं, ऐसे समय पर माता के दूध में रुद्राक्ष घोट कर चटाने और छाती में लेपन करने से बालक ठीक हो जाते हैं। अनेक बालरोगों में रुद्राक्ष उपयोगी हैं।

लेखक की परीक्षा में—पशुरोगों में जब पशुओं के खुरों के अन्दर फोड़ा घाव हो जाता है पशु उठ नहीं पाता है और मर जाता है। ऐसे रोगी पशुओं का खुर धोय-धाय कर रुद्राक्ष के दाने को घोट कर लेप कर देने से पशु ठीक हो जाते हैं।

रुद्राक्ष भस्म—हैजा, पेचिस आदि में भी उपयोगी रहा। दमा और बाथ में आशातीत लाभ पहुँचाता है। इस तरह से अनेक रोगों का एक दवाई रुद्राक्ष है। इसीलिए रुद्राक्ष महौषधि हैं, शिवविन्दु हैं।

मालाधारण करने मात्र से (स्पर्श मात्र से) भी रक्तचाप, दमा, वाथ, भ्रान्ति आदिके रोगियों को आराम मिलता है। हरेक रोगों में शिवविन्दु-शिवविन्दु ही है।

किन्तु खेद की बात है, रुद्राक्ष के ऊपर जो उक्त खोज हैं, वे सब 'रफ-रिसर्च' हैं। रुद्राक्षों से औषधियों का निर्माण होना सदियों से बन्द हो चुका है। धर्म के भय से आयुर्वेद ने भी रुद्राक्षों के ऊपर पूर्ण खोज नहीं किया, अधूरा ही छोड़ दिया। वह खोज भी जब कि गुणपूजक कर्मठ समाज था उसी समय किया होगा। धर्म का मर्म क्या है? इस तरफ समाज की दृष्टि नहीं पहुँची। रुद्राक्ष महौषधि हैं, सभी प्रकार के रुद्राक्षों में अनेक गुण हैं, इस में कोई शंका नहीं है।

आयुर्वेद और घरेलु वैद्यों के अनुभव से यही पता चलता है कि "अनेक जड़ी बूटियों के साथ संमिश्रण करके रुद्राक्ष द्वारा औषधि निर्माण किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाय तो अनेक रोगों के रोगियों को रोग से मुक्त किया जा सकता है। घरेलु वैद्य यदा कदा न के बराबर आज भी रुद्राक्ष का प्रयोग कर रहे हैं।

रुद्राक्ष के प्रति दृढ धार्मिक भावना रहने का मुख्य कारण भी एक आश्चर्य है, गौर से देखा जाय तो ॐ: श्रीः स्वस्तिक चिह्न से लेकर ज्ञ तक की दुनिया के हर अक्षरों की वर्णमाला मिलती है, और ३।४ साल के पेड़ों में टहनियों के उद्गम स्थान में आँख की सी आकृति (अक्षि) चिह्न देखा जाता है।

अतः धर्मभीरु हिन्दु जगत् ने "गुणाः पूजास्थानं" को सदियों से ही भूल गया। स्वर्ग प्राप्ति की लालसा में रुद्राक्ष को पूजता ही रह गया। अब तो जङ्गल में मङ्गल मनाया जाता है, सब वन साफ है।

संस्कृति से आगे के लिए लोगों को (समाज को) निर्देशन मिलता है, तो इसी तरह के खोज से मिलता है। संस्कृति किसी को पूजा करने को कहती है, तो क्यों कहती है? पूजा होती है तो क्यों? यदि गुण की ही पूजा है? तो, गुणों को खोजिए! मिल जायँगे।

रुद्राक्षों में उक्त आयुर्वैदिक गुणों के होने से ही पुराण, उपनिषद्, तन्त्र, मन्त्र, शास्त्रों में सभी प्रकार के रुद्राक्षों का ऊँचा स्थान है। रुद्राक्ष में एक और आश्चर्य है कि पूरे १० महीने जमीन में दबे रहने पर ही अङ्कुर निकलता है।

शिव कल्याण को कहते हैं। भगवान् शिव के नेत्र-विन्दु (दृष्ट-विन्दु) रुद्राक्ष हैं। शिव के देश में ही रुद्राक्ष मिलते हैं। शिवविन्दु जगत् कल्याण करें डाक्टर वैद्य जन प्रयत्न करें।

नेपाल में सञ्जीवनी बूटी हिलाली है कहीं।
विश्वचर्चित बात है आप सुनते है सही॥
पूजा गुणों की संस्कृति, है सनातन धर्मका।
रुद्राक्ष पूज योग्य हैं इस धर्म से, इस देश का॥
शिव-बुद्धका यह देश है शान्ति छिप कर है कहीं।
आइए! खोजें! निकालें 'स्वागतम्' है बस यही॥

लक्ष्मी आचार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(जो आह से भरी कहानी है)

"स्कन्द पुराण, हिमाद्रि खण्ड पूर्व भाग रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की अनुपलब्ध प्रति प्राप्त हो जाने के बाद १३ वर्ष तक अनुसन्धान और तत् तत् स्थानों का निरीक्षण तथा प्रचार प्रसार एवं सहयोग असहयोग आदि की संक्षिप्त चर्चा, जो आह से भरी कहानी है।"

विवरण

हिमाद्रि वर्ष, हिमाद्रि खण्ड, नेपाल का अनभिव्यक्त इतिहास, संस्कृति, दर्शन, धर्म, पुरातत्व, इन पाँच तत्त्व स्वरूप शरीर धारण करने वाली राष्ट्रीयता के प्रति समर्पित होते हुए भी, घर, परिवार, भूमिसंग्रह, धनसंग्रह से रहित होने पर भी, हमारी नेपाली बुद्धि विकास से मैं डरता हूँ। कारण ? संविधानत: सनातन हिन्दू राष्ट्र घोषित हमारा राष्ट्र नेपाल है।

समझना तो आवश्यक है कि सनातनत्व के प्रतीक शालग्राम, रुद्राक्ष, तुलसी, गौ और ॐ ही हैं, जो आज भी निर्विवाद प्रतीक माने जाते हैं। अतः प्राचीन चतुर्दश अरण्यों में रुद्राक्षारण्य भी सनातन कलेवर का एक प्रमुख अङ्ग है। चतुर्दश अरण्यों में दशवाँ अरण्य है। आयुर्वेद जगत् के रहस्यमय महौषधियों में एक अद्वितीय महौषधि भी है। अत: मेरी प्रवृत्ति रुद्राक्षारण्य के प्रति गतिशील रही जिसमें मातृभूमि, धर्म, दर्शन, संस्कृति, राष्ट्रीयता, इतिहास की भी सेवा होती है।

किन्तु खेद की बात है कि सनातन हिन्दू जगत् के प्राचीन पौराणिक साहित्य ग्रन्थ जो इतिहास से भी सम्बन्धित हैं उन १८ पुराण और १८ उपपुराणों के पन्नों में नाम मात्र का परिचय छोड़कर ठौर ठिकाना विना बतलाए युरोप के तरफ कहीं भ्रमण के लिए रुद्राक्षारण्य माहात्म्य सहित रुद्राक्ष चला गया था, शुद्धाऽशुद्धम् दो चार प्रतियों को मात्र नेपाल और भारत में छोड़ के।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कारण ? किसी भी पुराणों के उपलब्ध तथा प्रकाशित प्रतियों ने रुद्राक्षारण्य कहाँ है ? कुछ संकेत नहीं दिया ।

अत: योगिराज नरहरिनाथ जी को प्राप्त पाण्डुलिपि प्रति (जो प्रकाशित भी हो गई थी) से रुद्राक्षारण्य की सूचना मिलते ही हिन्दू राष्ट्र को चैतन्य स्फूर्ति होना उचित था ।

खैर, टीका संक्षिप्त थी, और पांडुलिपि कीटामृत से बची हुई उत्कीर्ण थी, संभवत: वह मेरे लिए ही छपी थी ।

जिससे मैंने 'नेपाल दर्शन अन्तर्गत सुनसरी जिल्ला दर्शन' नाम की गीति पुस्तिका लिखने के बाद 'देशको माटो-देशका ढुङ्गा (२) भाग, पुस्तक लिखी, और स्थानीय नगर पञ्चायत को इसलिए दान दिया कि 'यह आपके नगर का इतिहास है, आपके नगर का इतिहास 'भताभुङ्गे राजा, लथालिङ्गे मन्त्री, ध्याम्पे काजी, डबके विचारी, आदि मनगढन्त कथाओं से नहीं बना है। यह देखिए ! आपके नगर का इतिहास धार्मिक और ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक तथा आयुर्वेदिक तथ्यों से भरा पड़ा है, कृपया आप इसे समझें, हिन्दूराष्ट्र का खजाना है, हिन्दुपतियों का गढ भी है । इस पुस्तक के आय से आप अन्य लेखकों से लिखित अपने अञ्चल के खोज पूर्ण पुस्तकें छापते रहें ।

इत्यादि लिखकर २०० से भी अधिक ऐतिहासिक ब्लाक चित्र सहित का पुस्तक को पुन: प्रकाशन आदि अधिकार सहित दान देने की घटना शायद हिन्दूराष्ट्र के लिए प्रथम ही हो गई, जिससे आशा थी कि जल्दी से जल्दी पुस्तक छपे, और हिन्दूत्व के प्रतीकों अद्वितीय रुद्रक्षारण्य से लङ्कृत स्वदेश को हिन्दूराष्ट्र की जनता ही पहले पहचाने ।

किन्तु आशा प्रतिफल विपरीत रहा, प्राणान्त तक पहुँच कर पुस्तक तो किसी तरह छपी, उसके बाद एक पण्डित जी को सौंपा गया, वे महाधनिक व्यापारी थे, उन्हें इन पुस्तकों से क्या मतलब कि सनातन हिन्दू जगत् के लिए कुछ मतलब भी रखते हों । शायद उस पुस्तक को दीमक चाट गए । विक्रम २०३०।३१ की बात थी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस पुस्तक को (देशको माटो देशका ढुङ्गा (२) भाग को) दान देते समय नगर और जिला एवं अञ्चल के प्रायः विशिष्ट महानुभाव भी मौजूद थे । मेरी लिखी हुई दान फर्जी में आप सबने हस्ताक्षर किए हैं, शायद खुर्दवीन से पढ़ा जाय ।

इस पुस्तक में व्यक्तिगत मेरे करीब १८।२० ब्लाक भी फस गए हैं । और प्रकाशन के लिए जबकि मैं ८ महीनों तक वाराणसी में रहा, उन दिनों का दाल-रोटी का खर्च डेढ़ रुपया मात्र मिलाथा । जिन व्यक्तियों से आर्थिक सहयोग न० पं० ने प्रकाशन हेतु प्राप्त किया, उन व्यक्तियों को भी न० पं० ने पुस्तक नहीं दिया, संकलन हेतु मैं भी बाजार में घसीटा गया । सडक उद्घाटन हेतु पधारे हुए महामहिम नेपाल के लिए तत्कालीन भारतीय राजदूत से भी ६ सौ पुस्तक खरीद कर सहयोग बरताने की प्रार्थना मुझे ही करनी पड़ी जबकि मैं पुस्तक दान दे चुका था ।

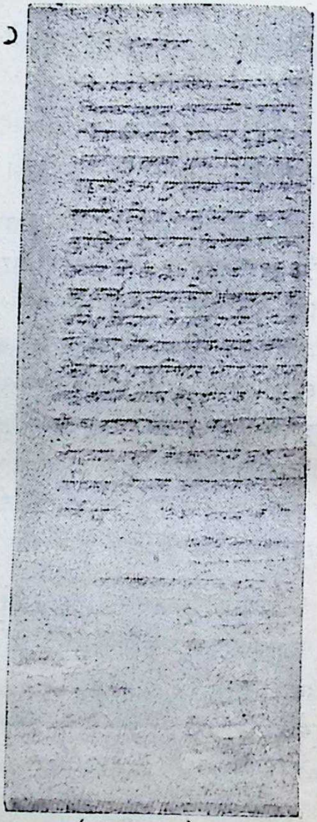

(दान पत्र)

समय बीत जाने के बाद भी आपने ३ सौ पुस्तक खरीद भी दिया था । पर पैसा कहाँ, किस हिसाब में गया, दान लेने वाले ही जानें । सब उपाय इस क्षेत्र के लिए नाकामयाव हुए । पञ्चों से और बुद्धिजीवियों से, पण्डितों से, सेठ साहुकारों से जो सहयोग रहा उसे धन्यवाद है ।

इसके वाद 'हिजो र आज' (कल हम कैसे थे और आज कैसे हैं । इत्यादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय को लक्ष्यकर दो भागों में दो पुस्तक लिखकर उनके आय से रुद्राक्ष और रुद्राक्षारण्य का परिचय कुछ आगे बढ़ाने के फेर में प्रकाशित करके एक अधिकारी को सौंपते हुए बिनती भी करनी पड़ी कि 'पुस्तकें जातीय एकता और रास्ट्रीय अखण्डता के लिए उत्तम हैं, आप स्थान-स्थान पर भेज दें, मैं अकिञ्चन लेखक हूँ, मुझे मूल्य दिया जाय तो और एक ऐतिहासिक पुस्तक छाप लूंगा इत्यादि ।

कुछ ही दिनों के बाद नेपाल में दल-बहुदल की वार्ता प्रारम्भ हुई, वे अधिकारी भी बदली हो गए, मूल्य गड्ढे में गया, पुस्तक भी कोठे में बन्द रहे, हाल वही हुई–

सिंहिकासुतसन्त्रस्तः शशः शीतांशुमाश्रितः ।
साश्रयं जग्रसे तत्र तमन्यः सिंहिकासुतः ॥

वाली । मैंने सोचा चलो देश की ख्याति के लिए देश की ज्योति को भी पान करने वालों से पल्ला पड़ा ।

इसके वाद रुद्राक्षारण्य का संक्षिप्त परिचय 'आज'' में प्रकाशित हुआ । फिर कुछ दिन बाद आज के अन्यतम सम्पादक कौस्तुभानन्द पाण्डेय जी की सूचना मिली कि 'आपने रुद्राक्षारण्य के बारे में 'हिन्दी में पुस्तकाकार' विशेष परिचय प्रस्तुत किया जायगा, लिखा था, यहाँ कई पत्र आए हैं' इत्यादि ।

अतः 'रुद्राक्षारण्य' (नेपाल परिचय—अन्तर्गत पूर्वाञ्चल का परिचय, हिन्दी भाषाभाषी पड़ोसी मित्रों के लिए) नाम से किसी तरह एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित करके सत्यप्रतिज्ञ बनना पड़ा ।

अब मैंने सोचा, इस तरह से नेपाल में (हिन्दूराष्ट्र में) रुद्राक्षारण्य का प्रचार नहीं होगा । अतः भीख माँग-माँगकर सुन्सरी मोरङ झांपा जिलों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनसंवाध सम्पन्न कई स्थानों पर 'धरान नगर पञ्चायत' के ही नाम से उक्त क्षेत्रों में विद्यमान 'ऐतिहासिक पुरातात्त्विक सांस्कृतिक एवं पुराणवर्णित धार्मिक स्थानों का परिचय लिखवाकर १८ बोर्ड रखवाया। किन्तु जब श्री ५ महाराजाधिराज की सवारी पूर्वाञ्चल में होने की तयारी हुई तब सड़क साफ के अभियान में उन ढाई-ढाई सौ रुपये लागत के हिन्दू राष्ट्र के परिचायक बोर्डों को भी साफ कर दिया गया। न मालूम हिन्दू राष्ट्र के हम लोगों को हिन्दूत्व परिचायक वस्तुओं से क्या चीढ है, या निरक्षर हैं, कुछ समझ में नहीं आता।

एक समय की अन्तर्वेदना की यादगारी में यह घटना प्रस्तुत है, जबकि कई व्यक्ति उसी पुस्तक (देशको माटो देशका ढुङ्गा (२) भाग) को खरीदना चाहते थे। उन व्यक्तियों ने पुस्तक का मूल्य देकर कहा ७ प्रति पुस्तक दिलवादें। मैं दौड़ता हुआ उन पण्डित जी के दुकान पर पहुँचा। पण्डित जी नहीं थे, नौकर था, उसने पुस्तक हैं ही नहीं कह दिया। मैंने कहा लिखने वाला मैं हू, पण्डित जी को ही नगर पञ्चायत ने बेचने के लिए पुस्तकों को दिया है, तुम क्यों नहीं हैं कहते हो? इत्यादि कसके विवाद होने पर उस नौकर ने पुस्तक निकालकर दिया। पुनः उस पुस्तक को देखकर औरों ने भी पुस्तक मगवाया, मैं पुनः पण्डित जी के दुकान पर पहुँचा। इस बार पण्डित जी दुकान पर मौजूद थे। नौकर से जो विवाद हुआ सो पण्डित जी से मैंने कहा, तो पण्डित जी कहने लगे, आपने बहुत अच्छा किया, कुछ पुस्तक बिचवाए, अतः लीजिए २ रुपये चाय पीजिए, इत्यादि। मैंने कहा 'ए पण्डित जी! आपको शरम नहीं आती है? जिसने ७ वर्ष का परिश्रम दान दिया है उसी व्यक्ति को आप २) रुपया चाय पीने के लिए उसी पुस्तक के मूल्य में से दलाली स्वरूप घूस दे रहे हो? इत्यादि। अन्तर्वेदना के मारे चोट से मैंने इन कुत्सित भावनाओं का झलक मात्र व्यक्त किया है कि हिन्दूत्व के परि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चायक कार्य में हिन्दू राष्ट्र में क्या सहयोग मिलता है। इस सत्योक्ति के लिए मैं उन पंडित जी से नम्रता पूर्वक क्षमा याचना करता हूँ। आप सबकी कृपा से मुझे खिन्नता नहीं हुई, बल्कि उत्तरोत्तर उत्साह की वृद्धि हुई, जिससे संपूर्ण रुद्राक्षारण्य माहात्म्य का प्रकाशन आप लोगों के हाथ में सौंप रहा हूँ, हिन्दूत्व की खोई हुई यह एक निधि है।

फिर वीरगञ्ज में हिन्दू सम्मेलन के लिए आमन्त्रण मिला कि हिन्दी में छपी हुई रुद्राक्षारण्य की परिचायिका पुस्तिका को पुनः छापकर ५ हजार प्रति लेते आना। मैंने सोचा, भाग खुल गए, पर मैं जानता था कि हमारा राष्ट्र हिन्दू राष्ट्र है। अतः वही पुरानी प्रति मात्र ५ सौ लेकर पहुँचा। वहाँ खरीदने वाला तो कोई नहीं मिला पर मांगने वाले बहुत मिले, बरता दो तो लाखों प्रति बरत जांय, २०।२५ प्रति बरता भी दिया। बहुत गिडगिडाने पर सम्मेलन वालों ने एक सौ प्रति खरीद कर कृतज्ञता व्यक्त की।

रुद्राक्षारण्य का परिचय अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत करने के लिए पूर्व प्रकाशित हिन्दी प्रति की भूमिका जो आयुर्वेदिक रुद्राक्ष के विषय से संबन्धित थी, उसे उस सम्मेलन ने यथा तथा छापकर भले ही बताया, उसके लिए उन्हें धन्यवाद है।

अब मैं शोच रहा था कि इस तरह से रुद्राक्षारण्य का प्रचार प्रसार हिन्दू जगत् में असम्भव है। इसी बीच काठमाण्डू गैरीधारा टङ्काल निवासी वयोवृद्ध पं० उमानाथ शर्मा जी से धरान रुद्राक्षारण्य निवासी डिट्ठा लक्ष्मी प्रसाद आचार्य मार्फत स्कन्द पुराण हिमाद्रि खण्ड पूर्व भाग रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की पूरी प्रति (प्राचीन पाण्डुलिपि प्रति जो २० अध्याय की है, जो यह प्रस्तुत प्रति है) प्राप्त हुई। पण्डितराज राजेश्वर शास्त्रीजी ने अपने १० वर्ष के उमर में रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की जो प्रति गुद्दड की दुकान में एक क्षण मात्र दर्शन किया था वह पहली प्रति थी। योगिराज नरहरिनाथ जी ने जिस प्रतिको प्राप्त कर अति संक्षिप्त नेपाली टीका लिखवाकर जो प्रकाशित कर दिया था, जिसके सहारे मैंने यहाँ तक रुद्राक्ष और रुद्राक्षारण्य का परिचय प्रचार प्रसार किया, वह प्रति दूसरी थी। मुझे जो प्रति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राप्त हुई, जो मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ, यह तीसरी प्रति है। फोटो ब्लाक प्रस्तुत है।

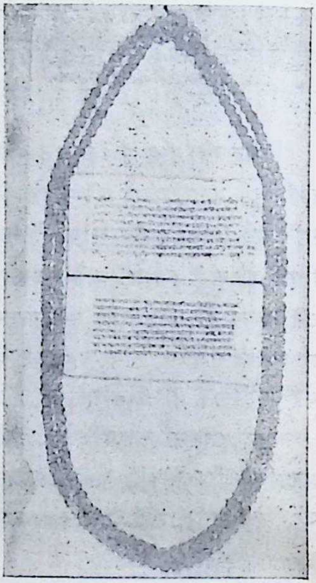

इस पाण्डुलिपि प्रतिको प्राप्त होते ही मैं चौंका, आश्चर्य है कि आखीर हिन्दू जगत् के इतिहास (महाभारत पुराण, उपपुराण, कथा, वार्ता, तन्त्र मन्त्र, धर्मशास्त्रों के पन्नों) से रुद्राक्षारण्य कैसे लुप्त हो गया ?

उपलब्ध पाण्डुलिपि प्रति की हिन्दी और नेपाली राष्ट्रभाषा में अलग-अलग टीका लिखकर प्रकाशित करने की सूझ हुई। मैंने प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक दोनों भाषा-टीका लिखकर प्रकाशित न कर लूंगा, तब तक मुण्डन भी नहीं करूँगा।

इस तरह से (हिन्दू जगत् के इतिहास से लुप्त होकर) पुनः रुद्राक्षारण्य जो प्रकट हुआ, यदि रुद्राक्षारण्य राजनैतिक भारतभूमि में प्रकट हुआ होता तो दण्डकारण्य वा वृन्दारण्य से कम ख्याति प्राप्त नही होता। हिन्दू राष्ट्र देवतात्मा भूमि नेपाल में प्रकट होने से ही गुप्तात् गुप्त होकर अब लुप्ततर भी तो हो रहा है ? आखीर है हिन्दुओं के इतिहास का एक रङ्गमञ्च, जो इतिहास से ही उतर गया था। अतः हिन्दू जगत् समक्ष रुद्राक्षारण्य को प्रस्तुत करना, हिन्दू राष्ट्र की महिमा के लिए और मातृभूमि की सेवा के लिए मैंने उचित समझा, और दोनों भाषा टीका लिखकर समाप्त हुई। पण्डित राज स्व० राजेश्वर शास्त्री द्राविण जी ने भी 'जो मिला सोही सही, यही रुद्राक्षारण्य है' कहा था।

अब प्रकाशन हेतु मैं प्रयत्न करने लगा। पञ्चनेता, अधिकारी वर्ग, धनी मानी, बनियाँ बन्धु, स्थानीय सामाजिक संस्था, पञ्चायत से मैं हार गया था;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भरपूर प्रतारणा पिल गई थी, स्थानीय धार्मिक संस्थाओं से भी गिड्गिडा चुका था।

अतः पण्डित, पुरोहित, संस्कृत के विद्वानों से मैंने सम्पर्क स्थापित किया; और ६ व्यक्तियों का नाम देकर निवेदन के रूप में एक पम्प्लेट छपवाया; साथ में एक रसीद भी छपी, जिसमें नेपाली रु० ७००) खर्च हो गया। उसमें रुद्राक्षारण्य का परिचय, हिन्दूत्व के लिए लुप्त इतिहास का प्राकट्य, और रुद्राक्ष का आयुर्वेदिक महत्व का वर्णन के साथ निवेदन था कि रुद्राक्षारण्य माहात्म्य प्रकाशन हेतु अग्रीम सहयोग कर प्रति सुरक्षित करवा लें। रु० नेपाली २५ मात्र प्रदान करें।

जिन-जिन व्यक्तियों ने उक्त प्रकार से रुद्राक्षारण्य माहात्म्य प्रकाशन हेतु भरोशा दे रखा था वे सब व्यक्ति पीछे हो गए। रसीद और पम्प्लेट आज तक पं० छविलाल पोखरेल जी के पास हैं। वर्षों तक नगर श्रेष्ठी जी के पास १२५० नेपाली मुद्रा के साथ रसीद और पम्प्लेट सडते रहे। डेढ हात

लम्बी मेरी दाडी हो गयी, आगे के सलाहकार बन्धुगण हँसी उड़ाने लगे कि अच्छा ही हुआ इनकी दाढी बढ़ गई, अब मुण्डन भी न हो, और शिख सम्प्रदाय के तरह एक खुली दाड़ी वाला दूसरा संप्रदाय तैयार हो जाय'।

पं० छविलाल पोखरेल और पं० काशीनाथ कट्टेल जी को छोड़ कर सहानुभूति प्रकट करने वाला भी कोई नहीं रहा। कुछ छीनाझपटी भी चली। किसी को फोटो उतारने के लिए दिया तो उधर ही स्वाहा। अन्य पुस्तकें बेचने को दिया तो मूल्य मिला ही नहीं। कुछ दिन के लिए रखी हुई पुस्तकें सौ सौ प्रति पण्डितों के घर से भी गायव हुईं। पूछने पर हें: हें: खो गए कह दिए। उक्त रसीद से भी रकम गायव हो गया।

और तो क्या ? जिन व्यक्ति के हाथ से 'रुद्राक्षारण्य माहात्म्य' की प्राचीन पाण्डुलिपि प्रति मिली, उन्होंने विशेष उसे प्रकाशित करने को जोरदार मुझे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भरोसा दिया था, उनके पास प्रायः मैं ३० बार गया, एक बार जाने में १०।१२ रुपया खर्च होता था, वे मुझसे प्रार्थना करवाते और नमस्ते लेते लेते कभी नहीं थकते थे, अन्त में मैं हार कर उनके पास जाना ही छोड़ दिया। मुझे कर्तव्यच्युत (पतित) बनाने को मेरी नियती ही तुल गई।

परिस्थिति में काबू पाने के लिए, रुद्राक्षारण्य माहात्म्य में से रुद्राक्ष-महिमा वाला एक अध्याय और कथासार वाला एक अध्याय मिलाकर एक पुस्तिका, और अर्णप्रथम श्राद्ध विधि निरूपण स्थल, वराह क्षेत्र, विष्णुपादुका को बताने वाला ब्रह्मपुराण का एक अध्याय तथा वराह पुराण का एक अध्यय जो वराह क्षेत्र आसपास के तीर्थों को बताने वाला मिलाकर दूसरी पुस्तिका, नेपाली टीका में प्रकाशित कर मैं रास्ता ढूँढने लगा।

पर दुर्भाग्य है कि साथ में एक 'आह्वान' नाम की पुस्तिका भी छपी थी। उस पुस्तिका में 'हिमाली संस्कृति केन्द्र' नन्दा (निन्दा) तट धुलाबारी ६, झांपा, मेची में उक्त नाम से जो एक संस्था स्वीकृत हुई थी, उसके परिचय के साथ श्मशान घाट, नाहाने का घाट और नेपाल का यथावत् पार्थिवमान चित्र मूर्ति (नेपाल माता मन्दिर) निर्माण के लिए दाता २ बीघा भूमि प्रदान करने को वचनबद्ध थे, अञ्चलाधीश के प्रधान संरक्षकत्व में सरकारी स्वीकृति भी मिल चुकी थी। उसका यथावत वर्णन, और परिचय छपी थी। दो अध्याय ने० टी० रुद्राक्षारण्य, वराह क्षेत्र माहात्म्य में भी उक्त केन्द्र का परिचय छपा था। कुल व्यय रु० २५००) हुआ। समिति के सचिव अध्यक्ष सब इन सब चीजों की प्रीति से मुख मोड़ने वाले; मातृभूमि की ममता से शून्य मिले, वि० सं० २०३८ से आज २०४१ तक मैं बौराता रहा, हाल 'प्रगति' साप्ताहिक प्रत्रिका से एक पत्र प्रकाशित करके शान्त बैठा हूँ, पर उन व्यक्तियों को कुछ भी सामाजिक लज्जा प्रतीत नहीं हुई। दाता हैं पर कार्यकर्ताओं का अभाव इस क्षेत्र में काफी नजर आता है।

जो पुस्तिकायें छपीं, आज ३ साल में भी एक हजार पुस्तिका विक्री वितरण नहीं हो पाई। जिन पुस्तकों में लुप्त प्राय कौशिकी प्रदेश का ऐतिहासिक धार्मिक चर्चा है, उसी प्रदेश में उनको पढ़ने वालों का अभाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। यहाँ के महा धनिक हिन्दू सेठ भी हाथ पसारे पुस्तक लेते हुए धन्यवाद मात्र देते हैं, मूल्य देना वे सीखे ही नहीं है। पुरोहितों की तो बात ही क्या है, वे देना तो जानते ही नहीं, उस जमाने में भी हस्तलिखित पुस्तक दान मिलता था तो वे किसी तरह जजमान बचावें तो बांच देते थे। आखिर इन प्रतियों को छाप कर मैं उन्हीं की आमद (नगदी) तो बढ़ा रहा हूँ। पर जो कुछ किया कराया सब गुड़ गोबर ही हुआ।

इससे आगे 'हिमाली विभूति विद्या निकेतन' शिखीकूट (शिखर कटेरी) इलाम से भी मैं धोखा खा चुका था।

अभी-अभी वि० सं० २०४० की बात है, काठमाण्डू में २ हिन्दू सम्मेलन सम्पन्न हुए। उन सम्मेलनों में बिक्री के लिए रुद्राक्षारण्य माहात्म्य ने टीका, वराह क्षेत्र माहात्म्य ने० टीका, हिन्दी परिचयात्मक प्रति रुद्राक्षारण्य आदि पुस्तिका मैंने भेजी थीं। कुछ प्रति वितरण कर सारी प्रति मुझे सौंपते हुए उन बन्धु ने कहा प्रतिनिधि वर्ग मोटरों से उतरते हैं और कहते हैं कि क्या पुस्तक बाँट रहें हैं? हाँ तो दीजिए! 'कह कर हाथ पसारते हैं। जी नहीं, ये पुस्तिकायें बिक्री वितरण के हैं, बस इतना सुनते ही, 'अच्छा तो रहने दीजिए, कह कर मोटरों से ढुलक जाते हैं, क्या किया जाय। इन सम्मेलनों में क्या होता होगा, क्यों, कैसे, किस लिए होते हैं कुछ पता नहीं। अपना तो सारा खर्च वेकार ही रहा, साथ में देश प्रेम में भी गर्दनिया ही तो मिलती जाती है।

हाँ, तो वीरगञ्ज 'विश्व हिन्दू सम्मेलन' नाम से समाचार फैला, पर नेपाली हिन्दू सम्मेलन मात्र हुआ, उस सम्मेलन में गूठी संस्थान के अध्यक्ष भी मिले थे। उनसे मैंने कहा—देखिए मैं आपके संस्थान का कृतदास (कमारो) हूँ। बिना वेतन, विना आपके कहे, नेपाली तीर्थस्थान, ऐतिहासिक स्थान, प्राचीन मूर्ति, कला संस्कृति, धर्म, दर्शन, महापुरुषों की जन्मभूमि, एवं भाषा के लिए मैं समर्पित हूँ, जो काम मैं कर रहा हूँ, वह काम गूठी संस्थान से होना चाहिए। अत: आप कुछ नहीं तो इतिहास के लिए ही सही, धर्म के लिए न सही, नेपाली भूमि के अन्दर, जितने भी उक्त अप्रकाशित स्थानों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपलब्ध कृतियों का प्रकाशन, शोध, खोज एवं संरक्षण करें और पुजारियों की भी स्तरीय चुनौती करें, जो कि उक्त बातों को समझते हों, और नेपालीत्व की आत्मा प्रबल बना ने वाली धार्मिक एवं दार्शनिक व्याख्यान जनता में करते हों, ऐसे पुजारी रखें, जिस स्थान में रहें कम से कम उस स्थान का इतिहास तो बचाए रखें। किन्तु सब व्यर्थ।

गूठी संस्थान तो ऐसा निकला कि न स्वयं बनाता है, न तो किसी को जीर्णोद्धार करने की अनुमति ही देता है। जो ऐतिहासिक, धार्मिक, पौराणिक स्थान उसके अधीनस्थ हैं, उनके हजारों बीघे जमीन का आमद भी तो है? नेपाल के प्रमुख-प्रमुख ऐतिहांसिक स्थान टूटे-फूटे जा रहे हैं, गिर रहे हैं? गिरने दो, टूटने दो? पर्वाह नहीं। कोई दाता कहता है कि मैं जर्णोद्धार कर देता हूँ, धर्मशाला बना देता हूँ, तो गूठी संस्थान से अनुमति मिलती ही नहीं, कहते हैं, वनवा के हमें सौंप दो। किन्तु जो सौंपा गया है, उसे आप संरक्षण करते तो इतनी बातें ही क्यों हो? न तो आपने 'यह ऐतिहासिक स्थान हैं, इत्यादि लिखवा कर कहीं सूचना बोर्ड ही लटकागा है। मूर्तियाँ चोरी चली जाती हैं, प्राचीन पुस्तकें बिक जाते हैं, तो क्या सनातन हिन्दूत्व के लिए नेपाल के ऐतिहासिक, पुरातात्विक, साँस्कृतिक, धार्मिक स्थानों का संरक्षण गुठी संस्थान कर सकता है? जिनके नष्ट हो जाने पर नेपालीत्व नष्ट हो जायगा, सनातनत्व, हिन्दूराष्ट्र का हिन्दूत्व भी तो खतम हो जायगा तो क्या नेपाल और नेपाली अमर रह सकते हैं? कहाँ कुछ होश किसी को है? नेपाली राष्ट्रीयता के प्रतीक वे ही तो हैं? सनातन (हिन्दू) अवतारों में तृतीय (यज्ञ-वराह) वराह क्षेत्र धाम नष्ट हो रहा है, कौशिकी में कूद रहा है, विष्णुपादुका (सब से पहले जहाँ यज्ञ वराह विष्णु ने दिव्य पितृयों का श्राद्ध किया था श्राद्धविधि निरूपण स्थल, जिसके बाद मानव भी श्राद्ध करने लगे) खँड़हर ही है। रुद्राक्षरण्य का मूल मन्दिर पिण्डेश्वर गिरा जाता है, मरम्मत नहीं, सरस्वती सरोवर फूट टूट रहा है, संरक्षण नहीं।

ऐसा ही प्रोत्साहन हो तो अब आगे नेपाली स्वयं सेवकों का नितान्त अभाव हो जायेगा, आगे क्या होगा, कुछ पता नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसी तरह मैं बौरा रहा था, एक दिन शीतशैल, रुद्राक्षारण्य का मूल-स्थान, विजयपुर, अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर के प्रधान पुजारी पं० दुर्गाप्रसाद पोखरेल जी ने कहा 'पिण्डेश्वर शिव मन्दिर में एक गुप्तदान का बक्सा रखा जाय, और उसके आमद से रुद्राक्षारण्य के मूल स्थानों में (सारे मन्दिरों में और तीर्थों में तथा हिन्दूपति सेन नरेन्द्रों से सम्बन्धित ऐतिहासिक स्थानों में) परिचयात्मक बोर्ड लगवा दिया जाय, आगे चलकर नेपाली टीका रुद्राक्षारण्य माहात्म्य बीसों अध्याय भी प्रकाशित किया जाय' मैं सहमत हुआ, साल भर में रु० ३ हजार के बोर्ड निर्दिष्ट स्थानों पर लग गए।

दुःख की बात है कि स्थानीय अज्ञ, उद्दड एवं हिन्दूत्व विरोधी जनों ने पत्थर मार-मार कर, उन बोर्डों में से कतिपय को खत्म ही कर दिए। एक बोर्ड जिसमें रु० ७५० खर्च हुआ था, उसको भी स्थानीय नगर के वाड पञ्चने खुलवाकर पुनः सुरक्षित स्थान में रखेने के लिए आज ८ महीनों तक अपने आफिस में सुरक्षित रखे हैं, न मालूम उसका उद्घाटन होगा या नहीं।

गुप्त दान के भरोशे नेपाली टीका रुद्राक्षारण्य माहात्म्य तो छप जायगी; पर विकने वाली नहीं, रुद्राक्षारण्य का कुछ प्रचार प्रसार भी उसे न होगी। अतः सर्वप्रथम हिन्दी टीका ही छापना उचित रहा। मैं प्रयत्नशील रहा।

एक दिन धरान के निवासी प्रेम राई जी को यही कहानी मैंने सुनाई। फलतः नेपाली रु० ४०००।०० (चार हजार) निर्व्याज मुझे ऋण मिली। पिण्डेश्वर शिव के गुप्तदान वाले बक्सा से सव्याज ने, रु० २०००।०० दो हजार भी प्राप्त हुआ। और अपने पास का झार-झूर कर यह 'स्कन्द पुराण, हिमाद्रि खण्ड, पूर्व भाग में से रुद्राक्षारण्य माहाम्य की हिन्दी टीका, पड़ोसी हिन्दी भाषाभाषी, मित्रों के हाथों में सौंप रहा हूँ।

प्रेम राई जी को सप्रेमधन्यवाद है।

भवदीय, पथिक कवि
लक्ष्मी आचार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्य के यात्रियों के लिए

पथ प्रदर्शन और रुद्राक्ष महिमा

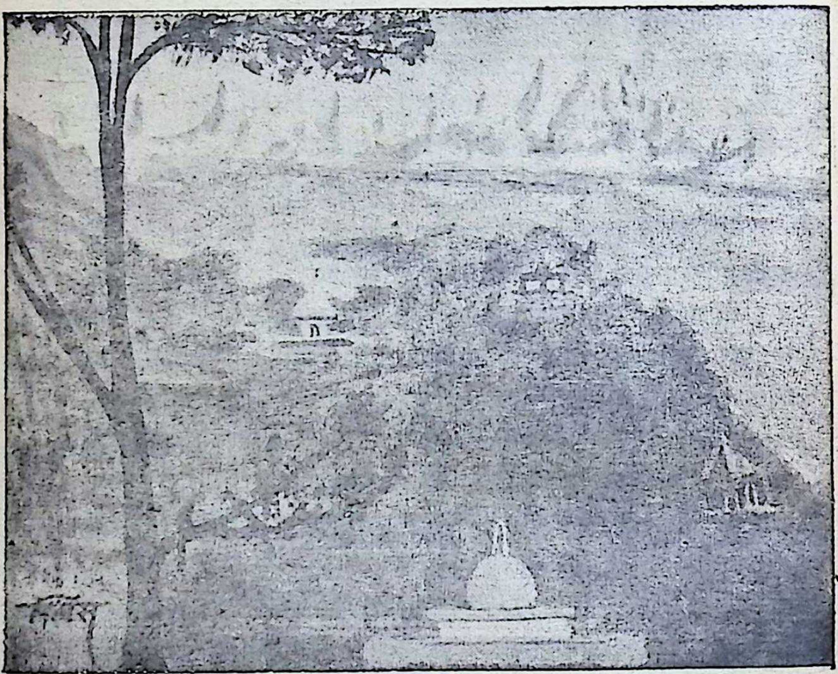

शीतशैल-रुद्राक्षारण्य, पञ्चक्रोशी क्षेत्र, विजयपुर की यथार्थता में आकृति मात्र। पूर्वोत्तर से देखें पश्चिमोत्तर के तरफ।

भारत का विहार प्रान्त में कटिहार जंक्शन प्रसिद्ध है। कटिहार से जोगबनी तक पूर्णियां होते हुए रेल की एक ब्राञ्च लाइन पहुँचती है।

जोगबनी से उत्तर नेपाल की सीमा प्रारम्भ हो जाती है। नेपाली सीमा को 'रानी सिकियाई, कहते हैं। रानी सिकियाई से करीब ३ मील उत्तर विराट-नगर तक रिक्सा जीप टेम्पो से यात्री पहुँचते हैं। विराटनगर वही विराटनगर है, जहाँ पाण्डव गुप्त वासके दिन गुजार गए थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राक्षारण्य का मूल स्थान कहाँ हैं ?

विराट–नगर से धरान तक के लिए वस (रोडवेज) मिल जाते हैं। विराटनगर से २८ मील की दूरी पर शीतशैल रुद्राक्षारण्य का पञ्चक्रोशी क्षेत्र विजयपुर पर्वत-खण्ड विद्यमान है। विजयपुर के तलहटी (समथर) भाग को धरान कहा जाता है।

धरान नगरपञ्चायत है, तलहटी का मुख्य बाजार भी है। विजयपुर धरान नगर पञ्चायत अन्तर्गत ही है।

विजयपुर ही रुद्राक्षारण्य का मूलस्थान है। महात्म्य कहता है, यहीं सर्वप्रथम रुद्राक्ष उत्पन्न हुए। रुद्राक्ष भगवान् शिवके हर्षाश्रु विन्दु हैं। त्रिपुर विजय के वाद भगवान् शिव हँसे थे। हँसते-हँसते उनके आखों से ४ बूंद आंशू टपक पड़े और उन्हीं अश्रु विन्दुओं से रुद्राक्ष ऊगे। रुद्राक्षारण्य के प्रधान देवता अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव हैं, और बालाम्बा प्रधान देवी (पार्वती) हैं, जिन्हें स्थानीय जनता बालकुमारी कहती है। विजयपुर के लिए टेक्सी मिल जाती हैं। ऊँचाई अधिक नहीं है, धरान से पैदल ही आराम से यात्री बन्धु विजयपुर पहुँच जायगे।

रुद्राक्ष के हरे भरे वृक्षों का धरान से ही दर्शन मिल जाता है। स्थानीय जनता की अज्ञ बुद्धि से यह प्राचीन धार्मिक वन (रुद्राक्षारण्य) पूर्णतया नष्ट हो गया था। जिस पुराण में रुद्राक्षारण्य और रुद्राक्ष का वर्णन था; उस पुराण का वह भाग (हिस्सा) भी इस से आगे किसी को नहीं मिली, मिली तो भी नासमझ व्यक्तियों को मिली; अत: रुद्राक्षाण्रय का यथार्थ वर्णन ही लुप्त हो गया था। योगिराज नरहरि नाथ जी को प्राप्त पाडुलिपि रुद्राक्षारण्य माहात्म्य जो नेपाली संक्षिप्त टीका में छपी (दीमक के द्वारा नष्ट किए गए भागों को भी यथावत् ही रखा गया था) से इस लेखक ने काम लिया, और आज से १३ वर्ष पूर्व ही रुद्रक्ष और रुद्राक्षारण्य के विषय में हिन्दी नेपाली दोनों भाषा में लिखना प्रारम्भ किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

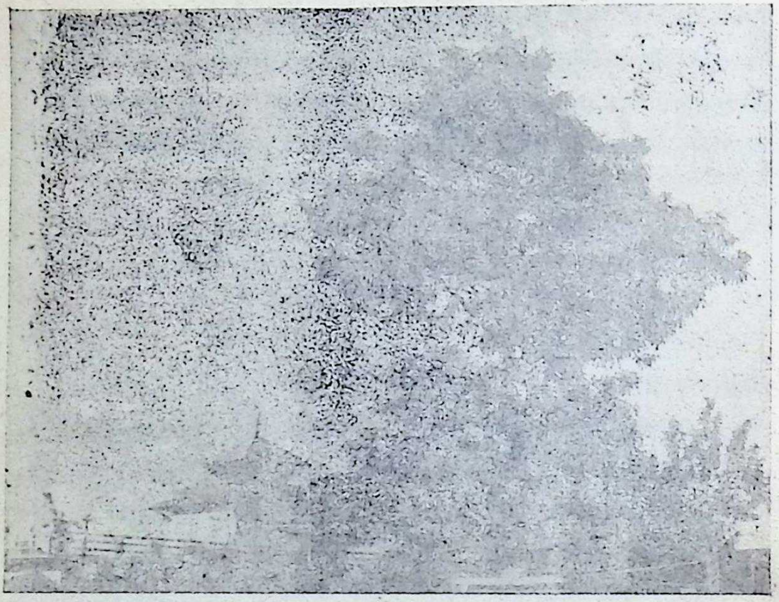

(हरा भरा रुद्राक्ष वृक्ष)

इसके वाद भारतीय कई लेखकों ने केवल रुद्राक्ष के वारे में लेख परिचय लिखना प्रादम्भ किया। आज सभी भारतीय वन्धु प्राय रुद्राक्ष से परिच्यिय हैं, किन्तु रुद्राक्षारण्य से परिचित कुछ ही होंगे।

आइए ! रुद्राक्षारण्य एक महान् तीर्थ भूमि है, भारत वर्ष नामकरण से आगे प्राचीन वर्ष, हिमवर्ष के समय में अबका संपूर्ण भारत वर्ष को चौदह अरण्यों में विभाजन किया गया था, उसी समय से अभी तक रुद्राक्षारण्य दशवाँ आरण्य है। अतः प्राचीन तीर्थ वन है। मैं संक्षिप्त परिचय के साथ साथ आपको देर्शनीय स्थानों पर पहुँचाता हूँ।

'रुद्राक्ष' प्रत्यक्ष सजीव वृक्ष है। छोटे छोटे पौधों के आगे अतिकरुण स्वर से यदि आप रो देते हैं तो भी वे मुरझा जाते हैं। गन्दा पानी, गन्दा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धूँवां, फल मूत्र, कच्चा गोबर, आदि पौधों के लिए हानिकारक हैं। पौधा बढता जाता है तो कुछ नीचे की टहनियां सूख जाती हैं। टहनीका सूखा भाग झड़ जाने पर उस स्थान में ठीक आदमी के आँख की सी आकृति कुद्रती ही रहेगी। प्रत्येक दानों में ॐ श्री अ और क से लेकर ज्ञ तक के अक्षर, प्रत्येक भाषा के अक्षर में निगाह वालों को नजराना मिलता है।

(पुष्पित रुद्राक्ष वृक्ष की टँहनी)

रुद्राक्ष पूरे दश महीना (मानव के तरह) पृथिवी के गर्भ में रहकर ही ऊगते हैं। रुद्राक्ष के फूल मौलशरी (वकुल) पुष्प के जैसे छोटे-छोटे होते हैं। वही फूलका हिस्सा गाँठ पड़ता जाता है, बड़े से बड़े रुद्राक्ष कलमी अवाले अथवा बड़ी हरीतकी के बराबर के होते हैं, श्रावण भादों में वे पकते हैं तो काला जामुन के रङ्गके हो जाते हैं, खाने में मीठे स्वाद वाले लौहिक तत्व (आइरन) से युक्त प्रतीत होते हैं।

और आगे, इसी लेखक द्वारा लिखित 'आयुर्वेदिक रुद्राक्ष' और रुद्राक्षारण्य माहात्यम्यम्' 'स्कन्द पुराणान्तर्गत हिमाद्रिखण्ड पूर्वभागात् प्रस्तुतम् हिन्दी सहित २० अध्याय पूरा पढ़ें। हिन्दी में रुद्राक्षरण्य का परिचय पुस्तिका भी देखलें तो अच्छा है। देश-को माटो देश-का ढुङ्गा (२) भाग नेपाली भाषा में लिखी पुस्तक रुद्राक्षारण्य की उत्पत्ति से आज तक का परिचय प्रस्तुत करता है। अनु–सन्धानियों को देखना उचित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्कन्द पुराण का हिमाद्रि खण्ड में से हिमालय का उच्च शिखर स्वर्ग-मस्तक (सगरमाथा) से पूर्वभाग का वृत्तान्त बताने वाला—रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की प्रचीन आजतक अनुपलब्ध पाण्डुलिपि प्रति ।

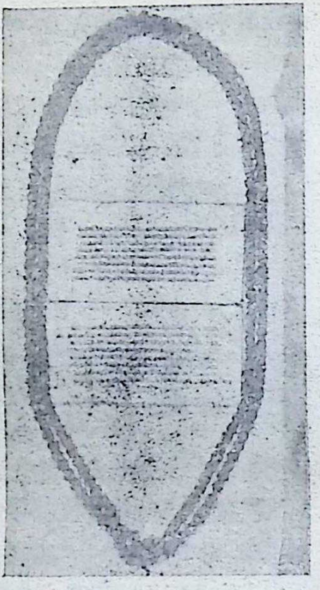

रुद्राक्षारण्य माहात्म्य की पाण्डु लिपि प्रति ।

यह तीसरी प्रति है, पहली प्रति स्व० पण्डित-राज राजेश्वर शास्त्री द्राविड जी को १० वर्ष के आयु में दुद्दके दुकान में सिर्फ एक झांकी देखने को मिली थी, दूसरी प्रति योगिराज नरहरिनाथ जी को मिली थी, जो कीट-किट्ट थी, संक्षिप्त नेपाली टीका भी थी, जिससे मैं 'देश-को माटो देश-का ढुङ्गा भाग (२) लिखने में सफल हुआ, और यह तीसरी प्रतिः गौरीधारा; टंकाल, काठमाण्डों, निवासी प्राय ८० वर्ष के बूढ़े पण्डित उमानाथ सर्मा जी द्वारा प्राप्त कर धरान रुद्राक्षारण्य निवासी डि० लक्ष्मि प्रसाद अचार्ज जी से मुझे मिली । वीशों अध्याय को हिन्दी और नेपाली में अलग-अलग टीका लिख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशन हेतु ४ साल पूरा भटक कर आज हिन्दी टीका वाली प्रति छपपाई है

सूचना—

उक्त पाण्डु-लिपि प्रति से हिन्दी टीका में १ प्रमुख से लेकर ३२ मुख० तक के रुद्राक्ष का माहात्म्य संस्कृत श्लोक के साथ अठारवाँ अध्याय प्रस्तुत है। साथ में उसी माहात्म्य के आधार पर, धार्मिक यात्रियों को पथ प्रदर्शक प्रस्तुत पुस्तिका में भी प्रस्तुत किया जा रहा है।

जनकपुर जलेश्वर से पूरव कौशिकी तक, कौशिकी से पूरव ८० माइल तक, और ऊपर 'उत्तर जहाँ तक बरफ नहीं गिरता है वहा तक रुद्राक्षारण्य है। धरान का विजयपुर रुद्राक्षारण्य का पञ्चक्रोशी क्षेत्र, होने से प्रमुख स्थान है।

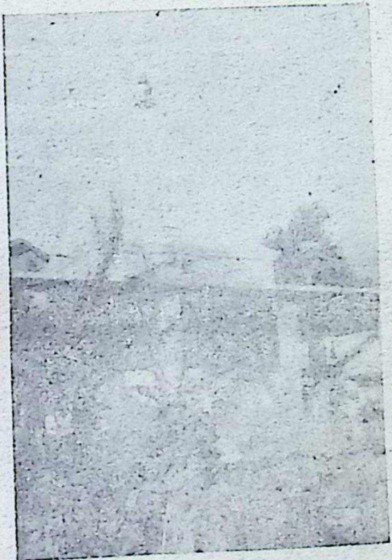

(भीमसेन-रुद्राक्षारण्य के संरक्षक का मन्दिर, विजयपुर बाजार)

आइए ! आप को धरान से ही रुद्राक्षारण्य स्वागत करता है। बोर्ड पढ़ने मिल जायगे। विजयपुर चौक तक आप पहुँच गए हैं। चौक में ही एक बड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सा ऐतिहासिक बोर्ड आप को नजर आयेगा। स्थान स्थान के लिए सूचक प्लेट भी नजर आयगे। विजयपुर बाजार से करीब ३० कदम उत्तर बढ़ने पर रुद्राक्षारण्य के कोतवाल (संरक्षक) भीम सेन का मन्दिर बाँये तरफ मिलेगा। परिचयात्मक बोर्ड भी देखेंगे। रुद्राक्षारण्य में पहुँच कर सबसे पहले इन्हीं भीमसेन का दर्शन करना चाहिए। न तो वे रुष्ट होंगे। यहाँ प्राचीन शिलायें भी हैं। यह माहात्म्य कहता है ?

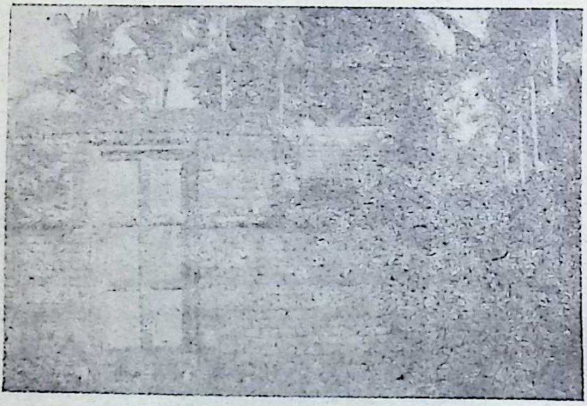

(बालाम्बा, रुद्राक्षारण्य की प्रमुख देवी, स्थानीय जनता बालकुमारी से परिचय देते हैं)

भीमसेन के मन्दिर से २० कदम उत्तर बढ़ते ही रुद्राक्षारण्य की प्रमुख देवी बालाम्बा (पार्वती) का मन्दिर है, 'मातृदेवो भव' वेद की शिक्षा में प्रेम रखने वाले पहले माता जी का ही दर्शन करते हैं। बालाम्बाको स्थानीय जनता बालकुमारी कहती है। यहाँ भी परिचयात्मक बोर्ड प्रस्तुत है। भग्न मन्दिर है, पर प्राचीन ऐतिहासिक स्थान हैं, रुद्राक्षारण्य की ईश्वरी का मन्दिर है। सनातन धर्म प्रेमी संस्कृति के मित्र हिन्दुओं की निगाह में इस स्थान को सत्कार मिले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहां से आगे ३० कदम उत्तर बढ़ने पर 'गादी गणेश स्थान' के लिए एक ऐतिहासिक बोर्ड बायें तरफ नजर आयगा।

इस बोर्ड से आगे पूरब के तवफ करीब २० कदम पर 'गादी गणेश' गद्दी के गणेश, जी का ध्वंशाव-शेष स्थान है। हिन्दूपति व किरातपति सेन नरेन्द्रों के द्वारा पूजित ये गणेश जी हैं। इनसे नीचे सेन नरेन्द्रों के हाथियों को बाधने का स्थान, जिसे स्थानीय जनता हातीसार कहती है।

आपको नजर आयगा। वृहत् नेपाल के निर्माता श्री ५ स्वर्गीय बड़े महाराजा पृथ्वी नारायण शाह से आगे तक हिन्दूपति व किरात पति सेन वंशीय नरेन्द्रों की राजधानी विजयपुर ही है। विजयपुर पर्वत खण्ड के उत्तरी भाग में हिन्दूपति व किरातपति शेन नरेद्रों का भग्नावशेष गढ़ आजतक विद्यमान है। तत्कालीन राजनैतिक कारण से, स्थानीय जनता 'भताभुङ्गे राजा को गढी' कहती है, और बताती है कि 'भताभुङ्गे राजा, लथालिङ्गे मन्त्री, ध्याम्पे काजी, डवकें विचारी, यहां रज्य करते थे' और यहां की स्थिति 'दि-उ से हिंडने चोर, राती हिंडने सज्जन, चोरलाई चौतारे साधुलाई शूली, टका सेर भाजी, टका सेर खाजा, वाली थी। पर ये कथायें कपोल-कल्पित हैं। मन गढन्त हैं।

निशान डाँडो, हिन्दूपति स्थान बांझागरा, उर्दी डाढो, शूली कोट, चौडण्डी गढी, विश्वामित्र कौशिक का (जे राजर्षि से ब्रह्मर्षि बने) प्राचीन राजमहल में ही महल निर्माण कर हिन्दूपति व किरातपतियों ने अपना गढ़ तयार किया था, वह रङ्गमहल आदि उनके स्थान मिलते हैं, पर खोदाई नहीं हुई है।

पुनः आप विजयपुर चौक में पधारें और बाँयें हाथ के रास्ते से दक्षिण के तरफ बढें, और रास्ते के साथ दक्षिण मुढ़ते हुए साक्षी विनायक के मन्दिर से आगे बढें तो (दर्शन पीछें करें) पिण्डेश्वर संस्कृत विद्यापीठ होते हुए मूल मन्दिर के द्वार पर पहुँचेगे, पर पश्चिम के तरफ आप मुड जाइए तो सरस्वती तीर्थ (पोखरा) और सरस्वती कूप नजर आयगे। इस स्थान से पूरब के तरफ देखें तो पिण्डेश्वर परिकर मन्दिरों के कई शिखर और अनेक रुद्राक्ष के वृक्ष नजर आयगे। सरस्वती तीर्थ मातृ तीर्थ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहीं रुद्राक्षारण्य एवं अमृत पान स्थली के अमृत पिण्ड पिण्डेश्वर शिव (बाबा) का मन्दिर है।

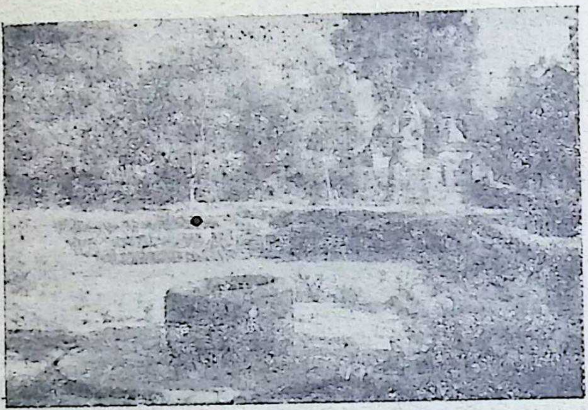

सरस्वती तीर्थ (सरोवर) सरस्वती कूप, रुद्राक्ष वृक्ष, भूल मन्दिर के अनेक शिखर।

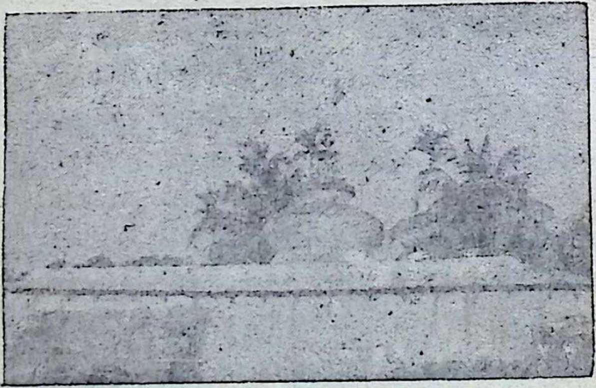

(रुद्राक्षारण्य के प्रमुख देवता अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर शिव (बाबा) का धाम (मन्दिर)

इस मन्दिर की पौराणिक कथा 'स्कन्द पुराण हिमाद्रि खण्ड पूर्व भाग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'रुद्राक्षारण्य माहात्म्य' से अवगत करें। जो अब छप गई है। सम्पर्क के लिए लेखक के नाम इसी प्रेस में पत्र लिखें।

रुद्राक्षारण्य प्रमुख देवता पिण्डेश्वर शिव का यह मन्दिर कब का है कुछ पता नहीं। एक ही पत्थर की खुदाई करके मन्दिर वनी थी, अनेक भूकम्पों में नष्ट होने की, और जीर्णोद्धार होने की कहानियों के साथ साथ विक्रम सं० १९९० के भूकम्प में नष्ट प्राय मन्दिर को जीर्णोद्धार किया गया। शीत शैल रुद्राक्षारण्य अमृत-पिण्ड पिण्डेश्वर शिव (बाबा भोलेनाथ) का प्रतीक लिङ्ग पर्वत शिखर की भाती उपर से नीचे की ओर फैलता गया है। परिकर देवताओं का परिचय पुजारी वर्ग देंगे। यहाँ परिचय के लिए अनेक बोर्ड नजर आयगें।

यहीं इसी मन्दिर में, पकली में एक कृषक को सपना में प्राप्त कौशिकी अष्टभुजा (भगवती दुर्गा) की मूर्ति थी। दुर्भाग्य है कि अब आशन मात्र है।

रुद्राक्षारण्य माहात्म्य में कौशिकी अष्ट-भुजा ने ही शौनकादि अठासी हजार ऋषियों को रुद्राक्षारण्य में जाने का रास्ता वताया है।

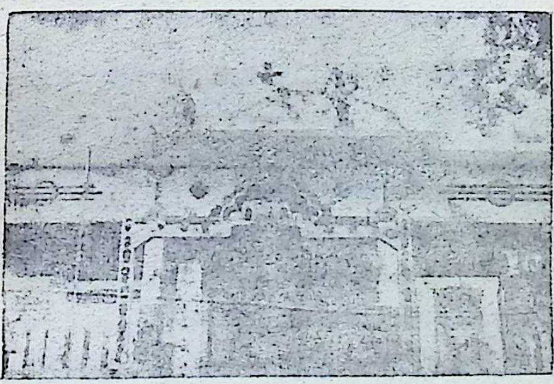

(महाकाली-दन्तकाली मन्दिर)

पिण्डेश्वर मन्दिर के उत्तर द्वार से निकलकर ऊपर चढ़ाई वाला (पूर्वोत्तर होते हुए पुनः पूर्वोत्तर मुड़ने वाला) रास्ता पकड़कर आप महाकाली के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन्दिर में पहुँचेंगे, इन महाकाली को स्थानीय जनता दन्तकाली नाम से पुकारती है। रुद्राक्षारण्य के तीर्थ जल में पहुँचना पसन्द करते हैं तो दुईधारे (युगल धारा) तीन धारे (तृपथा) में कुछ नीचे उतर कर पहुचें।

महाकाली (दन्तकाली) मन्दिर से उत्तर की ओर आप बढ़ते हैं तो पुनः विजयपुर चौक पर पहुँचते हैं। सीधे उत्तर वढ़कर रास्ते के साथ पूरब की ओर गादी गणेश परिचायक वोर्ड से आधा फर्लाङ्ग कुछ चलने पर 'बूढ़ासुब्वा' का मन्दिर (समाधि मन्दिर) मिल जायगा। वास्तविक तो यह समाधि एकलव्य की है देखें। देशको माटो, शका ढुङ्गा (२) भाग पुस्तक।

रुद्राक्षारण्य महात्म्य में जो देव-दत्त की समाधि बताई गई है, वह समाधि 'बूढा सुब्बा' के समाधि के पास ही उत्तर के तरफ जो समाधि है, जिस समाधि को स्थानीय जनता बूढासुब्बा के भाञ्जे का समाधि बताती है, वही देवदत्त समाधि हैं।

(यही गोल आकृति वाला' रुद्राक्षारण्य माहात्म्य में कीर्तित देवदत्त समाधि है, और आपके दाहिने तरफ एकलव्यका (बूढा सुब्बका) समाधि मन्दिर है।

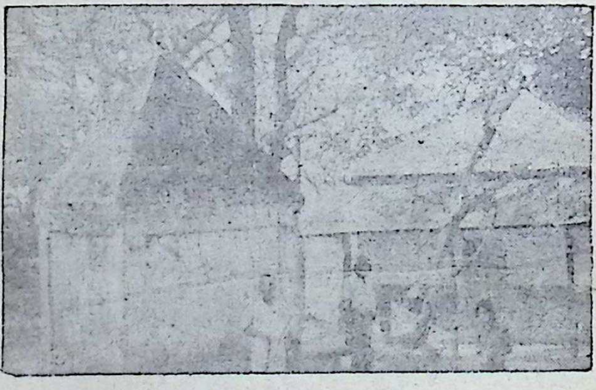

देवदत्त बूढसुब्वाके भाञ्जेका समाधि सहित बूढ़ा सुब्बाका समाधि मन्दिर।

बूढा सुब्बा के किम्बदन्तियों में पाण्डवों से संबन्धित किम्बदन्तियाँ विशेष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

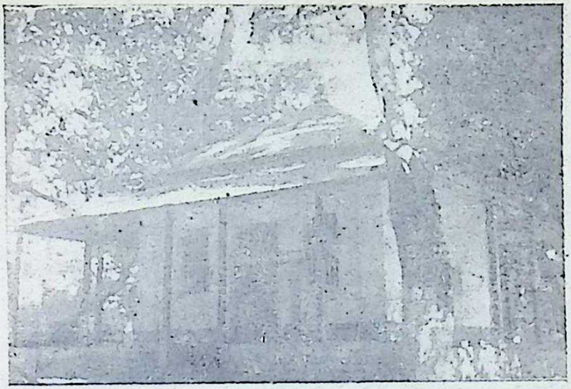

(बूढासुब्बा (एकलव्य-यलम्वहाङ) समाधि मन्दिर।

प्रचलित हैं। इन्हीं किम्वदन्तियों से वास्तविक तथ्य छिपा हुआ था। सो अब प्राप्त पाण्डुलिपि से प्रकट हो गया।

बूढासुब्बा समाधि मन्दिर से पश्चिम बढ़कर (दक्षिणोत्तर वाला वही जिस रास्ते से आप गए थे) वही रास्ता मिल जायगा। ऊपर चढ़ाई के साथ उत्तर बढ़ने वाला रास्ता पकड़कर चले जाय तो १ किलो मीटर पर 'पञ्चकन्या' मन्दिर मिल जायगा। इस मन्दिर को स्थापना करने वाले वही हिन्दूपति व किरातपति सेननरेन्द्र थे।

यहाँ से आगे बढ़ते हैं, तो सेननरेन्द्रोंका गढ़ मिल जाता है, लगभग १ किलो मिटर की दूरी पर। यहाँ से आप रुद्राक्षारण्य की प्रमुख गङ्गा 'शिव-गङ्गा' का शिवजटा स्थान (उद्गम स्थल) दर्शन कर लेगें। पुनः आप लौटकर विजयपुर चौक पर ही आ जाय, और जिस रास्ते से पिण्डेश्वर मन्दिर पर पहुचे थे उसी रास्ते से गुजरे तो साक्षीविनायक का मन्दिर रास्ते में ही मिलेगा। रुद्राक्षारण्य के धार्मिक यात्रियों को अन्त्य में शाक्षी-विनायक (गणेश जी) का दर्शन करना चाहिए। यहाँ से पूरब के तरफ आप देखेगे तो एक उच्च पर्वत की चोंटी पर 'दानवारी' दानवों के शत्रु (भैरव) का स्थान नजर आयगा। ये भैरव रुद्राक्षारण्य के वनमन्त्री (वनपाल) हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

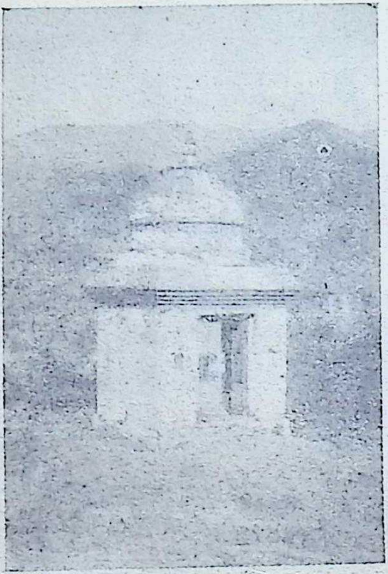

(साक्षी विनायक गणेश मन्दिर)

पिण्डेश्वर विद्यापीठ में प्रवेश कर पूरब की ओर से शिवगङ्गा में उतरते हैं तो कान्ति गङ्गा नाम से माहात्म्य में कीर्तित जलस्रोत मिलेगा। शिवगङ्गा का पानी पीने के काम में उपयोग हुआ और नदी में पानी वर्षात में मात्र अब बहता है।

उत्तरा खण्ड यूँ ही पवित्र भूमि है, जहां देवतात्मा हिमालय पर्वत राज है। जहाँ शालिग्राम शिला शैल और शालिग्रमी (सप्त गण्डकी) वहती हैं; जिस देश के पत्थरों को हिन्दू जगत् विष्णु का प्रतीक मानकर पूजता है, और दम निकलते समय शालिग्राम का धुवान एक बूद जल चाहता है, मिल जाने पर अपने को भुक्त समझता है, और हँसते-हँसते मरता है, मरने से हिन्दू जगत् नहीं डरता है। जहाँ मुक्ति क्षेत्र (मुक्तिनाथ) हैं।

हिमालय पर्वत के सारे जल स्रोत हैमवती गङ्गा ही कहलातो हैं। कैलासं शंकरावासम्, कहा जाता है। गिरिश और गीरीश, शंकर का नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। उसमें भी यह रुद्राक्षारण्य है, अमृतपान स्थली है जहाँ अमृत-पिण्ड पिण्डेश्वर शिव विराजते हैं। इस स्थल का सम्पूर्ण धार्मिक लाभ २० अध्याय वाली हिन्दी टीका सहित छपी रुद्राक्षारण्य माहात्म्य से प्राप्तकर सकते हैं।

रुद्राक्षारण्य विशिष्ट हरिहर क्षेत्र हैं

रुद्राक्षारण्य विजयपुर से केवल ८ मील की दूरी पर भगवान् विष्णु का तीसरा अवतार यज्ञ वराह विष्णु का (वराह क्षेत्र-वराह भगवान् का) मन्दिर है। कोका (पितृप्रिया, स्वधा) का और सप्त कौशिकी का पवित्र सङ्गम है. जहाँ प्रतिवर्ष लाखों भारतीय बन्धु पहुँचते हैं। वराहपुराय ही जिस क्षेत्र का परिचय देता है तो और क्या कहना है।

कोका उद्गम स्थल को गोमुख कहते हैं। कोका उद्गम स्थल से नीचे विष्णुपादुका मन्दिर है (भग्नावशेष है) सवँ प्रथम यज्ञ वराह विष्णु ने दिव्य पितृयों का श्राद्ध यहीं किया था। देखिए ! ब्रह्मपुराण का ११० अध्याय और महाभारत शान्ति पर्व। श्राद्ध विधान का प्रारम्भ यज्ञ वराह विष्णु से ही हुआ है। विष्णुपादुका में भी परिचय हेतु एक बोर्ड लगा है।

वराह क्षेत्र से ऊपर हिन्दू पतियों की चौडण्डी (गढ़) के पास एक देवी का मन्दिर है। स्थानीय जनता चौडण्डी देवी, सरमानी देवी के नाम से परिचित है। पर यह मन्दिर वाराही (भगवती पृथ्वी, विष्णुपत्नी लक्ष्मी) का है। इसी लेखक ने नेपाली में एक लेख लिखकर सिद्ध कर दिया है। इस मन्दिर में भी एक परिचय बोर्ड आपको नजर आयगा।

इस मन्दिर से पूरब की ओर करीब १ किलो मीटर पर भगवान् आदिवराह का मन्दिर और भगवान् सूर्यका मन्दिर (भग्नावशेष) हैं। किन्तु वराह पुराण वर्णित हैं। इन मन्दिरों से दक्षिण सूर्य सरोवर (जो ४-मील की गोलाई में) था, भूकम्प से सूर्य कुण्ड वन गया, आज वह भी लुप्त है। वराह पुराण के १४० अध्याय में वर्णित सभी स्थान, कुण्ड, धारा विद्यमान है। 'वराह क्षेत्र कोका माहात्म्य' नाम से नेपाली टीका में इसी लेखक ने प्रकाशित किया है। वराहक्षेत्र और पिण्डेश्वर के पुजारियों सै खरीद लें। यज्ञ वराह विष्णु, ओर रुद्राक्षारण्य के अमृतपिण्ड पिण्डेश्वर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिव के नित्य सन्निध्य से यह स्थल विशिष्ट हरिहर क्षेत्र है। और अवध्य क्षेत्र है। मतलब यहां के देवी देवताओं को बली (रक्त) नही रुचता है। यह महात्म्य का कथन है। और आसपास अनेक तीर्थ हैं जो वराह पुराण,

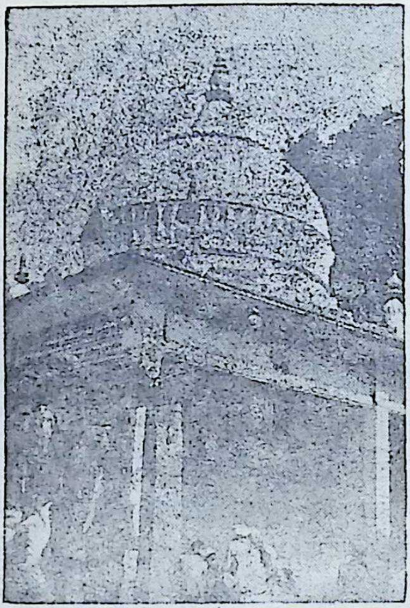

(यज्ञ वराह अवतार स्थल, वराह क्षेत्र मन्दिर)

स्कन्द पुराण, मत्स्यपुराण, कूर्मपुराण आदि में वर्णित हैं। धार्मिक यात्रियों को रुद्राक्षारण्य दर्शन के लिए मूलस्थान पञ्चक्रोशी क्षेत्र का मात्र सचित्र दर्शन प्रस्तुत किया गया है।

रुद्राक्षारण्य शीतशैल विजयपुर किम्वदन्ती किम्वदतियों से पूर्ण हैं, किम्वदन्तियों को छोड़कर रुद्राक्षारण्य माहात्म्य में वर्णित सारे स्थानो को प्रत्यक्ष करके यह संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

धन्यवाद, नमस्ते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाल्मीकि विद्यापीठ-पुस्तकालय

१६२१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१.

वाल्मीकि विद्यापीठ पुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu